संगीत-रत्नाकर

[भाग १]

शार्ङ्गदेव द्वारा रचित संगीत-रत्नाकर के स्वरगताध्याय का

हिन्दी-अनुवाद

अनुवादक

लक्ष्मीनारायण गर्ग

●

सहायक

आचार्य चक्रपाणि

●

भूमिका-लेखक

आचार्य बृहस्पति

मूल्य
सात रुपए

प्रथम संस्करण
फरवरी १९६४

प्रकाशक

संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)
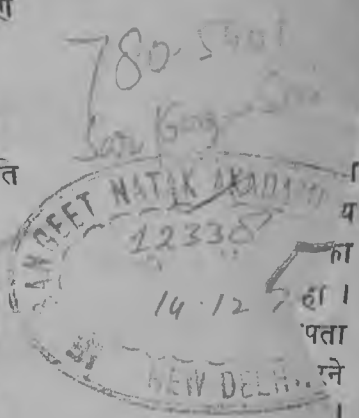
SANGEET-RATNAKAR
Hindi translation of the Swargatadhyaya of Sangeet-Ra
Originally written by
Acharya Sharngadev in 13th Centuary

Translated by
L. N. GARG

Printed by
SANGEET PRESS,
HATHRAS (India)

First Edition
February, 1964

Price
Rs. 7/-

Published by
SANGEET KARYALAYA,
HATHRAS (India)

दो शब

आचार्य
ापने जीवन के अन्तिम क्षणों में आदरणीय भातखण्डेजी
उत्तराधिकारियों के लिए जो वसीयत की थी, वह 'हिन्दुस्ता
ा-पद्धति' (भातखण्डे-संगीत-शास्त्र) चतुर्थ भाग के उपसंहार में है

स्वर्गीय भातखण्डेजी के उन शब्दों में 'रत्नाकर' के स्पष्टीकरा
सम्भव बताया गया है और कहा गया है कि यह कार्य भावी
..ढ़यों को करना ही चाहिए।

प्रत्येक व्यक्ति की विचारधारा में विकास हुआ करता है।
ान् १९११ अथवा १९१२ में भातखण्डेजी का मत 'रत्नाकर' और
ाके रचयिता शार्ङ्गदेव के विषय में कुछ भी रहा हो, परन्तु अपनी
ायत में उन्होंने स्पष्टतया 'रत्नाकर' की उपयोगिता को स्वीकृत
.के उसके स्पष्टीकरण को सम्भव बताते हुए इस बात पर खेद
कट किया है कि वे अपने जीवन में कुछ महत्त्वपूर्ण कार्यों को
र नहीं सके।

सच बात तो यह है कि भातखण्डेजी का प्रधान प्रयत्न यह था
कि उनके द्वारा प्रचलित संगीत लिपिबद्ध हो जाए, प्राप्य और अप्राप्य
बन्दिशें स्वरलिपि-सहित प्रकाशित हो जाएँ और एक ऐसी पद्धति का
निर्माण हो, जो पाठशालाओं और विद्यालयों के लिए उपयोगी हो।
प्रचलित संगीत को एक शैलीबद्ध रूप देना और उसमें एकरूपता
ले आना उनका प्रमुख लक्ष्य था। प्राचीन ग्रन्थों पर अनुसंधान करने
के लिए न उनके पास समय था और न उनका यह प्रयोजन ही था।
जहाँ-जहाँ भी उन्होंने प्राचीन ग्रन्थों की चर्चा की है, वहाँ-वहाँ वह
प्रानुषंगिक रूप से हुई है; फिर भी उन्होंने 'रत्नाकर' जैसे प्राचीन ग्रन्थों
के सम्बन्ध में जो प्रश्न उठाए हैं, वे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं और
:त्नाकर' जैसे ग्रन्थों पर काम करनेवाले शोधकर्त्ता के लिए उन प्रश्नों
ा उत्तर खोजना अनिवार्य हो जाता है।

'संगीत-कार्यालय' ने 'रत्नाकर' के स्वराध्याय का अविकल हिन्दी-
... संगीत-जगत् के सम्मुख रखकर उन सज्जनों को 'रत्नाकर'

ब्दों पर स्वतंत्र रूप से विचार करने का अवसर दिया है, जो कृत भाषा से परिचित नहीं हैं। इसलिए 'संगीत-कार्यालय' के चालक और इस ग्रन्थ के अनुवादक संगीत-जगत् की ओर से बधाई के पात्र हैं।

'संगीत-कार्यालय' यह विचार कर रहा है कि 'नाट्यशास्त्र' के संगीत-सम्बन्धी अध्यायों और 'रत्नाकर'-जैसे ग्रन्थों का प्रामाणिक और विस्तृत भाष्य यथासमय प्रकाशित करे, परन्तु यह कार्य बहुत बड़ा है—जब ईश्वरेच्छा होगी, तब होगा। जब तक वह न हो, तब तक यह अनुवाद-मात्र इस विषय के जिज्ञासुओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

'रत्नाकर' के विषय में थोड़ा-बहुत यहाँ कह देना अप्रासंगिक न होगा।

'रत्नाकर' के रचयिता शार्ङ्गदेव के पितामह कश्मीर छोड़कर दक्षिण में जा बसे थे। राजनीतिक उथल-पुथल के कारण उत्तर-भारत के अनेक विद्वान् बहुमूल्य ग्रन्थों को छाती से लगाए दक्षिण की ओर आश्रय की खोज में गए थे। दक्षिण के राजाओं ने ऐसे विद्वानों को आश्रय दिया और उनका भरपूर सम्मान किया। बारहवीं शताब्दी के अन्तिम दशक में मोहम्मद गोरी और पृथ्वीराज का वह युद्ध हुआ। जो भारत के भाग्य का निर्णायक बना। 'रत्नाकर' के प्रणयिता शार्ङ्गदेव के जीवन-काल की यह घटना थी। शार्ङ्गदेव-जैसे विद्वान् से भारत का भविष्य छिपा नहीं रह सकता था। जो व्यक्ति संगीत-शास्त्र और कला का महान् मर्मज्ञ, आयुर्वेद-शास्त्र का पारंगत विद्वान् और वेदान्त का चूडान्त पंडित हो, उसका भविष्यद्रष्टा होना स्वाभाविक है। आचार्य ने भविष्य देखा और संगीत विषय की बिखरी हुई सामग्री को बड़े ढंग से एकत्र सँजो दिया। 'रत्नाकर' के प्रसिद्ध टीकाकार सिंहभूपाल (१४-वीं सदी ई०) ने 'रत्नाकर' के इस महत्त्व को स्वीकृत करते हुए आचार्य शार्ङ्गदेव के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की है और कहा है कि 'रत्नाकर' के महत्त्व को समझनेवाले ... युग में वह स्वयं ही हैं। 'रत्नाकर' के दूसरे टीकाकार 'कल्लि... (१५-वीं सदी ई०) ने भी 'रत्नाकर' की दुरूहता और गम्भीरता स्वीकृत करते हुए अपने युग में स्वयं को ही 'रत्नाकर' का म...

बताया है। सिंहभूपाल और कल्लिनाथ, इन दोनों का ही कथन महत्त्वपूर्ण है। जो कल्लिनाथ की टीका को समझने-योग्य संस्कृत भी नहीं जानते, उनके द्वारा 'रत्नाकर' की संक्षिप्ततम और सारगर्भित भाषा को समझना सम्भव नहीं। बात कुछ और ही है; उत्तर-भारत में यवनों के प्रभाव से भारतीय रागों का वर्गीकरण ईरानी मुक़ाम-पद्धति के आधार पर किया गया। इस पद्धति का आधार अष्टक (Octave) था, सप्तक नहीं। इसी मूलभूत भेद के कारण दुनिया बदल गई।

मुक़ाम-पद्धति को लोचन-जैसे पंडितों ने संस्थान-पद्धति कहा और १४-वीं शताब्दी ई० के पूर्वार्ध में यही पद्धति विद्यारण्य के पास पहुँचकर मेल-पद्धति बनी। रामामात्य, व्यंकटमखी जैसे दाक्षिणात्य विद्वानों ने इसी पद्धति को पल्लवित किया और यही उनके विचार का आधार बनी। जिन व्यक्तियों ने भी मेल-पद्धति या थाट-पद्धति की ओर आग्रह रखते हुए 'रत्नाकर' को समझने की चेष्टा की, वे असफल रहे और 'रत्नाकर' पर झुँझलाए। 'संगीतसुधा' के लेखक तंजौर-नरेश रघुनाथ (१७-वीं सदी ई०) ने तो झुँझलाकर कहा है कि सप्ताध्यायी समझ में नहीं आती, इसलिए वे अपने समय के रागों का निरूपण विद्यारण्य के मत से कर रहे हैं। बड़ी मनोरंजक बात यह है कि रघुनाथ नरेश ने भी अपने 'संगीतसुधा' में स्वराध्याय की सामग्री 'रत्नाकर' से ही ली है और उसे समझे-बिना अपने ग्रन्थ में स्थान दिया है। तात्पर्य यह है कि 'रत्नाकर' के आतंक से वे भी अपने को मुक्त नहीं कर पाए।

उत्तर-भारत के बीनकारों ने मुक़ाम-पद्धति को ठाठ-भेद कहा और दक्षिण के बीनकारों ने उसे मेल-पद्धति। विचार करने की बात यह है कि ठाठ या मेल की चर्चा करनेवाले सभी व्यक्ति वीणा-वादक हुए हैं, गायक नहीं।

हुसेनशाह शर्की के सूबेदार के पुत्र से लेकर मुग़ल-सम्राटों तक ने 'रत्नाकर' का आदर किया। अनेक ध्रुवपदों में 'रत्नाकर' और उसके विषय की चर्चा सम्मान-पूर्वक की गई है और मुग़ल-सम्राटों को 'रत्नाकर' पर विचार करनेवाला और उसका मर्मज्ञ बताया गया है।

यह बात नहीं कि 'रत्नाकर' की चर्चा-मात्र उन ध्रुवपदों में हो। तानसेन से लेकर सदारंग और अदारंग तक के ऐसे ध्रुवपद मिलते हैं, जो यह सिद्ध करते हैं कि गुणियों की यह परम्परा 'रत्नाकर' के मर्म को पूर्णतया समझती थी। इस योग्यता के बल पर तानसेन ने उन राग-रूपों को सम्मुख रखा था, जो उस युग को नए प्रतीत हुए थे। तानसेन के 'संगीतसार' नामक ग्रन्थ में मेल-पद्धति की चर्चा तक नहीं है और मूर्च्छना-पद्धति का आधार लेकर सारी बात कही गई है। जो लोग 'रत्नाकर' को नहीं समझते, उनके लिए तानसेन का यह ग्रन्थ भी पत्थर का अचार है।

अपने एक ध्रुवपद में तानसेन ने स्पष्ट कहा है कि 'ध प म ग रे स नि' ही 'नि ध प म ग रे स' हैं। भरत और शार्ङ्गदेव के शुद्ध 'ध प म ग रे स नि' तानसेन के युग के शुद्ध 'नि ध प म ग रे स' हैं। यही 'नि ध प म ग रे स' भातखण्डेजी के भी शुद्ध 'नि ध प म ग रे स' हैं। इन संक्षिप्त परन्तु महत्त्वपूर्ण बातों की ओर गम्भीरता-पूर्वक ध्यान देना उन लोगों का कार्य है, जिनके हृदय में ज्ञान के, लिए प्यास है।

'रत्नाकर' जैसे ग्रन्थों के स्पष्टीकरण के बिना हम अपने संगीत का वैज्ञानिक इतिहास नहीं लिख सकते। 'संगीत परिवर्तनशील है'— इतना कहने से काम नहीं चलता। क्या परिवर्तन, किस प्रयोजन के लिए, किसके द्वारा, किस समय हुआ—जब तक इन प्रश्नों का उत्तर न मिले, बात पूरी नहीं होती। दो वस्तुओं की वास्तविक तुलना उसी दशा में सम्भव है, जब वे दोनों देखनेवाले के समक्ष हों। इसी बात की गम्भीरता को समझते हुए स्व० भातखण्डेजी ने अपनी वसीयत की है।

हमने इस दिशा में अपना जीवन देने का संकल्प २६ वर्ष पूर्व किया था। भगवान् की बड़ी कृपा है कि हमारे इस पवित्र संकल्प में 'संगीत-कार्यालय' और उसके संचालक पूर्णरूपेण हमारे सहायक रहे हैं। भगवान् शंकर की कृपा से हम 'जातियों' को उनके रहस्य-सहित स्पष्ट कर चुके हैं, उनमें नई बन्दिशों की रचना करके अपने शिष्यों के द्वारा 'सुरसिंगार-संसद्' के सम्मेलन-जैसे अवसरों पर सफलता-पूर्वक प्रस्तुत करा चुके हैं और वर्षों पूर्व उनके टेप-रिकार्ड

'संगीत-नाटक-अकादमी' को भी दे चुके हैं। यही नहीं, 'रत्नाकर' के कुछ रागों को पूर्णतया स्पष्ट करके उनकी शिक्षा भी हम अपने शिष्यों को दे चुके हैं। ऐसे रागों में एक राग शुद्ध भैरव के रिकार्ड आकाशवाणी के दिल्ली, लखनऊ, जालन्धर, बम्बई इत्यादि केन्द्रों ने लिए हैं और ये रिकार्ड सैकड़ों बार आकाशवाणी से प्रसारित हुए हैं। हमारा और 'संगीत-कार्यालय' का यह सम्मिलित संकल्प है कि हमलोग अपने जीवन में प्राचीन ग्रन्थों के सप्रयोग स्पष्टीकरण का महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकें और हमारे देश का मुख विश्व के समक्ष गौरव से उन्नत हो। हम तो निमित्त-मात्र हैं; कार्य करानेवाला वह परम चैतन्य है, जो हमको इस दिशा में लगा रहा है।

हमारे इन प्रयत्नों से स्व० भातखण्डेजी-जैसे युगद्रष्टा की आत्मा को अवश्य शान्ति मिलेगी और हम सब उनके ऋण से उऋण होंगे, ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है। गंगा को लाने का श्रेय भगीरथ को भले ही मिला हो, परन्तु उसके पूर्वजों की तपस्या और अनुभव उसका मार्ग-दर्शन कर रहे थे, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं। ईश्वर ने चाहा, तो हम संगीत-परिवार के सभी सदस्य 'नाट्यशास्त्र' के २८-वें अध्याय का प्रामाणिक भाष्य लेकर शीघ्र ही पाठकों की सेवा में उपस्थित होंगे।

'संगीत' के संचालक श्री प्रभूलाल जी गर्ग और सम्पादक श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग ने मुझसे इस अनुवाद के लिए भूमिका के रूप में दो शब्द लिखने का आग्रह किया था। इस आग्रह को पूरा भी उन्होंने ही कराया है। मैं स्वयं को उस प्रत्येक व्यक्ति का सेवक मानता हूँ, जो संगीत के कल्याण में किसी भी हैसियत से दत्तचित्त है। संगीत-सम्बन्धी अनुसंधान एक महान् यज्ञ है और इस यज्ञ में प्रत्येक व्यक्ति अपना योग दे, यही ईश्वर से प्रार्थना है।

भगवान् हम सभी को शक्ति दे, जिससे हम इस दिशा में प्रतिक्षण अग्रसर हो सकें।

—बृहस्पति

प्रकाशक का वक्तव्य

'संगीतरत्नाकर' के स्वरगताध्याय का यह प्रथम हिन्दी-अनुवाद पाठकों के करकमलों में प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यन्त हर्ष हो रहा है। वस्तु जैसी है, सेवा में प्रस्तुत है। हमारी यह नीति रही है कि हम संगीत के प्रामाणिक विद्वानों और कलाकारों की सम्मति से पूर्ण लाभ उठाएँ। हम विद्वानों के चिन्तन का निष्कर्ष पाठकों के सम्मुख रखने में निमित्त-मात्र हैं, किसी भी पक्ष की ओर हमारा कोई आग्रह नहीं है। प्रकाशक के लिए यह दृष्टि अत्यन्त आवश्यक है।

श्री बृहस्पति जी से हमें सदा मार्ग-दर्शन मिला है और वे अत्यन्त स्नेह-पूर्वक समय-समय पर हमें अपने सुझाव देते रहे हैं। अत्यन्त असुविधामय स्थिति में भी उन्होंने इस अनुवाद की भूमिका हमें देने का कष्ट किया है, यह उनके स्नेह का द्योतक है।

हमारा संकल्प है कि हम संगीत-सम्बन्धी साहित्य का प्रामाणिक प्रकाशन निरंतर करते रहें, परन्तु अच्छे और मूल्यवान् ग्रन्थों के लिए ग्राहक नहीं मिलते। परिणाम यह होता है कि प्रकाशित होने पर भी अच्छे ग्रन्थ केवल हमारे भांडार की शोभा बढ़ाते रहते हैं। प्रसन्नता की बात है कि विश्वविद्यालयों का ध्यान संगीत की ओर जारहा है और 'पंजाब-विश्वविद्यालय' ने एम. ए. में संगीत को एक विषय मान लिया है। अनेक उच्च परीक्षाओं के पाठ्य-क्रम में 'रत्नाकर' भी पाठ्य-पुस्तक के रूप में है। हमें विश्वास है कि इन परीक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए यह अनुवाद विशेष रूप से उपयोगी होगा। अनुवाद के अन्त में कुछ सारणियाँ दी गई हैं और इनमें वे भूलें नहीं हैं, जो 'रत्नाकर' के आनन्दाश्रम-संस्करण की सारणियों में हैं और जिन भूलों से पाठकों को आज तक भ्रम होता चला आरहा है।

प्रयत्न करने पर भी मनुष्य से कुछ-न-कुछ भूल हो ही जाती है। हमसे भी एक भूल हुई है। चौथे प्रकरण में पृष्ठ ३२ पर 'प्रस्तार' शीर्षक से जो अंश आरम्भ हुआ है और पृष्ठ ४० पर जिसकी समाप्ति हुई है, उस भाग में श्लोक ५५ से ७१ तक के श्लोकों का अनुवाद 'प्रस्तार' के स्पष्टीकरण में मिल गया है और इतने अंश के अन्त में श्लोक-संख्या ५५-७१ दी गई है। इतने अंश को 'रत्नाकर' के शब्दों का अनुवाद-मात्र नहीं मानना चाहिए। हम चाहते थे कि इतने अंश को निकालकर फिर मुद्रित करदें, किन्तु ग्राहकों के तकाजों से घबराकर हम इसे जैसे-का-तैसा प्रस्तुत कर रहे हैं। अगले संस्करण में यह भूल सुधार दी जाएगी। आशा है, विज्ञ पाठक इस प्रमाद के लिए हमें क्षमा करेंगे। चलता हुआ व्यक्ति यदि भूल से फिसल जाता है, तो दुर्जन उस पर हँसते हैं, परन्तु सज्जन उसे सहारा देते हैं।

—प्रकाशक

अनुक्रमणिका

६–वर्णालंकार-प्रकरण

७–जाति-प्रकरण

८–गीति-प्रकरण

स्वर-प्रस्तार

संगीत-रत्नाकर

प्रथम

पदार्थ-संग्रह-प्रकरण

मंगलाचरण

मैं नित्य निरतिशय सुख की प्राप्ति के लिए उस आनन्दघन शिवरूप स्वरसन्दर्भ का वन्दन करता हूँ जो ब्रह्मग्रन्थि (आधार-चक्र) से उत्पन्न वायु से सम्बद्ध होकर मन द्वारा संगीतज्ञों के हृदयरूपी कमल में अभिव्यक्त होता है; जो षड्ज आदि स्वरों की अभिव्यञ्जक श्रुतियों का आधारस्तम्भ है; जिससे ग्राम, वर्ण, अलंकार और जाति उत्पन्न होते हैं तथा जो नादस्वरूप एवं स्वयं-प्रकाशित है। (१)

वंश-परिचय

काश्मीर देश में एक वृषगण गोत्र वाला वंश है; जो यशस्वी, परम धार्मिक तथा वेदज्ञ ब्राह्मणों से इस प्रकार सुशोभित है मानो पृथ्वी पर साकार रूप में ब्रह्म की अभिव्यक्ति हुई है। (२-३)

इस वंश में सूर्य के समान तेजस्वी भास्कर नामक व्यक्ति उत्पन्न हुए, जिन्होंने दक्षिणायन सूर्य की भाँति दक्षिण दिशा में जाकर निवास किया। (४)

उन (भास्कर) के सोढल नामक पुत्र उत्पन्न हुए, जो बुद्धिमान एवं विनम्र थे। सोढल ने महाराज भिल्लम का आश्रय लेकर लोक में बड़ी कीर्ति प्राप्त की तथा जैत्र नामक नगर में अपना निवास बनाया और बाद मेंमहाराज भिल्लम के पुत्र सिंहण से भी सम्मान एवं धन उपलब्ध किया। (५)

सिंहण बड़े प्रतापी नरेश थे, जिनके चरण-नख महाराजाओं की मुकुट-मणिओं से देदीप्यमान रहते थे। उनका यश विश्वव्यापी होते हुए भी केवल शत्रुओं के हृदय को दग्ध करता था। (६)

गुणी एवं गुणानुरागी राजा को गुणों से प्रसन्न करके विद्वद्वर्य सोढल ने धनादि द्वारा ब्राह्मणों को तृप्त किया। (७)

उन्होंने सम्पूर्ण वस्तुओं का दान किया, समस्त ऐश्वर्य प्राप्त किया, सम्पूर्ण धर्मों का पालन किया तथा वे समस्त गुणों से विभूषित हुए। इन दुग्ध-सागर-रूपी सोढल से शाङ्गदेव नामक चन्द्रमा (पुत्र) का उदय हुआ, जिसकी किरणें (हस्त) सदैव उदारतापूर्वक स्फुरित होती रहीं। (८-९)

जिसने गुरुपद-सेवा की, सम्पूर्ण देवताओं का आराधन किया, सम्पूर्ण शास्त्रों का मर्म जाना, अशेष-पात्रों (गुणियों) का पूजन किया, जिसकी कीर्त्ति जगत् में व्याप्त है, जो स्वयं मन्मथ की मूर्त्ति है एवं जो प्रचुरतर विवेकयुक्त है, ऐसा केवल एक शाङ्गदेव ही है। (१०)

अनेक स्थानों पर भ्रमण करने से क्लान्त सहवासप्रिया सरस्वती ने भी निरन्तर उसके मन्दिर में ही विश्राम किया। (११)

परम विनोदी एवं उदारबुद्धि शाङ्गदेव ने धन द्वारा ब्राह्मणों का, विद्या से जिज्ञासुओं का एवं रसायन से रोगियों का दुःख दूर करके सम्पूर्ण लोकों के तीनों तापों को नष्ट करने की इच्छा से, शाश्वत धर्म, कीर्ति एवं मुक्तिलाभ के लिए 'सङ्गीतरत्नाकर' की रचना की है।(१२-१४)

ग्रन्थ-परिचय

सदाशिव, पार्वती, ब्रह्मा, भरत, मुनि कश्यप, मतंग, याष्टिक, दुर्गा, शक्ति, शार्दूल, कोहल, विशाखिल, दत्तिल, कम्बल, अश्वतर, वायु, विश्वावसु, रम्भा, अर्जुन, नारद, तुम्बुरु, आंजनेय, मातृगुप्त, रावण, नन्दिकेश्वर, स्वाति, गण, बिन्दुराज, क्षेत्रराज, राहल, रुद्रट, नान्यभूपाल, भोज भूवल्लभ, परमर्दी, सोमेश, जगदेक और महीपति तथा भरत के व्याख्याकार लोल्लट, उद्भट, शंकुक, भट्ट अभिनवगुप्त और कीर्त्तिधर आदि सङ्गीत-विशारदों के मतरूपी पयोनिधि को अगाध बोधरूपी मन्थन से मथकर श्री शाङ्गदेव ने यह 'सङ्गीत-रत्नाकर' नामक सारभूत ग्रन्थ निर्मित किया है। (१५-२०)

संगीत-लक्षण

गीत, वाद्य और नृत्य यह तीनों ही सङ्गीत कहलाते हैं। यह संगीत दो प्रकार का है—मार्ग और देशी। जिस सङ्गीत का अन्वेषण ब्रह्मादिकों ने एवं प्रयोग भरतादिकों ने किया, उसे 'मार्ग' कहते हैं।(२१-२२)

विभिन्न देशों में जनरुचि के अनुसार प्रयुक्त होने वाला सङ्गीत 'देशी' कहलाता है। (२३)

नृत्य वाद्य का अनुकरण करने वाला एवं वाद्य गीत का अनुकरण करने वाला होता है इसलिए गीत प्रधान है, जिसका वर्णन किया जाता है। (२४-२५)

गीत

ब्रह्मा ने सामवेद से गीत का संग्रह किया है।

सर्वज्ञ पार्वतीपति (शंकर) गीत से प्रसन्न होते हैं। गोपीपति अनन्त (कृष्ण) वंशीध्वनि के वशीभूत हैं। ब्रह्मा सामगीति में रत हैं। सरस्वती वीणा में आसक्त हैं। अन्य देव, यक्ष, गन्धर्व, दानव तथा मानवों के विषय में क्या कहा जाय ? (२६,२७)

जिस बालक को अभी विषयों का ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ और जो केवल पलना में सोना जानता है, वह भी गीत के अमृत को प्राप्त करके अपना रुदन समाप्त कर देता है और प्रफुल्लित हो जाता है। (२८)

कितने आश्चर्य की बात है कि जो वनचर वन में भ्रमण करता है और तृण ही जिसका आहार है, ऐसा मृगशावक भी लुब्धक (व्याध) के सङ्गीत पर मोहित होकर अपना जीवन समर्पित कर देता है। (२९)

उस गीत का माहात्म्य कौन वर्णन कर सकता है जो धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का एकमात्र साधन है। (३०)

अध्याय-परिचय

अब यहाँ प्रथम स्वरगत-अध्याय के अन्तर्गत शरीर, नाद की उत्पत्ति, स्थान और श्रुति; तदनन्तर सात शुद्ध स्वर, पाँच विकृत स्वर

इस प्रकार-बारह स्वर, कुल, जाति, वर्ण, द्वीप, ऋषि, देवता, छन्द, विनियोग, श्रुति, जाति, ग्राम, मूर्च्छना, शुद्ध एवं कूटतान, प्रस्तार, खण्डमेरु, नष्ट, उद्दिष्ट, स्वरसाधारण, जातिसाधारण, काकली व अन्तर का प्रयोग, वर्ण-लक्षण, ६३ अलंकार, जातियों के ग्रह व अंश आदि १३ लक्षण, कपाल, कम्बल तथा अनेक प्रकार की गीतियों का वर्णन किया जायगा। (३१-३६)

रागविवेक-अध्याय में ग्रामराग, उपराग, राग, भाषा, विभाषा, अन्तरभाषा, रागों के सम्पूर्ण अङ्ग, भाषांग, क्रियांग और उपांग सभी क्रम से तत्वतः कहे जाएँगे। (३७,३८)

तीसरे प्रकीर्ण-अध्याय में वाग्गेयकार,गान्धर्व,स्वर, गायक व गायनी के गुण-दोष तथा शब्द-भेद, शब्द के गुण-दोष, शरीर के गुण-दोष, गमक, स्थायी (गीत के अवयव), आलप्ति और बृन्द-लक्षण कहे जाएँगे। (३९,४०)

प्रबन्ध-अध्याय में धातु, अङ्ग, जाति, प्रबन्धों के प्रकार, शुद्ध-सूड, छायालग, आलिक्रम, सूडस्थ, आलिस्थ, विप्रकीर्ण, सूडसमाश्रित छायालग और गीतस्थ गुण-दोष सूरी-शाङ्गदेव के द्वारा कहे जाएँगे। (४१-४३)

पंचम तालाध्याय में मार्ग ताल, कला, पात, चार मार्ग, कलाष्टक, गुरु-लघु आदि मान, एक कला आदि भेद, पादभाग, मात्रा, ताल में पात-कला-विधि, अँगुलियों का नियम, युग्मादि भेद, परिवर्त्त, लय, यति, गीत, छंदक आदि गीत, तालांग समूह, गीत के अङ्ग, देसी ताल और प्रत्यय निःशंक शाङ्गदेव द्वारा कहा जायगा। (४४-४७)

छठवें अध्याय में अनेक वाद्यों का वर्णन और सातवें अध्याय में नर्तन, रस तथा भाव क्रम से कहे जाएँगे। (४८)

संगीतरत्नाकर के प्रथम
स्वरगत अध्याय में पहला पदार्थ-संग्रह-प्रकरण समाप्त

दूसरा

पिण्डोत्पत्ति-प्रकरण

नाद

गीत और वाद्य नादात्मक हैं क्योंकि नाद की अभिव्यक्ति से ही ये रमणीयता को प्राप्त होते हैं। इन दोनों का अनुकरण करने वाला नृत्य भी नादात्मक है अतः गीत, वाद्य और नृत्य ये तीनों ही नादात्मक हैं। केवल ये तीनों ही नहीं अपितु सम्पूर्ण जगत ही नादात्मक है क्योंकि नाद से वर्ण, वर्ण से पद और पद से वाक्य की अभिव्यक्ति होती है। यह वाणी का व्यवहार नादाधीन है। (१,२)

नाद के दो प्रकार हैं—आहत और अनाहत। ये दोनों प्रकार का नाद पिण्ड में प्रकाशित होता है अतः पिण्ड का वर्णन किया जाता है। (३)

ब्रह्मस्वरूप

चिदानन्द, स्वयंज्योति, निरंजन, ईश्वर, लिंग (जिसमें प्रपंच का लय हो जाय), अद्वितीय, अज, विभु, निर्विकार, निराकार, सर्वेश्वर, अनश्वर, सर्वज्ञ और सर्वशक्ति जो ब्रह्म है उसके अंश जीव हैं। (४,५)

जीवस्वरूप

जिस प्रकार तेजरूप अग्नि के अंश, काष्ठ-तृण तथा मणि आदि उपाधि से युक्त स्फुलिंग (चिनगारी) कहलाते हैं, उसी प्रकार अनादि अविद्या-उपहत-अंश जीव कहलाते हैं। (६)

सुख-दुःखप्रद पुण्य-पापरूप अनादि कर्मों से सम्बद्ध उन जीवों को मनुष्य आदि देह और आयु तथा भोग प्रत्येक जन्म में प्राप्त होते हैं। उन स्थूल देहधारी जीवों का सूक्ष्म लिंग-शरीर भी होता है जो मोक्ष-पर्यन्त अक्षय माना गया है। (७,८)

सृष्टिक्रम

यह लिंग-शरीर सूक्ष्मभूत इन्द्रिय-प्राण-अवस्थात्मक है।

अज (परमात्मा) जीवों के उपभोगार्थ इस जगत् की सृष्टि करता है और उनकी विश्रान्ति के लिए संहार कर देता है। इस प्रकार यह सृष्टि-संहार की प्रवाह-नित्यता मानी गई है। (९,१०)

जीव आत्मा से भिन्न नहीं है और यह आत्मा जो स्वयं की शक्ति से जगत् का सृजन कर रहा है, जगत् से अभिन्न है, जैसे कि सुवर्ण और कुण्डल में कारण रूपेण अभेद है। (११)

अन्य (वेदान्तियों) के मत में इस जगत की उत्पत्ति अविद्या से होती है जैसे रज्जु में सर्प अर्थात् यह प्रपंच अविद्याकल्पित ब्रह्मविवर्त्त (असत) है। (१२)

आत्मा से आकाश, आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल और जल से पृथ्वी उत्पन्न हुई। यह पंचभूतात्मक विराट का शरीर है। (१३)

ब्रह्म (ईश्वर) ने ब्रह्मा का सृजन किया और उसे वेद देकर वेद-शब्दों द्वारा भौतिक सृष्टि का सृजन कराया। (१४)

उन (ईश्वर) की आज्ञा से ब्रह्मा ने प्रजापतियों की मानस सृष्टि की। उन (प्रजापतियों) से रैतस-सृष्टि हुई। (१५)

यह रैतस-सृष्टि स्वेदज, उद्भेदज, जरायुज तथा अण्डज-भेद से चार प्रकार की है। यूकादि स्वेदज, लतादि उद्भेदज, मनुष्यादि जरायुज और पक्षी आदि अण्डज हैं। इन देहों में मनुष्य देह ही नादोपयोगी है अतः उसीका वर्णन किया जाता है। (१६,१७)

मनुष्य-देह

क्षेत्रज्ञ आकाश में स्थित होता है। आकाश से वायु में आता है, वायु से धुँआ, धुँआ से अभ्र (बिना पानी का बादल) तथा अभ्र से मेघ (जलवत) में आता है। (१८)

आहुतियों से तृप्त तथा ग्रीष्म में ग्रस्तरस भानु, मेघ में जल उत्पन्न कर देता है। जब मेघ द्वारा जल-वर्षण होता है तब जीव वनस्पति एवं औषधियों में अज्ञात रूप से प्रवेश कर जाता है। (१९,२०)

औषधियों से अन्न उत्पन्न होता है। पुरुषों द्वारा भक्षण करने से वह अन्न शुक्लता (वीर्य रूपी ओज) को प्राप्त होता है। जब स्त्री-पुरुष

का समागम होता है तब वह शुक्ल (वीर्य रूपी ओज) स्मरमंदिर (योनि रूपी गर्भस्थान) में पहुंच जाता है। (२१)

यदि वह (शुक्ल) शुद्ध हो तो आर्त्तव के साथ गर्भाशय में प्रविष्ट होकर जीव–कर्म प्रेरित गर्भ के रूप में परिवर्तित हो जाता है। (२२)

प्रथम मास में वह द्रव अवस्था में रहकर कलल कहलाता है। द्वितीय में घन–पिण्ड, पेशी, (या) घन अर्बुद यह क्रम से पुरुष, स्त्री और नपुंसक की प्राग् अवस्था जाननी चाहिए। (२३)

तीसरे मास में पाँच अंकुर अर्थात् दो हाथ, दो पैर और सिर उत्पन्न होते हैं। इसके बाद दाढ़ी, मूँछ तथा दन्त आदि जन्मान्तर-संभव भागों को छोड़कर सूक्ष्म अङ्ग–प्रत्यङ्ग हो जाते हैं। (२४,२५)

यह जरायुज (मनुष्य) का साधारण स्वभाव है। अन्य (अङ्गों की विषमता आदि) विकृति कहलाती है। चौथे मास में इन अङ्ग-प्रत्यङ्गों का स्पष्ट रूप प्रगट होने लगता है और शौर्य आदि पुरुषभाव, भीरुत्व आदि स्त्रीभाव तथा संकीर्ण आदि नपुंसकभाव की उत्पत्ति हो जाती है। (२६,२७)

मातृ–हृदय से सम्बद्ध गर्भ–हृदय विषयों की इच्छा रखता है अतः गर्भ–वृद्धि के लिए माता की हृदयस्थ–अभिलाषा को पूर्ण करना चाहिए। (२८)

ऐसी स्त्री को बुद्धिमानों ने द्विहृदया (दो हृदय धारण करने वाली) कहा है। यदि गर्भिणी का मनोरथ पूर्ण न किया जाय तो गर्भ में विकृति उत्पन्न हो सकती है। (२९)

माता की जो इच्छा पूर्ण न होगी उसका प्रभाव पुत्र पर पड़ सकता है। यदि राजदर्शन के लिए गर्भिणी की अभिलाषा है और वह उसे प्राप्त हो जाय तो गर्भस्थ–शिशु अर्थवान एवं भोगी होगा। (३०)

यदि अलंकारों में माता की रुचि है तो ललित, तपस्वियों के आश्रम में रुचि है तो धर्मनिष्ठ, देव–दर्शन में रुचि है तो भक्त, सर्प-दर्शन में रुचि है तो हिंसक, गोधा–भक्षण में रुचि है तो निद्रालु, गो–माँस में रुचि है तो बली और यदि भैंसा के माँस में रुचि है तो शिरीष की तरह लाल नेत्र वाला पुत्र उत्पन्न होता है। (३१,३२)

पाँचवें मास में चित्त प्रबुद्ध हो जाता है और (बच्चे के) माँस तथा रक्त बनने लगते हैं। छठवें मास में अस्थि, स्नायु, नख, केश तथा रोम पृथक्-पृथक् प्रगट होने लगते हैं तथा बल और वर्ण की वृद्धि होने लगती है। सातवें मास में अङ्ग पूर्ण होने लगते हैं। पालि (जंघाओं) से आच्छादित हाथों द्वारा कर्ण-छिद्रों को बन्द करके गर्भ की स्थिति से भयभीत वह बालक पूर्व-अनुभूत यातनाओं का स्मरण करता हुआ, मोक्ष के उपाय का प्रयत्न करता है। आठवें मास में त्वचा, स्मृति और ओज उत्पन्न होते हैं। ओज हृदय में स्थित रहता है। यह शुद्ध तथा किंचित पीतरक्त वर्ण वाला होता है। प्राणधारण में यह ओज ही निमित्त है तथा कभी माता और कभी गर्भ की ओर यह घूमता रहता है। (३३-३७)

यदि आठवें मास में ओज बालक को छोड़ दे तो वह जीवित नहीं रहता। संस्कारवश कुछ काल तक उसकी स्थिति खण्डित अङ्ग की तरह रह सकती है। (३८)

नवें मास से प्रसवकाल प्रारम्भ हो जाता है। माता की रसवाहक नाड़ी से सम्बद्ध गर्भस्थ शिशु की नाभिस्थ परा नामक नाड़ी, माता के आहार-रस द्वारा बालक को पोषित करती है। ललाट पर अञ्जलि बांध कर यह बालक माता की पृष्ठभूमि में स्थित रहता है। पुरुष दक्षिण कोख में और स्त्री माता की वाम कोख में तथा नपुंसक मध्य में स्थित रहता है। (३९-४१)

प्रबल प्रसूति-वायु के द्वारा उस बालक का सिर नीचे की ओर कर दिया जाता है और योनि-मार्ग द्वारा वह व्यथित जीव बाहर निकाल दिया जाता है। नवप्रसूत वह बालक पूर्व जन्म के संस्कार से स्तन की ओर प्रवृत्त होता है अतः जीव की नित्यता सिद्ध होती है। (४२,४३)

भाव-भेद

मातृज, पितृज, रसज, आत्मज, सत्वज तथा सात्म्यज (संस्कारज), ये ६ प्रकार के भाव होते हैं। (४४)

मृदु, शोणित, मेद, मज्जा, प्लीहा, यकृत, गुद, हृदय और नाभि आदि भाव मातृज कहलाते हैं। (४५)

दाढ़ी, मूँछ, लोम, केश, स्नायु, शिरा, धमनी, नख, दाँत और शुक्ल ये पितृज भाव हैं। (४६)

शारीरिक विकास, वर्ण, वृद्धि, सुषुप्ति, बल, स्थिति, लोलुपता का अभाव तथा उत्साह आदि भाव रसज हैं। (४७)

इच्छा, द्वेष, सुख, दुख, धर्म, अधर्म, भावना, प्रयत्न, ज्ञान, आयु और इन्द्रिय ये आत्मज भाव हैं। (४८)

इन्द्रिय-भेद

कान, त्वचा, नेत्र, जिह्वा तथा नाक ये पाँच ज्ञानेन्द्रिय हैं। शब्द, स्पर्श, रूप, रस तथा गन्ध ये क्रम से इनके (ज्ञानेन्द्रियों के) विषय हैं।

वाणी, हाथ, पैर, गुदा और उपस्थ ये कर्मेन्द्रिय हैं। वचन, आदान, गमन, विसर्ग और रत ये क्रम से इनके विषय हैं। मन तथा बुद्धि ये दो अन्तःकरण हैं। सुख और दुःख मन के विषय हैं। स्मृति, भ्रान्ति, विकल्प और अध्यवसाय ये बुद्धि के विषय हैं।

किसी मत में इन्द्रियाँ अभौतिक हैं और किसी मत में भौतिक।

गुण-भेद

सत्वज (स्वभावज) भाव, गुण-भेद से तीन प्रकार के हैं। आस्तिक, शुद्ध तथा धर्माभिरुचि, ये सात्विक भाव हैं। काम, क्रोध, मद आदि राजसी भाव हैं। निद्रा, आलस्य, प्रमाद, आर्ति और छल तामसी भाव हैं। (४९-५५)

सात्म्यज भाव के अन्तर्गत आरोग्य, स्वस्थ-इन्द्रिय एवं अनालस्य आते हैं। शरीर भूतात्मक होने के कारण गुणग्राही है। (५६)

प्राण-भेद

शब्द, श्रोत्र, सुषिरता, पृथक् अवस्थान, सूक्ष्मबोध, तथा बिल(छिद्र) इन गुणों को शरीर आकाश से ग्रहण करता है। स्पर्श, त्वचा, उत्क्षेपण, अवक्षेप,

आकुंचन, प्रसारण, गमन, रूक्षता, प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान, नाग, कूर्म, कृकर, देवदत्त और धनंजय ये १० प्राण तथा लाघव, वायु से ग्रहण करता है। (५७--६०)

इन सब में प्राण मुख्य है। यह नाभिकन्द से नीचे स्थित है। मुख, नासिका–छिद्र, नाभि और हृदय-पंकज में इसका विचरण होता है। शब्दोच्चारण, निःश्वास, उच्छ्वास और कास इनका कारण (प्राण) है। (६१)

गुदा, मेढ्, कटि, जंघा, उदर, नाभिकन्द, वंक्षणी, उरु तथा जानु इनमें 'अपान' का निवास है। मूत्र, शौच आदि का त्याग इसका कर्म है।

नेत्र, श्रोत्र, गुल्फ, कटि तथा घ्राण इनमें 'व्यान' स्थित रहता है। प्राण और अपान का ग्रहण, धारण तथा निःसरण इसका कर्म है।

'समान' सम्पूर्ण शरीर में स्थित रहता है, जो ७२ हजार नाड़ियों में विचरण और रस–संचार करता हुआ देह को पुष्ट करता है। (६२-६५)

दोनों पैर, दोनों हाथ तथा शरीर–सन्धियों में 'उदान' रहता है। उन्नयन, उत्क्रमण (मरण) तथा हिचकी आदि इसके कर्म हैं। (६६)

'नाग' आदि पाँच प्राण त्वचा तथा अन्य धातुओं में स्थित रहते हैं। उद्गार,निमेष,क्षुधा,तन्द्रा तथा शोथ आदि क्रम से इनके कार्य हैं। (६७)

लोचन, रूप, पित्त, पाक, प्रकाश, अमर्ष, तीक्ष्णता, उष्ण, ओज, तेज, शूरता, मेधा इन सबको (शरीर) अग्नि से ग्रहण करता है।(६८,६९)

रसना, रस, शीतलता, स्नेह, द्रव, स्वेद, मूत्र आदि, मृदुता इनको जल से ग्रहण करता है। (७०)

घ्राण, गन्ध, स्थैर्य, धैर्य, गौरव, श्मश्रु, केश, नख, दन्त, अस्थि और कर्कश इनको वायु से ग्रहण करता है।

वातादि, धातु और व्योम आदि सभी देह के कारण हैं। (७१)

देह-भेद

सात्विक देह सात प्रकार का होता है। यह ब्रह्मा, इन्द्र, यम, वरुण, कुबेर, ऋषि तथा गन्धर्वों का होता है। (७२)

राजस देह छः प्रकार का होता है। यह पिशाच, राक्षस, असुर, पक्षी, सर्प तथा प्रेतों का होता है। (७३)

तामस (देह) तीन प्रकार का होता है। यह पशु, मत्स्य तथा वृक्षों का होता है। ग्रन्थ-विस्तार के भय से इनके लक्षण यहाँ नहीं कहे जाते। (७४)

पिण्ड के ६ अङ्ग होते हैं—शिर, दो पैर, दो हाथ तथा मध्य। सम्पूर्ण प्रत्यंगों को भी कहता हूँ। (७५)

अंग-प्रत्यंग

सात त्वचा और सात कला होती हैं। ये स्नायु, श्लेष्म तथा जरायु से ढकी होती हैं। जठराग्नि से इनका पाक होता है। धातुओं के मध्य में इनकी स्थिति होती है। ये कठोर एवं धातुओं की सीमा होती हैं। प्रथम त्वचा और कला, मांस को धारण करने वाली होती हैं तथा अन्य रक्त, मेद, श्लेष्म, शकृत्, पित्त और शुक्ल को धारण करती हैं। शिरा, धमनी, स्नायुओंत ये कीच में पंकज कन्द की तरह, मांस में उत्पन्न हो जाते हैं। (७६-७८)

त्वचा, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्ल ये सात धातुएँ हैं। जब जठराग्नि द्वारा पके हुए अन्न से रस बनता है तब उस रस से त्वचा और रक्त का निर्माण होता है। अन्य धातुएँ अपनी-अपनी कोषाग्नि द्वारा रक्तपाक के बाद क्रम से उत्पन्न होती हैं। (८०)

रक्त, श्लेष्मा, आम, पित्त, पक्व-रस, मरुत और मूत्र ये सात आशय हैं। (८१)

स्त्रियों के (शरीर में) आठवाँ गर्भाशय अधिक होता है। शुद्ध कफ और रक्त द्वारा उत्पन्न, पंकज की आकृति वाला हृदय-सुषिर अधोमुख होकर यकृत तथा प्लीहा के मध्य में स्थित है और यह चेतन का स्थान है। जब वह तम से आच्छादित होता है तब वह (पंकज) मुकुलित हो जाता है। जब हृदय-पंकज विकसित होता है तब जीव जागृति का अनुभव करता है।

निद्रा दो प्रकार की होती है—स्वप्न और सुषुप्ति। जब बाह्य इन्द्रियाँ हृदय में लीन हो जायँ और चित्त (मन) जाग्रत अवस्था में

रहता हो तो उसे स्वप्न कहते हैं। यदि मन प्राण में लीन हो जाय तो उसे सुषुप्ति कहते हैं। (८२–८५)

जीव की परमात्मा में लीन-अवस्था को आत्मा का शयन कहते हैं। श्रवण,नेत्र,नासिका,वदन, गुदा और लिंग ये ६ स्रोत बाह्य-मलवाहक हैं। स्त्री के तीन स्रोत अधिक होते हैं—स्तन (दोनों) तथा भग। (८६,८७)

अस्थि, स्नायु, शिरा तथा मांस इनमें १६ जाल स्थित होते हैं। हाथ, पैर, गर्दन तथा लिंग में ६ कूर्चा (ग्रन्थियाँ) होती हैं। (८८)

पृष्ठवंश के दोनों पार्श्व में चार मांस–रज्जु होते हैं। पाँच सीवन होती हैं, दो सिर में तथा बाकी जिह्वा और लिंग में। (८६)

१४ या १८ अस्थि–राशियाँ होती हैं। शरीर में अस्थियों की संख्या ३६० है। (६०)

वलय, कपाल, रुचक, तरुण और नलिका ये ५ प्रकार की अस्थियाँ विद्वानों ने कही हैं। (६१)

धन्वन्तरि ने केवल ३०० अस्थियाँ बताई हैं। अस्थि–संधियाँ २१० बताई हैं। (६२)

कोरका, प्रतरास्तुन्ना, सीवनी, उलूखला, सामुद्गा, मंडला, शंखा-वर्त्ता और वायसतुंडका ये ८ प्रकार की अस्थि-सन्धियाँ मुनिजनों ने बताई हैं। पेशी,स्नायु तथा शिरा-सन्धियाँ दो हजार बताई हैं।(६३,६४)

६०० स्नायु होते हैं। ये ४ प्रकार के कहे गए हैं—प्रतान, सुषिर, कण्डर तथा पृथुल। (६५)

जिस प्रकार अधिक बन्धन में बाँधी गई नौका जल में बोझ धारण कर सकती है, उसी प्रकार स्नायुबद्ध शरीर भी अधिक कार्य (धारण) कर सकता है। (६६)

विद्वानों ने शरीर में स्थित ५०० पेशियाँ बताई हैं। स्त्रियों में ये २० अधिक होती हैं; १० स्तनों में और १० योनि में। इनका विकास यौवनकाल में होता है। दो (पेशियाँ) योनि के अन्दर, दो बाहर और तीन गर्भ-मार्ग को जाने वाली होती हैं। (६७,६८)

योनि, शंख की नाभि के आकार वाली होती है। इसमें तीन आवर्त्त होते हैं। तीसरे आवर्त्त पर पित्त और पक्वाशय के मध्य में गर्भाशय होता है। वहाँ रोहित नाम के मत्स्य के समान शुक्ल-आर्त्तव में प्रवेश करने वाली तीन पेशियाँ प्रच्छादक मानी गई हैं। (९९,१००)

ओज का वाहन करने वाली हृदयाश्रित मूल-शिराएँ १० हैं। अंगुल तथा अंगुलदल और यव तथा यवदल तक जाकर द्रुम दल के समान जब सीवनी विस्तृत होती हैं तब उनके ७०० भेद हो जाते हैं। (१०१-१०३)

शार्ङ्गदेव के कथनानुसार उन (सीवनी) में से २ जिह्वा में स्थित हैं और २ वाणी तथा रस के ज्ञान में कारण हैं। २ घ्राण में, २ दृष्टि में और २ स्रोत में बताई गई हैं। रसवाहिनी धमनी २४ हैं। (१०४-१०५)

इनसे देह की इस प्रकार वृद्धि होती है जैसे कुल्याओं (गूलों) से खेत की। चक्र की नाभि में जैसे आरा होते हैं उसी प्रकार ये सब नाभि में स्थित हैं। (१०६)

१० ऊपर तथा १० नीचे और ४ तिरछी (धमनियाँ) विस्तृत हैं। जो ऊपर गई हैं वे हृदय को प्राप्त होकर पृथक्-पृथक् तीन प्रकार विस्तृत हो जाती हैं। (१०७)

दो-दो (धमनियाँ)वात,पित्त,कफ और रस को निःसृत करती हैं और दो-दो शब्द, स्पर्श, रूप, रस तथा गन्ध को प्राप्त हो जाती हैं। (१०८)

दो-दो (धमनियाँ) भाषण,घोष, निद्रा, बोध तथा रोदन को उत्पन्न करती हैं और दो मनुष्य में शुक्ल और स्त्री में दुग्ध उत्पन्न करती हैं। (१०९)

जो नीचे की ओर गई हैं वे तीन प्रकार की हैं और पृथक् पक्वाशय में स्थित हैं। इनमें से प्रथम १० वातादि को पूर्ववत प्रवृत्त करती हैं।(११०)

दो धमनियाँ भक्षित अन्न को जल के आश्रय से वहन करती हैं। दो-दो जल, मूत्र तथा बल को वहन करती हैं और दो नारी के आर्त्तव को वहन करती हैं। (१११)

दो (धमनियाँ) श्रोतों को और दो स्थूल आँतों से युक्त होकर मल का निष्कासन करती हैं। आठ, स्वेद को बाहर निकालती हैं।

तिरछी (धमनियों) की संख्या बहुत है। इनके मुख्य स्वेद-मुक्ति के लिए रोम-कूपों में स्थित हैं और इन्हीं से लेपन किए हुए रस अन्दर प्रविष्ट हो जाते हैं। (११२-११३)

जीव के मर्मस्थान १०७ हैं। रोम की संख्या साढ़े तीन करोड़ तथा श्मश्रु की तीन लाख है। (११४)

स्रोत, शिरा, श्मश्रु, केश, रोम इन सभी की संख्या ५४ करोड़ साढ़े सड़सठ लाख है। (११५)

अब जलादि का मान बताते हैं। जल १० अंजलि, रस ६ अंजलि, रक्त ८ अंजलि, मल ७ अंजलि, कफ ६ अंजलि, पित्त ५ अंजलि, मूत्र ४ अंजलि, वसा ३ अंजलि, मेद २ अंजलि, मज्जा १ अंजलि तथा शिरोमज्जा-श्लेष्मसार और बल आधी अंजलि है (११६-११८)

यह प्रत्यंगों का संक्षेप से वर्णन है। विस्तारपूर्वक हमारे रचे हुए 'अध्यात्मविवेक' नामक ग्रन्थ में देखना चाहिए। (११९)

चक्र तथा नाड़ियाँ

गुदा और लिंग के मध्य में चार दलों वाला 'आधार' चक्र है। (इसके) ईशान आदि दिक् कोणों में परमानन्द,सहजानन्द,वीरानन्द तथा योगानन्द क्रम से फल हैं। ब्रह्मशक्ति-कुण्डलिनी आधार पंकज (चक्र) पर स्थित है। यदि यह ब्रह्म-रंध्र तक सीधी पहुंच जाय तो मोक्ष प्राप्त हो जाय। छः दलों वाला चक्र स्वाधिष्ठान लिंग मूल में स्थित है। इसके पूर्व आदि दलों में प्रश्रय, क्रूरता, गर्वनाश, मूर्च्छा,अवज्ञा तथा अविश्वास क्रम से फल हैं और यह कामशक्ति का आश्रय है। (१२०-१२३)

नाभि में दस दलों वाला 'मणिपुर' नामक चक्र है। सुषुप्ति, तृष्णा, ईर्ष्या, पिशुणता, लज्जा, भय, घृणा, मोह, कलुषता और विषाद ये पूर्व आदि दलों में स्थित हैं।

हृदय में १२ दल वाला 'अनाहत' नाम का चक्र है जो प्रणवाकृति-शिव का पूजा-स्थान है। निश्चलता, वितर्क, पश्चाताप, आशा, प्रकाश,

चिन्ता, समीहा (अनिष्ट निवृत्ति की इच्छा) समता, दम्भ, विकलता, विवेक और अहंकार ये पूर्व आदि दलों के क्रम से फल बताए हैं।

कंठ में भारती (सरस्वती) का स्थान १६ दल वाला 'विशुद्ध' नामक चक्र है। प्रणव, उद्गीथ, हुँफड, विषड, स्वधा, स्वाहा, नमः, अमृत, सप्त स्वर और विष ये १६ फल (विशुद्ध चक्र के) पूर्व आदि पत्रों (दलों) में स्थित हैं (१२४-१३०)

घण्टिका (जिह्वा मूल) में १२ दल वाला 'ललना' नामक चक्र है। मद, मान, स्नेह, शोक, खेद, लोभ, अरति, सम्भ्रम, ऊर्मि, श्रद्धा, संतोष और दक्षता ये 'ललना' चक्र के पूर्व दलों में फल हैं।

भ्रू-मध्य में तीन दलों वाला 'आज्ञा' नामक चक्र है। यहाँ चक्र से सत्व, रज तथा तम का आविर्भाव है। इसके बाद ६ दलों वाला 'मनश्चक्र' है। इसके पूर्व आदि दलों में स्वप्न, रसोपभोग, घ्राण, रूपोपलम्भन, स्पर्शन और शब्दबोध फल हैं। (१३१-१३५)

इसके बाद १६ दल वाला 'सोम' चक्र है। कृपा, क्षमा, आर्जव, धैर्य, वैराग्य, धृति, सम्मद (हर्ष), हास्य, रोमांच, ध्यानाश्रु, स्थिरता, गाम्भीर्य, उद्यम, निर्मलता, उदारता तथा एकाग्रता ये फल क्रम से पूर्व आदि दलों पर जीव को उपलब्ध होते हैं। (१३६-१३८)

ब्रह्मरन्ध्र में अमृत को धारण करने वाला हजार दलों वाला (सहस्रार) चक्र है। यह सुधा-धाराओं से शरीर का पोषण करता है। (१४६)

अनाहत चक्र के प्रथम, आठवें, ग्यारहवें और बारहवें दल पर स्थित जीव, गीत आदि की सिद्धि को प्राप्त करता है। चौथे, छठवें और दसवें दल पर स्थित होने पर गीत आदि की सिद्धि नष्ट हो जाती है। विशुद्ध चक्र के ८ वें, ९ वें, १० वें, ११ वें, १२ वें, १३ वें, १४ वें तथा १५ वें दल पर स्थित जीव को गीत आदि की सिद्धि उपलब्ध होती है तथा १६ वें दल पर वह (सिद्धि) नष्ट होती है।

ललना चक्र के १० वें तथा ११ वें पत्र (दल) पर स्थित जीव को गीत आदि की सिद्धि प्राप्त हो जाती है। पहले, चौथे तथा पांचवें दल

को (सिद्धि का) नाशक बताया है। ब्रह्मरंध्र में स्थित जीव अमृत-निमग्न जैसा प्रसन्न तथा संतुष्ट होकर गीत आदि की सिद्धि उपलब्ध करे। इन चक्रों के शेष पत्रों पर स्थित जीव, गीत आदि की सिद्धि को कभी उपलब्ध नहीं कर सकता। (१४०-१४४)

आधार-चक्र से २ अंगुल ऊपर और लिंग से २ अंगुल नीचे एक अंगुल प्रमाण का स्वर्ण-वर्ण वाला (चक्र) देह के मध्य प्रदेश में है। वहां एक पतली अग्निशिखा है। उस चक्र से ६ अंगुल दूर देह का कन्द है। वह ऊँचाई तथा लम्बाई में ४ अंगुल प्रमाण वाला है। उसी का नाम पूर्वजों ने ब्रह्मग्रन्थि कहा है। उसके मध्य में १२ दल वाला नाभिचक्र है। वहां यह जीव तन्तुजाल में स्थित मकड़ी की तरह घूमता है। सुषुम्ना से होकर यह ब्रह्मरन्ध्र का आरोहण तथा अवरोहण करता है। प्राण में समहित इस जीव की स्थित रज्जु में विषम-नर्तक की भाँति हो जाती है। (१४५-१४६)

सुषुम्ना के चारों ओर व्याप्त नाड़ियाँ ब्रह्मरंध्र-पर्यन्त ब्रह्म-ग्रन्थि को ग्रथित करके शरीर का विस्तार करती हैं (१५०)

उन नाड़ियों में १४ प्रधान हैं यथा—सुषुम्ना, इडा, पिंगला, कुहू, सरस्वती, गान्धारी, हस्तिजिह्वा, वारुणी, यशस्विनी, विश्वोदरा, शंखिनी, पूषा, पयस्विनी, अलम्बुसा। इनमें प्रथम तीन (नाड़ियाँ) मुख्य हैं। इन तीनों में माया-शक्ति-रूपिणी मुक्तिदाता सुषुम्ना ही श्रेष्ठ है। (१५१-१५३)

उस (ब्रह्मग्रन्थि) के मध्य में क्रम से बायीं तथा दायीं ओर इडा और पिंगला (नाड़ियाँ) स्थित हैं। जब ये चलती हैं तो इन्हें चन्द्र, सूर्य भी कहा जाता है क्योंकि चन्द्रमा और सूर्य की तरह ये भी काल-ज्ञान में कारण हैं। सुषुम्ना, काल का नाश करने वाली है। इसके दोनों ओर क्रम से सरस्वती और कुहू नामक नाड़ियाँ हैं। (१५४,१५५)

इडा के पश्चिम (पीछे) तथा पूर्व (अग्रिम) भाग में गान्धारी और हस्त-जिह्विका तथा इसी प्रकार पिंगला के पश्चिम और पूर्व भाग में पूषा और यशस्विनी नाड़ियाँ स्थित हैं। (१५६)

कुहू और हस्तजिह्वा के मध्य में विश्वोदरा तथा कुहू और यशस्विनी के मध्य में वारुणी नामक नाड़ियाँ स्थित हैं। (१५७)

ऊषा और सरस्वती के मध्य में पयस्विनी तथा गान्धारिका और सरस्वती के मध्य में शंखिनी (नाड़ी) स्थित है। (१५८)

कन्दमध्य में अलम्बुसा नाड़ी है। इन नाड़ियों में इडा और पिंगला क्रम से बायीं तथा सीधी-नासिका-पर्यन्त और कुहू लिंग-पर्यन्त है। (१५९)

सरस्वती जिह्वा-पर्यन्त, गांधारी पृष्ठ-प्रदेश-पर्यन्त, हस्तजिह्वा बाएँ नेत्र से लेकर बाएँ पैर के अँगूठे तक, वारुणी सम्पूर्ण प्रदेश में, यशस्विनी अँगूठा से लेकर दक्षिण पैर तक तथा विश्वोदरा अखिल देह में स्थित रहती है। (१६०-१६१)

शंखिनी बाएँ कान-पर्यन्त, ऊषा दक्षिण नेत्र-पर्यन्त, पयस्विनी दक्षिण कान तक तथा अलम्बुसा गुद-मूल तक स्थित है। (१६२)

मल-संचय से युक्त ऐसे देह में बुद्धिमान लोग उपायों द्वारा भोग-मोक्ष को प्राप्त कर लेते हैं। सगुण ध्यान से भोग और निर्गुण ध्यान से मुक्ति होती है। ध्यान, चित्त की एकाग्रता का परिणाम है जो मनुष्यों के लिए सुलभ नहीं अतः गुरु--उपदिष्ट मार्ग से सहज-उपाय-अनाहत-नाद की उपासना करते हैं। उस अनाहत नाद की उपासना रंजक नहीं इसलिए श्रुति द्वारा अखिल गेय को विस्तार देने वाले लोकरंजक और भवभंजक आहतनाद की उत्पत्ति तथा श्रुति आदि की कारणता का वर्णन करेंगे। (१६३-१६७)

संगीतरत्नाकर के प्रथम

स्वरगत अध्याय में दूसरा पिण्डोत्पत्ति-प्रकरण समाप्त

तीसरा

नाद, स्थान, श्रुति, स्वर, जाति, कुल, देवता, ऋषि, छन्द तथा रस-प्रकरण

नाद

मैं उस आनन्दस्वरूप नादब्रह्म की उपासना करता हूँ जो अद्वितीय, समस्त भूतों में चैतन्य एवं जगत रूप में विवर्तित है। (१)

नादोपासना से ब्रह्मा, विष्णु और महेश स्वयं उपासित होजाते हैं क्योंकि ये उस (नाद) से अभिन्न हैं। (२)

विवक्षमाण आत्मा मन को प्रेरित करता है तथा मन जठराग्नि को ताड़ित करता है। वहाँ ब्रह्मग्रन्थि में स्थित वायु, क्रम से ऊर्ध्व पथ में विचरण करता हुआ नाभि, हृदय, कण्ठ, मूर्द्धा तथा मुख में ध्वनि उत्पन्न करता है। (३–४)

नाद पाँच प्रकार का है यथा—अतिसूक्ष्म, सूक्ष्म, पुष्ट (व्यक्त), अपुष्ट (अव्यक्त) तथा कृत्रिम। यह पाँच स्थानों (नाभि, हृदय, कण्ठ, मूर्द्धा तथा मुख) में स्थित है। (५)

'नकार' शब्द का अर्थ है 'प्राण' और 'दकार' शब्द का अर्थ है 'अग्नि'। प्राण और अग्नि के संयोग से अभिव्यक्त होने के कारण इसे नाद कहते हैं। व्यवहार (गान) में यह तीन प्रकार का कहा जाता है—हृदय में मन्द्र, कण्ठ में मध्य तथा मूर्द्धा में तार; जो उत्तरोत्तर द्विगुण है। (६–७)

श्रुति

इस नाद के २२ भेद हैं जिन्हें 'श्रुति' कहते हैं। हृदय में ऊर्ध्व-नाड़ी (इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना) से संलग्न २२ नाड़ियाँ हैं और इतनी ही तिरछी नाड़ियाँ हैं जिनमें वायु के आघात से उच्च-उच्चतर श्रुतियाँ उत्तरोत्तर उत्पन्न होती हैं। (८–९)

सारणा

इसी प्रकार कण्ठ तथा शिर में भी २२ श्रुतियां हैं। इनको प्रत्यक्ष करने के लिए हम दो वीणाएँ लेते हैं। इन दोनों वीणाओं तथा उनके

नाद में समानता होनी चाहिए। प्रत्येक वीणा में बाईस (बाईस) तार होने चाहिए । इनमें से पहली मन्द्रतम (गंभीरतम) स्वर में मिला लेनी चाहिए तथा दूसरी उससे कुछ ऊँची मिली हो। (प्रथम एवं दूसरे तार की) श्रुतियों (ध्वनियों) के मध्य में अन्य ध्वनि न सुनाई देने के कारण निरंतरता हो। (१०-१२)

वे तंत्रियाँ (तार) उच्चोच्च (उत्तरोत्तर तीव्र) ध्वनि वाली होनी चाहिए। इनसे उत्पन्न नाद श्रुति कहलाता है। दोनों वीणाओं पर स्वरों की स्थापना करनी चाहिए। यहाँ चौथी तंत्री (तार) पर चतुःश्रुति षड्ज, पाँचवीं से तीसरी (अर्थात् आरम्भ से सातवीं) तंत्री (तार) पर त्रिश्रुति ऋषभ, आठवीं से दूसरी (अर्थात् नवीं) तंत्री (तार) पर द्विश्रुतिक गांधार, दसवीं से चौथी (अर्थात् तेरहवीं) तंत्री (तार) पर चतुःश्रुति मध्यम, चौदहवीं से चौथी (अर्थात् सत्रहवीं) तंत्री (तार) पर चतुःश्रुति पंचम, अठारहवीं से तीसरी (अर्थात् बीसवीं) तंत्री (तार) पर त्रिश्रुति धैवत तथा इक्कीसवीं से दूसरी (अर्थात् बाईसवीं) तंत्री (तार) पर द्विश्रुति निषाद की स्थापना करनी चाहिए।

यहां एक वीणा ध्रुवा (अचल) होनी चाहिए और दूसरी चलवीणा हो जिसमें तंत्रियों (तारों) का सारण (यथास्थान खिसकाकर मिलाना) करना चाहिए। (१३-१७)

बुद्धिमानों को इस चलवीणा में सात स्वर (अपने मूल स्थान से) पहले तारों (अर्थात् क्रमशः तीसरे, छठवें, आठवें, बारहवें, सोलहवें, उन्नीसवें और इक्कीसवें) पर ले आना चाहिए। तब इस चलवीणा में ये स्वर ध्रुववीणा के स्वरों की अपेक्षा एक-एक श्रुति उतरे हुए होंगे।

इसी प्रकार अन्य सारणा भी करनी चाहिए। दूसरी सारणा में चलवीणा के गांधार और निषाद दो (दो) श्रुतियों के लय होने से ध्रुववीणा में स्थित ऋषभ और धैवत में क्रमशः प्रविष्ट हो जाते हैं। तीसरी सारणा में (चलवीणा के) ऋषभ-धैवत (ध्रुववीणा के) षड्ज-पंचम में प्रविष्ट हो जाते हैं। चौथी सारणा में (चलवीणा के) षड्ज-मध्यम-पंचम क्रमशः (ध्रुववीणा के) निषाद-गांधार-मध्यम में प्रविष्ट हो जाते हैं।

इस प्रकार इन चारों सारणाओं के परिणाम–स्वरूप ध्रुववीणा की श्रुतियों (अर्थात्–चौथी, सातवीं, नवीं, तेरहवीं, सत्रहवीं, बीसवीं और बाईसवीं) में बाईसों श्रुतियों के लीन होने से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि श्रुतियों की संख्या इतनी (अर्थात् २२) ही है। इसके बाद आकर्षण (तंत्री या स्वर को उतारना) न करे क्योंकि उससे स्वर की रंजकता नहीं रहती। (२१-२२)

स्वर

श्रुतियों से षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पंचम, धैवत, निषाद ये सात स्वर उत्पन्न होते हैं जिनकी अन्य संज्ञाएँ सा रे ग म प ध नि हैं।

श्रुति के पश्चात उत्पन्न होने वाला स्निग्ध, अनुरणनात्मक, स्वयं–रंजक नाद 'स्वर' कहलाता है। जब चौथी, सातवीं आदि श्रुतियां स्वर की उत्पत्ति में कारण हैं तो अन्य तीसरी आदि श्रुतियों को भी कारण कैसे माना जा सकता है ? (इसका उत्तर यही है कि) पूर्व श्रुतियों की गणना से ही चौथी आदि का निर्धारण संभव हो सकता है इसलिए पूर्व की श्रुतियां भी हेतु (स्वर का कारण) हैं। (२३-२७)

श्रुतिजातियाँ

दीप्ता, आयता, करुणा, मृदु और मध्या ये श्रुतियों की पाँच जातियाँ होती हैं। स्वर पर इन जातियों की स्थिति इस प्रकार है:—

दीप्ता, आयता, मृदु, मध्या—षड्ज
करुणा, मध्या, मृदु —ऋषभ
दीप्ता, आयता, —गान्धार
दीप्ता, आयता, मृदु, मध्या—मध्यम

मृदु, मध्या, आयता, करुणा —पञ्चम
करुणा, आयता, मध्या —धैवत
दीप्ता, मध्या —निषाद

इन जातियों के भेद बताते हैं—

तीव्रा, रौद्री, वज्रिका उग्रा —दीप्ता
कुमुद्वती, क्रोधा, प्रसारिणी, संदीपनी, रोहिणी —आयता
दयावती, आलापिनी, मदन्तिका —करुणा
मन्दा, रति, प्रीति, क्षिति —मृदु
छन्दोवती, रंजनी, मार्जनी, रक्तिका, रम्या, क्षोभिणी—मध्या

स्वरस्थिति

अब स्वर की स्थिति बताते हैं—

तीव्रा, कुमुद्वती, मंदा, छन्दोवती —षड्ज पर स्थित हैं
दयावती, रंजनी, रक्तिका —रिषभ " " "
रौद्री, क्रोधा —गान्धार " "
वज्रिका, प्रसारिणी, प्रीति, मार्जनी—मध्यम " " "
क्षिती, रक्ता, संदीपिनी, आलापिनी—पञ्चम " " "
मदन्ती, रोहिणी, रम्या —धैवत " " "
उग्रा, क्षोभिणी —निषाद " " "

श्रुतिवीणास्वरग्रामबोधिनी

चतुर्थसारणा	तृतीयसारणा	द्वितीयसारणा	प्रथमसारणा	चलवीणा	ध्रुववीणा	श्रुतिसंख्या	श्रुति नाम	श्रुतिजाति	शुद्धस्वर	विकृतस्वर और उनकी श्रुति-संख्या	षड्जग्राम	मध्यमग्राम	[illegible]
०	स	०	०	०	०	१	तीव्रा	दीप्ता		कैशिकनिषाद ३			नि
०	०	स	०	०	०	२	कुमुद्वती	आयता		काकलीनिषाद ४			
रि	०	०	स	०	०	३	मन्दा	मृदु		च्युतषड्ज २			स
०	रि	०	०	स	स	४	छन्दोवती	मध्या	षड्ज	अच्युतषड्ज २	स	स	
ग	०	रि	०	०	०	५	दयावती	करुणा					रि
०	ग	०	रि	०	०	६	रञ्जनी	मध्या					
०	०	ग	०	रि	रि	७	रतिका	मृदु	ऋषभ	विकृतऋषभ ४	रि	रि	
०	०	०	ग	०	०	८	रौद्री	दीप्ता					
म	०	०	०	ग	ग	९	क्रोधा	आयता	गांधार		ग	ग	
०	म	०	०	०	०	१०	वज्रिका	दीप्ता		साधारणगांधार ३			ग
०	०	म	०	०	०	११	प्रसारिणी	आयता		अन्तरगांधार ४			
०	०	०	म	०	०	१२	प्रीति	मृदु		च्युतमध्यम २			म
प	०	०	०	म	म	१३	मार्जनी	मध्या	मध्यम	अच्युतमध्यम २	म	म	
०	प	०	०	०	०	१४	क्षिति	मृदु					
०	०	प	०	०	०	१५	रक्ता	मध्या					
ध	०	०	प	०	०	१६	संदीपनी	आयता		विकृतपञ्चम ३,४		प	प
०	ध	०	०	प	प	१७	आलापिनी	करुणा	पञ्चम		प		
नि	०	ध	०	०	०	१८	मदन्ती	करुणा					ध
०	नि	०	ध	०	०	१९	रोहिणी	आयता					
०	०	नि	०	ध	ध	२०	रम्या	मध्या	धैवत	विकृतधैवत ४	ध	ध	
०	०	०	नि	०	०	२१	उग्रा	दीप्ता					
स	०	०	०	नि	नि	२२	क्षोभिणी	मध्या	निषाद		नि	नि	

(२८-३८)

स्वरप्रकार

ये (सप्त) स्वर मन्द्र, मध्य तथा तार–भेद से तीन प्रकार के हैं। विकृत अवस्था में ये स्वर १२ बताए हैं। (३९)

षड्ज द्विश्रुतिक होकर विकृत हो जाता है और उसके च्युत तथा अच्युत दो भेद हो जाते हैं।

जब निषाद काकली और साधारण हो जाता है तब ये (षड्ज के) दोनों भेद दिखाई पड़ते हैं। (४०)

षड्ज–साधारण होने पर षड्ज की अन्तिम श्रुति को जब ऋषभ ग्रहण करता है तब वह चतुःश्रुति होता हुआ, विकृत कहलाता है। (४१)

विकृत गान्धार के दो भेद होते हैं। मध्यम स्वर के साधारण होने पर जब मध्यम की पहली श्रुति को गान्धार ग्रहण कर लेता है तब वह त्रिश्रुति–विकृत और अन्तर होने पर चतुःश्रुति होता हुआ विकृत कहलाता है। (४२)

विकृत मध्यम, षड्ज की भाँति दो प्रकार का होता है। पंचम, मध्यम–ग्राम में त्रिश्रुति-विकृत होता है और कैशिक (मध्यम साधारण) में मध्यम की अन्तिम श्रुति को प्राप्त होकर चतुःश्रुति–विकृत होता है। धैवत, मध्यम ग्राम में चतुःश्रुति विकृत होता है। (४३,४४)

कैशिक(षड्ज-साधारण) होने पर जब निषाद षड्ज की प्रथम श्रुति पर अवस्थित होता है तब वह त्रिश्रुति-विकृत कहलाता है और जब काकली होता हुआ षड्ज की दो श्रुतियों को ग्रहण कर लेता है तब वह (निषाद) चतुःश्रुति-विकृत कहलाता है। इस प्रकार ये विकृत के १२ भेद हैं। सात स्वरों के साथ ये १९ हो जाते हैं। (४५)

मोर, चातक, बकरा, क्रौंच, कोकिल, मेंढक तथा हाथी ये क्रम से षड्ज आदि (सप्त) स्वरों का उच्चारण करते हैं। (४६)

स्वर चार प्रकार के होते हैं—वादी, सम्वादी, विवादी और अनुवादी। प्रयोग में जिसकी बहुलता हो उसे वादी कहते हैं। जिन दो स्वरों के

मध्य में, आधार-श्रुतियों को छोड़कर १२ अथवा ८ श्रुतियाँ हों तो वे स्वर परस्पर सम्वादी होते हैं।

निषाद और गान्धार अन्य स्वरों के विवादी होते हैं अथवा ऋषभ तथा धैवत के ही विवादी होते हैं अथवा निषाद-गांधार के ऋषभ-धैवत विवादी होते हैं। शेष स्वर अनुवादी होते हैं। (४७-४९)

वादी स्वर राजा कहलाता है। सम्वादी अनुसरण करने के कारण आमात्य (मन्त्री) और विवादी विपरीत होने से शत्रु के समान बताया है। राजा और मन्त्री का अनुसरण करने से अनुवादी सेवक के समान माना गया है। (५०,५१)

षड्ज गान्धार और मध्यम-स्वर देवताओं के कुल में, पंचम पितृ वंश में, ऋषभ और धैवत ऋषिकुल में तथा निषाद असुर वंश में उत्पन्न हुआ है। (५२)

षड्ज मध्यम तथा पंचम ब्राह्मण, ऋषभ तथा धैवत क्षत्रिय, निषाद और गान्धार वैश्य, अन्तर तथा काकली-स्वर शूद्र वर्ण के हैं। (५३)

रक्त, पिंजर (कुछ पीत), स्वर्ण, कुन्द (शुभ्र), असित (कृष्ण), पीत (पीला),कर्बुर (मिश्रित) ये क्रम से सातों स्वरों के वर्ण (रंग) हैं।(५४)

जम्बू, शाक, कुश, क्रौंच, शाल्मली, श्वेत तथा पुष्कर इन द्वीपों में क्रम से षड्ज आदि स्वरों का जन्म जानना चाहिए। (५५)

षड्ज के अग्नि, ऋषभ के ब्रह्मा, गान्धार के चन्द्रमा, मध्यम के विष्णु, पंचम के नारद तथा धैवत-निषाद के द्रष्टा तुम्बुरु हैं।

अग्नि, ब्रह्मा, सरस्वती, महादेव, लक्ष्मीपति, गणेश तथा सूर्य ये क्रम से षड्ज आदि स्वरों के देवता हैं। (५६,५७)

अनुष्टुप, गायत्री, त्रिष्टुप, बृहती, पंक्ति, उष्णिक् तथा जगती ये क्रम से षड्ज आदि स्वरों के छन्द हैं।

षड्ज और ऋषभ का वीर अद्‌भुत तथा रौद्र (रस) में, धैवत का वीभत्स तथा भयानक (रस) में,गान्धार और निषाद का करुण (रस) में तथा मध्यम व पंचम का हास्य और शृङ्गार (रस) में प्रयोग करना चाहिए। (५८,५९)

स्वर वर्ण-कुल आदि प्रदर्शक पट्टिका

स्वर	पशुपक्षी	कुल	वर्ण	रंग	द्वीप	ऋषि	देवता	छंद	रस
षड्ज	मोर	देव	ब्राह्मण	रक्त	जम्बू	अग्नि	अग्नि	अनुष्टुप	वीर, अद्भुत
ऋषभ	चातक	ऋषि	क्षत्रिय	पिंजर	शाक	ब्रह्मा	ब्रह्मा	गायत्री	तथा रौद्र
गांधार	बकरा	देव	वैश्य	स्वर्ण	कुश	चन्द्रमा	सरस्वती	त्रिष्टुप	करुण
मध्यम	क्रौंच	देव	ब्राह्मण	कुन्द	क्रौंच	विष्णु	महादेव	बृहती	हास्य तथा
पंचम	कोकिल	पितृ	ब्राह्मण	कृष्ण	शाल्मली	नारद	विष्णु	पंक्ति	शृङ्गार
धैवत	मेंढक	ऋषि	क्षत्रिय	पीत	श्वेत	तुम्बुरु	गणेश	उष्णिक्	वीभत्स व भयानक
निषाद	हाथी	असुर	वैश्य	मिश्रित	पुष्कर	तुम्बुरु	सूर्य	जगती	करुण

संगीतरत्नाकर के प्रथम
स्वरगत अध्याय में नाद, स्थान, श्रुति, स्वर, जाति, कुल, देवता, ऋषि, छन्द तथा रस नामक तीसरा प्रकरण समाप्त

चौथा

ग्राम, मूर्च्छनाक्रम, तान-प्रकरण

ग्राम

मूर्च्छना आदि का आश्रय स्वरसमूह 'ग्राम' कहलाता है। लोक में ये दो हैं—पहला षड्जग्राम तथा दूसरा मध्यमग्राम। इनके लक्षण कहे जाते हैं:—

पंचम जब अपनी चौथी श्रुति पर स्थित होता है तो 'षड्जग्राम' कहलाता है और जब वह (पंचम) अपनी उपान्त्य (तीसरी) श्रुति पर स्थित होता है तो उसे 'मध्यमग्राम' कहते हैं। अथवा, षड्जग्राम में धैवत त्रिश्रुति और मध्यम (ग्राम) में चतुःश्रुति होता है। (१,३)

ऋषभ और मध्यम की एक-एक श्रुति पर गांधार स्थित होजाय, पंचम की श्रुति पर धैवत और धैवत तथा षड्ज की श्रुति पर निषाद स्थित होजाय तो वह 'गांधार-ग्राम' कहलाता है, ऐसा मुनि नारद ने बताया है। यह ग्राम स्वर्गलोक में प्रचलित है, पृथ्वी पर नहीं। (४ ५)

षड्ज प्रारम्भिक एवं मुख्य स्वर है और इसके सम्वादी स्वर अधिक हैं, मध्यम स्वर अविलोपी है (इसका षाडव तथा औडुव में लोप नहीं होता), गांधार देवकुल में उत्पन्न होने से स्वर्गलोक में स्वरों का अग्रणी माना गया है अतः तीन (षड्ज, मध्यम तथा गांधार) ही ग्राम हैं। ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर क्रम से इन तीनों के देवता हैं। हेमन्त, ग्रीष्म तथा वर्षा में कल्याण के इच्छुक मनुष्यों को पूर्वाह्न, मध्याह्न तथा अपराह्न में इनका यथाक्रम गान करना चाहिए। (६,८)

मूर्च्छना

सात स्वरों का क्रम से आरोहण और अवरोहण 'मूर्च्छना' कहलाता है। ये दोनों ग्रामों (षड्ज तथा मध्यम) में सात-सात हैं। (९)

षड्जग्राम में पहली मूर्च्छना उत्तरमन्द्रा, दूसरी रजनी, तीसरी उत्तरायता, चौथी शुद्धषड्जा, पाँचवीं मत्सरीकृता, छठवीं अश्वक्रान्ता और सातवीं अभिरुद्गता है। (१०)

मध्यमग्राम में क्रमशः सौवीरी, हारिणाश्वा, कलोपनता, शुद्धमध्या, मार्गी, पौरवी तथा हृष्यका मूर्च्छनाएँ हैं। (११)

इनके लक्षण बताते हैं:—

मध्यस्थान पर स्थित षड्ज से षड्जग्राम की पहली उत्तरमन्द्रा मूर्च्छना उत्पन्न होती है और अन्य ६ मूर्च्छनाएँ क्रम से निषाद आदि मन्द्र-स्थानीय स्वरों से उत्पन्न होती हैं। (१२)

मध्यम ग्राम की पहली सौवीरी मूर्च्छना मध्यस्थान (वीणा के मध्य में स्थित अर्थात् मेरु और घुड़च के ठीक बीच में तार पर निकलने वाला स्वर) पर स्थित मध्यम से प्रारम्भ होती है। अन्य ६ मूर्च्छनाएँ मध्यम से नीचे स्थित गांधार इत्यादि स्वरों से (अवरोह क्रम से) प्रारम्भ होती हैं। अन्य मत में षड्ज के स्थान पर स्थित निषादादि स्वर से रजनी इत्यादि मूर्च्छनाएँ प्रारम्भ होती हैं तथा मध्यम के स्थान पर स्थित गांधार इत्यादि स्वर से हारिणाश्वा इत्यादि मूर्च्छनाएँ प्रारम्भ होती हैं। (१३,१४)

षड्जादि और मध्यमादि स्वरों का ऊपर की ओर (आरोह क्रम से) सारण करे। (अर्थात् रजनी इत्यादि में षड्ज के स्थान पर स्थापित निषाद इत्यादि स्वरों एवं हारिणाश्वा इत्यादि में षड्ज के स्थान पर स्थापित गांधार इत्यादि स्वरों के पश्चात् षड्ज इत्यादि और मध्यम इत्यादि स्वरों की 'सारणा' करे; तात्पर्य यही है कि उन-उन स्वरों को उन-उनकी संख्या के अनुसार श्रुत्यन्तरों तक पहुंचाकर स्थापित करे। (१५)

ये मूर्च्छनाएँ (प्रत्येक) चार प्रकार की हैं—शुद्धा, काकलीसहिता, सान्तरा तथा अन्तर काकली सहिता। इस प्रकार इनकी संख्या ५६ बताई है। (१६)

जब निषाद, षड्ज की दो श्रुतियों को ग्रहण करले तो वह (चतुःश्रुति होकर) 'काकली' कहलाता है और जब गांधार, मध्यम की दो श्रुतियों को ग्रहण कर लेता है तो वह (चतुःश्रुति होकर) 'अन्तर' कहलाता है। (१७)

दोनों ग्रामों में षड्ज तथा मध्यम की जितनी संख्या है उसी संख्या वाली मूर्च्छना जाननी चाहिए (अर्थात्–यदि किसी मूर्च्छना में षड्ज दूसरी संख्या पर स्थित हो तो उस मूर्च्छना को षड्जग्राम की दूसरी मूर्च्छना जानना चाहिए और इसी प्रकार मध्यमग्राम की मूर्च्छनाएँ मध्यम स्वर की संख्या से जाननी चाहिए)। (१८)

पहले दूसरे इत्यादि स्वर के आरम्भ से एक–एक मूर्च्छना सात–सात प्रकार की हो जाती है। इनमें अन्तिम स्वरों का उच्चारण करके फिर क्रम से पूर्व स्वरों का उच्चारण करे। ये मूर्च्छना–भेद कुल ३६२ हैं।

यक्ष, राक्षस, नारद, ब्रह्मा, नाग, अश्विनीकुमार और वरुण ये क्रम से षड्जग्राम की मूर्च्छनाओं के देवता हैं।

ब्रह्मा, इन्द्र, वायु, गन्धर्व, सिद्ध, शिव तथा सूर्य ये क्रम से मध्यम-ग्राम की मूर्च्छनाओं के देवता हैं। (१९–२१)

मुनि नारद ने इन मूर्च्छनाओं के अन्य नाम बताए हैं। षड्जग्राम में पहली मूर्च्छना उत्तरवर्णा फिर क्रम से अभिरुद्गता, अश्वक्रान्ता, सौवीरी, हृष्यका, उत्तरायता तथा रजनी ये सात मूर्च्छनाएँ बताई हैं। मध्यम ग्राम की मूर्च्छनाएँ क्रम से आप्यायनी, विश्वकृता, चन्द्रा, हेमा, कपर्दिनी, मैत्री तथा चान्द्रमसी हैं। गांधार ग्राम की मूर्च्छनाएँ क्रम से नन्दा, विशाला, सुमुखी, चित्रा, चित्रवती, सुखा तथा आलापा ये सात हैं। इनका प्रयोग स्वर्ग में होता है अतः इनके लक्षण नहीं बताए हैं। (२२–२६)

मूर्च्छनानामबोधिनी

षड्जग्राम

भरतमत								नारदमत
उत्तरमन्द्रा	४ स	३ रि	२ ग	४ म	४ प	३ ध	२ नि	उत्तरवर्णा
रजनी	२ नि	४ स	३ रि	२ ग	४ म	४ प	३ ध	अभिरुद्‌गता
उत्तरायता	३ ध	२ नि	४ स	३ रि	२ ग	४ म	४ प	अश्वक्रान्ता
शुद्धषड्जा	४ प	३ ध	२ नि	४ स	३ रि	२ ग	४ म	सौवीरी
मत्सरीकृता	४ म	४ प	३ ध	२ नि	४ स	३ रि	२ ग	हृष्यका
अश्वक्रान्ता	२ ग	४ म	४ प	३ ध	२ नि	४ स	३ रि	उत्तरायता
अभिरुद्‌गता	३ रि	२ ग	४ म	४ प	३ ध	२ नि	४ स	रजनी

मध्यमग्राम

भरतमत								नारदमत
सौवीरी	४ म	३ प	४ ध	२ नि	४ स	३ रि	२ ग	आप्यायनी
हारिणाश्वा	२ ग	४ म	३ प	४ ध	२ नि	४ स	३ रि	विश्वकृता
कलोपनता	३ रि	२ ग	४ म	३ प	४ ध	२ नि	४ स	चन्द्रा
शुद्धमध्या	४ स	३ रि	२ ग	४ म	३ प	४ ध	२ नि	हेमा
मार्गी	२ नि	४ स	३ रि	२ ग	४ म	३ प	४ ध	कपर्दिनी
पौरवी	४ ध	२ नि	४ स	३ रि	२ ग	४ म	३ प	मंत्री
हृष्यका	३ प	४ ध	२ नि	४ स	३ रि	२ ग	४ म	चान्द्रमसी

गांधारग्राम

								नारदमत
	४ ग	३ म	३ प	३ ध	४ नि	३ स	२ रि	नन्दा
	२ रि	४ ग	३ म	३ प	३ ध	४ नि	३ स	विशाला
	३ स	२ रि	४ ग	३ म	३ प	३ ध	४ नि	सुमुखी
	४ नि	३ स	२ रि	४ ग	३ म	३ प	३ ध	चित्रा
	३ ध	४ नि	३ स	२ रि	४ ग	३ म	३ प	चित्रवती
	३ प	३ ध	४ नि	३ स	२ रि	४ ग	३ म	सुखा
	३ म	३ प	३ ध	४ नि	३ स	२ रि	४ ग	आलापा

तान

शुद्ध मूर्च्छनाओं के षाडव तथा औडुव होने से शुद्ध तानों की उत्पत्ति होती है। षड्जग्राम की मूर्च्छनाएँ यदि क्रमपूर्वक षड्ज, ऋषभ, पंचम तथा निषाद से हीन हो जायँ तो ये २८ तानें हो जाएँगी। मध्यमग्राम में जब सात मूर्च्छनाएँ क्रम से षड्ज, ऋषभ तथा गांधार से हीन हो जायँ तो २१ तानें हो जायँगी। ये दोनों ग्राम की षाडव-तानें कुल ४९ हैं। (२७,२८)

जब षड्जग्राम की मूर्च्छनाएँ षड्ज-पंचम, गान्धार-निषाद तथा ऋषभ-पंचम से हीन हो जाएँगी तो २१ औडुव तानें बन जाएँगी। मध्यमग्राम की मूर्च्छनाएँ ऋषभ-धैवत तथा गान्धार-निषाद के हीन होने पर १४ औडुव तानें हो जायेंगी। इस प्रकार दोनों ग्रामों की कुल औडुव तानें ३५ हैं तथा कुल औडुव-षाडव तानें मिलकर ८४ हुईं। (२९-३१)

सम्पूर्ण और असम्पूर्ण मूर्च्छनाओं को यदि व्युतिक्रम से कहा जाय तो उससे कूट-तानों की उत्पत्ति होती है। उनकी संख्या हम कहते हैं। (३२)

एक-एक मूर्च्छना में क्रम से पूर्ण कूटतान ५०४० हैं। अब समस्त मूर्च्छनाओं की कूट-तान-संख्या बताते हैं।

५०४० कूटतानों में ५६ मूर्च्छना-भेदों का गुणा करने से २८२२४० (दो लाख बयासी हजार दो सौ चालीस) पूर्ण कूट-तानों की निष्पत्ति होती है। अब अपूर्ण कूटतानों को कहेंगे।

दोनों ग्रामों में जो पूर्ण मूर्च्छनाएँ हैं उनमें एक-एक अन्तिम स्वर के अपकर्ष से षट्स्वर आदि ६ भेद हो जाते हैं। यहाँ नष्ट आदि की सिद्धि के लिए एक स्वर-भेद भी कहा है। कूटतानों में क्रम का उपयोग है अतः कूटतान न होने पर भी यहाँ क्रम बताए हैं। (३३-३६)

षाडव-क्रम के प्रस्तार करने पर ७२० तथा औडुव-प्रस्तार करने पर प्रति मूर्च्छना १२० भेद उत्पन्न होते हैं। चार स्वरों के प्रस्तार में २४, तीन स्वरों के प्रस्तार में ६, दो स्वरों के प्रस्तार में २ तथा एक स्वर के प्रस्तार में १ भेद होता है। (३७,३८)

एक स्वर को आर्चिक, द्विस्वर को गाथिक, त्रिस्वर को सामिक और चतुःस्वर को स्वरांतर कहते हैं।

निषाद-गांधार-युक्त शुद्धादि ४ भेद हमने बताए हैं। इनमें एक-एक हीन, दो मूलक्रम बताए हैं (अर्थात् निषादहीन शुद्ध सान्तर तथा गांधारहीन शुद्ध-काकली)। (३९,४०)

दोनों ग्राम की मूर्च्छनाओं में दो भेद षड्ज आदि (निषादहीन होने से शुद्ध और सान्तर) तथा दो भेद मध्यम आदि (गांधारहीन होने से शुद्ध और काकली) होते हैं। ये चारों (षड्ज आदि दो भेद तथा मध्यम आदि दो भेद) प्रत्येक दो-दो प्रकार के होते हैं तथा अन्य दस, चार प्रकार के होते हैं। इस प्रकार ये सब ४८ होते हैं।

पहले जो ७२० भेद बताए हैं उनमें इन ४८ का गुणा करने से ३४५६० हो जाते हैं। (४१,४२)

यह षाडव-संख्या बताई। अब पंचस्वर (औडुव) भेद को कहेंगे।

दो गांधार आदि, दो धैवत आदि तथा दो निषाद आदि ये ६ औडुव-भेद ४ प्रकार के हैं। अन्य ८ भेद २ प्रकार के हैं। इस प्रकार ये औडुव-भेद ४० प्रकार के हैं। प्रत्येक क्रम में १२० भेद होंगे अतः इसमें ४० का गुणा करने से ४८०० औडुव-भेद होते हैं। चतुःस्वरों में निषादादि २ भेद चार-चार प्रकार के होते हैं। अन्य १२ भेद दो प्रकार के होते हैं। इस प्रकार ये ३२ भेद होते हैं। प्रत्येक क्रम में २४ भेद होते हैं। अतः २४ से गुणा कर देने पर ७६८ चतुःस्वर-भेद होगए। (४३-४६)

त्रिस्वरों में मध्यमादि २ भेद होते हैं जिनका और भेद नहीं होता। अन्य १२ भेद दो प्रकार के होते हैं। इस प्रकार २६ त्रिस्वर-भेद होगए। प्रतिक्रम ६ भेद होते हैं अतः ६ का गुणा करने पर १५६ त्रिस्वर-भेद हुए।

द्विस्वरों में दो-दो ऋषभादि, गांधारादि, धैवतादि तथा निषादादि ये ८ भेद, दो प्रकार के होते हैं तथा अन्य (छै) भेद शुद्ध

(सान्तरादि भेद रहित) हुए । प्रत्येक क्रम के दो भेद होते हैं अतः दो से गुणा करने पर ४४ द्विस्वर भेद हुए । एक स्वर-भेद-रहित होने से उसके मूल १४ भेद ही हैं ।

मध्यमग्राम में जो चौथी मूर्च्छना षड्जादि-शुद्धमध्या है उसके चतुःस्वर दो क्रम हैं जिनके पंचम के बिना ४८ भेद बताए हैं ।

त्रिस्वर के जो दोनों क्रम हैं उनके १२ भेद बताए हैं तथा द्विस्वर में दो और एक (स्वर) में एक (भेद) बताया है । ये सब ६३ भेद हुए ।

इसके बाद कूटतान सहित उत्तरमन्द्रा के भेद बताए हैं । इसके बाद निषादादि मार्गी मूर्च्छना के क्रम बताए हैं । इसमें पंच-स्वर चार क्रम हैं । इनके भेद ४८० कहे हैं । चतुःस्वर सम्बन्धी ९६ भेद बताए हैं । त्रिस्वर सम्बन्धी दोनों क्रमों के १२ भेद तथा द्विस्वर सम्बन्धी दोनों क्रमों के ४ भेद और एक-स्वर-सम्बन्धी १ भेद बताया है । ये ५९३ भेद हुए जो रजनीगत-तान-भेदों से भिन्न नहीं हैं । (४७-५४)

धैवतादि पौर्वी (मूर्च्छना) के ६ स्वरों के ४ क्रम बताए हैं । इनके भेद २८८० बताए हैं । पौर्वी के जो औडुव चार क्रम बताए—चतुः स्वर, त्रिस्वर, द्विस्वर तथा एक स्वर । इन सबकी संख्या मिलकर ३४२५ होगी जो उत्तरायता मूर्च्छना के साथ पुनरुक्त होगी । इस प्रकार कूटतानों की कुल संख्या ४०८१ होती है जो पूर्ण-अपूर्ण क्रम (५७१, कारण कि यह कूटतान नहीं हैं) सहित पुनरुक्त कही जा सकेंगी और पुनरुक्त कूटतानों सहित संख्या को कुल संख्या (३२२५८२) में से घटा देने पर (३२२५८२—४६५२=३१७९३०) सर्वसंभावित कूटतानों की संख्या होती है, जिसे समझने की युक्ति कहता हूँ ।

एक से लेकर सात तक क्रमशः ऊर्ध्व-ऊर्ध्व (उत्तरोत्तर उच्च) संख्या लिखे । प्रथम अंक से उससे आगे वाले अंक का गुणा करता जाय (जैसे १×२×३ ×४=२४) तो प्रति-मूर्च्छना की एक-स्वरादि-तानों की संख्या निकल आएगी ।

प्रस्तार

स्वरों के क्रम में प्रथम स्वर के नीचे उससे पूर्व का स्वर रक्खा जाता है लेकिन वह उसी स्थिति में जब कि वह ऊपर-अङ्कित-स्वर के

सीधी ओर स्थित न हो। यदि वह स्वर सीधी ओर मौजूद हो तो फिर उससे पूर्व का स्वर स्थापित करेंगे और यदि वह स्वर भी सीधी ओर मौजूद हो तो उससे भी पूर्व का स्वर स्थापित करेंगे। यदि उससे पूर्व कोई स्वर न हो तो उस स्थान पर बिन्दु रख देंगे। अन्य स्वरों को ज्यों का त्यों उतार दिया जाता है। अन्तर केवल इतना ही है कि नवीन स्थापित स्वर के सीधी ओर (ऊपर) वाले स्वरों को तो ज्यों का त्यों उतार दिया जाता है और बायीं ओर बिन्दुओं के स्थान पर बचे हुए स्वरों को मूल क्रम से रख दिया जाता है। जैसे—यदि किन्हीं बिन्दुओं के स्थान पर बाकी बचे हुए स्वर "म स ग" रखने हैं तो उन्हें "स ग म" इस क्रम से रक्खेंगे। इसी को 'प्रस्तार' कहते हैं।

प्रस्तार-सिद्धान्त

मान लीजिये हमें स रि ग म इन चार स्वरों के प्रस्तार बनाने हैं। सर्वप्रथम स रि ग म को एक स्थान पर लिख लेंगे। अब स के नीचे एक बिन्दु रख देंगे (जैसे स़ रि ग म) क्योंकि स से पूर्व अन्य कोई स्वर नहीं है। अब रि के नीचे स लिखेंगे (जैसे स रि ग म) क्योंकि रि से पूर्व
स

स होता है। अब ग और म को ज्यों का त्यों उतार देंगे (जैसे स़ रि ग म)
स ग म

इसके बाद बिन्दु वाले स्थान पर (अर्थात् स के नीचे) बाकी बचा हुआ स्वर रि लिख देंगे (जैसे स रि ग म) इस प्रकार स रि ग म
रि स ग म

इन चार स्वरों से हमारा एक प्रस्तार रि स ग म बन गया।

अब इसी सिद्धान्त के आधार पर रि स ग म से अगला प्रस्तार बनायेंगे। रि से पूर्व स स्वर होता है परन्तु रि स ग म प्रस्तार में स स्वर रि के सीधी ओर मौजूद है अतः रि के नीचे एक बिन्दु रख देंगे (जैसे रि़ स ग म)। अब स के नीचे भी एक बिन्दु रख देंगे (जैसे रि़ स़ ग म) क्योंकि स से पूर्व कोई स्वर नहीं होता। अब ग के

नीचे रि रक्खेंगे (जैसे रि स ग म) क्योंकि गान्धार से पूर्व ऋषभ
रि

होता है। अब म को ज्यों का त्यों उतार देंगे (जैसे रि स ग म)।
रि म

अब बाकी बचे हुए ग और स स्वरों को क्रमपूर्वक (अर्थात 'स ग' इस स्थिति में) रि स के नीचे बिन्दुओं के स्थान पर रख देंगे जैसे (रि स ग म) इस प्रकार स ग रि म तीसरा प्रस्तार बन गया।
स ग रि म

अब चौथा प्रस्तार बनाना है अतः तीसरे प्रस्तार स ग रि म में स के नीचे फिर एक बिन्दु रख देंगे (जैसे स ग रि म) क्योंकि स से पूर्व अन्य किसी स्वर की स्थिति है नहीं। अब ग के नीचे उससे पूर्व का स्वर (जो कि रिषभ होता है) रक्खेंगे परन्तु रि इस स ग रि म प्रस्तार में ग के सीधी ओर मौजूद है अतः ग के नीचे रि को न रखकर रि से पूर्व के स्वर (जो कि स होता है) षड्ज को ग के नीचे रख देंगे (जैसे स ग रि म) अब सीधी ओर के रि और म स्वरों को ज्यों का
स

त्यों उतार देंगे (जैसे स ग रि म)। अब बाकी बचे स्वर ग को बायीं
स रि म

ओर बिन्दु के स्थान पर रख देंगे (जैसे स ग रि म)। इस प्रकार
ग स रि म

ग स रि म चौथा प्रस्तार बन गया।

अब पाँचवाँ प्रस्तार बनाना है अतः ग के नीचे उससे पहला स्वर रि रक्खेंगे लेकिन रि सीधी ओर को मौजूद है अतः रि से पूर्व के

स्वर स को रक्खेंगे, लेकिन स भी सीधी ओर को मौजूद है और स से पूर्व कोई स्वर होता नहीं अतः ग के नीचे बिन्दु रख देंगे (जैसे ग़ स रि म) अब स के नीचे भी एक बिन्दु रक्खेंगे (जैसे ग़ स़ रि म) क्योंकि स से पूर्व कोई स्वर होता नहीं। अब रि के नीचे स रक्खेंगे (जैसे ग़ स़ रि म
स) क्योंकि रि से पूर्व स होता है और रि से सीधी ओर को वह है नहीं। अब सीधी ओर को बचे हुए स्वर म को ज्यों का त्यों उतार देंगे (जैसे ग़ स़ रि म
स म) अब बाकी बचे हुए रि ग स्वरों को ग स के नीचे रख देंगे (जैसे ग स रि म) इस प्रकार रि ग स म
रि ग स म
पाँचवाँ प्रस्तार बन गया।

अब छठवाँ प्रस्तार बनाने के लिए पूर्व सिद्धान्त के अनुसार रि के नीचे बिन्दु रख देंगे (जैसे रि़ ग स म) फिर ग के नीचे रि रक्खेंगे (जैसे रि़ ग स म
रि) अब स और म को ज्यों का त्यों उतार कर बाकी बचे हुए स्वर ग को रि के नीचे रख देंगे (जैसे रि ग स म)
ग रि स म

अब सातवाँ प्रस्तार बनाने के लिए ग के नीचे बिन्दु रक्खेंगे क्योंकि ग रि स म प्रस्तार में ग के सीधी ओर ग से पूर्व का स्वर रि और रि से पूर्व का स्वर स दोनों ही मौजूद हैं। अब रि के नीचे भी एक बिन्दु रख देंगे क्योंकि रि से पूर्व का स्वर स, रि से सीधी ओर मौजूद है। अब स के नीचे भी एक बिन्दु रख देंगे (जैसे ग़ रि़ स़ म) क्योंकि स से पूर्व कोई स्वर होता नहीं। अब म के नीचे ग रख देंगे (जैसे ग़ रि़ स़ म
ग) क्योंकि गान्धार, मध्यम से पूर्व का स्वर होता है। अब बाकी बचे

हुए स रि म स्वरों को क्रम से ग रि स के नीचे बिन्दुओं के स्थान पर रख देंगे (जैसे ग रि स म)।

स रि म ग

इस प्रकार अब तक हमारे सात स्वर-प्रस्तार यह बन गए—

(१)	स	रि	ग	म
(२)	रि	स	ग	म
(३)	स	ग	रि	म
(४)	ग	स	रि	म
(५)	रि	ग	स	म
(६)	ग	रि	स	म
(७)	स	रि	म	ग

इसी सिद्धन्त के अनुसार आगे २४ तक विभिन्न स्वर-प्रस्तार बनते जाएँगे क्योंकि दो स्वरों से (१×२=२) दो स्वर-प्रस्तार बन सकते हैं, तीन स्वरों से (१×२×३=६) छः और चार स्वरों से (१×२×३×४=२४) चौबीस स्वर-प्रस्तार बन सकते हैं।

इसी प्रकार पाँच स्वरों से (१×२×३×४×५=१२०) एक-सौ-बीस, छः स्वरों से (१×२×३×४×५×६=७२०) सात-सौ-बीस और सात स्वरों से (१×२×३×४×५×६×७=५०४०) पाँच-हजार-चालीस विभिन्न स्वर-प्रस्तार बन सकते हैं। जिन स्वरों के भी प्रस्तार बनाने हों उन्हें उपर्युक्त सिद्धान्त के ही आधार पर सुगमता-पूर्वक बनाया जा सकता है।

खण्डमेरु

ऐसी सात पंक्तियाँ लिखनी चाहिए जिसके आदि में सात कोष्ठ(खाने) हों और अन्त में एक कोष्ठ हो (अर्थात् प्रथम पंक्ति में सात खाने बनेंगे, दूसरी में ६, तीसरी में ५, चौथी में ४, पाँचवीं में ३, छठवीं में २ और सातवीं पंक्ति में १ खाना बनेगा इस प्रकार क्रम से एक-एक खाना छूटता जायगा)। पहली जो ७ कोष्ठों वाली पंक्ति है उसमें पहले कोष्ठ में १ अंक और अन्यों में शून्य लिखे। तान (त्रिस्वर, चतुःस्वर आदि)

के जितने स्वर हों उतनी ही संख्या में प्रथम पंक्ति के कोष्ठों में चिह्न या बिन्दु (शास्त्र की भाषा में कंकड़ या लोष्टक) रखदे।

उन पंक्तियों में से पहली पंक्ति के पहले कोष्ठ में एक का अंक लिखे। शेष कोष्ठों में शून्य लिखे। अब जिस तान के सम्बन्ध में ज्ञात करना है वह तान जितने स्वर की हो उतनी ही संख्या में प्रथम पंक्ति के कोष्ठों में लोष्ठक अर्थात् चिह्न रख दे।

प्रथम पंक्ति के पहले कोष्ठ में एक का अंक रखे और अवशिष्ट (छः) कोष्ठों में शून्य रखता जाय। अब प्रथम तथा द्वितीय पंक्तियों के प्रथम कोष्ठों के अङ्कों का जो संयोग है (१+१=२) उसे द्वितीय पंक्ति के दूसरे कोष्ठ में रखे। इसका दुगुना करके (२×२=४) तृतीय पंक्ति के पहले कोष्ठ में रखे। अब तीनों पंक्तियों के प्रथम कोष्ठों के अङ्कों का संयोग करके (१+१+४=६) द्वितीय पंक्ति के तीसरे कोष्ठ में रखे। इसका दुगुना करके (६×२=१२) तृतीय पंक्ति के दूसरे कोष्ठ में और तिगुना करके (६×३=१८) चतुर्थ पंक्ति के प्रथम कोष्ठ में रखे। अब चारों पंक्तियों के प्रथम कोष्ठों के अङ्कों का योग (१८+४+१+१ =२४) द्वितीय पंक्ति के चतुर्थ कोष्ठ में रखे। इसका दुगुना करके (२४×२=४८) तृतीय पंक्ति के तीसरे कोष्ठ में तथा तिगुना करके (२४×३=७२) चतुर्थ पंक्ति के दूसरे कोष्ठ में और इसका चौगुना करके (२४×४=९६) पंचम पंक्ति के प्रथम कोष्ठ में रखे। अब इन पाँचों पंक्तियों के प्रथम कोष्ठों के अङ्कों का योग (९६+१८+४+१+ १=१२०) द्वितीय पंक्ति के पांचवें कोष्ठ में रखे। इसके उपरान्त इसका दुगुना (१२०×२=२४०) तृतीय पंक्ति के चौथे कोष्ठ में, तिगुना करके (१२०×३=३६०) चतुर्थ पंक्ति के तीसरे कोष्ठ में, चौगुना करके (१२०×४=४८०) पंचम पंक्ति के दूसरे कोष्ठ में, पाँच गुना करके (१२०×५=६००) छठवीं पंक्ति के पहले कोष्ठ में लिखे। अब छःओं पंक्तियों के प्रथम कोष्ठों के अङ्कों का योग (६००+९६+१८+ ४+१+१=७२०) द्वितीय पंक्ति के छठवें कोष्ठ में लिखे। इसका दुगुना करके (७२०×२=१४४०) तीसरी पंक्ति के पाँचवें कोष्ठ में, तिगुना करके (७२०×३=२१६०) चौथी पंक्ति के चौथे कोष्ठ में, चौगुना करके (७२०×४=२८८०) पाँचवीं पंक्ति के तीसरे कोष्ठ में, पाँचगुना

करके (७२०×५=३६००) छठवीं पंक्ति के दूसरे कोष्ठ में छः गुना करके (७२०×६=४३२०) सातवीं पंक्ति के प्रथम कोष्ठ में लिखे। यही 'खण्डमेरु' कहलाता है।

खण्डमेरु की आकृति

	स	रि	ग	म	प	ध	नि
प्रथम पंक्ति	१	०	०	०	०	०	०
दूसरी पंक्ति		१	२	६	२४	१२०	७२०
तीसरी पंक्ति			४	१२	४८	२४०	१४४०
चौथी पंक्ति				१८	७२	३६०	२१६०
पांचवीं पंक्ति					९६	४८०	२८८०
छठवीं पंक्ति						६००	३६००
सातवीं पंक्ति							४३२०

खण्डमेरु के प्रयोग द्वारा तान-ज्ञान

खण्डमेरु निम्नांकित तानों को खोजने में सहायक होता है:—

(१) उद्दिष्ट तान—किसी दी हुई तान का स्वरप्रस्तार में क्रम ज्ञात करना।

(२) नष्ट तान—स्वरप्रस्तार में किसी दी हुई क्रमसंख्या की तान का स्वरूप ज्ञात करना।

यहाँ हम एक-एक को क्रम से लेंगे।

(१) मान लीजिये यह ज्ञात करना है कि स्वर-प्रस्तार के अनुसार 'म ग सा रि' की अनुबन्ध-संख्या क्या है? सर्वप्रथम हमें यह देखना चाहिये कि इस तान में जो स्वर प्रयुक्त हुए हैं उनका मूल क्रम इस प्रकार है—सा रि ग म।

अब क्योंकि 'म ग सा रि' उद्दिष्ट-तान चार स्वरों की है अतः हम खण्ड-मेरु की प्रथम पंक्ति के चौथे कोष्ठ पर अँगुली रखेंगे और क्योंकि उद्दिष्ट तान के अन्तिम स्वर रे का मूल क्रम के अन्तिम स्वर म से तीसरा स्थान है अतः अपनी अँगुली को नीचे की ओर तृतीय पंक्ति तक ले आयेंगे जहाँ १२ का अंक लिखा हुआ है। इस संख्या को अलग एक स्थान पर लिख लेना चाहिए। अब हमारे पास उद्दिष्ट तान के तीन स्वर 'म ग सा' शेष रहे। इसमें अन्तिम स्वर 'सा' का इनके मूल क्रम 'सा ग म' में 'म' से तीसरा स्थान है अतः पुनः खण्ड-मेरु की प्रथम पंक्ति के तीसरे कोष्ठ में अँगुली रखकर नीचे की ओर तृतीय पंक्ति में जहाँ चार का अंक लिखा है वहाँ तक ले आयेंगे। यह चार की संख्या भी अलग लिख लेंगे। अब केवल दो स्वर शेष रहे 'म ग'। मूल क्रम 'ग म' में म से ग का स्थान दूसरा है अतः खण्ड-मेरु की प्रथम पंक्ति के दूसरे कोष्ठ में नीचे की ओर दूसरी पंक्ति तक चलेंगे जहाँ एक का अंक लिखा हुआ है। इस अंक को भी अलग लिखे हुए अंक १२ तथा ४ के साथ लिख लेंगे। अब हमारे पास उद्दिष्ट तान का केवल एक स्वर 'म' शेष रहा। यह अकेला है अतः इसका भी एक अंक पूर्वलिखित अंकों के साथ लिख लेंगे और अब इन चारों अंकों को जोड़ देंगे जिनका योग १२+४+१+१=१८ हुआ। इस प्रकार हमने यह ज्ञात कर लिया कि 'सा रि ग म' तान के अठारहवें अनुबन्ध में स्वरों का क्रम 'म ग सा रि' है अर्थात् 'म ग सा रे' की क्रम संख्या १८ है।

[यहाँ यह स्मरण रखना चाहिये कि जितने स्वरों की तान हो उतने ही कोष्ठों तक गिनना चाहिये (जैसे चार स्वरों की तान है तो चौथे कोष्ठ तक और पांच स्वरों की तान है तो बाएँ से दाएँ पाँचवें कोष्ठ तक गिनेंगे) और उद्दिष्ट-तान के अन्तिम स्वर की संख्या उन्हीं स्वरों के मूल क्रम के अन्तिम स्वर से ज्ञात करके उतनी ही संख्या में कोष्ठ के नीचे की ओर चलना चाहिये]।

(२) अब इस खण्ड-मेरु के द्वारा नष्ट-तान ज्ञात करनी है। मान लीजिये, कोई प्रश्न करता है कि 'सा रे ग' कूट तान का पाँचवें क्रम में क्या रूप होगा ? (प्रश्न-कर्त्ता किसी भी तान का मूल क्रम अवश्य बतायेगा, जैसे यहाँ 'सा रि ग'-यह मूल क्रम बताया है)। सर्वप्रथम यह देखना चाहिये कि 'सा रि ग' तीन स्वर वाली तान है अतः खण्ड-मेरु की प्रथम पंक्ति के तीन कोष्ठों को ले लिया। इन तीनों कोष्ठों के नीचे तक किसी भी पंक्ति के ऐसे तीन अंकों का चुनाव करो कि जिनका योग पाँच हो, क्योंकि हमें पाँचवाँ क्रम ज्ञात करना है।

इस उद्देश्य से हम संख्याओं का चुनाव इस प्रकार करेंगे—

(क) प्रथम पंक्ति के तीसरे कोष्ठ की सीध में, नीचे की ओर, तीसरी पंक्ति के पहले कोष्ठ की संख्या-अर्थात् ४ (चार)

(ख) प्रथम पंक्ति के दूसरे कोष्ठ की संख्या-अर्थात् ० (शून्य)

(ग) प्रथम पंक्ति के प्रथम कोष्ठ की संख्या-अर्थात् १ (एक)

(यहाँ हमें यह ध्यान अवश्य रखना होगा कि कोष्ठों में से संख्याओं का चुनाव करते समय किसी भी कोष्ठ के ऊपर या नीचे अर्थात् सीध में से केवल एक ही संख्या चुनी जाय। जैसे खण्डमेरु के तीसरे कोष्ठ में ऊपर से नीचे की ओर तीन संख्याएँ ०, २ तथा ४ हैं अतः इनमें से हम किसी भी एक संख्या का ही चुनाव कर सकते हैं)।

इस प्रकार हमें यह संख्या ज्ञात हुई (४+०+१=५) अब हमने देखा कि ४ के अंक का पहली पंक्ति के तीसरे कोष्ठ से नीचे की ओर तीसरा क्रम है, अर्थात् तीन स्वर वाली नष्ट-तान के अन्तिम स्वर का स्थान उन्हीं स्वरों के मूल क्रम वाली तान (सा रि ग) के अन्तिम स्वर 'ग' से तीसरा है अर्थात् 'सा' है। अब दूसरा अंक हमारे पास शून्य का है; जिसका अर्थ यह हुआ कि मूल क्रम के शेष बचे हुए दो स्वरों (रि ग) में अन्तिम स्वर 'ग' से 'ग' ही स्वयं शून्य संख्या के स्थान पर हो सकता है (क्यों कि रि, ग से दूसरे स्थान पर है और खण्ड-मेरु की प्रथम पंक्ति के दूसरे कोष्ठ के नीचे दूसरी पंक्ति में संख्या १ लिखी है, जो हमारी संख्या 'शून्य' से मेल नहीं रखती)। अब शेष बचा 'रि'। इस प्रकार नष्ट-तान के स्वरों का यह क्रम ज्ञात हुआ 'रि ग सा'। अर्थात् 'सा रि ग' नामक तीन स्वरों वाली तान के पांचवें प्रस्तार का स्वरूप होगा 'रि ग सा'। (५५-७१)

तान-प्रकार

अब हम शुद्ध तानों के नाम गिनाते हैं यथा—अग्निष्टोम, अत्यग्निष्टोम, वाजपेय, षोडशी, पुण्डरीक, अश्वमेध तथा राजसूय ये क्रम से सात षड्जहीन तानों के नाम हैं। (७२,७३)

स्विष्टकृत्, बहुसौवर्ण, गोसव, महाव्रत, विश्वजित्, ब्रह्मयज्ञ तथा प्राजापत्य ये सात क्रमशः ऋषभहीन तानों के नाम हैं।

अश्वक्रान्त, रथक्रान्त, विष्णुक्रान्त, सूर्यक्रान्त, गजक्रान्त, वलभित् तथा नागपक्ष ये सात क्रमशः पंचमहीन तानों के नाम हैं। (७४-७६)

चातुर्मास्य, संस्था, शस्त्र, उक्थ, सौत्रामणी, चित्रा तथा उद्भित् ये सात क्रमशः निषादहीन षाडव-तानें हैं। ये षड्जग्राम की २८ तानें समाप्त हुईं। (७७)

सावित्री, अर्द्धसावित्री, सर्वतोभद्र, आदित्यायन, गवायन, सर्पायन तथा कौणपायन ये षड्जहीन तानों के नाम हैं। (७८-७९)

अग्निचित्,द्वादशाह,उपांशु, सोम, अश्वप्रतिग्रह, बर्हि और अभ्युदय ये ऋषभहीन तानों के नाम माने जाते हैं।

सर्वस्वदक्षिण, दीक्षा, सोम, समित्, स्वाहाकार, तनूनपात तथा गोदोहन ये गान्धारहीन तानों के नाम बताये हैं। ये मध्यमग्राम की २१ षाडव तानों के नाम हैं। (८०-८२)

इडा, पुरुषमेध, श्येन, वज्र, इषु, अंगिरा तथा कंक ये षड्ज-पंचम-हीन तानों के क्रमशः नाम हैं। (८३)

ज्योतिष्टोम, दर्श, नान्दी, पौर्णमासक, अश्वप्रतिग्रह, रात्रि तथा सौभर ये निषाद-गान्धार-हीन तानों के नाम हैं।

सौभाग्यकृत, कारीरी, शान्तिकृत, पुष्टिकृत, वैनतेय, उच्चाटन तथा वशीकरण ये पंचम-ऋषभहीन तानों के नाम हैं। ये षड्जग्राम की २१ औडुव तानें हैं। (८४-८६)

त्रैलोक्यमोहन, वीर, कन्दर्पबलशातन, शंखचूड, गजच्छाय, रौद्र तथा विष्णुविक्रम ये क्रमशः ऋषभ-धैवत-हीन तानों के नाम हैं। (८७,८८)

भैरव, कामद, अवभृथ, अष्टकपाल, स्विष्टकृत, वषट्कार तथा मोक्षद ये निषाद-गान्धार-हीन तानों के नाम हैं। ये मध्यम-ग्राम की १४ औडुव तानें हैं।

जिन तानों का नाम यज्ञ के समान (जैसे ज्योतिष्टोम आदि) है, उनके सम्यक् प्रयोग से यज्ञ के फल की प्राप्ति होती है। (८९,९०)

श्रुतिप्रेरित मूर्च्छना-तानों का गान्धर्व (गान) में प्रयोग करने से धर्म की प्राप्ति होती है। देशीगान में शुद्धमूर्च्छना, तान तथा कूटतानें स्थान-विशेष की दृष्टि से उपयोगी होती हैं।

षड्जग्राम–तान–बोधिनी

षड्जहीन तानें	ऋषभहीन तानें	पंचमहीन तानें	निषादहीन तानें	षड्जपंचम-हीन तानें	निषादगांधार-हीन तानें	पंचम ऋषभ-हीन तानें
अग्निष्टोम	स्विष्टकृत्	अश्वक्रांत	चातुर्मास्य	इडा	ज्योतिष्टोम	सौभाग्यकृत
अत्यग्निष्टोम	बहुसौवर्ण	रथक्रांत	संस्था	पुरुषमेध	दर्श	कारीरी
वाजपेय	गोसव	विष्णुक्रांत	शस्त्र	श्येन	नान्दी	शांतिकृत
षोडशी	महाव्रत	सूर्यक्रांत	उक्थ	वज्र	पौर्णमासक	पुष्टिकृत
पुण्डरीक	विश्वजित्	गजक्रांत	सौत्रामणी	इषु	अश्वप्रतिग्रह	वैनतेय
अश्वमेध	ब्रह्मयज्ञ	वलभित्	चित्रा	अंगिरा	रात्रि	उच्चाटन
राजसूय	प्राजापत्य	नागपक्ष	उद्भित्	कंक	सौभर	वशीकरण

मध्यमग्राम–तान–बोधिनी

षड्जहीन तानें	ऋषभहीन तानें	गांधारहीन तानें	ऋषभधैवत-हीन तानें	निषादगांधार-हीन तानें
सावित्री	अग्निचित्	सर्वस्वदक्षिण	त्रैलोक्यमोहन	भैरव
अर्द्ध सावित्री	द्वादशाह	दीक्षा	वीर	कामद
सर्वतोभद्र	उपांशु	सोम	कंदर्पबलशातन	अवभृथ
आदित्यायन	सोम	समित्	शंखचूड	अष्टकपाल
गवायन	अश्वप्रतिग्रह	स्वाहाकार	गजच्छाय	स्विष्टकृत
सर्पायन	बर्हि	तनूनपात	रौद्र	वषट्कार
कौणपायन	अभ्युदय	गोदोहन	विष्णुविक्रम	मोक्षद

संगीत-रत्नाकर के प्रथम
स्वरगत अध्याय में ग्राम, मूर्च्छनाक्रम तथा तान नामक चौथा
प्रकरण समाप्त

पाँचवाँ

साधारण प्रकरण

साधारण-लक्षण

साधारण दो प्रकार का होता है—स्वरसाधारण तथा जाति-साधारण। इनमें स्वरसाधारण चार प्रकार का बताया है। काकली-साधारण, अन्तरसाधारण, षड्जसाधारण तथा मध्यमसाधारण।

काकलीसाधारण षड्ज और निषाद के बीच में होता है (क्योंकि इस स्थिति में निषाद न तो अपने मूलस्थान पर रहता है और न अपने अग्रिम स्वर (षड्ज) की स्थिति को ही प्राप्त करता है)।

इसी प्रकार, गान्धार और मध्यम के बीच अन्तरसाधारण (अन्तरगान्धार) होता है। (१–३)

षड्ज का उच्चारण करके क्रमशः काकली और धैवत का (अवरोह क्रम से) उच्चारण करना चाहिए। इसी प्रकार मध्यम का उच्चारण करके अन्तर (गान्धार) और ऋषभ का उच्चारण करना चाहिए। (४)

अथवा षड्ज और काकली का उच्चारण करके पुनः षड्ज (एवं उससे परवर्ती स्वरों) का उच्चारण करना चाहिए। इसी प्रकार मध्यम, अन्तरगान्धार और ऋषभ का उच्चारण करके (पुनः) मध्यम एवं उससे परवर्ती स्वरों का उच्चारण करना चाहिए।

इसी प्रकार मध्यम और अन्तर-स्वर का उच्चारण करके फिर मध्यम का ग्रहण कर लेना चाहिए और फिर मध्यम के आगे के स्वरों में से एक का ग्रहण कर लेना चाहिये। काकली (निषाद) और अन्तर (गान्धार) स्वर का सर्वत्र अल्प प्रयोग होता है (५,६)

यदि निषाद षड्ज की पहली श्रुति को ग्रहण कर लेता है और ऋषभ अन्तिम श्रुति को ग्रहण कर लेता है तो उसे षड्ज-साधारण कहते हैं। (७)

जब गान्धार मध्यम की पहिली श्रुति को ग्रहण करले और पंचम अन्तिम श्रुति को ग्रहण करले तो वह मध्यम-साधारण होता है। इसका प्रयोग निश्चित रूप से मध्यम-ग्राम में (ही) होता है। (८)

ये दोनों (षड्जसाधारण तथा मध्यमसाधारण) केशाग्र-अन्तर (अर्थात् प्रयोग-सूक्ष्मता) के कारण 'कैशिक' कहे जाएँगे। कतिपय आचार्यों ने इन्हें 'ग्राम-साधारण' भी कहा है। (९)

एक ग्राम में उत्पन्न समान अंश (स्वर) वाली जातियों में (किए जाने वाले) समान गान को आर्यों (भरतादि आचार्य) ने 'जातिसाधारण' कहा है। किन्हीं आचार्यों (दत्तिल आदि) ने (शुद्ध-कैशिक-मध्यम इत्यादि) रागों को ही जाति-साधारण कहा है। (१०)

संगीतरत्नाकर के प्रथम
स्वरगताध्याय में पाँचवाँ साधारण प्रकरण
समाप्त

छठवाँ

वर्णालङ्कार-प्रकरण

वर्ण

गान-क्रिया को 'वर्ण' कहते हैं जिसके चार भेद हैं—स्थायी, आरोही, अवरोही तथा संचारी।

जहाँ एक-एक स्वर का रुक-रुक कर उच्चारण किया जाय (जैसे स स स स, ग ग ग ग आदि) उसे 'स्थायीवर्ण' कहते हैं। जिस स्वर से आरोह किया जाय उसे 'आरोही वर्ण' जिस स्वर से अवरोह किया जाय उसे 'अवरोही वर्ण' और जहाँ तीनों का सम्मिश्रण हो उसे 'संचारीवर्ण' कहते हैं। (१,२)

अलंकार

विशिष्ट वर्ण-सन्दर्भ को 'अलंकार' कहते हैं। इसके अनेक भेद हैं। मैं उनमें से स्थायीवर्ण-अलंकार को कहता हूँ।

जिनके आदि और अन्त में एक ही स्वर है उन्हें स्थायीवर्ण-अलंकार कहते हैं। प्रसन्नादि, प्रसन्नान्त, प्रसन्नाद्यन्त, प्रसन्नमध्य, क्रमरेचित, प्रस्तार तथा प्रसाद ये सात स्थायी-वर्णालङ्कार हैं।

इस अलंकार-प्रकरण में मूर्च्छना का प्रथम स्वर 'मन्द्र' कहा जाता है। यदि वह दुगुना होजाय तो उसे 'तार' कहते हैं। अथवा पूर्व स्थान पर स्थित स्वर 'मन्द्र' तथा अग्रिम स्थान पर स्थित स्वर 'तार' कहलाता है।

प्रसन्न और मृदु, मन्द्र के ही पर्यायवाची हैं। 'तार' को 'दीप्त' (भी) कहते हैं। जिस स्वर के ऊपर बिन्दु हो उसे 'मन्द्र' कहते हैं। जिसके ऊपर ऊर्ध्व रेखा लगाई जाय उसे 'तार' कहते हैं। जिसका उच्चारण तीन बार किया जाय उसे 'प्लुत' कहते हैं (३,८)

दो मन्द्र स्वरों के उच्चारण करने के बाद यदि एक तार-स्वर का उच्चारण किया जाय तो 'प्रसन्नादि' अलंकार होता है; जैसे सं सं सा

इनको यदि विलोम (विपरीत) कर दिया जाय तो 'प्रसन्नान्त' अलंकार होजाता है, जैसे सां सं सं। दो प्रसन्नों के मध्य में यदि एक तार-स्वर हो तो उसे 'प्रसन्नाद्यन्त' कहते हैं, जैसे सं सां सं। यदि दो तार-स्वरों के मध्य में एक मन्द्र हो तो उसे विद्वानों ने 'प्रसन्नमध्य' अलंकार कहा है; जैसे सां सं सां। (६,१०)

'क्रमरेचित' अलंकार में तीन कलाओं का प्रयोग होता है। इसकी पहली, दूसरी और तीसरी कलाओं के आदि और अन्त में मूर्च्छनाओं का प्रथम स्वर ही रहता है, परन्तु पहली कला के मध्य में दूसरा स्वर, दूसरी कला के मध्य में तीसरा और चौथा स्वर तथा तीसरी कला के मध्य में पाँचवाँ, छठवाँ तथा सातवें स्वर का प्रयोग होता है; जैसे संरिसं, संगमसं, संपधनिसं। (११,१२)

जिसकी तीनों कलाओं के अन्त में तार हो और बाकी पूर्ववत् हो तो उसे 'प्रस्तार' अलंकार कहते हैं। जैसे सांरिसां,सांगमसां,सांपधनिसां।

जिसकी तीनों कलाओं के अंत में प्रथम तार और अन्तिम मन्द्र हो तथा पहली कला के मध्य में दूसरा स्वर एवं दूसरी कला के मध्य में तीसरा व चौथा स्वर तथा तीसरी कला के मध्य में पाँचवाँ, छठवाँ तथा सातवाँ स्वर हो तो उसे 'प्रसाद' अलंकार कहते हैं। जैसे सांरिसं, सांगमसं, सांपधनिसं। ये स्थायीगत अलंकार समाप्त हुए। (१३)

विस्तीर्ण, निष्कर्ष, बिन्दु, अभ्युच्चय, हसित, प्रेङ्खित, आक्षिप्त, सन्धि-प्रच्छादन, उद्गीत, उद्वाहित, त्रिवर्ण तथा वेणि ये १२ आरोहीवर्ण-अलंकार हैं। (१४,१५)

मूर्च्छना के प्रथम स्वर से दीर्घ स्वरों पर रुक-रुक कर क्रम से जहाँ अरोहण हो उसे 'विस्तीर्ण' अलंकार कहते हैं। जैसे सा री गा मा पा धा नी।

जहाँ दो-दो ह्रस्व स्वरों द्वारा रुक-रुक कर आरोहण किया जाय उसे 'निष्कर्ष' अलंकार कहते हैं। जैसे सस, रिरि, गग, मम, पप, धध, निनि।

तीन अथवा चार स्वरों के उच्चारण करने पर 'गात्रवर्ण' अलंकार होता है। जैसे ससस, रिरिरि, गगग, ममम, पपप, धधध, निनिनि अथवा ससस, रिरिरिरि, गगगग, मममम, पपपप, धधधध, निनिनिनि। किन्हीं-किन्हीं आचार्यों ने इस 'गात्रवर्ण' को 'निष्कर्ष' का ही एक भेद माना है।

स्वर जब क्रम से प्लुत ह्रस्व प्लुत ह्रस्व प्लुत ह्रस्व प्लुत होते हुए आरोहण करें तो 'बिन्दु' अलंकार होता है। जैसे सससरि, गगगम, पपपध, निनिनि।

जहाँ एक स्वर के अन्तर से क्रमपूर्वक आरोहण किया जाय तो उसे 'अभ्युच्चय' अलंकार कहते हैं। जैसे सगपनि। (१६,१६)

स्वर-संख्या के अनुसार आवृत्ति करते हुए जहाँ आरोहण हो उसे 'हसित' अलंकार कहते हैं। जैसे स, रिरि, गगग, मममम, पपपपप, धधधधधध, निनिनिनिनिनिनि। (२०)

पहले दो स्वरों का उच्चारण करने के बाद जहाँ द्वितीय स्वर का पूर्व-पूर्व स्वर के साथ आन्दोलन करते हुए आरोहण किया जाय तो उसे 'प्रेङ्खित' अलंकार कहते हैं। जैसे सरि, रिग, गम, मप, पध, धनि। (२१)

एक-एक स्वर के अन्तर से जहाँ पूर्व की भाँति स्वरयुग्म का उच्चारण किया जाय तो उसे 'आक्षिप्त' अलंकार कहते हैं। जैसे सग, गप, पनि। (२२)

'सन्धिप्रच्छादन' अलंकार में तीन-तीन स्वरों से युक्त तीन कलाएँ होती हैं। पहली कला में मूलक्रमानुसार तीन स्वर होते हैं और दूसरी कला में पहली कला का अन्तिम स्वर आदि में तथा तीसरी कला में दूसरी कला के अन्तिम स्वर को आदि में (प्रयुक्त) करना चाहिए। जैसे सरिग, गमप, पधनि। (२३)

जहाँ तीन-तीन स्वरयुक्त दो कलाओं का प्रयोग होता है और कला के प्रथम स्वर की तीन-तीन आवृत्तियाँ की जाती हैं, उसे 'उद्गीत' कहते हैं। इस अलंकार में मूर्च्छना के ६ स्वरों का ही प्रयोग किया जाता है (अर्थात् निषाद का प्रयोग नहीं होता)। जैसे सससरिग, मममपध।

इसी प्रकार जहाँ दोनों कलाओं में बीच के स्वर की तीन-तीन आवृत्तियाँ की जायँ तो उसे 'उद्वाहित' अलङ्कार कहते हैं। जैसे सरिरिरिग, मपपपध। (२४)

जहाँ दोनों कलाओं में अन्तिम स्वर की तीन-तीन आवृत्तियाँ की की जायँ तो उसे 'त्रिवर्ण' अलङ्कार कहते हैं। जैसे सरिगगग, मपधधध।

'वेणि' अलङ्कार में तीन-तीन स्वरयुक्त दो कलाएँ होती हैं और प्रत्येक स्वर की तीन-तीन आवृत्तियाँ की जाती हैं। जैसे ससस रिरिरि गगग, ममम पपप धधध। (२५)

(उपर्युक्त चारों अलंकारों 'उद्गीत, उद्वाहित, त्रिवर्ण तथा वेणि' में सातवें स्वर निषाद का प्रयोग नहीं होता)

ये आरोही-अलंकार समाप्त हुए। अवरोह-क्रम से यदि इन १२ अलंकारों का प्रयोग किया जाय तो वे अवरोही-अलंकार हो जाते हैं।

मन्द्रादि, मन्द्रमध्य, मन्द्रान्त, प्रस्तार, प्रसाद, व्यावृत्त, स्खलित, परिवर्त्त, आक्षेप, बिन्दु, उद्वाहित, ऊर्मि, सम, प्रेङ्ख, निष्कूजित, श्येन, क्रम, उद्घट्टित, रंजित, संनिवृत्तप्रवृत्तक, वेणु, ललितस्वर, हुंकार, ह्लादमान तथा अवलोकित ये २५ संचारी-अलंकार हैं। (२६-२९)

जिसमें पहली-कला पहले, तीसरे तथा दूसरे स्वर से युक्त हो और अन्य कलाओं में मन्द्र का त्याग करते हुए इसी प्रकार तीन-तीन स्वर हों तथा प्रत्येक कला में मूर्च्छना का प्रथम स्वर (मन्द्र) आदि में हो तो उसे 'मन्द्रादि' अलंकार कहते हैं। जैसे सगरि, रिमग, गपम, मधप, पनिध। (३०)

यदि उक्त कलाओं में मन्द्र बीच में हो तो 'मन्द्रमध्य' अलंकार जैसे-गसरि, मरिग, पगम, धमप, निपध होता है और यदि मन्द्र अन्त में हो तो उसे 'मन्द्रान्त' कहते हैं जैसे-रिगस, गमरि, मपग, पधम, धनिप।

जहाँ एक-एक स्वर के अन्तर से दो स्वरयुग्म बनते जायँ और जिस स्वर का परित्याग किया जाय वह दूसरे युग्म के आदि में आता जाय तो वह 'प्रस्तार' अलंकार हो जायगा। जैसे-सग, रिम, गप, मध, पनि।

जहाँ द्वितीय स्वर के आदि और अन्त में पूर्व स्वर कहा जाय उसे 'प्रसाद' अलंकार कहते हैं। सरिस, रिगरि, गमग, मपम, पधप, धनिध।

जब चतुःस्वर कलाओं में पहला, तीसरा, दूसरा, चौथा और पुनः पहला ये स्वर क्रम से चलते जायँ तथा प्रथम स्वर के परित्याग से अन्य तीन कलाएँ भी इसी प्रकार की हों तो 'व्यावृत्त' अलंकार होता है। जैसे-सगरिमस, रिमगपरि, गपमधग, मधपनिम।

'मन्द्रादि' अलंकार की त्रिस्वर कला का प्रयोग करके तथा आगामी स्वर को दो बार उच्चारण करके जहाँ अवरोहण किया जाय तो उसे 'स्खलित' अलंकार कहते हैं। जैसे सगरिममरिगस, रिमगपपगमरि, गपमधधमपग, मधपनिनिपधम। इसकी प्रत्येक कला में आठ स्वर होते हैं।

जब दूसरे स्वर का त्याग करके पहली कला तीन स्वर की हो तथा अन्य कलाएँ भी त्यागे हुए स्वर से प्रारम्भ होकर त्रिस्वर होती जायँ तो उसे 'परिवर्त्त' अलंकार कहते हैं। जैसे सगम, रिमप, गपध, मधनि। (३१,३६)

त्रिस्वर कलाओं में जहाँ पूर्व-पूर्व स्वर का परित्याग और ऊर्ध्व (आगे के) स्वर का क्रमपूर्वक ग्रहण किया जाय तो उसे 'आक्षेप' अलंकार कहते हैं। जैसे-सरिग, रिगम, गमप, मपध, पधनि।

जहाँ पूर्व स्वर को प्लुत करके दूसरे स्वर का उच्चारण किया जाय और फिर पहले स्वर का उच्चारण किया जाय तथा यह प्रयोग अन्य कलाओं में भी हो तो उसे 'बिन्दु' अलंकार कहते हैं। जैसे-सससरिस, रिरिरिगरि, गगगमग, मममपम, पपपधप, धधधनिध।

तीन स्वर की कला के बाद एक स्वर का अवरोहण करे फिर पूर्व स्वर का परित्याग करता हुआ इसी प्रकार अन्य कलाओं को करे तो उसे 'उद्वाहित' अलंकार कहते हैं। जैसे सरिगरि, रिगमग, गमपम, मपधप, पधनिध।

मूर्च्छना के प्रथम स्वर से चौथे स्वर को प्लुत करके पुनः प्रथम स्वर और चौथे स्वर का उच्चारण करे। प्रथम स्वर का परित्याग करते हुए अन्य कलाएँ भी इसी प्रकार करे। इसे 'ऊर्मि' अलंकार कहते हैं। जैसे सममम सम, रिपपप रिप, गधधध गध, मनिनिनि मनि।

कला में चार स्वरों का आरोहण और अवरोहण करे। इसी प्रकार अन्य कलाएँ भी प्रथम एक-एक स्वर का परित्याग करते हुए की जायँ तो उसे 'सम' अलंकार कहते हैं। जैसे सरिगम मगरिस, रिगमप पमगरि, गमपध धपमग, मपधनि निधपम।

जहाँ द्विस्वरा कला आरोहावरोह से युक्त हो और अन्य कलाएँ भी प्रथम एक-एक स्वर के परित्याग से इसी प्रकार कही जायँ तो उसे 'प्रेङ्ख' अलंकार कहते हैं। जैसे-सरिरिस, रिगगरि, गममग, मपपम, पधधप, धनिनिध।

'प्रसाद' अलंकार की कला का गान करके आदि के स्वर, तीसरे स्वर तथा पुनः आदि के स्वर का गान करे तो उसे 'निष्कूजित' अलंकार कहते हैं। जैसे-सरिसगस, रिगरिमरि, गमगपग, मपमधम, पधपनिप।

जब सम्वादी स्वरों के साथ आदि में स रि ग म का प्रयोग चार युगलों में किया जाय तो उसे 'श्येन' अलंकार कहते हैं। जैसे सप, रिध, गनि, मस।

प्रथम स्वर से तीन कलाओं तक गान करे जो द्विस्वर, त्रिस्वर तथा चतुःस्वर हों। इसी प्रकार दूसरे, तीसरे और चौथे स्वरों से आरम्भ करके तीन कलाओं का गान करे तो उसे 'क्रम' अलंकार कहते हैं। जैसे सरि सरिग सरिगम, रिग रिगम रिगमप, गम गमप गमपध, मप मपध मपधनि।

जहाँ दो स्वरों का गान करके पंचम से चार स्वरों का अवरोहण करे और इसी प्रकार एक-एक स्वर का परित्याग करते हुए अन्य कलाओं का गान करे तो उसे 'उद्घट्टित' अलंकार कहते हैं। जैसे सरि पमगरि, रिग धपमग, गम निधपम।

तीन स्वरों की कला का दो बार उच्चारण करके उसके अन्त में मन्द्र स्वर का उच्चारण किया जाय तो उसे 'रंजित' अलंकार कहते हैं।

जैसे-सगरि सगरिस, रिमग रिमगरि, गपम गपमग, मधप मधपम, पनिध पनिधप।

'संनिवृत्तप्रवृत्तक' अलंकार में तीन कलाओं का प्रयोग होता है। पहली कला में प्रथम और पंचम स्वर का गान करके चतुर्थ स्वर से तीन स्वरों का अवरोहण करे तथा अन्य कलाओं में प्रथम एक-एक स्वर का प्रयोग करते हुए इसी प्रकार प्रयोग करे। जैसे-सप मगरि, रिध पमग, गनि धपम।

कला में जहाँ पहले स्वर का दो बार प्रयोग हो तथा दूसरे, चौथे और तीसरे स्वर का एक-एक बार प्रयोग हो और एक-एक स्वर का परित्याग करते हुए अन्य कलाओं का भी इसी प्रकार प्रयोग हो तो उसे 'वेणु' अलंकार कहते हैं। जैसे-सस रिमग, रिरि गपम, गग मधप, मम पनिध।

पहले दो स्वरों के बाद चौथे स्वर का उच्चारण करे और फिर पहले दो स्वरों का अवरोहण करे, यह एक कला हुई। इसी प्रकार अन्य कलाओं का भी प्रयोग करे तो उसे 'ललितस्वर' अलंकार कहते हैं। जैसे—सरिमरिस, रिगपगरि, गमधमग, मपनिपम।

जहाँ आरोहावरोह करते हुए द्विस्वरादिकला का प्रयोग किया जाय और उत्तरोत्तर प्रत्येक कला में एक-एक स्वर बढ़ता जाय तो उसे 'हुंकार' अलंकार कहते हैं। जैसे—सरिस, सरिगरिस, सरिगमगरिस, सरिगमपमगरिस, सरिगमपधपमगरिस, सरिगमपधनिधपमगरिस।

'ह्रादमान' अलंकार में मन्द्रादि-स्वर तथा प्रसन्नान्तकला होनी चाहिए। जैसे—सागरिसा, रिमगरि, गपमग, मधपम, पनिधप।

जहाँ 'सम' अलंकार की कला चतुःस्वरा हो और आरोहावरोह में द्वितीय स्वर का परित्याग हो तो वह 'अवलोकित' अलंकार होता है। जैसे—सागममरिसा, रिमपपगरि, गपधधमग, मधनिनिपम।

ये संचारी अलंकार आरोह (क्रम) से कहे हैं और इन्हीं को शार्ङ्गदेव ने अवरोह (क्रम) से भी कहा है। ये संचारी-अलंकार समाप्त हुए। (५३)

गीतज्ञों ने सात अलंकार और भी बताए हैं यथा—'तारमन्द्रप्रसन्न', 'मन्द्रतारप्रसन्न', 'आवर्त्तक', 'संप्रदान', 'विधूत', 'उपलोल' और 'उल्लासित'। मैं इनके लक्षण कहता हूँ।

इन अलंकारों की प्रथम कला को छोड़कर अन्य कलाओं में प्रथम एक-एक स्वर का परित्याग होता है।

प्रथम स्वर से आठवें स्वर तक आरोहण करके पुनः प्रथम स्वर का गान किया जाय तो उसे 'तारमन्द्रप्रसन्न' अलंकार कहते हैं। जैसे—सांरिगमपधनिसांसां।

मन्द्र स्वर से आठवें स्वर का गान करके यदि सात स्वर अवरोह क्रम से गाए जायँ तो उसे भगवान् शंकर ने 'मन्द्रतारप्रसन्न' अलंकार कहा है। जैसे—सांसांनिधपमगरिसा।

जब कलाओं में पहले दूसरे और फिर पहले स्वर का दो-दो बार गान करके द्वितीय और फिर प्रथम स्वर का गान किया जाय तो उसे 'आवर्त्तक' कहते हैं। जैसे—सासारिरिसासारिसा, रिरिगगरिरिगरि, गगममगगमग, ममपपममपम, पपधधपपधप, धधनिनिधधनिध।

यदि 'आवर्त्तक' अलंकार के दो स्वरों को त्याग कर कलाओं का प्रयोग किया जाय तो उसे 'संप्रदान' अलंकार कहते हैं। जैसे—सासा-रिरिसासा, रिरिगगरिरि, गगममगग, ममपपमम, पपधधपप, धधनि-निधध।

जब एक स्वर परित्याग करते हुए स्वर-युग्म को दो बार गाया जाय और जिस स्वर का परित्याग किया है उस स्वर से आरम्भ करके एक स्वर का परित्याग करते हुए दो स्वरों का गान किया जाय और अन्य चतुःस्वर-पंच-कलाओं का प्रयोग भी इसी प्रकार किया जाय तो उसे 'विधूत' अलंकार कहते हैं। जैसे—सागसाग, रिमरिम, गपगप, मधमध, पनिपनि।

कला के प्रारम्भिक स्वर-युग्म का दो बार गान करके तीसरे और दूसरे स्वर-युग्मों का दो बार गान किया जाय तो वह 'उपलोल' अलंकार होता है। जैसे—सारिसारिगरिगरि, रिगरिगमगमग, गमगमपमपम, मपमपधपधप, पधपधनिधनिध।

कला के आदि-स्वर का दो बार गान करके तीसरे, पहले और फिर तीसरे स्वर का गान किया जाय तो उसे 'उल्लासित' अलंकार कहते हैं। जैसे—सासागसाग, रिरिमरिम, गगपगप, ममधमध, पपनिपनि।

मैंने ये प्रसिद्ध-प्रसिद्ध कुल ६३ अलंकार (७ स्थायी, १२ आरोही, १२ अवरोही, २५ संचारी तथा ७ अन्य) कहे हैं। अलंकार अनन्त हैं इसलिए शास्त्र में सम्पूर्णता से नहीं बताए गए। अलंकार-निरूपण का प्रयोजन रक्तिलाभ, स्वरज्ञान तथा वर्णाङ्गों की विचित्रता का ज्ञान है। (५४-६४)

अलंकारस्वरनामबोधिनी—

प्रसन्नादि— सांसांसा

प्रसन्नान्त— सासांसां

प्रसन्नाद्यन्त— सांसासां

प्रसन्नमध्य— सासांसा

क्रमरेचित— सांरिसां, सांगमसां, सांपधनिसां

प्रस्तार— सांरिसा, सांगमसा, सांपधनिसा

प्रसाद— सारिसां, सागमसां, सापधनिसां

विस्तीर्ण— सा, रि, ग, म, प, ध, नि

निष्कर्ष— सासा, रिरि, गग, मम, पप, धध, निनि

(या)

गात्रवर्ण— सासासा, रिरिरि, गगग या सासासासा, रिरिरिरि इत्यादि।

बिन्दु— सासासारि, गगगम, पपपध, निनिनि

अभ्युच्चय— सागपनि इत्यादि

हसित— सा, रिरि, गगग, मममम, पपपपप, धधधधधध, निनिनिनिनिनिनि

प्रेङ्खित— सारि, रिग, गम, मप, पध, धनि

आक्षिप्त— साग, गप, पनि

सन्धिप्रच्छादन—सारिग, गमप, पधनि

उद्गीत—	सासासारिग, ममममध
उद्वाहित—	सारिरिरिग, मपपपध
त्रिवर्ण—	सारिगगग, मपधधध
वेणि—	सासासा रिरिरि गगग, ममम पपप धधध
मन्द्रादि—	सागरि, रिमग, गपम, मधप, पनिध
मन्द्रमध्य—	गसारि, मरिग, पगम, धमप, नि१ध
मन्द्रान्त—	रिगसा, गमरि, मपग, पधम, धनिप
प्रस्तार—	साग, रिम, गप, मध, पनि
प्रसाद—	सारिसा, रिगरि, गमग, मपम, पधप, धनिध
व्यावृत्त—	सागरिमसा, रिमगपरि, गपमधग, मधपनिम
स्खलित—	सागरिममरिगसा, रिमगपपगमरि, गपमधधमपग, मधपनिनिपधम
परिवर्त्त—	सागम, रिमप, गपध, मधनि
आक्षेप—	सारिग, रिगम, गमप, मपध, पधनि
बिन्दु—	सासासारिसा, रिरिरिगरि, गगगमग, मममपम, पपपधप, धधधनिध
उद्वाहित—	सारिगरि, रिगमग, गमपम, मपधप, पधनिध
ऊर्मि—	साममम साम, रिपपप रिप, गधधध गध, मनिनिनि मनि
सम—	सारिगम मगरिस, रिगमप पमगरि, गमपध धपमग, मपधनि निधपम
प्रेङ्ख—	सारिरिसा, रिगगरि, गममग, मपपम, पधधप, धनिनिध
निष्कूजित—	सारिसागसा, रिगरिमरि, गमगपग, मपमधम, पधपनिप
श्येन—	साप, रिध, गनि, मसा
क्रम—	सारि सारिग सारिगम, रिग रिगम रिगमप, गम गमप गमपध, मप मपध मपधनि
उद्घट्टित—	सारि पमगरि, रिग धपमग, गम निधपम
रंजित—	सागरि सागरिसा, रिमग रिमगरि, गपम गपमग, मधप मधपम, पनिध पनिधप

संनिवृत्तप्रवृत्तक— साप मगरि, रिध पमग, गनि धपम

वेणु— सासा रिमग, रिरिगपम, गग मधप, मम पनिध

ललितस्वर— सारिमरिसा, रिगपगरि, गमधमग, मपनिपम

हुंकार— सारिसा, सारिगरिसा, सारिगमगरिसा, सारिगमपमगरिसा, सारिगमपधपमगरिसा, सारिगमपधनिधपमगरिसा

ह्लादमान— सागरिसा, रिमगरि, गपमग, मधपम, पनिधप

अवलोकित— सागममरिस, रिमपपगरि, गपधधमग, मधनिनिपम

तारमन्द्रप्रसन्न— सांरिगमपधनिसांसां

मन्द्रतारप्रसन्न— सांसांनिधपमगरिसा

आवर्त्तक— सासारिरिमासारिसा, रिरिगगरिरिगरि, गगममगगमग, ममपपममपम, पपधधपपधप, धधनिनिधधनिध

संप्रदान— सासारिरिसासा, रिरिगगरिरि, गगममगग, ममपपमम, पपधधपप, धधनिनिधध

विधूत— सागसाग, रिमरिम, गपगप, मधमध, पनिपनि

उपलोल— सारिसारिगरिगरि, रिगरिगमगमग, गमगमपमपम, मपमपधपधप, पधपधनिधनिध

उल्लासित— सासागसाग, रिरिमरिम, गगपगप, ममधमध, पपनिपनि

संगीतरत्नाकर के प्रथम
स्वरगतअध्याय में छठवाँ वर्णालंकार-प्रकरण समाप्त

सातवाँ

जाति-प्रकरण

जाति

षड्ज (ऋषभ) आदि स्वरों जैसे नाम वाली सात शुद्ध जातियाँ हैं यथा-षाड्जी, आर्षभी, गान्धारी, मध्यमा, पंचमी, धैवती और नैषादी। इनके लक्षण कहे जाते हैं—

जिन जातियों का नामस्वर ही न्यास, अपन्यास, अंश तथा ग्रह होता है और तार में न्यास नहीं होता तथा जो पूर्ण होती हैं उन्हें शुद्ध कहते हैं। न्यास (स्वर) के अतिरिक्त अन्य (एक, दो या अनेक) लक्षणों से रहित (या विकार-युक्त) होने पर ये ही जातियाँ विकृत कहलाने लगती हैं। (१-३)

पूर्णता, ग्रह, अंश तथा अपन्यास इनमें से एक-एक के परित्याग से (जाति के) चार विकृत भेद हो जाते हैं;दो-दो के परित्याग से छः भेद हो जाते हैं तथा तीन लक्षणों के परित्याग से चार भेद और चारों लक्षणों के परित्याग से एक भेद हो जाता है । इस प्रकार तत्वज्ञों ने षाड्जी (जाति) के ये १५ विकृत-भेद बताए हैं। इनमें आठ भेद पूर्णता-हीन हैं तथा सात अन्य लक्षणों से हीन हैं।

षाडव तथा औडुव भेद से पूर्णता-हीन भेद दो प्रकार के होजाते हैं। आर्षभी इत्यादि औडुव जातियों के आठ भेद और अधिक हो जाते हैं, अतः इन ६ जातियों में प्रत्येक के २३-२३ भेद हैं। (४-७)

विकृत जातियों के संसर्ग (परस्पर संयोग) से ११ जातियाँ उत्पन्न होती हैं। इनके नाम हैं—षड्जकैशिकी, षड्जोदीच्यवा, षड्जमध्यमा, गान्धारोदीच्यवा, रक्त गान्धारी, कैशिकी, मध्यमोदीच्यवा, कार्मारवी, गान्धारपंचमी, आन्ध्री तथा नन्दयन्ती । अब मैं इनकी आधारभूत जातियाँ बताता हूँ—

षाड्जी और गान्धारी के योग से—षड्जकैशिकी ल)
षाड्जी और मध्यमा के योग से—षड्जमध्यमा ६)

गान्धारी और पंचमी के योग से—गान्धारपंचमी
गान्धारी और आर्षभी के योग से—आन्ध्री
षाड्जी–धैवती तथा गान्धारी के योग से—षड्जोदीच्यवती
नैषादी–पंचमी और आर्षभी के योग से—कार्मारवी
गान्धारी-पंचमी और आर्षभी के योग से—नन्दयन्ती,
गान्धारी-धैवती-षाड्जी और मध्यमा के योग से—गान्धारोदीच्यवा
गान्धारी–धैवती–मध्यमा और पंचमी के योग से—मध्यमोदीच्यवा
गान्धारी–नैषादी–मध्यमा और पंचमी के योग से—रक्तगान्धारी
तथा षाड्जी-गान्धारी-मध्यमा–पंचमी और नैषादी के योग से—कैशिकी जाति का निर्माण होता है। (८–१६)

षड्ज नाम से अभिहित चार जातियाँ तथा नैषादी, धैवती और आर्षभी ये सात जातियाँ षड्जग्राम की हैं, शेष मध्यमग्राम की हैं। अब इनके पूर्णत्व आदि को कहते हैं।

कार्मारवी, गान्धारपंचमी, षड्जकैशिकी और मध्यमोदीच्यवा ये जातियाँ नित्य–पूर्ण हैं (अर्थात् इनका षाडव–औडुव भेद नहीं होता)। षाड्जी, नन्दयन्ती, आन्ध्री और गान्धारोदीच्यवा ये चार जातियाँ मुनि काश्यप ने सम्पूर्ण तथा षाडव बताई हैं (अर्थात् इनका औडुव भेद नहीं होता)। अवशिष्ट दस जातियाँ सम्पूर्ण, षाडव और औडुव हैं। (१७,२०)

स्वरसाधारण

पंचमी, मध्यमा तथा षड्ज–मध्यमा नाम वाली जातियों में भरत आदि मुनियों ने 'स्वरसाधारण' कहा है। (२१)

षड्ज, मध्यम तथा पंचम के अंश होने पर नियमानुसार स्वर-साधारण होता है। कम्बल और अश्वतर आचार्यों ने उन्हीं जातियों में स्वरसाधारण बताया है, जहाँ निषाद और गान्धार का अल्प प्रयोग हो। रागभाषादि (दशविधि राग–प्रपंच) तथा अल्प निषाद-गांधार में भी स्वरसाधारण का प्रयोग बताया है। षड्जमध्यमा जाति में निषाद और गान्धार के अंश होने पर स्वरसाधारण का [illegible]योग नहीं करना चाहिए। स्वरसाधारण के आश्रय केवल विकृत [illegible]ँ ही होती हैं। (२२,२३)

नन्दयन्ती, मध्यमोदीच्यवा तथा गान्धारपंचमी इन तीनों जातियों में एक-एक स्वर अंश होता है। धैवती, गान्धारोदीच्यवा तथा पंचमी में दो-दो स्वर अंश होते हैं। नैषादी, आर्षभी तथा षड्जकैशिकी में तीन-तीन अंश होते हैं। आन्ध्री, कार्मारवी तथा षड्जोदीच्यवा में चार-चार अंश होते हैं। रक्तगान्धारी, गान्धारी, मध्यमा तथा षाड्जी में पाँच-पाँच अंश होते हैं। कैशिकी में छः तथा षड्जमध्यमा में सात अंश होते हैं। इस प्रकार इन १८ जातियों में ६३ अंश होते हैं। (२४,२८)

ग्रह, अंश, तार, मन्द्र, न्यास, अपन्यास, सन्यास, विन्यास, बहुत्व और अल्पत्व ये अन्तरमार्ग के साथ जातियों के लक्षण हैं। कहीं-कहीं षाडव तथा औडुव भी हैं। इस प्रकार जातियों के ये १३ लक्षण बताए हैं। (२९,३०)

ग्रह

गीत के प्रारम्भ में जिस स्वर का प्रयोग हो उसे 'ग्रह' कहते हैं। जहाँ 'ग्रह' तथा 'अंश' में से किसी एक का निर्देश हो तो वहाँ दोनों को ही समझना चाहिए (क्योंकि जो 'ग्रह' होता है वही 'अंश' होता है)।

अंश

जो गीत में रक्ति का अभिव्यंजक होता है, जिसके संवादी अनुवादी स्वरों का विदारी (गीतखण्ड) में प्रचुर प्रयोग होता है, जिससे तार-मन्द्र की व्यवस्था होती है, जो (कभी कभी) अपना संवादी स्वयं हो जाता है (अनुवादी नहीं) तथा जो न्यास-अपन्यास-विन्यास-सन्यास और ग्रह को प्राप्त होकर व्यापक रूप से सर्वाधिक प्रयोग में आता है, वह 'अंश' कहलाता है। (३१,३४)

तार

मध्यम सप्तक में स्थित अंश स्वर जब तार (सप्तक) में स्थित हो तो उसके आगे के चार स्वरों तक आरोहण करे। यह 'तार' की परम अवधि है। इसके विपरीत (यदि आवश्यक) हो तो (तारगति) स्वेच्छा से करनी चाहिए। तार में लुप्त (स्वर) की भी गणना होती है। (केवल) नन्दयन्ती में (ही) तार षड्ज तक आरोहण बताया है। (३५,३६)

मन्द्र

मध्य स्थान में स्थित अंश स्वर से मन्द्रस्थ अंश (स्वर) तक अथवा मन्द्रस्थ न्यास (स्वर) तक अथवा मन्द्रस्थान-स्थित ऋषभ-धैवत पर्यन्त अवरोहण करे। यह 'मन्द्र गति' की पराकाष्ठा है। परन्तु आवश्यक हो तो (निकटस्थ स्वरों पर) स्वेच्छा से (अवरोहण) करे।

न्यास

जिस स्वर पर गीत की समाप्ति हो, वह 'न्यास' कहलाता है और यह २१ प्रकार का है। षाड्जी, आर्षभी, गान्धारी, मध्यमा, पंचमी, धैवती तथा नैषादी इन सात जातियों के क्रमशः षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद ये सात न्यास-स्वर हैं। षड्जमध्यमा के षड्ज और मध्यम ये दो न्यास हैं। षड्जोदीच्यवा, गान्धारोदीच्यवा तथा मध्यमोदीच्यवा में न्यास मध्यम स्वर है। कैशिकी के निषाद, पंचम और गान्धार न्यास हैं। कार्मारवी का न्यास पंचम है तथा बाकी बची पाँच जातियों में न्यास गान्धार स्वर है। इस प्रकार यह २१ न्यास हुए। (३७,४०)

अपन्यास

जिस स्वर पर विदारी (गीतखण्ड) समाप्त हो उसे 'अपन्यास' कहते हैं। कार्मारवी, नैषादी, आन्ध्री, मध्यमा तथा आर्षभी इनके अंश स्वर ही अपन्यास कहे हैं। तीनों उदीच्यवाओं (षड्जोदीच्यवा, गान्धारोदीच्यवा तथा मध्यमोदीच्यवा जातियों) के अपन्यास षड्ज तथा धैवत, रक्त गान्धारी का मध्यम, गान्धारी के षड्ज और मध्यम, षड्जकैशिकी के षड्ज-पंचम और निषाद, पंचमी के निषाद-ऋषभ और पंचम, गान्धारपंचमी जाति के ऋषभ और पंचम, षाड्जी के गान्धार और पंचम, धैवती के ऋषभ-मध्यम और धैवत, नन्दयन्ती के मध्यम और पंचम तथा कैशिकी के ऋषभ को छोड़कर छहों स्वर अपन्यास बताए हैं। किसी-किसी के मत में कैशिकी के सातों स्वर अपन्यास होते हैं। षड्जमध्यमा के सातों स्वर अपन्यास होते हैं। यहाँ जो अन्त्य (अंश) स्वर हैं वे ही अपन्यास हैं जो १६ हैं। अन्य अपन्यास ३७ हैं, इस प्रकार कुल ५६ अपन्यास हुए। यदि कैशिकी में सात अपन्यास वाला पक्ष मान लिया जाय तो कुल अपन्यास स्वर ५७ हो जाएँगे। (४१,४६)

सन्यास

जो स्वर अंश का अभिवादी (संवादी) तथा गीत की पहली विदारी (गीतखण्ड) को समाप्त करने वाला हो, उसे 'सन्यास' कहते हैं।

विन्यास

जो स्वर अंश का अभिवादी हो एवं विदारीरूप-पदों अर्थात् शब्दों के अन्त में स्थित रहता हो, उसे 'विन्यास' कहते हैं। (४७,४८)

बहुत्व

'बहुत्व' दो प्रकार का होता है, अलंघन (सम्पूर्ण स्पर्श) से तथा अभ्यास से। यह बहुत्व पर्याय-अंश (वादिभूत अंशों से पृथक् अंश) तथा वादी और संवादी में स्थित है। (४६)

अल्पत्व

अल्पत्व दो प्रकार का बताया है, अनभ्यास तथा लंघन से। अंश को छोड़कर जो अन्य स्वर हैं उनमें तथा लोप्य स्वरों में भी प्रायः इसका प्रयोग होता है। (५०)

लंघन

किंचित्-स्पर्श को 'लंघन' कहते हैं। यह प्रायः लोप्य स्वरों में होता है। गीत-विशारदों ने अनंशों (अर्थात् अंश-स्वरों से अन्य स्वर) में भी इसका प्रयोग बताया है। (५१)

अन्तरमार्ग

न्यास, अपन्यास, विन्यास, ग्रह तथा अंश के स्थानों के अतिरिक्त, बीच-बीच में अंश, ग्रह, अपन्यास, विन्यास और सन्यास स्वरों के साथ अल्प स्वरों की विचित्रता उत्पन्न करने वाली संगति, जो कहीं अनभ्यास एवं कहीं लंघन द्वारा हो, 'अन्तरमार्ग' कहलाती है, जो प्रायः विकृत जातियों में होती है। (५२,५३)

षाडव

जो 'षट्' अर्थात् छः स्वर मिलकर जाति इत्यादि की रचना करते हैं उन्हें 'षडव' कहते हैं। षडव स्वरों में व्यक्त होने के कारण ही षट्स्वर-गीत 'षाडव' कहलाते हैं। (५४)

औडुव

'उडुव' का अर्थ है आकाश (क्योंकि उडु अर्थात नक्षत्र इसमें गमन करते हैं)। भूतों (पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश) में आकाश का स्थान पाँचवाँ है, अतः पाँचवीं संख्या 'औडुवी' कहलाती है और जो स्वर पाँच की संख्या में हों वे 'औडुव' कहलाते हैं । गीत में (स्वरों की सम्पूर्ण अवस्था से) पाँच स्वर वाली औडुव-अवस्था में परिणत होना (ही) 'औडुवित' कहलाता है। (५५,५६)

षाडव-औडुवकारी स्वरों की सम्पूर्णत्व दशा में क्रम से अल्प तथा अल्पतर (अल्पता का अर्थ है 'अनभ्यास' तथा अल्पतर का अर्थ है 'लंघन') जानने चाहिए। अर्थात् जिस स्वर के लोप से षाडव संज्ञा हुई है उस स्वर की सम्पूर्णत्व दशा में अल्पत्व और जिसके लोप से औडुव संज्ञा हुई है उस स्वर की सम्पूर्णत्व दशा में अल्पतरत्व का प्रयोग जानना चाहिए। पंचमी जाति में इसका विपर्यय हो जाता है (अर्थात् जिसके लोप से षाडवत्व की प्राप्ति हुई है, उसकी सम्पूर्णत्व दशा में अल्पतरत्व और जिसके लोप से औडुवत्व की प्राप्ति हुई है, उसकी सम्पूर्णत्व दशा में अल्पत्व जानना चाहिए)। यहाँ अल्पत्व और बहुत्व की प्राप्ति नहीं है अतः अल्पत्व का विधान बताया है क्योंकि दोनों की प्राप्ति में एक का अतिशय करने के लिए जो विधान बताया जाता है उसे 'परसंख्या' कहते हैं। (५७,५८)

जाति-परिचय-पट्टिका

जाति नाम	अंश	न्यास	अपन्यास	मूर्च्छना	षाडवकारी स्वर	औडुवकारी स्वर
षाड्जी*	स,ग,म,प,ध,	स	ग,प	उत्तरमन्द्रा–ध नि स रि ग म प ध नि स रि ग	नि	०
आर्षभी*	रि,ध,नि	रि	रि,ध,नि	शुद्धषड्जा–रि ग म प ध नि स रि ग म प ध	स	सप
गांधारी	स,ग,म,प,नि	ग	स,प	पौरवी——प ध नि स रि ग म प ध नि स रि	रि	रिध
मध्यमा	स,रि,म,प,ध	म	स,रि,म,प,ध	कलोपनता-रि ग म प ध नि स रि ग म प ध	ग	गनि
पञ्चमी	रि,प	प	रि,प,नि	कलोपनता-रि ग म प ध नि स रि ग म प ध	ग	गनि
धैवती*	रि,ध	ध	रि,म,ध	अभिरुद्गता-प ध नि स रि ग म प ध नि स रि	प	सप
नैषादी*	नि,रि,ग	नि	नि,रि,ग	अश्वक्रान्ता–म प ध नि स रि ग म प ध नि स	प	सप
षड्जकैशिकी*	स,ग,प	ग	स,प,नि	…………	०	०
षड्जोदीच्यवा*	स,म,ध,नि	म	स,ध	अश्वक्रान्ता–म प ध नि स रि ग म प ध नि स	रि	रिप
षड्जमध्यमा*	स,रि,ग,म,प,ध,नि	स,म	स,रि,ग,म,प,ध,नि	मत्सरीकृता–ग म प ध नि स रि ग म प ध नि	नि	गनि
गांधारोदीच्यवा	स,म	म	स,ध	पौरवी ––प ध नि स रि ग म प ध नि स रि	रि	०
रक्तगांधारी	स,ग,म,प,नि	ग	म	कलोपनता-रि ग म प ध नि स रि ग म प ध	रि	रिध
कैशिकी	स,ग,म,प,ध,नि	ग, प, नि	स,ग,म,प,ध,नि	हारिणाश्वा-स रि ग म प ध नि स रि ग म प	रि	रिध
मध्यमोदीच्यवा	प	म	स,ध	सौवीरी –नि स रि ग म प ध नि स रि ग म	०	०
कार्मारवी	रि,प,ध,नि	प	रि,प,ध,नि	शुद्धमध्या –ग म प ध नि स रि ग म प ध नि	०	०
गांधारपञ्चमी	प	ग	रि,प	हारिणाश्वा-स रि ग म प ध नि स रि ग म प	०	०
आन्ध्री	रि,ग,प,नि	ग	रि,ग,प,नि	सौवीरी –नि स रि ग म प ध नि स रि ग म	स	०
नन्दयन्ती	प	ग	म,प	हृष्यका –ध नि स रि ग म प ध नि स रि ग	स	०

षाड्जी जाति

अब इन जातियों के लक्षण कहे जाते हैं।

जाति-लक्षण व प्रस्तार

षाड्जी में निषाद और ऋषभ को छोड़कर पाँच स्वर अंश होते हैं (पर्याय से ये ही वादी तथा ग्रह हो जाते हैं) इसमें निषाद के लोप से षाडव रूप होता है। यही निषाद पूर्णत्व अवस्था में कहीं-कहीं काकली हो जाता है। इसमें गान्धार का प्रयोग प्रचुरता से होता है तथा षड्ज-गान्धार एवं षड्ज-धैवत की संगति होती है। जब गान्धार अंश हो तो निषाद का लोप नहीं होता। इसकी धैवतादि मूर्च्छना है। एककल, द्विकल तथा चतुष्कल (पंचपाणि ताल) का इसमें प्रयोग होता है। एककल पंचपाणि में चित्र मार्ग तथा मागधी गीति, द्विकल में वार्तिक (वृत्ति) मार्ग और सम्भाविता गीति एवं चतुष्कल में दक्षिण-मार्ग तथा पृथुला गीति इस क्रम से प्रयोग करे। प्रथम अंक की नैष्क्रामिकी ध्रुवा में इसका विनियोग होता है। इसमें १२ कलाएँ होती हैं। एक कला में आठ लघु होते हैं। इस षाड्जी में षड्ज न्यास तथा गान्धार और पंचम अपन्यास होते हैं। जब विकृत अवस्था में भी इसमें काकली का प्रयोग होता है तो वराटी प्रतीत होने लगती है। (५६,६३)

पद

तं भवललाटनयनाम्बुजाधिकं
नगसूनुप्रणयकेलिसमुद्भवम्।
सरसकृततिलकपङ्कानुलेपनं
प्रणमामि कामदेहेन्धनानलम्॥

प्रस्तार

१	सा	सा	सा	सा	पा	निध	पा	धनि
	तं	–	भ	व	ल	ला	–	ट
२	रि	गम	गा	गा	सा	रिग	धसा	धा
	न	य	नां	–	बु	जा	–	धि

३	रिग	सा	रि	गा	सा	सा	सा	सा
	कं	–	–	–	–	–	–	–
४	धा	धा	नि	निसां	निध	पा	सां	सां
	न	ग	सू	–	नु	प्र	ण	य
५	नि	धा	पा	धनि	रि	गा	सा	गा
	के	–	लि	–	स	मु	–	द्ध
६	सा	धां	धंनिं	पां	सा	सा	सा	सा
	वं	–	–	–	–	–	–	–
७	सा	सा	गा	सा	मा	पा	मा	मा
	स	र	स	क्ष	त	ति	ल	क
८	सा	गा	मा	धनि	निध	पा	गा	रिग
	पं	–	–	का	नु	ले	प	–
९	गा	गा	गा	गा	सा	सा	सा	सा
	नं	–	–	–	–	–	–	–
१०	धां	सा	रि	गरि	सा	मा	मा	मा
	प्र	ण	मा	–	मि	का	–	स
११	धा	नि	पा	धनि	रि	गा	रि	सा
	दे	–	हें	–	ध	ना	न	–
१२	रिग	सा	रि	गा	सा	सा	सा	सा
	लं	–	–	–	–	–	–	–

आर्षभी जाति

आर्षभी में निषाद, रिषभ और धैवत ये तीन स्वर अंश होते हैं। गान्धार और निषाद इन द्विश्रुति स्वरों की संगति अन्य स्वरों के साथ होती है। पंचम का लंघन होता है। षड्ज के लोप से षाडव और षड्ज-पंचम के लोप से औडुव रूप होता है। इसकी मूर्च्छना पंचमादि है और ताल चच्चत्पुट। आठ कलाएँ होती हैं तथा विनियोग पूर्ववत् (अर्थात् षाड्जी जाति के समान) होता है। (६४,६६)

आर्षभी में रिषभ न्यास तथा अंश ही अपन्यास होते हैं। इसमें देशी-मधुकरी की प्रतीति होती है।

पद

गुणलोचनाधिकमनन्तममरमजरमक्षयमजेयम् ।
प्रणमामि विव्यमणिदर्पणामलनिकेतं भवममेयम् ।।

प्रस्तार

१	रि	गा	सा	रिग	मा	रिम	गा	रिरि
	गु	ण	लो	–	च	ना	–	धि
२	रि	रि	निध	निध	गा	रिम	मा	पनि
	क	म	नं	–	त	म	म	र
३	मा	धा	नि	धा	पा	पा	सा	गा
	म	ज	र	म	–	–	क्ष	य
४	नि	धनि	रि	गरि	साधं	गरि	रि	रि
	म	जे	–	–	–	–	यं	–
५	रि	मा	गरि	साधं	सासा	रिसा	रिग	मम
	प्र	ण	–	मा	–	–	मि	दिव्य

६	निध	पा	रि	रि	रिप	गरि	साधं	सा
	म	णि	द	–	पं	णा	–	म
७	रिसा	रिसा	रिग	रिग	मा	मा	मा	गरि
	ल	नि	के	–	–	–	तं	–
८	पा	नि	रि	मा	गरि	साधं	गरि	गरि
	भ	व	म	मे	–	–	–	यम्

गांधारी जाति

गान्धारी में रिषभ और धैवत को छोड़कर पाँच अंश होते हैं। न्यास और अंश के साथ अन्य स्वरों की संगति होती है। धैवत से रिषभ तक जाना चाहिए। रिषभ और रिषभ–धैवत के लोप से क्रमशः षाडव और औडुव रूप होते हैं। पंचम के अंश होने पर षाडव रूप नहीं होता। निषाद, षड्ज, मध्यम और पंचम के अंश होने पर औडुव रूप नहीं होता। इसमें १६ कलाएँ होती हैं। मूर्च्छना धैवतादि है और ताल चच्चत्पुट। ध्रुवागान में तृतीय अंक में इसका विनियोग होता है। इस गान्धारी में गान्धार न्यास तथा षड्ज-पंचम अपन्यास हैं। गान्धार–पंचम तथा देशी–वेलावली की इसमें प्रतीति होती है। (६७,६६)

पद

एतं रजनिवधूमुखविभ्रमदं निशामय वरोरु

तव मुखविलासवपुश्चारुममलमृदुकिरणममृतभवम् ।

रजतगिरिशिखरमणिशकलशंखवरयुवतिदन्तपंक्तिनिभं

प्रणमामि प्रणयरतिकलहरवनुदं शशिनम् ॥

१	गा	गा	सा	निं	सा	गा	गा	गा
	ए	—	—	—	तं	—	—	—
२	गा	गम	पा	पा	धप	मा	निध	निर्सा
	र	ज	नि	व	धू	—	मु	ख
३	निध	पनि	मा	मपरि	गा	गा	गा	गा
	वि	—	—	भ्र	म	—	दं	—
४	गा	गम	पा	पा	धप	मा	निध	निर्सा
	नि	शा	म	य	व	रो	—	रु
५	निध	पनि	मा	मपरि	गा	गा	मा	सा
	त	व	मु	ख	वि	ला	—	स
६	गा	सा	गा	गा	गा	गम	गा	गा
	व	पु	श्चा	रु	—	म	म	ल
७	गा	गम	पा	पा	धप	मा	निध	निर्सा
	मृ	दु	कि	र	णा	—	—	—
८	निध	पनि	मा	मपरि	गा	गा	गा	गा
	म	मृ	त	भ	वं	—	—	—
९	री	गा	मा	[illegible]	री	गा	मा	सा
	र	ज्	त	गि	रि	शि	ख	र
१०	निं	निं	निं	निं	निं	निं	निं	निं
	म	णि	शं	क	ल	शं	—	ख

११	गा	गम	पा	पा	धप	मा	निध	निर्सा
	व	र	यु	व	ति	दं	—	त
१२	निध	पनि	मा	मपरि	गा	गा	गा	गा
	पं	—	क्ति	नि	भं	—	—	—
१३	नि	नि	पा	नि	गा	मा	गा	सा
	प्र	ण	मा	—	मि	प्र	ण	य
१४	गा	सा	गा	गा	गा	गम	गा	गा
	र	ति	क	ल	ह	र	व	नु
१५	गा	पा	मा	मा	निध	निर्सा	निध	पनि
	दं	—	—	—	—	—	—	—
१६	मा	परिग	गा	गा	गा	गा	गा	गा
	श	शि	—	—	नं	—	—	—

मध्यमा जाति

मध्यमा में गान्धार और निषाद के अतिरिक्त पाँच स्वर अंश होते हैं। षड्ज-मध्यम की बहुलता होती है और गान्धार का अल्प प्रयोग होता है। गान्धार के लोप होने से षाडव और गान्धार-निषाद के लोप से औडुव रूप होता है। इसकी मूर्च्छना ऋषभादि और ताल चच्चत्पुट मानी गई है। ध्रुवागान के दूसरे अंक में इसका विनियोग होता है। इसमें मध्यम न्यास और अन्श ही अपन्यास होते हैं। इसमें शुद्ध-षाडव ग्राम-राग तथा देशी-आन्धाली की प्रतीति होती है। (७०-७२)

पद

पातु भवमूर्धजाननकिरीटमणिदर्पणम् ।
गौरीकरपल्लवाङ्गुलिसुतेजितं सुकिरणम् ॥

प्रस्तार

१	मा	मा	मा	मा	पा	धनि	नि	धप
	पा	—	—	तु	भ	व	मू	—
२	मा	पम	मा	सा	मा	गा	रि	रि
	र्ध	जा	—	—	न	न	—	—
३	पा	मा	रिम	गम	मा	मा	मा	मा
	कि	री	ट	—	—	—	—	—
४	मा	निध	निसां	निध	पम	पध	मा	मा
	म	णि	द	—	र्प	—	णां	—
५	निं	निं	रि	रि	निं	रि	रि	पा
	गौ	—	री	—	क	र	प	—
६	निं	मप	मा	मा	सा	सा	सा	सा
	ल्ल	वां	—	—	गु	लि	—	सु
७	गां	नि	सां	गां	धप	मा	धनि	सां
	ते	—	—	—	—	—	जि	तं
८	पा	सां	पा	निधप	मा	मा	मा	मा
	सु	कि	र	—	णां	—	—	—

पंचमी जाति

पंचमी में ऋषभ तथा पंचम अंश होते हैं। षड्ज, गान्धार और मध्यम का प्रयोग अल्प होता है। ऋषभ और मध्यम की संगति होती है। पूर्णावस्था में गान्धार से निषाद तक जाना चाहिए। गान्धार के लोप से षाडव तथा निषाद-गान्धार के लोप से औडुव रूप होता है। ऋषभ के अंश होने पर औडुव रूप नहीं होता। इसमें आठ कलाएँ होती हैं। इसकी मूर्च्छना ऋषभादि और ताल चच्चत्पुट है। ध्रुवा के तीसरे अंक में इसका विनियोग होता है। इसमें पंचम न्यास तथा ऋषभ-पंचम और निषाद अपन्यास होते हैं। इसमें शुद्धपंचम तथा देशी-आन्धाली की प्रतीति होती है। (७३-७४)

पद

हरमूर्धजाननं महेशममरपतिबाहुस्तम्भनमनन्तम्,।
तं प्रणमामि पुरुषमुखपद्मलक्ष्मीहरमम्बिकापतिमजेयम् ॥

प्रस्तार

१	पा	धनि	नि	नि	मा	नि	मा	पा
	ह	र	मू	–	र्ध	जा	–	न
२	गा	गा	सा	सा	मां	मां	पां	पां
	नं	म	हे	–	श	म	म	र
३	पां	पां	धां	निं	निं	निं	गा	सा
	प	ति	बा	–	हु	स्तं	–	भ
४	पा	मा	धा	नि	निध	पा	पा	पा
	न	म	नं	–	तं	–	–	–

५	पा	पा	रिं	रिं	रिं	रिं	रिं	रिं
	प्र	ण	मा	–	मि	पु	रु	ष
६	मां	निंग	सा	साध	नि	नि	नि	नि
	मु	ख	प	द्म	–	ल	–	क्ष्मी
७	सां	सां	सां	मा	पा	पा	पा	पा
	ह	र	मं	–	त्रि	का	–	प
८	धा	मा	धा	नि	पा	पा	पा	पा
	ति	म	जे	–	यं	–	–	–

धैवती जाति

धैवती में रिषभ और पंचम अंश होते हैं। आरोही-वर्ण में स्थित षड्ज-पंचम का लंघन करना चाहिए। पंचम के लोप से षाडव और षड्ज-पंचम के लोप से औडुव रूप होता है। इसकी मूर्च्छना रिषभादि है तथा ताल, मार्ग, गीति और विनियोग षाड्जी जाति के समान हैं। इसमें १२ कलाएँ होती हैं। धैवत न्यास तथा रिषभ-मध्यम-धैवत अपन्यास होते हैं। इसमें शुद्ध कैशिक तथा देशी सिंहली की प्रतीति होती है। (७५,७६)

पद

तरुणामलेन्दुमणिभूषितामलशिरोजं
भुजगाधिपंककुण्डलविलासकृतशोभम्।
नगसूनुलक्ष्मीदेहार्धमिश्रितशरीरं
प्रणमामि भूतगीतोपहारपरितुष्टम्॥

प्रस्तार

१	धा	धा	निध	पध	मा	मा	मा	मा
	त	रु	णा	—	म	लें	—	दु
२	धा	धा	निध	निसां	सां	सां	सां	सां
	म	णि	भू	—	षि	ता	—	म
३	साध	धा	पा	मध	धा	निध	धनि	धा
	ल	शि	रो	—	—	—	जं	—
४	सा	सा	रिग	रिग	सा	रिग	सा	सा
	भु	ज	गा	—	धि	पै	—	क
५	धां	धां	निं	पां	धां	पां	मां	मां
	कुँ	—	ड	ल	षि	ला	—	स
६	धां	धां	पां	मंधं	धां	निंधं	धंनिं	धां
	कृ	त	शो	—	—	—	भं	—
७	धा	धा	निसां	निसां	निध	पा	पा	पा
	न	ग	सू	—	नु	ल	—	क्ष्मी
८	रिग	सा	सा	सा	निं	निं	निं	निं
	दे	हा	—	—	धे	मि	—	श्रि
९	सा	रिग	रिग	सा	नि	सा	धा	धा
	त	श	री	—	—	—	रं	—

१०	रिं	गरि	संगं	मां	मां	मां	मां	मां
	प्र	ण	मा	–	मि	भू	–	त
११	नि	नि	धा	धा	पा	रिग	सा	रिग
	गी	–	तो	–	प	हा	–	र
१२	पा	धा	सा	मा	धा	नि	धा	धा
	प	रि	तु	–	–	–	ष्टं	–

नैषादी जाति

नैषादी में निषाद, रिषभ तथा गान्धार अंश हैं और अन्य अनंश (सा, म, प, ध) अल्प-प्रयोज्य हैं। षाडव तथा औडुव रूप, लंघनीय स्वर तथा विनियोग पूर्व के ही समान (धैवती के समान) हैं। इसकी मूर्च्छना गान्धारादि तथा ताल चच्चत्पुट है। इसमें १६ कलाएँ होती हैं। इसमें निषाद न्यास तथा अंश ही अपन्यास होते हैं। शुद्ध साधारित तथा देशी-वेलावली की इसमें प्रतीति होती है। (७७,७८)

पद

तं सुरवन्दितमहिषमहासुरमथनमुमार्पित भोगयुतम्
नगसुतकामिनीदिव्यविशेषकसूचकशुभनखदर्पणकम् ।
अहिमुखमणिखचितोज्ज्वलनूपुरबालभुजंगमरवकलितम्
द्रुतमभिव्रजामि शरणमनिन्दितपादयुग्मपङ्कजविलासम् ।।

प्रस्तार

१	नि	नि	नि	नि	सां	धा	नि	नि
	तं	–	सु	र	वं	–	दि	त

२	पा	मा	सा	धां	निं	निं	नि	निं
	म	हि	ष	म	हा	–	सु	र
३	सा	सा	गा	गा	नि	नि	धा	नि
	म	थ	न	मु	मा	–	प	तिं
४	र्सा	र्सा	धा	नि	नि	नि	नि	निं
	भो	–	ग	यु	तं	–	–	–
५	सा	सा	गा	गा	मां	मां	मां	मां
	न	ग	सु	त	का	–	मि	नी
६	निं	पां	धां	पां	मां	मां	मां	मां
	दि	–	व्य	वि	शे	–	ष	क
७	रिं	र्गा	र्सा	र्सा	रिं	र्गा	नि	नि
	सू	–	च	क	शु	भ	न	ख
८	नि	नि	पा	धनि	नि	नि	नि	नि
	द	–	र्प	ण	कं	–	–	–
९	सा	सा	गा	सा	मा	मा	मा	सा
	श्र	हि	मु	ख	म	णि	ख	चि
१०	मां	मां	मां	मां	निं	धां	मां	मां
	तो	–	ज्ज्व	ल	नू	–	पु	र
११	धा	धा	नि	नि	रि	गा	मां	मां
	बा	ल	–	भु	जं	ग	–	म

१२	मां	मां	पां	धां	निं	निं	निं	निं
	र	च	क	लि	–	तं	–	–
१३	पां	पां	निं	निं	रि	रि	रि	रि
	द्रु	त	म	भि	व्र	जा	–	मि
१४	री	मा	मा	मा	रि	गा	सा	सा
	श	र	ग	म	निं	–	दि	त
१५	धा	मा	रि	गा	सा	धा	नि	नि
	पा	–	द	यु	ग	पं	–	क
१६	पा	मा	रिं	गा	नि	नि	नि	नि
	ज	वि	ला	–	सं	–	–	–

षड्जकैशिकी जाति

षड्जकैशिकी में षड्ज, गान्धार और पंचम अंश होते हैं। रिषभ और मध्यम में अल्पत्व तथा धैवत और निषाद में कुछ बहुलता रहती है। चच्चत्पुट ताल और १६ कलाएँ होती हैं। प्रावेशिकी-ध्रुवा में दूसरे अंक में विनियोग होता है। इसमें गान्धार न्यास तथा षड्ज, निषाद और पंचम अपन्यास होते हैं। पहले कहे हुए गान्धार-पंचम, हिन्दोल और देशी वेलावली की इसमें प्रतीति होती है। (७९,८०)

पद

देवमसकलशशितिलकं द्विरदगतिं

निपुणमतिं मुग्धमुखाम्बुरुहदिव्यकान्तिम्।

हरमम्बुदोदधिनिनादमचलवरसूनुदेहार्धमिश्रितशरीरं

प्रणमामि तमहमनुपममुखकमलम् ॥

प्रस्तार

१	सा	सा	मां	पां	गरि	मग	मा	मा
	दे	—	—	—	—	—	—	—
२	मा	मा	मा	मा	सा	सा	सा	सा
	वं	—	—	—	—	—	—	—
३	धा	धा	पा	पा	धा	धा	रि	रिम
	अ	स	क	ल	श	शि	ति	ल
४	रि	रि	निं	निं	निं	निं	निं	निं
	कं	—	—	—	—	—	—	—
५	धा	धा	पा	धनि	मा	मा	पा	पा
	द्वि	र	द	ग	तिं	—	—	—
६	धा	धा	पा	धनि	धा	धा	पा	पा
	नि	पु	ण	म	ति	—	—	—
७	सा	सा	सा	सा	सा	सा	सा	सा
	सु	—	ग्ध	—	मु	खां	—	बु
८	धा	धा	पा	धा	धनि	धा	धा	धा
	रु	ह	दि	—	व्य	कां	—	तिम्
९	सा	सा	सा	रिग	सा	रिग	धा	धा
	ह	र	मं	—	बु	दो	—	द

१०	मा	धा	पा	पा	धा	धा	नि	नि
	धि	नि	ना	–	दं	–	–	–
११	रि	रि	गा	सा	सां	सां	सां	सां
	अ	च	ल	व	र	सू	–	न
१२	धां	रिंसं	रिं	संरिं	रिं	सां	सां	सां
	दे	–	हा	–	र्ध	मि	–	श्रि
१३	सा	सरि	रि	सरि	रि	सा	सा	सा
	त	श	री	–	रं	–	–	–
१४	मा	मा	मा	मा	निध	पध	मा	मा
	प्र	ण	मा	–	मि	तम	हं	–
१५	नि	नि	पा	पम	पा	पम	पध	रिग
	अ	नु	प	म	मु	ख	क	म
१६	गा	गा	गा	गा	गा	गा	गा	गा
	लं	–	–	–	–	–	–	–

षड्जोदीच्यवा जाति

षड्जोदीच्यवा में षड्ज, मध्यम, निषाद तथा धैवत अंश होते हैं। इन्हीं की परस्पर संगति होती है। मन्द्र गान्धार का बाहुल्य तथा षड्ज और ऋषभ का अति बाहुल्य रहता है। ऋषभ के लोप से षाडव, और ऋषभ-पंचम के लोप से औडुव रूप बनता है। धैवत के अंश होने पर षाडव रूप नहीं होता। इसके गीत, ताल इत्यादि षाड्जी जाति के समान होते हैं। इसकी मूर्च्छना गान्धारादि है। द्वितीय अङ्क के

ध्रुवागान में विनियोग होता है। इसमें मध्यम न्यास तथा षड्ज–धैवत अपन्यास होते हैं। (८१-८२-८३)

पद

शैलेशसूनुप्रणयप्रसङ्गसविलासखेलनविनोदम्।
अधिकमुखेन्दुनयनं नमामि देवासुरेश तव रुचिरम्॥

प्रस्तार

१	सा	सा	सा	सा	मां	मां	गां	गां
	शै	–	–	–	ले	–	–	–
२	गा	मा	पा	मा	गा	मा	मा	धा
	श	–	सू	–	–	–	–	नु
३	सा	सा	मा	गा	पा	पा	नि	धा
	शै	–	ले	–	श	सू	–	नु
४	धा	नि	सा	सा	धा	नि	पा	मा
	प्र	ण	य	–	प्र	सं	–	ग
५	गां	सा	सा	सा	सा	सा	सा	गां
	स	वि	ला	–	स	खे	–	ल
६	धा	धा	पा	धा	पा	नि	धा	धा
	न	वि	नो	–	–	–	दं	–
७	सा	गां	गां	गां	गां	गां	सा	सा
	अ	–	धि	–	क	–	–	–

८	नि	धा	पा	धा	पा	धा	धा	धा
	मु	खे	–	–	–	–	–	न्दु
६	सां	सां	मा	गा	पा	पा	नि	धा
	अ	धि	क	–	मु	खे	–	न्दु
१०	धा	नि	सां	सां	धा	नि	पा	मा
	न	य	नं	–	न	मा	–	मि
११	गां	सा	सा	सा	सा	सा	सा	गां
	दे	–	वा	–	सु	रे	–	श
१२	धा	धा	पा	धा	मा	मा	मा	मा
	त	व	रु	चि	रं	–	–	–

'शैले' अर्थात शिववाचक दो अक्षरों से पहली कला और 'शसूतु' (गणेशवाचक) इन तीन अक्षरों से दूसरी कला करनी चाहिए। तीसरी कला इन्हीं पाँचों अक्षरों को मिलाकर करनी चाहिए। सातवीं कला 'अधिक' इन तीन अक्षरों से करनी चाहिए। आठवीं कला 'मुखेन्दु' इन तीन अक्षरों से तथा नवीं कला (अधिक और मुखेन्दु) इन ६ अक्षरों को मिलाकर करनी चाहिए। (८४)

षड्जमध्यमा जाति

षड्जमध्यमा में सातों स्वर अंश और अपन्यास तथा षड्ज-मध्यम न्यास होते हैं। अंशों की ही परस्पर संगति होती है। निषाद अनंश अवस्था में अल्प होता है। निषाद के लोप से षाडव तथा निषाद-गान्धार के लोप से औडुव रूप होता है। (अंश होने पर) निषाद-गान्धार षाडव तथा औडुव अवस्थाओं के विरोधी होते हैं। गीति, कला, ताल इत्यादि सब षाडजी के समान होते हैं। इसकी मूर्च्छना मध्यमादि और विनियोग षड्जोदीच्यवा के समान है। (८५–८६–८७)

पद

रजनिवधूमुखविलासलोचनं
प्रविकसितकुमुददलफेनसन्निभम् ।
कामिजननयनहृदयाभिनन्दितं
प्रणमामि देवं कुमुदाधिवासिनम् ॥

प्रस्तार

१	मा	गा	साग	पा	धप	मा	निध	निम
	र	ज	नि	व	धू	—	मु	ख
२	मा	मा	सां	रिंगं	मंगं	निध	पध	पा
	वि	ला	—	स	लो	—	—	च
३	मा	गा	रि	गा	मा	सा	सा	सा
	नं	—	—	—	—	—	—	—
४	मा	मगम	मा	मा	निध	पध	पम	गमम
	प्र	वि	क	सि	त	कु	मु	द
५	धा	पध	परि	रिग	मग	रिग	साधसा	सा
	द	ल	फे	न	सं	—	—	नि
६	निध	सा	रि	मगम	मा	मा	मा	मा
	भं	—	—	—	—	—	—	—
७	मां	मां	मंगंमं	मंधं	धंपं	पंधं	पंमं	गंमंगं
	का	—	मि	ज	न	न	य	न
८	धा	पध	परि	रिग	मग	रिग	साधसा	सा
	हृ	द	या	भि	नं	—	—	दि

९	मा	मा	धनि	धसा	धप	मप	पा	पा
	नं	—	—	—	—	—	—	—
१०	मां	मंगंमं	मां	निंधं	पंधं	पंमंगं	गां	मां
	प्र	ण	मा	—	मि	दे	वं	—
११	धा	पध	परि	रिग	मग	रिग	साधसा	सा
	कु	मु	दा	धि	वा	—	—	सि
१२	निध	सा	रि	मगम	मा	मा	मा	मा
	नं	—	—	—	—	—	—	—

गान्धारोदीच्यवा जाति

गान्धारोदीच्यवा में षड्ज-मध्यम अंश होते हैं। रिषभ के लोप से षाडव रूप बनता है। पूर्णावस्था में अनंश स्वर अल्प रहते हैं। षाडवावस्था में निषाद, धैवत, पंचम, गान्धार अल्प होते हैं। रिषभ-धैवत की संगति होती है। मूर्च्छना धैवतादि तथा ताल चच्चत्पुट है। १६ कलाएँ होती हैं। चौथे अंक के ध्रुवा गान में विनियोग है। इसमें मध्यम न्यास और षड्ज-धैवत अपन्यास होते हैं। (८८,८९,९०)

पद

सौम्यगौरीमुखाम्बुरुहदिव्यतिलक—

परिचुम्बितार्चितसुपादं प्रविकसितहेमकमलनिभम्।

अतिरुचिरकान्तिनखदर्पणामलनिकेतं मनसिजशरीर—

ताडनं प्रणमामि गौरीचरणयुगमनुपमम्॥

प्रस्तार

१	सा	मा	पा	मा	पा	धप	पा	मा
	सौ	—	—	—	—	—	—	—

२	धा	पा	मा	मा	सा	सा	सा	सा
	म्य	–	–	–	–	–	–	–
३	धा	नि	सा	सा	मा	मा	पा	पा
	गौ	–	री	–	मु	खां	–	बु
४	नि	नि	नि	नि	नि	नि	नि	नि
	रु	ह	दि	–	व्य	ति	ल	क
५	मा	मा	धा	निसा	नि	नि	नि	नि
	प	रि	चुं	–	बि	ता	–	चिं
६	मा	पा	मा	परिग	गा	गा	सा	सा
	त	सु	पा	–	दं	–	–	–
७	गा	मग	पा	पध	मा	धनि	पा	पा
	प्र	वि	क	सि	त	हे	–	म
८	रि	गा	सा	साध	नि	नि	धा	धा
	क	म	ल	नि	भं	–	–	–
९	गा	रिग	सा	सानि	गा	रिग	सा	सा
	अ	ति	रु	चि	र	कां	–	ति
१०	सा	सा	सा	मा	मनि	धनि	नि	नि
	न	ख	द	–	र्पं	णा	–	म
११	मा	पा	मा	परिग	गा	गा	सा	सा
	ल	नि	के	–	तं	–	–	–

१२	गा	सा	गा	सा	मा	पा	मा	पनि
	म	न	सि	ज	श	री	र	–
१३	गा	मा	गा	सा	गा	गा	गा	सा
	ता	–	–	ड	नं	–	–	–
१४	नि	नि	पा	धा	नि	गा	गा	गा
	प्र	ण	मा	–	मि	गौ	–	री
१५	नि	नि	धा	पा	धा	पा	मा	पा
	च	र	ण	यु	ग	म	नु	प
१६	धा	पा	सा	सा	मा	मा	मा	मा
	मं	–	–	–	–	–	–	–

रक्तगान्धारी जाति

रक्तगान्धारी में धैवत और रिषभ को छोड़कर अन्य स्वर अंश होते हैं। रिषभ को छोड़कर अन्य स्वरों के साथ षड्ज-गान्धार की संगति करनी चाहिए। रिषभ और रिषभ-धैवत के लोप से षाडव और औडुव रूप होता है। निषाद और धैवत बहुल होते हैं। पंचम के अंश होने पर षाडव रूप नहीं होता। षड्ज, निषाद, मध्यम और पंचम के अंश होने पर औडुव रूप नहीं होता। षड्ज-गान्धार की संगति भी करनी चाहिए। इसमें पंचपाणि आदि ताल षाड्जी के समान हैं। मूर्च्छना रिषभादि है। तीसरे अंक की ध्रुवा में इसका विनियोग होता है। गान्धार न्यास तथा मध्यम अपन्यास होता है। (९१,९४)

पद

तं बालरजनिकरतिलकभूषणविभूतिम् ।

प्रणमामि गौरीवदनारविन्दप्रीतिकरम् ॥

प्रस्तार

१	पा	नि	सा	सा	गा	सा	पा	नी
	तं	ऽ	बा	—	ल	र	ज	नि
२	सां	सां	पा	पा	मा	मा	गा	गा
	क	र	ति	ल	क	भू	—	ष
३	मा	पा	धा	पा	मा	पा	धप	मग
	ण	वि	भू	—	—	—	—	—
४	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा
	तिं	—	—	—	—	—	—	—
५	धां	निं	पां	मंपं	धां	निं	पां	पां
	—	—	—	—	—	—	—	—
६	मां	पां	मां	धंनिं	पां	पां	पां	पां
	—	—	—	—	—	—	—	—
७	रि	गा	मा	पा	पा	पा	मा	पा
	प्र	ण	मा	—	मि	गौ	—	री
८	रिं	गा॑	मा॑	पा॑	पा॑	पा॑	मा॑	पा॑
	व	द	ना	—	र	विं	—	—
९	पा	पा	पा	पा	पा	पा	पा	पा
	द	—	—	—	—	—	—	—
१०	रि	गा	सा	सा	रि	गा	गा	गा
	श्री	—	ति	क	रं	—	—	—

११	गा	गा	पा	धम	धा	निध	पा	पा
	–	–	–	–	–	–	–	–
१२	मा	पा	मा	परिग	गा	गा	गा	गा
	–	–	–	–	–	–	–	–

कैशिकी जाति

कैशिकी में ऋषभ को छोड़कर अन्य स्वर अंश होते हैं। जब निषाद और धैवत अंश होते हैं तो पंचम ही न्यास होता है अन्यथा द्विश्रुति स्वर (गान्धार और निषाद) न्यास होते हैं। अन्य आचार्य निषाद और धैवत के अंश होने पर निषाद,गान्धार तथा पंचम इन तीनों को ही न्यास मानते हैं। ऋषभ और ऋषभ-धैवत के लोप से षाडव तथा औडुव रूप बनते हैं। ऋषभ का अल्पत्व तथा निषाद-पंचम की बहुलता और अन्श स्वरों की परस्पर संगति होती है। जब पंचम अंश होता है तो षाडव रूप और जब धैवत अंश होता है तब औडुव रूप नहीं होता। इसमें पंचपाणि इत्यादि ताल षाड्जी के समान हैं। मूर्च्छना गान्धारादि है। पाँचवें अङ्क की ध्रुवा में इसका विनियोग होता है। गान्धार, पंचम और निषाद न्यास होते हैं। ऋषभ के अतिरिक्त छः अथवा सातों स्वर अपन्यास होते हैं। (९५–९८)

पद

केलीहतकामतनुविभ्रमविलासं
तिलकयुतं मूर्धोर्ध्वबालसोमनिभम्।
मुखकमलमसमहाटकसरोजं
हृदि सुखदं प्रणमामि लोचनविशेषम्॥

प्रस्तार

१	पा	धनि	पा	धनि	गा	गा	गा	गा
	के	–	ली	–	ह	–	त	–
२	पा	पा	मा	निध	निध	पा	पा	पा
	का	–	म	त	नु	–	–	–
३	धा	नि	सां	सा	रि	रि	रि	रि
	वि	–	भ्र	म	वि	ला	–	सं
४	सा	सा	सा	रि	गा	मा	मा	मा
	वि	ल	क	यु	तं	–	–	–
५	मां	धां	निं	धां	मां	धां	मां	पां
	मू	–	र्धो	–	र्ध्वं	बा	–	ल
६	गा	रि	सा	धनि	रि	रि	रि	रि
	सो	–	म	नि	भं	–	–	–
७	गा	रि	सा	सा	धा	धा	मा	मा
	सु	ख	क	म	लं	–	–	–
८	गा	मा	गा	मा	मा	निधनि	नि	नि
	अ	स	म	–	हा	–	ट	–
९	गा	गा	नि	निं	गा	गा	गा	गा
	क	स	रो	जं	–	–	–	–

१०	गा	गा	नि	नि	निध	पा	पा	पा
	ह	दि	सु	ख	दं	–	–	–
११	मा	पा	मा	पा	पा	पा	मा	मा
	प्र	ण	मा	–	मि	लो	च	–
१२	सा	मा	गा	निधनि	नि	नि	मा	गा
	न	वि	शे	–	पं	–	–	–

मध्यमोदीच्यवा जाति

मध्यमोदीच्यवा में पंचम अन्श होता है और यह जाति सदैव पूर्ण होती है। इसके अन्य लक्षण गान्धारोदीच्यवा के समान हैं। मूर्च्छना मध्यमादि और ताल चच्चत्पुट है। चौथे अङ्क की ध्रुवा में इसका विनियोग होता है। न्यास स्वर इसमें मध्यम है। (९९–१००)

पद

देहार्धरूपमतिकान्तिकाममलममलेन्दुकुन्दकुमुदनिभं
चामीकराम्बुरुहदिव्यकान्तिप्रवरगणपूजितमजेयम्।
सुराभिष्टुतमनिलमनोजवमम्बुदोदधिनिनादमतिहासं
शिवं शान्तमसुरचमूमथनं वन्दे त्रैलोक्यनतचरणम्॥

प्रस्तार

१	पा	धनि	नि	नि	मा	पा	नि	पा
	दे	–	हा	–	र्ध	रू	–	प
२	रि	रि	रि	गा	सा	रिग	गा	गा
	म	ति	का	–	ति	म	म	ल

३	नि	नि	नि	नि	नि	नि	नि	नि
	म	म	लें	–	दु	कुं	–	द
४	नि	नि	धप	मा	निध	निध	पा	पा
	कु	सु	द	नि	भं	–	–	–
५	पा	पा	रि	रि	रि	रि	रि	रि
	चा	–	मी	–	क	रां	–	बु
६	मा	रिग	सा	साधं	निं	निं	निं	निं
	रु	ह	दि	–	–	व्य	कां	ति
७	मा	पा	निं	सा-	पा	पा	गा	गा
	प्र	व	र	ग	ण	पू	–	जि
८	गा	पां	मां	निंधं	निं	निं	सा	सा
	त	म	जे	–	यं	–	–	–
९	पां	पां	मां	धंनि	पां	पां	पां	पां
	सु	रा	भि	ष्टु	त	म	नि	ल
१०	मां	पां	मां	रिग	गा	गा	गा	गा
	म	नो	ज	–	व	–	मं	बु
११	गा	पा	मा	पा	नि	नि	नि	नि
	दो	–	द	धि	नि	ना	–	द
१२	मा	पा	मा	परिग	गा	गा	गा	गा
	म	ति	हा	–	सं	–	–	–

१३	गा	गा	गा	गा	मा	निध	नि	नि
	शि	वं	शां	–	त	म	सु	र
१४	नि	नि	धप	मा	निध	निध	पा	पा
	च	मू	म	थ	नं	–	–	–
१५	रिं	गा	सा	सा	मा	निधनि	नि	नि
	वं	–	दे	–	त्रै	लो	क्य	–
१६	नि	नि	धा	पा	धा	पा	मा	मा
	न	त	च	र	णां	–	–	–

कार्मारवी जाति

कार्मारवी में निषाद, ऋषभ, पंचम और धैवत अंश होते हैं। अन्तरमार्ग के कारण अनंश स्वर भी बहुल होते हैं। गांधार अत्यन्त बहुल होता है। क्योंकि उसकी संगति सभी समस्त अंश स्वरों के साथ होती है। चञ्चत्पुट ताल, सोलह कलाएँ और षड्जादि मूर्च्छना है। विनियोग पंचम अंक की ध्रुवा में है। पंचम न्यास तथा अंशस्वर अपन्यास हैं। (१०१,१०२)

पद

तं स्थाणुललितवामाङ्गसक्तमतितेजःप्रसरसौधांशुकान्ति

फणिपतिमुखमुरोविपुलसागरनिकेतं सितपन्नगेन्द्रमतिकान्तम्।

षण्मुखविनोदकरपल्लवाङ्गुलिविलासकीलनविनोदं

प्रणमामि देवयज्ञोपवीतकम्॥

प्रस्तार

१	रि	रि	रि	रि	रि	रि	रि	रि
	तं	–	स्था	–	णु	ल	लि	त

२	मा	गा	सा	गा	सा	नि	नि	नि
	त्रा	—	मां	—	ग	स	—	क्त
३	निं	मां	नि	मां	पां	पां	गा	गा
	म	ति	ते	—	जः	प्र	स	र
४	गा	पा	मा	पा	नि	नि	नि	नि
	सौ	—	धां	—	शु	कां	—	ति
५	रिं	गा	सां	निं	रिं	गा	रिं	मा
	फ	णि	प	ति	मु	खं	—	—
६	रि	गा	रि	सा	नि	धनि	पा	पा
	उ	रो	त्रि	पु	ल	सा	—	ग
७	मा	पा	मा	परिंगं	गा	गा	गा	गा
	र	नि	के	—	तं	—	—	—
८	रि	रि	गा	साम	मा	मा	पा	पा
	सि	त	पं	—	न	गें	—	द्र
९	मा	पा	मा	परिग	गा	गा	गा	गा
	म	ति	कां	—	तं	—	—	—
१०	धा	नि	पा	मा	धा	नि	सा	सा
	ष	—	ण्मु	ख	वि	नो	—	द
११	नि	नि	नि	नि	नि	नि	नि	नि
	क	र	प	—	ल्ल	वां	—	गु

१२	मां	मां	धां	निं	सानिनि	धा	पा	पा
	लि	वि	ला	–	स	की	–	ल
१३	मा	पा	मा	परिग	गा	गा	गा	गा
	न	वि	नो	–	दं	–	–	–
१४	निं	नि	पा	धनि	गा	गा	गा	गा
	प्र	ण	मा	–	मि	दे	–	व
१५	सां	रिं	गां	सां	निं	निं	निं	निं
	य	–	ज्ञो	–	प	वी	–	त
१६	निं	निं	धां	धां	पां	पां	पां	पां
	कं	–	–	–	–	–	–	–

गांधारपंचमी जाति

गांधारपंचमी में अंशस्वर पंचम है। गांधार और पंचमी के समान संगति जाननी चाहिए। चच्चत्पुट ताल, सोलह कलाएँ और गान्धारादि मूर्च्छना है। चौथे अंक से सम्बन्धित ध्रुवा गान में विनियोग है। इस जाति में गान्धार न्यास और ऋषभ-पंचम अपन्यास हैं। (१०३,१०४)

पद

कान्तं वामैकदेशप्रेङ्खोलमान–

कमलनिभं वरसुरभिकुसुमगन्धाधिवासितमनोज्ञ–

नगराजसूनुरतिरामरभसकेलीकुचग्रहलीलं

तं प्रणमामि देवं चन्द्रार्धमण्डितविलासकौलनविनोदम् ॥

प्रस्तार

१	पा	मप	मध	नि	धप	मा	धा	नि
	कां	—	—	—	—	—	—	—
२	सानिनि	धा	पा	पा	पा	पा	पा	पा
	—	—	तं	—	—	—	—	—
३	धा	नि	सा	सा	मा	मा	पा	पा
	वा	—	मैं	—	क	दे	—	श
४	नि	नि	नि	नि	नि	नि	नि	नि
	प्रे	—	इ्खो	—	ल	मा	—	न
५	नि	नि	धप	मा	निध	निध	पा	पा
	क	म	ल	नि	भं	—	—	—
६	पा	पा	रि	रि	रि	रि	रि	रि
	व	र	सु	र	भि	कु	सु	म
७	मा	रिग	सा	सध	नि	नि	नि	नि
	गं	—	धा	—	धि	वा	—	सि
८	नि	नि	सां	रिंसां	रिं	रिं	रिं	रिं
	त	म	नो	—	ज्ञ	—	—	—
९	नि	गा	सा	निग	गा	निं	निं	निं
	न	ग	रा	ज	सू	—	—	नु

१०	निं	मां	निं	मां	पां	पां	गा	गा
	र	ति	रा	–	ग	र	भ	स
११	गा	पां	मां	पां	निं	निं	निं	निं
	के	–	ली	–	कु	च	–	प्र
१२	मा	पा	मा	परिग	गा	गा	गा	गा
	ह	ली	लं	–	तं	–	–	–
१३	निं	निं	पां	धां	निं	गा	गा	गा
	प्र	ण	मा	–	मि	दे	–	वं
१४	निं	निं	निं	निं	निं	निं	निं	निं
	चं	–	द्रा	–	र्ध	मं	–	डि
१५	मां	मां	धां	निं	सनिनि	धा	पा	पा
	त	वि	ला	सकी	ल	–	–	–
१६	मा	पा	मा	परिग	गा	गा	गा	गा
	न	वि	नो	–	दं	–	–	–

आन्ध्री जाति

आन्ध्री में निषाद, ऋषभ, गांधार और पंचम अंश हैं तथा रे-ग और नि-ध की परस्पर संगति है। अन्शानुक्रम से न्यास स्वर तक जाना चाहिए। षड्ज के लोप से यह षाडव होती है, मूर्च्छना मध्यमादि है। कला, काल, विनियोग इत्यादि गान्धारपंचमी के समान हैं। गान्धार न्यासस्वर है और अंशस्वर ही अपन्यास है। (१०५-१०६)

पद

तरुणेन्दुकुसुमखचितजटं त्रिदिवनदीसलिलधौतमुखं
नगसूनुप्रणयं वेदनिधिं परिणाहितुहिनशैलगृहम् ।
अमृतभवं गुणरहितं तमवनिरविशशिज्वलनजलपवन-
गगनतनुं शरणं व्रजामि शुभमतिकृतनिलयम् ।।

प्रस्तार

१	गा	रि	रि	रि	रि	रि	रि	रि
	त	रु	णे	—	न्दु	कु	सु	म
२	रि	गा	रि	गा	रि	रि	रि	रि
	ख	चि	त	ज	टं	—	—	—
३	रि	रि	गा	गा	रि	रि	मा	मा
	त्रि	दि	व	न	दी	स	लि	ल
४	रि	गा	सा	धनि	निं	निं	निं	निं
	धौ	—	त	मु	खं	—	—	—
५	निं	रि	निं	रि	धंनिं	धंनिं	पां	पां
	न	ग	सू	—	नु	प्र	ण	यं
६	मां	पां	मां	रिग	गा	गा	गा	गा
	वे	—	द	नि	धिं	—	—	—
७	रि	रि	गा	सस	मा	मा	पा	पा
	प	रि	णा	—	हि	तु	हि	न

८	मां	पां	मां	रिग	गा	गा	गा	गा
	शै	ल	गृ	हं	–	–	–	–
९	धां	निं	गा	मा	गा	गा	गा	गा
	अ	मृ	त	भ	वं	–	–	–
१०	पा	पा	मा	रिग	गा	गा	गा	गा
	गु	ण	र	हि	तं	–	–	–
११	नि	नि	नि	नि	रि	रि	रि	रि
	त	म	व	नि	र	वि	श	शि
१२	रि	रि	गा	नि	सा	सा	नि	नि
	ज्व	ल	न	ज	ल	प	व	न
१३	पां	पां	मां	रिंगं	गां	गां	गां	गां
	ग	ग	न	त	नुं	–	–	–
१४	रिं	रिं	गां	सांमं	मां	मां	पां	पां
	श	र	णं	–	त्र	जा	–	मि
१५	मां	मां	निं	निं	सां	रिं	गां	पां
	शु	भ	म	ति	कृ	त	नि	ल
१६	रिंगं	गां	गां	गां	गां	गां	गां	गां
	यं	–	–	–	–	–	–	–

नन्दयन्ति जाति

नन्दयन्ति में पंचम अंश स्वर और गान्धार ग्रह स्वर कहा गया है। कुछ गीतविशारद इसमें पंचम को भी ग्रह स्वर कहते हैं। मन्द्र ऋषभ का बाहुल्य रहता है तथा षड्ज के लोप से षाडव प्रकार बनता है। मूर्च्छना हृष्यका है। ताल आन्ध्री के समान और कलाएँ (उस जाति से) द्विगुण (अर्थात ३२) हैं। प्रथम अङ्क के ध्रुवागान में विनियोग है। न्यास स्वर गान्धार है तथा मध्यम-पंचम अपन्यास हैं। (१०७-१०९)

पद

सौम्यं वेदाङ्गवेदकरकमलयोनिं तमोरजोविवर्जितं हरं
भवहरकमलगृहं शिवं शान्तं सन्निवेशनमपूर्वं
भूषणलीलमुरगेशभोगभासुरशुभपृथुलम् ।
अचलपतिसूनुकरपंकजामलविलासकीलनविनोदं
स्फटिकमणिरजतसितनवदुकूलक्षीरोदसागरनिकाशम् ।
अजशिरःकपालपृथुभाजनं वन्दे सुखदं
हरदेहममलमधुसूदनसुतेजोऽधिकसुगतियोनिम् ॥

प्रस्तार

१	गा	गा	गा	गा	पा	पा	धप	मा
	सौ	—	—	—	—	—	—	—
२	धा	धा	धा	धा	धा	नि	सनिनि	धा
	—	—	—	—	—	—	—	—
३	पां	पां	पां	पां	पां	पां	पां	पां
	म्यं	—	—	—	—	—	— —	—
४	धां	निं	मां	पां	गां	गां	गां	गां
	वे	—	दा	—	ङ्ग	वे	—	द

५	मा	रि	गा	गा	गा	गा	गा	गा
	क	र	क	म	ल	यो	–	निं
६	मा	मा	पा	पा	धा	निध	पा	पा
	त	मो	र	जो	वि	व	–	–
७	धा	नि	मा	पा	गा	गा	गा	गा
	जिं	तं	–	–	–	–	–	–
८	गम	पा	पा	पा	मा	मा	गा	गा
	हरं	–	–	–	–	–	–	–
९	धा	नि	मा	पा	गा	गा	गा	गा
	भ	व	ह	र	क	म	ल	गृ
१०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा
	हं	–	–	–	–	–	–	–
११	रि	गा	मा	पा	पम	पा	पा	नि
	शि	वं	शां	–	तं	सं	–	नि
१२	रिं	रिं	रिं	रिं	पां	पां	मां	मां
	वे	–	श	न	म	पू	–	वं
१३	धां	नि	सनिनि	धां	पां	पां	पां	पां
	भू	प	–	ण	ली	–	लं	–
१४	धां	निं	मां	पां	गां	गां	गां	गां
	उ	र	गे	–	श	भो	–	ग

१५	गा	पा	पा	पा	धा	मा	गा	मा
	भा	—	सु	र	शु	भ	गृ	थु
१६	धा	धा	नि	धा	पा	पा	पा	पा
	लं	—	—	—	—	—	—	—
१७	रि	गा	मा	पा	पम	पा	पा	नि
	श्र	च	ल	प	ति	सू	नु	—
१८	रिं	रिं	रिं	रिं	पां	पां	पां	पां
	क	र	पं	—	क	जा	—	म
१९	पा	पा	पा	पा	धा	मा	मा	मा
	ल	वि	ला	—	स	की	—	ल
२०	नि	पां	गां	गंमं	गां	गां	गां	गां
	न	वि	नो	—	दं	—	—	—
२१	रिं	रिं	गां	गां	मां	मां	मां	मां
	स्फ	टि	क	म	णि	र	ज	त
२२	नि	पा	नि	मा	नि	धा	पा	पा
	सि	त	न	व	दु	कू	—	ल
२३	सां	सां	धनि	धा	पा	पा	पा	पा
	क्षो	—	रोद	—	सा	—	—	ग
२४	मा	पा	मा	परिग	गा	गा	सां	सां
	र	नि	का	—	शं	—	—	—

२५	रि	रि	गा	गा	मा	मा	पा	पा
	अ	ज	शि	रः	क	पा	–	ल
२६	रि	रि	रि	गा	मा	रिग	मा	मा
	पृ	थु	भा	–	–	ज	नं	–
२७	मा	नि	पा	नि	गा	गा	गा	गा
	वं	–	दे	–	सु	ख	दं	–
२८	मा	मा	पा	पा	धा	धनि	निध	मा
	ह	र	दे	–	ह	म	म	ल
२९	धा	धा	सा	नि	धा	नि	पा	पा
	म	धु	सू	–	द	न	–	सु
३०	रिं	रिं	रिं	रिं	मा	पा	धा	मा
	ते	–	जो	–	धि	क	–	सु
३१	नि	नि	नि	नि	धा	पा	मा	मा
	ग	ति	यो	–	–	–	–	–
३२	मा	परिग	गा	गा	गा	गा	गा	गा
	–	निं	–	–	–	–	–	–

[निर्देश—स्वराङ्कनप्रणाली में जिन स्वरों के ऊपर बिन्दु हैं उन्हें मन्द्र सप्तक का और जिन स्वरों के ऊपर खड़ी रेखाएँ हैं उन्हें तार सप्तक का जानना चाहिए। अनु०]

(इन जातियों में) जहाँ कुछ नहीं कहा गया हो वहाँ तीन प्रकार (एककल, द्विकल और चतुष्कल) का (चच्चत्पुट) ताल जानना चाहिए। क्रम से चित्र, वृत्ति और दक्षिण मार्ग होंगे। क्रमशः मागधी, सम्भाविता और पृथुला गीतियाँ होंगी। कला-संख्या जो बताई गई हो, वह दक्षिण मार्ग के लिए समझनी चाहिए। वृत्तिमार्ग के लिए (कला-संख्या) दुगुनी और इसी प्रकार चित्र मार्ग के लिए चौगुनी समझनी चाहिए। सभी जातियों में रस को अंश स्वर का अनुगामी जानना चाहिए। (११०-११२)

जनक जातियों में तत्सम्बन्धी जन्य रागों के तत्व विज्ञ पुरुषों को दिखाई पड़जाते हैं। ब्रह्मा द्वारा शंकर-स्तुति में इन पदों को सम्यक् प्रकार से गाया गया था। इन जातियों का सम्यक् रीति से गान किया जाय तो ब्रह्म-हत्या के पाप से भी मुक्ति हो जाती है। जिसप्रकार ऋक्, यजु और साम (वेद) सम्यक् गान से ही पूर्ण फलदायक होते हैं उसी प्रकार साम से उत्पन्न ये जातियाँ भी वेदसम्मित हैं। (११३,११४)

संगीतरत्नाकर में प्रथम
स्वरगताध्याय में सातवां जाति-प्रकरण समाप्त

आठवाँ

गीति-प्रकरण

कपाल

अब मैं शुद्ध जातियों से उत्पन्न 'कपालों' का वर्णन करता हूँ। जनक जातियों से उत्पन्न राग उन (जातियों) के कपालों के सदृश होते हैं।(१)

जहाँ षड्ज ग्रह, अंश और अपन्यास हो। गान्धार न्यास हो। गान्धार और मध्यम बहुल हों। ऋषभ, पंचम, निषाद और धैवत अल्प हों। ऋषभ लंघनीय (लोप्य) हो तथा बारह कला हों तो उसे गीत विशारदों ने 'षाड्जी कपाल' बताया है।

जहाँ ऋषभ अंश और अपन्यास हो। मध्यम (न्यास) अन्त में हो तथा ग नि प ध अल्प हों। षड्ज अत्यल्प हो तथा आठ कलाएँ हों तो वह 'आर्षभी-कपाल' होता है।

जहां मध्यम अंश, ग्रह, न्यास और अपन्यास हो। धैवत बहुल हो। षड्ज, ऋषभ और गान्धार अल्प हों। ऋषभ और पंचम के लोप से औडुव (रूप) हो तथा आठ कलाएँ हों तो वह 'गान्धारी कपाल' होता है। (२,५)

जहाँ मध्यम अंश हो। नि रि ग प अल्प और नौ कलाएँ हों तो वह निःशंक (शाङ्गदेव) के अनुसार 'मध्यमाकपाल' होगा। (६)

ऋषभ अंश और ग्रह हो। नि, ध, सा, ग और म अल्प तथा आठ कलाएँ हों। ऐसा कपाल विद्वानों ने पंचमी जाति से उत्पन्न बताया है। (७)

ऋषभ और गान्धार अल्प हों। पंचम न्यास हो। मध्यम और धैवत बहुल हों तथा अन्य (रूप) षाड्जी (कपाल) के समान हों तो ऐसा आठ कलाओं से युक्त कपाल धैवती (जाति) का है। (८)

षड्ज ग्रह, अंश और न्यास हो। ऋषभ तथा गान्धार अल्प हों। नि, ध और म बहुल हों तो यह 'नैषादीकपाल' होगा। (९)

जो शिव-स्तुति के समय ब्रह्मा द्वारा गाए गए इन सात कपालों का पद तथा स्वर सहित गान करता है उसका परमकल्याण होता है।(१०)

कपाल–बोधिनी

कपाल	ग्रह	अंश	न्यास	अपन्यास	अल्प	बहुल	अन्तरमार्ग	कला	जाति
षाड्जी कपाल	स	स	ग	स	रिपनिध	गम	रि	१२	षाड्जी
आर्षभी कपाल	०	रि	म	रि	सगनिपध	०	०	८	आर्षभी
गान्धारी कपाल	म	म	म	म	सरिग	ध	रिप	८	गान्धारी
मध्यमा कपाल	०	म	०	०	निरिगप	०	०	९	मध्यमा
पंचमी कपाल	रि	रि	०	०	निधसगम	०	०	८	पंचमी
धैवती कपाल	स	स	प	स	रिग	मध	रि	८	धैवती
नैषादी कपाल	स	स	स	०	रिग	निधम	०	०	नैषादी

(एक कथा के अनुसार एक बार भगवान शिव भिक्षाटन के उद्देश्य से निकले और उन्होंने षड्जादि जातियों का गान किया। इससे निरतिशय रस की अभिव्यक्ति हुई और शिवमस्तक पर स्थित अर्द्धचन्द्र से अमृत स्रवित होने लगा जिससे ब्रह्मा के आभूषण रूपी कपाल (मस्तक) उससे सिक्त होकर प्राणवान हो उठे और शिव-गान का अनुकरण करने लगे। अतः कपाल से उत्पन्न गीत होने के कारण उन्हें 'कपाल' कहा गया।) अनु०

कम्बल

जहाँ पंचम ग्रह, अंश और अपन्यास हो परन्तु ऋषभ प्रबल हो। षड्ज न्यास हो परन्तु म, ध और ग अल्प हों; उसे (पंचमी जाति से उत्पन्न) 'कम्बल' कहते हैं। स्वरों के अल्पत्व तथा बहुत्व के कारण पूर्व पुरुषों द्वारा इसके असंख्य भेद बताए गए हैं। (११,१२)

कम्बल–गान से संतुष्ट होकर शिव ने कम्बल (नागवंश का एक प्राचीन संगीतकार) को वरदान दिया था और अब भी इन (कम्बलों) के द्वारा शिव संतुष्ट होते हैं। अब हम ब्रह्मप्रोक्त कपाल-पदों को क्रम से बताते हैं।

षाड्जी कपाल पद—

झण्डु झण्डु ॥ १ ॥ खट्वाङ्गधरं ॥ २ ॥ दंष्ट्राकरालं ॥ ३ ॥ तडित्सदृशजिह्वं ॥ ४ ॥ हौ हो हौ हौ हो हौ हौ हौ ॥ ५ ॥ बहुरूपवदनं घनघोरनादं ॥ ६ ॥ हौ हो हो हौ हो हौ हौ हो ॥ ७ ॥ ॐ ॐ हां रौं हौं हौं हौं हौं ॥ ८ ॥ नृमुण्डमण्डितम् ॥ ९ ॥ हूं हूं कह कह हूं हूं ॥ १० ॥ कृतविकटमुखम् ॥ ११ ॥ नमामि देवं भैरवम् ॥ १२ ॥ यह षाड्जी कपाल पद हैं।

आर्षभी कपाल पद—

झण्डु झण्डु खट्वाङ्गधरम् ॥ १ ॥ दंष्ट्राकरालम् ॥ २ ॥ तडित्सदृशजिह्वम् ॥ ३ ॥ हौ हो हौ हौ हो हौ हौ हौ ॥ ४ ॥ वरसुरभिकुसुम ॥ ५ ॥ र्चचितगात्रम् ॥ ६ ॥ कपालहस्तम् ॥ ७ ॥ नमामि देवम् ॥ ८ ॥ यह आर्षभी कपाल पद हैं।

गान्धारी कपाल पद—

चलत्तरंग ॥ १ ॥ भङ्गुरम् ॥ २ ॥ अनेकरेणु ॥ ३ ॥ पिञ्जरं सु ॥ ४ ॥ रासुरैः सुसेवितं पु ॥ ५ ॥ नातु जाह्न ॥ ६ ॥ वीजलम् ॥ ७ ॥ मां बिन्दुभिः ॥ ८ ॥ यह गान्धारी कपाल पद हैं।

मध्यमा कपाल पद—

शूलकपाल ॥ १ ॥ पाणित्रिपुरविनाशि ॥ २ ॥ शशाङ्कधारिणम् ॥ ३ ॥ त्रिनयनत्रिशूलम् ॥ ४ ॥ सततमुमया सहि ॥ ५ ॥ तं वरदम् ॥ ६ ॥ हौ हो हौ हौ हो हौ हौ हौ ॥ ७ ॥ हौ हौ हौ हो हौ हौ हौ हो ॥ ८ ॥ नौमि महादेवम् ॥ ९ ॥ यह मध्यमा कपाल पद हैं।

पंचमी कपाल पद—

जय विषमनयन ॥ १ ॥ मदनतनुदहन ॥ २ ॥ वरवृषभगमन ॥ ३ ॥ त्रिपुरदहन ॥ ४ ॥ नतसकलभुवन ॥ ५ ॥ सितकमलवदन ॥ ६ ॥ भव मे भयहरण ॥ ७ ॥ भव शरणम् ॥ ८ ॥ यह पञ्चमीकपाल पद हैं।

धैवती कपाल पद—

अग्निज्वाला ॥ १ ॥ शिखावली ॥ २ ॥ मांसशोणित ॥ ३ ॥ भोजिनि ४ ॥ सर्वाहारि ॥ ५ ॥ णि निर्मांसे ॥ ६ ॥ चर्ममुण्डे ॥ ७ ॥ नमोऽस्तु ते ॥ ८ ॥ यह धैवती कपाल पद हैं।

नैषादी कपाल पद—

सरसगजचर्मपटम् ।। १ ।। भीमभुजंगमानद्धजटम् ।। २ ।। कह्कहहुंकृति-विकृतमुखम् ।। ३ ।। नम तं शिवं हरमजितम् ।। ४ ।। चण्डतुण्डगजेयम् ।। ५ ।। कपालमण्डितमुकुटम् ।। ६ ।। कामदर्पविध्वंसकरम् ।। ७ ।। नम तं हरं परमशिवम् ।। ८ ।। यह नैषादीकपाल पद हैं ।

इस प्रकार ये सात कपाल पद हुए ।

गीति

पद तथा लय से युक्त और वर्ण आदि से अलंकृत गानक्रिया को 'गीति' कहते हैं । विद्वानों ने इसे चार प्रकार का बताया है । यथा—प्रथम मागधी, दूसरी अर्द्धमागधी, तीसरी संभाविता और चौथी पृथुला । अब हम इनके लक्षण बताते हैं ।

प्रथम पादभाग (कला) में विलम्बित लय से युक्त पद को गाकर, दूसरे पादभाग में कुछ और शब्दों को सम्मिलित करने के पश्चात् मध्यलय में गाने के बाद, तीसरे पादभाग में कुछ और शब्दों को सम्मिलित करके द्रुतलय में (इस प्रकार तीन आवृत्तियों में) गाना 'मागधी' गीति है । यथा—

मा	गा	मा	धा
दे	—	वं	—
धनि	धनि	सनि	धा
दे	वं	रु	द्रं
रिग	रिग	मग	रिस
देवं	रुद्रं	वं	दे

पूर्व पद के अन्तिम अर्द्धभाग को जब दो बार कहा जाय तो उसे 'अर्धमागधी' कहते हैं ।

यथा—

मा	री	गा	सा
दे	—	वं	—
सा	सा	धा	नि
वं	रु	द्रं	—
पा	धा	पा	मा
द्रं	वं	दे	—

दो पदों की दो बार आवृत्ति इस प्रकार होगी—

मा	मा	मा	मा
दे	—	वं	—
धा	सा	धा	नि
दे	वं	रु	द्रं
पा	निध	मा	मा
रु	द्रं	वं	दे

पदों का संकोच एवं दीर्घ अक्षरों की अधिकता होने पर 'सम्भाविता' गीति कहलाती है ।

यथा—

धा	मा	मा	रिग
भ	—	क्त्या	—
री	गा	सा	सा
दे	—	वं	—

नि	धा	सा	नि
रु	–	द्रं	–
धा	नि	मा	मा
वं	–	दे	–

जब पद में ह्रस्व अक्षरों का आधिक्य हो तो उसे 'पृथुला' गीति कहते हैं।

यथा—

मा	गा	रि	गा
सु	र	न	त
सा	धनि	धा	धा
ह	र	प	द
धा	सा	धा	नि
यु	ग	लं	–
पा	निधप	मा	मा
प्र	ण	म	त

अथवा यथाक्षर चञ्चत्पुट (ऽ ऽ । ऽ) का आश्रय लेकर (ताल के) आदिम दो गुरुओं में एक-एक को चित्रमार्ग में प्रयुक्त करके (तत्पश्चात्) चगण (चार मात्राओं के गण) से युक्त करके (वार्तिक मार्ग का प्रयोग करें (तत्पश्चात् उन दोनों गुरुओं को ध्रुवका इत्यादि आठ मात्राओं (ध्रुवका, सर्पिणी, कृष्या, पद्मिनी, विसर्जिता, विक्षिप्ता, पताका और पतिता) से युक्त करके जब प्रयुक्त किया जाता है, तब 'मागधी' गीति होती है।

यथाक्षर चञ्चत्पुट के तृतीय लघु में तीन मात्राएँ और मिलाकर (उसे चतुर्मात्रिक बनाकर) जब ध्रुवका, सर्पिणी, पताका और पतिता

नामक कर-क्रियाओं से प्रयुक्त किया जाय तथा अन्तिम प्लुत में नौ मात्राएँ और मिलाकर (अर्थात् उसे द्वादशमात्रिक करके) बारहों मात्राओं में (पहली आठ मात्राओं को) ध्रुवका इत्यादि आठ कर-क्रियाओं से युक्त करके (और अन्तिम चार को) पताका, पतिता, पताका, पतिता से युक्त करके जब प्रयुक्त किया जाता है, तब 'अर्धमागधी' गीति होती है। इसी प्रकार अन्य तालों में भी मागधी और अर्धमागधी की योजना होती है। (१३,२४)

द्विकल-चञ्चत्पुट ताल में वार्तिक मार्गाश्रित सम्भाविता गीति अनेक गुरु-अक्षरों से युक्त होती है और चतुष्कल-चञ्चत्पुट ताल में दक्षिण मार्गाश्रित पृथुला गीति अनेक लघु अक्षरों से युक्त होती है। (२५)

संगीतरत्नाकर के प्रथम
स्वरगताध्याय में आठवाँ गीति प्रकरण समाप्त

अनुवादक
लक्ष्मीनारायण गर्ग

प्रकाशक
संगीत कार्यालय, हाथरस

अनुबन्ध

स्वरप्रस्तार

एक स्वर वाले अर्थात् आर्चिकस्वरप्रस्तार—

(१) स, (२) रि, (३) ग, (४) म, (५) प, (६) ध, (७) नि ।

दो स्वर वाले अर्थात् गाथिकस्वरप्रस्तार —

(१) सरि, रिस (२) सग, गस (३) सम, मस (४) सप, पस (५) सध, धस (६) सनि, निस (७) रिग, गरि (८) रिम, मरि (९) रिप, परि (१०) रिध, धरि (११) रिनि, निरि (१२) गम, मग (१३) गप, पग (१४) गध, धग (१५) गनि, निग (१६) मप, पम (१७) मध, धम (१८) मनि, निम (१९) पध, धप (२०) पनि, निप (२१) धनि, निध ।

तीन स्वर वाले अर्थात् सामिकस्वरप्रस्तारः—

(१) सरिग, रिसग, सगरि, गसरि, रिगस, गरिस (२) सरिम, रिसम, समरि, मसरि, रिमस, मरिस (३) सरिप, रिसप, सपरि, पसरि, रिपस, परिस (४) सरिध, रिसध, सधरि, धसरि, रिधस, धरिस (५) सरिनि, रिसनि, सनिरि, निसरि, रिनिस, निरिस (६) सगम, गसम, समग, मसग, गमस, मगस (७) सगप, गसप, सपग, पसग, गपस, पगस (८) सगध, गसध, सधग, धसग, गधस, धगस (९) सगनि, गसनि, सनिग, निसग, गनिस, निगस (१०) समप, मसप, सपम, पसम, मपस, पमस (११) समध, मसध, सधम, धसम, मधस, धमस (१२) समनि, मसनि, सनिम, निसम, मनिस, निमस (१३) सपध, पसध, सधप, धसप, पधस, धपस (१४) सपनि, पसनि, सनिप, निसप, पनिस, निपस (१५) सधनि, धसनि, सनिध, निसध, धनिस, निधस (१६) रिगम, गरिम, रिमग, मरिग, गमरि, मगरि (१७) रिगप, गरिप, रिपग, परिग, गपरि, पगरि (१८) रिगध, गरिध, रिधग, धरिग, गधरि, धगरि (१९) रिगनि, गरिनि, रिनिग, निरिग, गनिरि, निगरि (२०) रिमप, मरिप, रिपम, परिम, मपरि, पमरि (२१) रिमध, मरिध, रिधम, धरिम, मधरि, धमरि (२२) रिमनि, मरिनि, रिनिम, निरिम, मनिरि, निमरि (२३) रिपध, परिध, रिधप, धरिप, पधरि, धपरि (२४) रिपनि,

परिनि, रिनिप, निरिप, पनिरि, निपरि (२५) रिधनि, धरिनि, रिनिध, निरिध, धनिरि, निधरि (२६) गमप, मगप, गपम, पगम, मपग, पमग (२७) गमध, मगध, गधम, धगम, मधग, धमग (२८) गमनि, मगनि, गनिम, निगम, मनिग, निमग (२९) गपध, पगध, गधप, धगप, पधग, धपग (३०) गपनि, पगनि, गनिप, निगप, पनिग, निपग (३१) गधनि, धगनि, गनिध, निगध, धनिग, निधग (३२) मपध, पमध, मधप, धमप, पधम, धपम (३३) मपनि, पमनि, मनिप, निमप, पनिम, निपम (३४) मधनि, धमनि, मनिध, निमध, धनिम, निधम (३५) पधनि, धपनि, पनिध, निपध, धनिप, निधप ।

चार स्वर वाले अर्थात् स्वरान्तरस्वरप्रस्तारः—

(१) सरिगम, रिसगम, सगरिम, गसरिम, रिगसम, गरिसम, सरिमग, रिसमग, समरिग, मसरिग, रिमसग, मरिसग, सगमरि, गसमरि, समगरि, मसगरि, गमसरि, मगसरि, रिगमस, गरिमस, रिमगस, मरिगस, गमरिस, मगरिस (२) सरिगप, रिसगप, सगरिप, गसरिप, रिगसप, गरिसप, सरिपग, रिसपग, सपरिग, पसरिग, रिपसग, परिसग, सगपरि, गसपरि, सपगरि, पसगरि, गपसरि, पगसरि, रिगपस, गरिपस, रिपगस, परिगस, गपरिस, पगरिस (३) सरिगध, रिसगध, सगरिध, गसरिध, रिगसध, गरिसध, सरिधग, रिसधग, सधरिग, धसरिग, रिधसग, धरिसग, सगधरि, गसधरि, सधगरि, धसगरि, गधसरि, धगसरि, रिगधस, गरिधस, रिधगस, धरिगस, गधरिस, धगरिस, (४) सरिगनि, रिसगनि, सगरिनि, गसरिनि, रिगसनि, गरिसनि, सरिनिग, रिसनिग, सनिरिग, निसरिग, रिनिसग, निरिसग, सगनिरि, गसनिरि, सनिगरि, निसगरि, गनिसरि, निगसरि, रिगनिस, गरिनिस, रिनिगस, निरिगस, गनिरिस, निगरिस, (५) सरिमप, रिसमप, समरिप, मसरिप, रिमसप, मरिसप, सरिपम, रिसपम, सपरिम, पसरिम, रिपसम, परिसम, समपरि, मसपरि, सपमरि, पसमरि, मपसरि, पमसरि, रिमपस, मरिपस, रिपमस, परिमस, मपरिस, पमरिस (६) सरिमध, रिसमध, समरिध, मसरिध, रिमसध, मरिसध, सरिधम, रिसधम, सधरिम, धसरिम, रिधसम, धरिसम, समधरि, मसधरि, सधमरि, धसमरि, मधसरि, धमसरि, रिमधस, मरिधस, रिधमस, धरिमस, मधरिस, धमरिस (७) सरिमनि, रिसमनि, समरिनि, मसरिनि, रिमसनि, मरिसनि, सरिनिम, रिसनिम,

सनिरिम, निसरिम, रिनिसम, निरिसम, समनिरि, मसनिरि, सनिमरि, निसमरि, मनिसरि, निमसरि, रिमनिस, मरिनिस, रिनिमस, निरिमस, मनिरिस, निमरिस (८) सरिपध, रिसपध, सपरिध, पसरिध, रिपसध, परिसध, सरिधप, रिसधप, सधरिप, धसरिप, रिधसप, धरिसप, सपधरि, पसधरि, सधपरि, धसपरि, पधसरि, धपसरि, रिपधस, परिधस, रिधपस, धरिपस, पधरिस, धपरिस (९) सरिपनि, रिसपनि, सपरिनि, पसरिनि, रिपसनि, परिसनि, सरिनिप, रिसनिप, सनिरिप, निसरिप, रिनिसप, निरिसप, सपनिरि, पसनिरि, सनिपरि, निसपरि, पनिसरि, निपसरि, रिपनिस, परिनिस, रिनिपस, निरिपस, पनिरिस, निपरिस (१०) सरिधनि, रिसधनि, सधरिनि, धसरिनि, रिधसनि, धरिसनि, सरिनिध, रिसनिध, सनिरिध, निसरिध, रिनिसध, निरिसध, सधनिरि, धसनिरि, सनिधरि, निसधरि, धनिसरि, निधसरि, रिधनिस, धरिनिस, रिनिधस, निरिधस, धनिरिस, निधरिस (११) सगमप, गसमप, समगप, मसगप, गमसप, मगसप, सगपम, गसपम, सपगम, पसगम, गपसम, पगसम, समपग, मसपग, सपमग, पसमग, मपसग, पमसग, गमपस, मगपस, गपमस, पगमस, मपगस, पमगस (१२) सगमध, गसमध, समगध, मसगध, गमसध, मगसध, सगधम, गसधम, सधगम, धसगम, गधसम, धगसम, समधग, मसधग, सधमग, धसमग, मधसग, धमसग, गमधस, मगधस, गधमस, धगमस, मधगस, धमगस (१३) सगमनि, गसमनि, समगनि, मसगनि, गमसनि, मगसनि, सगनिम, गसनिम, सनिगम, निसगम, गनिसम, निगसम, समनिग, मसनिग, सनिमग, निसमग, मनिसग, निमसग, गमनिस, मगनिस, गनिमस, निगमस, मनिगस, निमगस (१४) सगपध, गसपध, सपगध, पसगध, गपसध, पगसध, सगधप, गसधप, सधगप, धसगप, गधसप, धगसप, सपधग, पसधग, सधपग, धसपग, पधसग, धपसग, गपधस, पगधस, गधपस, धगपस, पधगस, धपगस (१५) सगपनि, गसपनि, सपगनि, पसगनि, गपसनि, पगसनि, सगनिप, गसनिप, सनिगप, निसगप, गनिसप, निगसप, सपनिग, पसनिग, सनिपग, निसपग, पनिसग, निपसग, गपनिस, पगनिस, गनिपस, निगपस, पनिगस, निपगस (१६) सगधनि, गसधनि, सधगनि, धसगनि, गधसनि, धगसनि, सगनिध, गसनिध, सनिगध, निसगध, गनिसध, निगसध, सधनिग, धसनिग, सनिधग, निसधग, धनिसग, निधसग, गधनिस, धगनिस, गनिधस, निगधस, धनिगस, निधगस (१७) समपध, मसपध, सपमध,

पसमध, मपसध, पमसध, समधप, मसधप, सधमप, धसमप, मधसप, धमसप, सपधम पसधम, सधपम, धसपम, पधसम, धपसम, मपधस, पमधस, मधपस, धमपस, पधमस, धपमस (१८) समपनि, मसपनि, सपमनि, पसमनि, मपसनि, पमसनि, समनिप, मसनिप, सनिमप, निसमप, मनिसप, निमसप, सपनिम, पसनिम, सनिपम, निसपम, पनिसम, निपसम, मपनिस, पमनिस, मनिपस, निमपस, पनिमस, निपमस, (१९) समधनि, मसधनि, सधमनि, धसमनि, मधसनि, धमसनि, समनिध, मसनिध, सनिमध, निसमध, मनिसध, निमसध, सधनिम, धसनिम, सनिधम, निसधम, धनिसम, निधसम, मधनिस धमनिस, मनिधस, निमधस, धनिमस, निधमस, (२०) सपधनि, पसधनि, सधपनि, धसपनि, पधसनि, धपसनि, सपनिध, पसनिध, सनिपध, निसपध, पनिसध, निपसध, सधनिप, धसनिप, सनिधप, निसधप, धनिसप, निधसप, पधनिस, धपनिस, पनिधस, निपधस, धनिपस, निधपस, (२१) रिगमप, गरिमप, रिमगप, मरिगप, गमरिप मगरिप, रिगपम, गरिपम, रिपगम, परिगम, गपरिम, पगरिम, रिमपग मरिपग, रिपमग, परिमग, मपरिग, पमरिग, गमपरि, मगपरि, गपमरि, पगमरि, मपगरि, पमगरि, (२२) रिगमध, गरिमध रिमगध, मरिगध, गमरिध, मगरिध, रिगधम, गरिधम, रिधगम, धरिगम, गधरिम, धगरिम, रिमधग, मरिधग, रिधमग, धरिमग, मधरिग, धमरिग, गमधरि, मगधरि, गधमरि, धगमरि, मधगरि, धमगरि (२३) रिगमनि, गरिमनि, रिमगनि, मरिगनि, गमरिनि, मगरिनि, रिगनिम, गरिनिम, रिनिगम, निरिगम, गनिरिम, निगरिम, रिमनिग, मरिनिग, रिनिमग, निरिमग, मनिरिग, निमरिग, गमनिरि, मगनिरि, गनिमरि, निगमरि, मनिगरि निमगरि (२४) रिगपध, गरिपध, रिपगध, परिगध, गपरिध, पगरिध, रिगधप, गरिधप, रिधगप, धरिगप, गधरिप, धगरिप, रिपधग, परिधग, रिधपग, धरिपग, पधरिग, धपरिग, गपधरि, पगधरि, गधपरि, धगपरि, पधगरि, धपगरि, (२५) रिगपनि, गरिपनि, रिपगनि, परिगनि, गपरिनि, पगरिनि, रिगनिप, गरिनिप, रिनिगप, निरिगप, गनिरिप, निगरिप, रिपनिग, परिनिग, रिनिपग, निरिपग, पनिरिग, निपरिग, गपनिरि, पगनिरि, गनिपरि, निगपरि, पनिगरि, निपगरि, (२६) रिगधनि, गरिधनि, रिधगनि, धरिगनि, गधरिनि, धगरिनि, रिगनिध, गरिनिध, रिनिगध, निरिगध, गनिरिध, निगरिध, रिधनिग, धरिनिग, रिनिधग, निरिधग, धनिरिग, निधरिग, गधनिरि, धगनिरि

गनिधरि, निगधरि, धनिगरि, निधगरि, (२७) रिमपध, मरिपध, रिपमध, परिमध, मपरिध, पमरिध, रिमधप, मरिधप, रिधमप, धरिमप, मधरिप, धमरिप, रिपधम, परिधम, रिधपम, धरिपम, पधरिम, धपरिम, मपधरि, पमधरि, मधपरि, धमपरि, पधमरि, धपमरि, (२८) रिमपनि, मरिपनि, रिपमनि, परिमनि, मपरिनि, पमरिनि, रिमनिप, मरिनिप, रिनिमप, निरिमप, मनिरिप, निमरिप, रिपनिम, परिनिम, रिनिपम, निरिपम, पनिरिम, निपरिम, मपनिरि, पमनिरि, मनिपरि, निमपरि, पनिमरि, निपमरि, (२९) रिमधनि, मरिधनि, रिधमनि, धरिमनि, मधरिनि, धमरिनि, रिमनिध, मरिनिध, रिनिमध, निरिमध, मनिरिध, निमरिध, रिधनिम, धरिनिम, रिनिधम, निरिधम, धनिरिम, निधरिम, मधनिरि, धमनिरि, मनिधरि, निमधरि, धनिमरि, निधमरि, (३०) रिपधनि, परिधनि, रिधपनि, धरिपनि, पधरिनि, धपरिनि, रिपनिध, परिनिध, रिनिपध, निरिपध, पनिरिध, निपरिध रिधनिप, धरिनिप, रिनिधप, निरिधप, धनिरिप, निधरिप, पधनिरि, धपनिरि, पनिधरि, निपधरि, धनिपरि, निधपरि, (३१) गमपध, मगपध, गपमध, पगमध, मपगध, पमगध, गमधप, मगधप, गधमप, धगमप, मधगप, धमगप, गपधम, पगधम, गधपम, धगपम, पधगम, धपगम, मपधग, पमधग, मधपग, धमपग, पधमग, धपमग, (३२) गमपनि, मगपनि, गपमनि, पगमनि, मपगनि, पमगनि, गमनिप, मगनिप, गनिमप, निगमप, मनिगप, निमगप, गपनिम, पगनिम, गनिपम, निगपम, पनिगम, निपगम, मपनिग, पमनिग, मनिपग, निमपग, पनिमग, निपमग, (३३) गमधनि, मगधनि, गधमनि, धगमनि, मधगनि, धमगनि, गमनिध, मगनिध, गनिमध, निगमध, मनिगध, निमगध, गधनिम, धगनिम, गनिधम, निगधम, धनिगम, निधगम, मधनिग, धमनिग, मनिधग निमधग, धनिमग, निधमग, (३४) गपधनि, पगधनि, मधपनि, धगपनि, पधगनि, धपगनि, गपनिध, पगनिध, गनिपध, निगपध, पनिगध, निपगध, गधनिप, धगनिप, गनिधप, निगधप, धनिगप, निधगप, पधनिग, धपनिग, पनिधग, निपधग, धनिपग, निधपग (३५) मपधनि, पमधनि, मधपनि, धमपनि, पधमनि, धपमनि, मपनिध, पमनिध, मनिपध, निमपध, पनिमध, निपमध, मधनिप, धमनिप, मनिधप, निमधप, धनिमप, निधमप, पधनिम, धपनिम, पनिधम, निपधम, धनिपम, निधपम,

पाँच स्वर वाले अर्थात् औडुवस्वरप्रस्तार—

(१) सरिगमप, रिसगमप, सगरिमप, गसरिमप, रिगसमप, गरिसमप, सरिमगप, रिसमगप, समरिगप, मसरिगप, रिमसगप, मरिसगप,सगमरिप,गसमरिप, समगरिप, मसगरिप,गमसरिप,मगसरिप, रिगमसप, गरिमसप, रिमगसप, मरिगसप, गमरिसप, मगरिसप, सरिगपम, रिसगपम, सगरिपम, गसरिपम, रिगसपम, गरिसपम, सरिपगम,रिसपगम,सपरिगम,पसरिगम, रिपसगम,परिसगम, सगपरिम, गसपरिम, सपगरिम, पसगरिम, गपसरिम, पगसरिम, रिगपसम, गरिपसम, रिपगसम, परिगसम, गपरिसम, पगरिसम, सरिमपग, रिसमपग, समरिपग, मसरिपग, रिमसपग, मरिसपग, सरिपमग, रिसपमग, सपरिमग, पसरिमग, रिपसमग, परिसमग, समपरिग, मसपरिग, सपमरिग, पसमरिग, मपसरिग, पमसरिग, रिमपसग, मरिपसग, रिपमसग, परिमसग, मपरिसग, पमरिसग, सगमपरि, गसमपरि, समगपरि, मसगपरि, गमसपरि, मगसपरि, सगपमरि, गसपमरि, सपगमरि, पसगमरि, गपसमरि, पगसमरि, समपगरि, मसपगरि, सपमगरि, पसमगरि, मपसगरि, पमसगरि, गमपसरि, मगपसरि, गपमसरि, पगमसरि, मपगसरि, पमगसरि, रिगमपस, गरिमपस, रिमगपस, मरिगपस, गमरिपस, मगरिपस, रिगपमस, गरिपमस, रिपगमस, परिगमस, गपरिमस, पगरिमस, रिमपगस, मरिपगस, रिपमगस, परिमगस, मपरिगस, पमरिगस, गमपरिस, मगपरिस, गपमरिस, पगमरिस, मपगरिस, पमगरिस, (२) सरिगमध, रिसगमध, सगरिमध, गसरिमध, रिगसमध, गरिसमध, सरिमगध, रिसमगध, समरिगध, मसरिगध, रिमसगध, मरिसगध, सगमरिध, गसमरिध, समगरिध, मसगरिध, गमसरिध, मगसरिध, रिगमसध, गरिमसध, रिमगसध, मरिगसध, गमरिसध, मगरिसध, सरिगधम, रिसगधम, सगरिधम, गसरिधम, रिगसधम, गरिसधम, सरिधगम, रिसधगम, सधरिगम, धसरिगम, रिधसगम, धरिसगम, सगधरिम, गसधरिम, सधगरिम, धसगरिम, गधसरिम, धगसरिम, रिगधसम, गरिधसम, रिधगसम, धरिगसम, गधरिसम, धगरिसम, सरिमधग, रिसमधग, समरिधग, मसरिधग, रिमसधग, मरिसधग, सरिधमग, रिसधमग, सधरिमग, धसरिमग, रिधसमग, धरिसमग, समधरिग, मसधरिग, सधमरिग, धसमरिग, मधसरिग, धमसरिग,

रिमधसग, मरिधसग, रिधमसग, धरिमसग, मधरिसग, धमरिसग,
सगमधरि, गसमधरि, समगधरि, मसगधरि, गमसधरि, मगसधरि,
सगधमरि, गसधमरि, सधगमरि, धसगमरि, गधसमरि, धगसमरि,
समधगरि, मसधगरि, सधमगरि, धसमगरि, मधसगरि, धमसगरि,
गमधसरि, मगधसरि, गधमसरि, धगमसरि, मधगसरि, धमगसरि,
रिगमधस, गरिमधस, रिमगधस, मरिगधस, गमरिधस, मसरिधस,
रिगधमस, गरिधमस, रिधगमस, धरिगमस, गधरिमस, धगरिमस,
रिमधगस, मरिधगस, रिधमगस, धरिमगस, मधरिगस, धमरिगस,
गमधरिस, मगधरिस, गधमरिस, धगमरिस, मधगरिस, धमगरिस, (३)
सरिगमनि, रिसगमनि, सगरिमनि, गसरिमनि, रिगसमनि, गरिसमनि,
सरिमगनि, रिसमगनि, समरिगनि, मसरिगनि, रिमसगनि, मरिसगनि,
सगमरिनि, गसमरिनि, समगरिनि, मसगरिनि, गमसरिनि, मगसरिनि,
रिगमसनि, गरिमसनि, रिमगसनि, मरिगसनि, गमरिसनि, मगरिसनि,
सरिगनिम, रिसगनिम, सगरिनिम, गसरिनिम, रिगसनिम, गरिसनिम,
सरिनिगम, रिसनिगम, सनिरिगम, निसरिगम, रिनिसगम, निरिसगम,
सगनिरिम, गसनिरिम, सनिगरिम, निसगरिम, गनिसरिम, निगसरिम,
रिगनिसम, गरिनिसम, रिनिगसम, निरिगसम, गनिरिसम, निगरिसम,
सरिमनिग, रिसमनिग, समरिनिग, मसरिनिग, रिमसनिग, मरिसनिग,
सरिनिमग, रिसनिमग, सनिरिमग, निसरिमग, रिनिसमग, निरिसमग,
समनिरिग, मसनिरिग, सनिमरिग, निसमरिग, मनिसरिग, निमसरिग,
रिमनिसग, मरिनिसग, रिनिमसग, निरिमसग, मनिरिसग, निमरिसग,
सगमनिरि, गसमनिरि, समगनिरि, मसगनिरि, गमसनिरि, मगसनिरि,
सगनिमरि, गसनिमरि, सनिगमरि, निसगमरि, गनिसमरि, निगसमरि,
समनिगरि, मसनिगरि, सनिमगरि, निसमगरि, मनिसगरि, निमसगरि,
गमनिसरि, मगनिसरि, गनिमसरि, निगमसरि, मनिगसरि, निमगसरि,
रिगमनिस, गरिमनिस, रिमगनिस, मरिगनिस, गमरिनिस, मगरिनिस,
रिगनिमस, गरिनिमस, रिनिगमस, निरिगमस, गनिरिमस, निगरिमस,
रिमनिगस, मरिनिगस, रिनिमगस, निरिमगस, मनिरिगस, निमरिगस,
गमनिरिस, मगनिरिस, गनिमरिस, निगमरिस, मनिगरिस, निमगरिस,
(४) सरिगपध, रिसगपध, सगरिपध, गसरिपध, रिगसपध, गरिसपध
सरिपगध, रिसपगव, सपरिगध, पसरिगध, रिपसगध, परिसगध,
सगपरिध, गसपरिध, सपगरिध, पसगरिध, गपसरिध, पगसरिध,
रिगपसध, गरिपसध, रिपगसध, परिगसध, गपरिसध, पगरिसध,

सरिगधप, रिसगधप, सगरिधप, गसरिधप, रिगसधप, गरिसधप,
सरिधगप, रिसधगप, सधरिगप, धसरिगप, रिधसगप, धरिसगप,
सगधरिप, गसधरिप, सधगरिप, धसगरिप, गधसरिप, धगसरिप, रिगधसप,
गरिधसप, रिधगसप, धरिगसप, गधरिसप, धगरिसप, सरिपधग,
रिसपधग, सपरिधग, पसरिधग, रिपसधग, परिसधग, सरिधपग,
रिसधपग, सधरिपग, धसरिपग, रिधसपग, धरिसपग, सपधरिग,
पसधरिग, सधपरिग, धसपरिग, पधसरिग, धपसरिग, रिपधसग,
परिधसग, रिधपसग धरिपसग, पधरिसग, धपरिसग, सगपधरि,
गसपधरि, सपगधरि, पसगधरि, गपसधरि, पगसधरि, सगधपरि,
गसधपरि, सधगपरि, धसगपरि, गधसपरि, धगसपरि, सपधगरि,
पसधगरि, सधपगरि, धसपगरि, पधसगरि, धपसगरि, गपधसरि,
पगधसरि, गधपसरि, धगपसरि, पधगसरि, धपगसरि, रिगपधस,
गरिपधस, रिपगधस, परिगधस, गपरिधस, पगरिधस, रिगधपस,
गरिधपस, रिधगपस, धरिगपस, गधरिपस, धगरिपस, रिपधगस,
परिधगस, रिधपगस धरिपगस, पधरिगस, धपरिगस, गपधरिस,
पगधरिस, गधपरिस, धगपरिस, पधगरिस, धपगरिस, (५) सरिगपनि
रिसगपनि, सगरिपनि, गसरिपनि, रिगसपनि, गरिसपनि, सरिपगनि,
रिसपगनि, सपरिगनि, पसरिगनि, रिपसगनि, परिसगनि सगपरिनि,
गसपरिनि, सपगरिनि, पसगरिनि, गपसरिनि, पगसरिनि, रिगपसनि,
गरिपसनि, रिपगसनि, परिगसनि, गपरिसनि, पगरिसनि, सरिगनिप,
रिसगनिप, सगरिनिप, गसरिनिप, रिगसनिप, गरिसनिप, सरिनिगप,
रिसनिगप, सनिरिगप निसरिगप, रिनिसगप, निरिसगप, सगनिरिप,
गसनिरिप, सनिगरिप, निसगरिप, गनिसरिप, निगसरिप, रिगनिसप,
गरिनिसप, रिनिगसप, निरिगसप, गनिरिसप, निगरिसप, सरिपनिग,
रिसपनिग, सपरिनिग, पसरिनिग, रिपसनिग, परिसनिग, सरिनिपग,
रिसनिपग, सनिरिपग, निसरिपग, रिनिसपग, निरिसपग, सपनिरिग,
पसनिरिग, सनिपरिग, निसपरिग, पनिसरिग, निपसरिग, रिपनिसग,
परिनिसग, रिनिपसग, निरिपसग, पनिरिसग, निपरिसग, सगपनिरि,
गसपनिरि, सपगनिरि, पसगनिरि, गपसनिरि, पगसनिरि, सगनिपरि,
गसनिपरि, सनिगपरि, निसगपरि, गनिसपरि, निगसपरि, सपनिगरि,
पसनिगरि, सनिपगरि, निसपगरि, पनिसगरि, निपसगरि, गपनिसरि,
पगनिसरि, गनिपसरि, निगपसरि, पनिगसरि, निपगसरि, रिगपनिस,
गरिपनिस, रिपगनिस, परिगनिस, गपरिनिस, पगरिनिस, रिगनिपस,

गरिनिपस, रिनिगपस, निरिगपस, गनिरिपस, निगरिपस, रिपनिगस, परिनिगस, रिनिपगस, निरिपगस, पनिरिगस, निपरिगस, गपनिरिस, पगनिरिस, गनिपरिस, निगपरिस, पनिगरिस, निपगरिस, (६) सरिगधनि, रिसगधनि, सगरिधनि, गसरिधनि, रिगसधनि, गरिसधनि, सरिधगनि, रिसधगनि सधरिगनि, धसरिगनि, रिधसगनि, धरिसगनि, सगधरिनि, गसधरिनि, सधगरिनि, धसगरिनि, गधसरिनि धगसरिनि, रिगधसनि, गरिधसनि, रिधगसनि, धरिगसनि, गधरिसनि, धगरिसनि, सरिगनिध, रिसगनिध, सगरिनिध, गसरिनिध, रिगसनिध गरिसनिध, सरिनिगध, रिसनिगध, सनिरिगध, निसरिगध, रिनिसगध, निरिसगध, सगनिरिध, गसनिरिध, सनिगरिध, निसगरिध, गनिसरिध निगसरिध, रिगनिसध, गरिनिसध, रिनिगसध, निरिगसध, गनिरिसध, निगरिसध, सरिधनिग, रिसधनिग, सधरिनिग, धसरिनिग, रिधसनिग धरिसनिग, सरिनिधग, रिसनिधग, सनिरिधग, निसरिधग, रिनिसधग, निरिसधग, सधनिरिग, धसनिरिग, सनिधरिग, निसधरिग, धनिसरिग, निधसरिग, रिधनिसग, धरिनिसग, रिनिधसग, निरिधसग, धनिरिसग, निधरिसग, सगधनिरि, गसधनिरि, सधगनिरि, धसगनिरि, गधसनिरि, धगसनिरि, सगनिधरि, गसनिधरि, सनिगधरि, निसगधरि, गनिसधरि, निगसधरि, सधनिगरि, धसनिगरि, सनिधगरि, निसधगरि, धनिसगरि, निधसगरि, गधनिसरि, धगनिसरि, गनिधसरि, निगधसरि, धनिगसरि, निधगसरि, रिगधनिस, गरिधनिस, रिधगनिस, धरिगनिस, गधरिनिस, धगरिनिस, रिगनिधस, गरिनिधस, रिनिगधस, निरिगधस, गनिरिधस, निगरिधस, रिधनिगस, धरिनिगस, रिनिधगस, निरिधगस, धनिरिगस, निधरिगस, गधनिरिस, धगनिरिस, गनिधरिस, निगधरिस, धनिगरिस, निधगरिस, (७) सरिमपध, रिसमपध, समरिपध, मसरिपध, रिमसपध, मरिसपध, सरिपमध, रिसपमध, सपरिमध, पसरिमध, रिपसमध, परिसमध, समपरिध, मसपरिध, सपमरिध, पसमरिध, मपसरिध, पमसरिध, रिमपसध, मरिपसध, रिपमसध, परिमसध, मपरिसध, पमरिसध, सरिमधप, रिसमधप, समरिधप, मसरिधप, रिमसधप; मरिसधप, सरिधमप, रिसधमप, सधरिमप, धसरिमप, रिधसमप, धरिसमप, समधरिप, मसधरिप, सधमरिप, धसमरिप, मधसरिप, धमसरिप, रिमधसप, मरिधसप, रिधमसप, धरिमसप, मधरिसप, धमरिसप, सरिपधम, रिसपधम, सपरिधम, पसरिधम, रिपसधम, परिसधम, सरिधपम, रिसधपम, सधरिपम, धसरिपम, रिधसपम, धरिसपम,

सपधरिम, पसधरिम, सधपरिम, धसपरिम, पधसरिम, धपसरिम, रिपधसम, परिधसम, रिधपसम, धरिपसम, पधरिसम, धपरिसम, समपधरि, मसपधरि, सपमधरि, पसमधरि, मपसधरि, पमसधरि, समधपरि, मसधपरि, सधमपरि, धसमपरि मधसपरि, धमसपरि, सपधमरि, पसधमरि, सधपमरि, धसपमरि, पधसमरि, धपसमरि, मपधसरि, पमधसरि, मधपसरि, धमपसरि, पधमसरि, धपमसरि, रिमपधस, मरिपधस, रिपमधस, परिमधस, मपरिधस, पमरिधस, रिमधपस, मरिधपस, रिधमपस, धरिमपस, मधरिपस, धमरिपस, रिपधमस, परिधमस, रिधपमस, धरिपमस, पधरिमस, धपरिमस, मपधरिस, पमधरिस, मधपरिस, धमपरिस, पधमरिस, धपमरिस, (८) सरिमपनि, रिसमपनि, समरिपनि, मसरिपनि, रिमसपनि, मरिसपनि, सरिपमनि, रिसपमनि, सपरिमनि, पसरिमनि, रिपसमनि, परिसमनि, समपरिनि, मसपरिनि, सपमरिनि, पसमरिनि, मपसरिनि, पमसरिनि, रिमपसनि, मरिपसनि, रिपमसनि, परिमसनि, मपरिसनि, पमरिसनि, सरिमनिप, रिसमनिप, समरिनिप, मसरिनिप, रिमसनिप, मरिसनिप, सरिनिमप, रिसनिमप, सनिरिमप, निसरिमप, रिनिसमप, निरिसमप, समनिरिप, मसनिरिप, सनिमरिप, निसमरिप, मनिसरिप, निमसरिप, रिमनिसप, मरिनिसप, रिनिमसप, निरिमसप, मनिरिसप, निमरिसप, सरिपनिम, रिसपनिम, सपरिनिम, पसरिनिम, रिपसनिम, परिसनिम, सरिनिपम, रिसनिपम, सनिरिपम, निसरिपम, रिनिसपम, निरिसपम, सपनिरिम, पसनिरिम, सनिपरिम, निसपरिम, पनिसरिम, निपसरिम, रिपनिसम, परिनिसम, रिनिपसम, निरिपसम, पनिरिसम, निपरिसम, समपनिरि, मसपनिरि, सपमनिरि, पसमनिरि, मपसनिरि, पमसनिरि, समनिपरि, मसनिपरि, सनिमपरि, निसमपरि, मनिसपरि, निमसपरि, सपनिमरि, पसनिमरि, सनिपमरि, निसपमरि, पनिसमरि, निपसमरि, मपनिसरि, पमनिसरि, मनिपसरि, निमपसरि, पनिमसरि, निपमसरि, रिमपनिस, मरिपनिस, रिपमनिस, परिमनिस, मपरिनिस, पमरिनिस, रिमनिपस, मरिनिपस, रिनिमपस, निरिमपस, मनिरिपस, निमरिपस, रिपनिमस, परिनिमस, रिनिपमस, निरिपमस, पनिरिमस, निपरिमस, मपनिरिस, पमनिरिस, मनिपरिस, निमपरिस, पनिमरिस, निपमरिस, (९) सरिमधनि, रिसमधनि, समरिधनि, मसरिधनि, रिमसधनि, मरिसधनि, सरिधमनि, रिसधमनि, सधरिमनि, धसरिमनि, रिधसमनि, धरिसमनि, समधरिनि, मसधरिनि, सधमरिनि, धसमरिनि,

मधसरिनि, धमसरिनि, रिमधसनि, मरिधसनि, रिधमसनि, धरिमसनि, मधरिसनि, धमरिसनि, सरिमनिध, रिसमनिध, समरिनिध, मसरिनिध, रिमसनिध, मरिसनिध, सरिनिमध, रिसनिमध, सनिरिमध, निसरिमध, रिनिसमध, निरिसमध, समनिरिध, मसनिरिध, सनिमरिध, निसमरिध, मनिसरिध, निमसरिध, रिमनिसध, मरिनिसध रिनिमसध, निरिमसध मनिरिसध, निमरिसध, सरिधनिम, रिसधनिम, सधरिनिम, धसरिनिम, रिधसनिम, धरिसनिम, सरिनिधम, रिसनिधम, सनिरिधम, निसरिधम, रिनिसधम, निरिसधम, सधनिरिम, धसनिरिम, सनिधरिम, निसधरिम, धनिसरिम, निधसरिम, रिधनिसम, धरिनिसम, रिनिधसम, निरिधसम, धनिरिसम, निधरिसम, समधनिरि, मसधनिरि, सधमनिरि, धसमनिरि, मधसनिरि, धमसनिरि, समनिधरि, मसनिधरि, सनिमधरि, निसमधरि, मनिसधरि, निमसधरि, सधनिमरि, धसनिमरि, सनिधमरि, निसधमरि, धनिसमरि, निधसमरि, मधनिसरि, धमनिसरि, मनिधसरि, निमधसरि, धनिमसरि, निधमसरि, रिमधनिस, मरिधनिस, रिधमनिस, धरिमनिस, मधरिनिस, धमरिनिस, रिमनिधस, मरिनिधस, रिनिमधस, निरिमधस, मनिरिधस, निमरिधस, रिधनिमस, धरिनिमस, रिनिधमस, निरिधमस, धनिरिमस, निधरिमस, मधनिरिस, धमनिरिस, मनिधरिस, निमधरिस, धनिमरिस, निधमरिस, (१०) सरिपधनि, रिसपधनि, सपरिधनि, पसरिधनि, रिपसधनि, परिसधनि, सरिधपनि, रिसधपनि, सधरिपनि, धसरिमनि, रिधसपनि, धरिसपनि, सपधरिनि, पसधरिनि, सधपरिनि, धसपरिनि, पधसरिनि, धपसरिनि, रिपधसनि, परिधसनि, रिधपसनि, धरिपसनि, पधरिसनि, धपरिसनि, सरिपनिध, रिसपनिध, सपरिनिध, पसरिनिध, रिपसनिध, परिसनिध, सरिनिपध, रिसनिपध, सनिरिपध, निसरिपध, रिनिसपध, निरिसपध, सपनिरिध, पसनिरिध, सनिपरिध, निसपरिध, पनिसरिध, निपसरिध, रिपनिसध, परिनिसध, रिनिपसध, निरिपसध, पनिरिसध, निपरिसध, सरिधनिप, रिसधनिप, सधरिनिप, धसरिनिप, रिधसनिप, धरिसनिप, सरिनिधप, रिसनिधप, सनिरिधप, निसरिधप, रिनिसधप, निरिसधप, सधनिरिप, धसनिरिप, सनिधरिप, निसधरिप, धनिसरिप, निधसरिप, रिधनिसप, धरिनिसप, रिनिधसप, निरिधसप, धनिरिसप, निधरिसप, सपधनिरि, पसधनिरि, सधपनिरि, धसपनिरि, पधसनिरि, धपसनिरि, सपनिधरि, पसनिधरि, सनिपधरि, निसपधरि, पनिसधरि, निपसधरि, सधनिपरि, धसनिपरि, सनिधपरि, निसधपरि, धनिसपरि, निधसपरि, पधनिसरि, धपनिसरि, पनिधसरि,

निपधसरि, धनिपसरि, निधपसरि, रिपधनिस, परिधनिस, रिधपनिस, धरिपनिस, पधरिनिस, धपरिनिस, रिपनिधस, परिनिधस, रिनिपधस, निरिपधस, पनिरिधस, निपरिधस, रिधनिपस, धरिनिपस, रिनिधपस, निरिधपस, धनिरिपस, निधरिपस, पधनिरिस, धपनिरिस, पनिधरिस, निपधरिस, धनिपरिस, निधपरिस, (११) सगमपध, गसमपध, समगपध, मसगपध, गमसपध, मगसपध, सगपमध, गसपमध, सपगमध, पसगमध, गपसमध, पगसमध, समपगध, मसपगध, सपमगध, पसमगध, मपसगध, पमसगध, गमपसध, मगपसध, गपमसध, पगमसध, मपगसध, पमगसध, सगमधप, गसमधप, समगधप, मसगधप, गमसधप, मगसधप, सगधमप, गसधमप, सधगमप, धसगमप, गधसमप, धगसमप, समधगप, मसधगप, सधमगप, धसमगप, मधसगप, धमसगप, गमधसप, मगधसप, गधमसप, धगमसप, मधगसप, धमगसप, सगपधम, गसपधम, सपगधम, पसगधम, गपसधम, पगसधम, सगधपम, गसधपम, सधगपम, धसगपम, गधसपम, धगसपम, सपधगम, पसधगम, सधपगम, धसपगम, पधसगम, धपसगम, गपधसम, पगधसम, गधपसम, धगपसम, पधगसम, धपगसम, समपधग, मसपधग, सपमधग, पसमधग, मपसधग, पमसधग, समधपग, मसधपग, सधमपग, धसमपग, मधसपग, धमसपग, सपधमग, पसधमग, सधपमग, धसपमग, पधसमग, धपसमग, मपधसग, पमधसग, मधपसग, धमपसग, पधमसग, धपमसग, गमपधस, मगपधस, गपमधस, पगमधस, मपगधस, पमगधस, गमधपस, मगधपस, गधमपस, धगमपस, मधगपस, धमगपस, गपधमस, पगधमस, गधपमस, धगपमस, पधगमस, धपगमस, मपधगस, पमधगस, मधपगस, धमपगस, पधमगस, धपमगस, (१२) सगमपनि, गसमपनि, समगपनि, मसगपनि, गमसपनि, मगसपनि, सगपमनि, गसपमनि, सपगमनि, पसगमनि, गपसमनि, पगसमनि, समपगनि, मसपगनि, सपमगनि, पसमगनि, मपसगनि, पमसगनि, गमपसनि, मगपसनि, गपमसनि, पगमसनि, मपगसनि, पमगसनि, सगमनिप, गसमनिप, समगनिप, मसगनिप, गमसनिप, मगसनिप, सगनिमप, गसनिमप, सनिगमप, निसगमप, गनिसमप, निगसमप, समनिगप, मसनिगप, सनिमगप, निसमगप, मनिसगप, निमसगप, गमनिसप, मगनिसप, गनिमसप, निगमसप, मनिगसप, निमगसप, सगपनिम, गसपनिम,

सपगनिम, पसगनिम, गपसनिम, पगसनिम, सगनिपम, गसनिपम, सनिगपम, निसगपम, गनिसपम, निगसपम, सपनिगम, पसनिगम, सनिपगम, निसपगम, पनिसगम, निपसगम, गपनिसम, पगनिसम, गनिपसम, निगपसम, पनिगसम, निपगसम, समपनिग, मसपनिग, सपमनिग, पसमनिग, मपसनिग, पमसनिग, समनिपग, मसनिपग, सनिमपग, निसमपग, मनिसपग, निमसपग, सपनिमग, पसनिमग, सनिपमग, निसपमग, पनिसमग, निपसमग, मपनिसग, पमनिसग, मनिपसग, निमपसग, पनिमसग, निपमसग, गमपनिस, मगपनिस, गपमनिस, पगमनिस, मपगनिस, पमगनिस, गमनिपस, मगनिपस, गनिमपस, निगमपस, मनिगपस, निमगपस, गपनिमस, पगनिमस, गनिपमस, निगपमस, पनिगमस, निपगमस, मपनिगस, पमनिगस, मनिपगस, निमपगस, पनिमगस, निपमगस, (१३) सगमधनि, गसमधनि, समगधनि, मसगधनि, गमसधनि, मगसधनि, सगधमनि, गसधमनि, सधगमनि, धसगमनि, गधसमनि, धगसमनि, समधगनि, मसधगनि, सधमगनि, धसमगनि, मधसगनि, धमसगनि, गमधसनि, मगधसनि, गधमसनि, धगमसनि, मधगसनि, धमगसनि, सगमनिध, गसमनिध, समगनिध, मसगनिध, गमसनिध, मगसनिध, सगनिमध, गसनिमध, सनिगमध, निसगमध, गनिसमध, निगसमध, समनिगध, मसनिगध, सनिमगध, निसमगध, मनिसगध, निमसगध, गमनिसध, मगनिसध, गनिमसध, निगमसध, मनिगसध, निमगसध, सगधनिम, गसधनिम, सधगनिम, धसगनिम, गधसनिम, धगसनिम, सगनिधम, गसनिधम, सनिगधम, निसगधम, गनिसधम, निगसधम, सधनिगम, धसनिगम, सनिधगम, निसधगम, धनिसगम, निधसगम, गधनिसम, धगनिसम, गनिधसम, निगधसम, धनिगसम, निधगसम, समधनिग, मसधनिग, सधमनिग, धसमनिग, मधसनिग, धमसनिग, समनिधग, मसनिधग, सनिमधग, निसमधग, मनिसधग, निमसधग, सधनिमग, धसनिमग, सनिधमग, निसधमग, धनिसमग, निधसमग, मधनिसग, धमनिसग, मनिधसग, निमधसग, धनिमसग, निधमसग, गमधनिस, मगधनिस, गधमनिस, धगमनिस, मधगनिस, धमगनिस, गमनिधस, मगनिधस, गनिमधस, निगमधस, मनिगधस, निमगधस, गधनिमस, धगनिमस, गनिधमस निगधमस, धनिगमस, निधगमस, मधनिगस, धमनिगस, मनिधगस, निमधगस, धनिमगस, निधमगस, (१४) सगपधनि गसपधनि, सपगधनि, पसगधनि, गपसधनि, पगसधनि,

सगधपनि, गसधपनि, सधगपनि, धसगपनि, गधसपनि, धगसपनि,
सपधगनि, पसधगनि, सधपगनि, धसपगनि, पधसगनि, धपसगनि,
गपधसनि, पगधसनि, गधपसनि, धगपसनि, पधगसनि, धपगसनि,
सगपनिध, गसपनिध, सपगनिध, पसगनिध, गपसनिध, पगसनिध,
सगनिपध, गसनिपध, सनिगपध, निसगपध, गनिसपध, निगसपध,
सपनिगध, पसनिगध, सनिपगध, निसपगध, पनिसगध निपसगध,
गपनिसध, पगनिसध, गनिपसध, निगपसध, पनिगसध, निपगसध,
सगधनिप, गसधनिप, सधगनिप, धसगनिप, गधसनिप, धगसनिप,
सगनिधप, गसनिधप, सनिगधप, निसगधप, गनिसधप, निगसधप,
सधनिगप, धसनिगप, सनिधगप, निसधगप, धनिसगप, निधसगप,
गधनिसप, धगनिसप, गनिधसप, निगधसप, धनिगसप, निधगसप,
सपधनिग, पसधनिग, सधपनिग, धसपनिग, पधसनिप, धपसनिग,
सपनिधग, पसनिधग, सनिपधग, निसपधग, पनिसधम, निपसधग,
सधनिपग, धसनिपग, सनिधपग, निसधपग, धनिसपग, निधसपग,
पधनिसग, धपनिसग, पनिधसग, निपधसग, धनिपसग, निधपसग,
गपधनिस, पगधनिस, गधपनिस, धगपनिस, पधगनिस, धपगनिस,
गपनिधस, पगनिधस, गनिपधस, निगपधस, पनिगधस, निपगधस,
गधनिपस, धगनिपस, गनिधपस, निगधपस, धनिगपस, निधगपस,
पधनिगस, धपनिगस, पनिधगस, निपधगस, धनिपगस, निधपगस,(१५)
समपधनि, मसपधनि, सपमधनि, पसमधनि, मपसधनि, पमसधनि,
समधपनि, मसधपनि, सधमपनि, धसमपनि, मधसपनि, धमसपनि,
सपधमनि, पसधमनि, सधपमनि, धसपमनि, पधसमनि, धपसमनि,
मपधसनि, पमधसनि, मधपसनि, धमपसनि, पधमसनि, धपमसनि,
समपनिध, मसपनिध, सपमनिध, पसमनिध, मपसनिध, पमसनिध,
समनिपध, मसनिपध, सनिमपध, निसमपध, मनिसपध, निमसपध,
सपनिमध, पसनिमध, सनिपमध, निसपमध, पनिसमध, निपसमध,
मपनिसध, पमनिसध, मनिपसध, निमपसध, पनिमसध, निपमसध,
समधनिप, मसधनिप, सधमनिप, धसमनिप, मधसनिप, धमसनिप,
समनिधप, मसनिधप, सनिमधप, निसमधप, मनिसधप, निमसधप,
सधनिमप, धसनिमप, सनिधमप, निसधमप, धनिसमप, निधसमप,
मधनिसप, धमनिसप, मनिधसप, निमधसप, धनिमसप, निधमसप,
सपधनिम, पसधनिम, सधपनिम, धसपनिम, पधसनिम, धपसनिम,
सपनिधम, पसनिधम, सनिपधम, निसपधम, पनिसधप, निपसधम,

सधनिपम, धसनिपम, सनिधपम, निसधपम, धनिसपम, निधसपम,
पधनिसम, धपनिसम, पनिधसम, निपधसम, धनिपसम, निधपसम,
मपधनिस, पमधनिस, मधपनिस, धमपनिस, पधमनिस, धपमनिस,
मपनिधस, पमनिधस, मनिपधस, निमपधस, पनिमधस, निपमधस,
मधनिपस, धमनिपस, मनिधपस, निमधपस, धनिमपस, निधमपस,
पधनिमस, धपनिमस, पनिधमस, निपधमस, धनिपमस, निधपमस,(१६)
रिगमपध, गरिमपध, रिमगपध, मरिगपध, गमरिपध, मगरिपध,
रिगपमध, गरिपमध, रिपगमध, परिगमध, गपरिमध, पगरिमध,
रिमपगध, मरिपगध, रिपमगध, परिमगध, मपरिगध, पमरिगध,
गमपरिध, मगपरिध, गपमरिध, पगमरिध, मपगरिध, पमगरिध,
रिगमधप, गरिमधप, रिमगधप, मरिगधप, गमरिधप, मगरिधप,
रिगधमप, गरिधमप, रिधगमप, धरिगमप, गधरिमप, धगरिमप,
रिमधगप, मरिधगप, रिधमगप, धरिमगप, मधरिगप, धमरिगप,
गमधरिप, मगधरिप, गधमरिप, धगमरिप, मधगरिप, धमगरिप,
रिगपधम, गरिपधम, रिपगधम, परिगधम, गपरिधम, पगरिधम,
रिगधपम, गरिधपम, रिधगपम, धरिगपम, गधरिपम, धगरिपम,
रिपधगम, परिधगम, रिधपगम, धरिपगम, पधरिगम, धपरिगम,
गपधरिम, पगधरिम, गधपरिम, धगपरिम, पधगरिम, धपगरिम,
रिमपधग, मरिपधग, रिपमधग परिमधग, मपरिधग, पमरिधग,
रिमधपग, मरिधपग, रिधमपग, धरिमपग, मधरिपग, धमरिपग,
रिपधमग, परिधमग, रिधपमग, धरिपमग, पधरिमग, धपरिमग,
मपधरिग, पमधरिग, मधपरिग, धमपरिग, पधमरिग, धपमरिग,
गमपधरि, मगपधरि, गपमधरि, पगमधरि, मपगधरि, पमगधरि,
गमधपरि, मगधपरि, गधमपरि, धगमपरि, मधगपरि, धमगपरि,
गपधमरि, पगधमरि, गधपमरि, धगपमरि, पधगमरि, धपगमरि,
मपधगरि, पमधगरि, मधपगरि, धमपगरि, पधमगरि, धपमगरि,
(१७) रिगमपनि, गरिमपनि, रिमगपनि, मरिगपनि, गमरिपनि,
मगरिपनि, रिगपमनि, गरिपमनि, रिपगमनि, परिगमनि, गपरिमनि,
पगरिमनि, रिमपगनि, मरिपगनि, रिपमगनि, परिमगनि, मपरिगनि,
पमरिगनि, गमपरिनि, मगपरिनि, गपमरिनि, पगमरिनि, मपगरिनि,
पमगरिनि, रिगमनिप, गरिमनिप, रिमगनिप, मरिगनिप, गमरिनिप,
मगरिनिप, रिगनिमप, गरिनिमप, रिनिगमप, निरिगमप, गनिरिमप,
निगरिमप, रिमनिगप, मरिनिगप, रिनिमगप, निरिमगप, मनिरिगप,

निमरिगप, गमनिरिप, मगनिरिप, गनिमरिप, निगमरिप, मनिगरिप, निमगरिप, रिगपनिम, गरिपनिम, रिपगनिम, परिगनिम, गपरिनिम, पगरिनिम, रिगनिपम, गरिनिपम, रिनिगपम, निरिगपम, गनिरिपम, निगरिपम, रिपनिगम, परिनिगम, रिनिपगम, निरिपमग, पनिरिगम, निपरिगम, गपनिरिम, पगनिरिम, गनिपरिम, निगपरिम, पनिगरिम, निपगरिम, रिमपनिग, मरिपनिग, रिपमनिग, परिमनिग, मपरिनिग, पमरिनिग, रिमनिपग, मरिनिपग, रिनिमपग, निरिमपग, मनिरिपग, निमरिपग, निपनिमग, परिनिमग, रिनिपमग, निरिपमग, पनिरिमग, निपरिमग, मपनिरिग, पमनिरिग, मनिपरिग, निमपरिग, पनिमरिग, निपमरिग, गमपनिरि, मगपनिरि, गपमनिरि, पगमनिरि, मपगनिरि, पमगनिरि, गमनिपरि, मगनिपरि, गनिमपरि, निगमपरि, मनिगपरि, निमगपरि, गपनिमरि, पगनिमरि, गनिपमरि, निगपमरि, पनिगमरि, निपगमरि, मपनिगरि, पमनिगरि, मनिपगरि, निमपगरि, धनिमगरि, निपमगरि, (१८) रिगमधनि, गरिमधनि, रिमगधनि, मरिगधनि, गमरिधनि, मगरिधनि, रिगधमनि, गरिधमनि, रिधगमनि, धरिगमनि, गधरिमनि, धगरिमनि, रिमधगनि, मरिधगनि, रिधमगनि, धरिमगनि, मधरिगनि, धमरिगनि, गमधरिनि, मगधरिनि, गधमरिनि, धगमरिनि, मधगरिनि, धमगरिनि, रिगमनिध, गरिमनिध, रिमगनिध, मरिगनिध, गमरिनिध, मगरिनिध, रिगनिमध, गरिनिमध, रिनिगमध, निरिमगध, गनिरिमध, निगरिमध, रिमनिगध. मरिनिगध, रिनिमगध, निरिमगध, मनिरिगध, निमरिगध, गमनिरिध, मगनिरिध, गनिमरिध, निगमरिध, मनिगरिध, निमगरिध, रिगधनिम, गरिधनिम, रिधगनिम, धरिगनिम, गधरिनिम, धगरिनिम, रिगनिधम, गरिनिधम, रिनिगधम, निरिगधम, गनिरिधम, निगरिधम, रिधनिगम, धरिनिगम, रिनिधगम, निरिधगम, धनिरिगम, निधरिगम, गधनिरिम, धगनिरिम, गनिधरिम, निगधरिम, धनिगरिम, निधगरिम, रिमधनिग, मरिधनिग, रिधमनिग, धरिमनिग, मधरिनिग, धमरिनिग, रिमनिधग, मरिनिधग, रिनिमधग निरिमधग, मनिरिधग, निमरिधग, रिधनिमग, धरिनिमग, रिनिधमग, निरिधमग, धनिरिमग, निधरिमग, मधनिरिग, धमनिरिग, मनिधरिग, निमधरिग, धनिमरिग. निधमरिग, गमधनिरि, मगधनिरि, गधमनिरि, धगमनिरि, मधगनिरि, धमगनिरि, गमनिधरि, मगनिधरि, गनिमधरि, निगमधरि, मनिगधरि, निमगधरि, गधनिमरि, धगनिमरि, गनिधमरि, निगधमरि धनिगमरि, निधगमरि, मधनिगरि, धमनिगरि, मनिधगरि, निमधगरि,

धनिमगरि, निधमगरि, (१६) रिगपधनि, गरिपधनि, रिपगधनि, परिगधनि, गपरिधनि, पगरिधनि, रिगधपनि, गरिधपनि, रिधगपनि, धरिगपनि, गधरिपनि, धगरिपनि, रिपधगनि, परिधगनि, रिधपगनि, धरिपगनि, पधरिगनि, धपरिगनि, गपधरिनि, पगधरिनि, गधपरिनि, धगपरिनि, पधगरिनि, धपगरिनि, रिगपनिध, गरिपनिध, रिपगनिध, परिगनिध, गपरिनिध, पगरिनिध, रिगनिपध, गरिनिपध, रिनिगपध, निरिगपध, गनिरिपध, निगरिपध, रिपनिगध, परिनिगध, रिनिपगध, निरिपगध, पनिरिगध, निपरिगध, गपनिरिध, पगनिरिध, गनिपरिध, निगपरिध, पनिगरिध, निपगरिध, रिगधनिप, गरिधनिप, रिधगनिप, धरिगनिप, गधरिनिप, धगरिनिप, रिगनिधप, गरिनिधप, रिनिगधप, निरिगधप, गनिरिधप, निगरिधप, रिधनिगप, धरिनिगप, रिनिधगप, निरिधगप, धनिरिगप, निधरिगप, गधनिरिप, धगनिरिप, गनिधरिप, निगधरिप, धनिगरिप, निधगरिप, रिपधनिग, परिधनिग, रिधपनिग, धरिपनिग, पधरिनिग, धपरिनिग, रिपनिधग, परिनिधग, रिनिपधग, निरिपधग, पनिरिधग, निपरिधग, रिधनिपग, धरिनिपग, रिनिधपग, निरिधपग, धनिरिपग, निधरिपग, पधनिरिग, धपनिरिग, पनिधरिग, निपधरिग, धनिपरिग, निधपरिग, गपधनिरि, पगधनिरि, गधपनिरि, धगपनिरि, पधगनिरि, धपगनिरि, गपनिधरि, पगनिधरि, गनिपधरि, निगपधरि, पनिगधरि, निपगधरि, गधनिपरि, धगनिपरि, गनिधपरि, निगधपरि, धनिगपरि, निधगपरि, पधनिगरि, धपनिगरि, पनिधगरि, निपधगरि, धनिपगरि, निधपगरि, (२०) रिमपधनि, मरिपधनि, रिपमधनि, परिमधनि, मपरिधनि, पमरिधनि, रिमधपनि, मरिधपनि, रिधमपनि, धरिमपनि, मधरिपनि, धमरिपनि, रिपधमनि, परिधमनि, रिधपमनि, धरिपमनि, पधरिमनि, धपरिमनि, मपधरिनि, पमधरिनि, मधपरिनि, धमपरिनि, पधमरिनि, धपमरिनि, रिमपनिध, मरिपनिध, रिपमनिध, परिमनिध, मपरिनिध, पमरिनिध, रिमनिपध, मरिनिपध, रिनिमपध, निरिमपध, मनिरिपध, निमरिपध, रिपनिमध, परिनिमध, रिनिपमध, निरिपमध, पनिरिमध, निपरिमध, मपनिरिध, पमनिरिध, मनिपरिध, निमपरिध, पनिमरिध, निपमरिध, रिमधनिप, मरिधनिप, रिधमनिप, धरिमनिप, मधरिनिप, धमरिनिप, रिमनिधप, मरिनिधप, रिनिमधप, निरिमधप, मनिरिधप, निमरिधप, रिधनिमप, धरिनिमप, रिनिधमप, निरिधमप, धनिरिमप, निधरिमप, मधनिरिप, धमनिरिप, मनिधरिप, निमधरिप, धनिमरिप, निधमरिप, रिपधनिम, परिधनिम,

रिधपनिम, धरिपनिम, पधरिनिम, धपरिनिम, रिपनिधम, परिनिधम, रिनिपधम, निरिपधम, पनिरिधम, निपरिधम, रिधनिपम, धरिनिपम, रिनिधपम, निरिधपम, धनिरिपम, निधरिपम, पधनिरिम, धपनिरिम, पनिधरिम, निपधरिम, धनिपरिम, निधपरिम, मपधनिरि, पमधनिरि, मधपनिरि, धमपनिरि, पधमनिरि, धपमनिरि, मपनिधरि, पमनिधरि, मनिपधरि, निमपधरि, पनिमधरि, निपमधरि, मधनिपरि, धमनिपरि, मनिधपरि, निमधपरि, धनिमपरि, निधमपरि, पधनिमरि, धपनिमरि, पनिधमरि, निपधमरि, धनिपमरि, निधपमरि, (२१) गमपधनि, मगपधनि, गपमधनि, पगमधनि, मपगधनि, पमगधनि, गमधपनि, मगधपनि, गधमपनि, धगमपनि, मधगपनि, धमगपनि, गपधमनि, पगधमनि, गधपमनि, धगपमनि, पधगमनि, धपगमनि, मपधगनि, पमधगनि, मधपगनि, धमपगनि, पधमगनि, धपमगनि, गमपनिध, मगपनिध, गपमनिध, पगमनिध, मपगनिध, पमगनिध, गमनिपध, मगनिपध, गनिमपध, निगमपध, मनिगपध, निमगपध, गपनिमध, पगनिमध, गनिपमध, निगपमध, पनिगमध, निपगमध, मपनिगध, पमनिगध, मनिपगध, निमपगध, पनिमगध, निपमगध, गमधनिप, मगधनिप, गधमनिप, धगमनिप, मधगनिप, धमगनिप, गमनिधप, मगनिधप, गनिमधप, निगमधप, मनिगधप, निमगधप, गधनिमप, धगनिमप, गनिधमप, निगधमप, धनिगमप, निधगमप, मधनिगप, धमनिगप, मनिधगप, निमधगप, धनिमगप, निधमगप, गपधनिम, पगधनिम, गधपनिम, धगपनिम, पधगनिम, धपगनिम, गपनिधम, पगनिधम, गनिपधम, निगपधम, पनिगधम, निपगधम, गधनिपम, धगनिपम, गनिधपम, निगधपम, धनिगपम, निधगपम, पधनिगम, धपनिगम, पनिधगम, निपधगम, धनिपगम, निधपगम, मपधनिग, पमधनिग, मधपनिग, धमपनिग, पधमनिग, धपमनिग, मपनिधग, पमनिधग, मनिपधग, निमपधग, पनिमधग, निपमधग, मधनिपग, धमनिपग, मनिधपग, निमधपग, धनिमपग, निधमपग, पधनिमग, धपनिमग, पनिधमग, निपधमग, धनिपमग, निधपमग,

छह स्वर वाले अर्थात् षाडवस्वरप्रस्तार—

(१) सरिगमपध, रिसगमपध, सगरिमपध, गसरिमपध, रिगसमपध, गरिसमपध, सरिमगपध, रिसमगपध, समरिगपध, मसरिगपध, रिमसगपध, मरिसगपध, सगमरिपध, गसमरिपध, समगरिपध, मसगरिपध, गमसरिपध,

मगसरिपध, रिगमसपध, गरिमसपध, रिमगसपध, मरिगसपध,
गमरिसपध, मगरिसपध, सरिगपमध, रिसगपमध, सगरिपमध,
गसरिपमध, रिगसपमध, गरिसपमध, सरिपगमध, रिसपगमध,
सपरिगमध, पसरिगमध, रिपसगमध, परिसगमध, सगपरिमध,
गसपरिमध, सपगरिमध, पसगरिमध, गपसरिमध, पगसरिमध,
रिगपसमध, गरिपसमध रिपगसमध, परिगसमध, गपरिसमध,
पगरिसमध, सरिमपगध, रिसमपगध, समरिपगध, मसरिपगध,
रिमसपगध, मरिसपगध, सरिपमगध, रिसपमगध, सपरिमगध,
पसरिमगध, रिपसमगध, परिसमगध, समपरिगध, मसपरिगध,
सपमरिगध, पसमरिगध, मपसरिगध, पमसरिगध, रिमपसगध,
मरिपसगध, रिपमसगध, परिमसगध, मपरिसगध, पमरिसगध,
सगमपरिध, गसमपरिध, समगपरिध, मसगपरिध, गमसपरिध,
मगसपरिध, सगपमरिध, गसपमरिध, सपगमरिध, पसगमरिध,
गपसमरिध, पगसमरिध, समपगरिध, मसपगरिध, सपमगरिध,
पसमगरिध, मपसगरिध, पमसगरिध, गमपसरिध, मगपसरिध,
गपमसरिध, पगमसरिध, मपगसरिध, पमगसरिध, रिगमपसध,
गरिमपसध, रिमगपसध, मरिगपसध, गमरिपसध, मगरिपसध,
रिगपमसध, गरिपमसध, रिपगमसध, परिगमसध, गपरिमसध,
पगरिमसध, रिमपगसध, मरिपगसध, रिपमगसध, परिमगसध,
मपरिगसध, पमरिगसध, गमपरिसध, मगपरिसध, गपमरिसध,
पगमरिसध, मपगरिसध, पमगरिसध, सरिगमधप, रिसगमधप,
सगरिमधप, गसरिमधप, रिगसमधप, गरिसमधप, सरिमगधप,
रिसमगधप, समरिगधप, मसरिगधप, रिमसगधप, मरिसगधप,
सगमरिधप, गसमरिधप, समगरिधप, मसगरिधप, गमसरिधप,
मगसरिधप, रिगमसधप, गरिमसधप, रिमगसधप, मरिगसधप,
गमरिसधप, मगरिसधप, सरिगधमप, रिसगधमप; सगरिधमप,
गसरिधमप, रिगसधमप, गरिसधमप, सरिधगमप, रिसधगमप,
सधरिगमप, धसरिगमप, रिधसगमप, धरिसगमप, सगधरिमप,
गसधरिमप, सधगरिमप, धसगरिमप, गधसरिमप, धगसरिमप,
रिगधसमप, गरिधसमप, रिधगसमप, धरिगसमप, गधरिसमप,
धगरिसमप, सरिमधगप, रिसमधगप, समरिधगप, मसरिधगप,
रिमसधगप, मरिसधगप, सरिधमगप, रिसधमगप सधरिमगप,
धसरिमगप, रिधसमगप, धरिसमगप, समधरिगप, मसधरिगप,

सधमरिगप, धसमरिगप, मधसरिगप, धमसरिगप, रिमधसगप,
मरिधसगप, रिधमसगप, धरिमसगप, मधरिसगप, धमरिसगप,
सगमधरिप, गसमधरिप, समगधरिप, मसगधरिप, गमसधरिप,
मगसधरिप, सगधमरिप, गसधमरिप, सधगमरिप, धसगमरिप,
गधसमरिप, धगसमरिप, समधगरिप, मसधगरिप, सधमगरिप,
धसमगरिप, मधसगरिप, धमसगरिप, गमधसरिप, मगधसरिप,
गधमसरिप, धगमसरिप, मधगसरिप, धमगसरिप, रिगमधसप,
गरिमधसप, रिमगधसप, मरिगधसप, गमरिधसप, मगरिधसप,
रिगधमसप, गरिधमसप, रिधगमसप, धरिगमसप, गधरिमसप,
धगरिमसप, रिमधगसप, मरिधगसप, रिधमगसप, धरिमगसप,
मधरिगसप, धमरिगसप, गमधरिसप, मगधरिसप, गधमरिसप,
धगमरिसप, मधगरिसप, धमगरिसप, सरिगपधम, रिसगपधम,
सगरिपधम, गसरिपधम, रिगसपधम, गरिसपधम, सरिपगधम,
रिसपगधम, सपरिगधम, पसरिगधम, रिपसगधम, परिसगधम,
सगपरिधम, सपरिधम, सपगरिधम, पसगरिधम, गपसरिधम,
पगसरिधम, रिगपसधम, गरिपसधम, रिपगसधम, परिगसधम,
गपरिसधम, पगरिसधम, सरिगधपम, रिसगधपम, सगरिधपम,
गसरिधपम, रिगसधपम, गरिसधपम, सरिधगपम, रिसधगपम,
सधरिगपम, धसरिगपम, रिधसगपम, धरिसगपम, सगधरिपम,
गसधरिपम, सधगरिपम, धसगरिपम, रिगधसपम, गरिधसपम,
रिधगसपम, धरिगसपम, गधरिसपम, धगरिसपम, सरिपधगम,
रिसपधगम, सपरिधगम, पसरिधगम, रिपसधगम, परिसधगम,
सरिधपगम, रिसधपगम, सधरिपगम, धसरिपगम, रिधसपगम,
धरिसपगम, सपधरिगम, पसधरिगम, सधपरिगम, धसपरिगम,
पधसरिगम, धपसरिगम, रिपधसगम, परिधसगम, रिधपसगम,
धरिपसगम, पधरिसगम, धपरिसगम, सगपधरिम, गसपधरिम,
सपगधरिम, पसगधरिम, गपसधरिम, पगसधरिम, सगधपरिम,
गसधपरिम, सधगपरिम, धसगपरिम, गधसपरिम, धगसपरिम,
सपधगरिम, पसधगरिम, सधपगरिम, धसपगरिम, गपधसरिम,
पगधसरिम, गधपसरिम, धगपसरिम, पधगसरिम, धपगसरिम,
रिगपधसम, गरिपधसम, रिपगधसम, परिगधसम, गपरिधसम,
पगरिधसम, रिगधपसम, गरिधपसम, रिधगपसम, धरिगपसम,
गधरिपसम, धगरिपसम, रिपधगसम, परिधगसम, रिधपगसम,

धरिपगसम, पधरिगसम, धपरिगसम, गपधरिसम, पगधरिसम,
गधपरिसम, धगपरिसम, पधगरिसम, धपगरिसम, सरिमपधग,
रिसमपधग, समरिपधग, मसरिपधग, रिमसपधग, मरिसपधग,
सरिपमधग, रिसपमधग, सपरिमधग, पसरिमधग, रिपसमधग,
परिसमधग, समपरिधग, मसपरिधग, सपमरिधग, पसमरिधग,
मपसरिधग, पमसरिधग, रिमपसधग, मरिपसधग, रिपमसधग,
परिमसधग, मपरिसधग, पमरिसधग, सरिमधपग, रिसमधपग,
समरिधपग, मसरिधपग, रिमसधपग, मरिसधपग, सरिधमपग,
रिसधमपग, सधरिमपग, धसरिमपग, रिधसमपग, धरिसमपग,
समधरिपग, मसधरिपग, सधमरिपग, धसमरिपग, मधसरिपग,
धमसरिपग, रिमधसपग, मरिधसपग, रिधमसपग, धरिमसपग,
मधरिसपग, धमरिसपग, सरिपधमग, रिसपधमग, सपरिधमग,
पसरिधमग, रिपसधमग, परिसधमग, सरिधपमग, रिसधपमग,
सधरिपमग, धसरिपमग, रिधसपमग, धरिसपमग, सपधरिमग,
पसधरिमग, सधपरिमग, धसपरिमग, पधसरिमग, धपसरिमग,
रिपधसमग, परिधसमग, रिधपसमग, धरिपसमग, पधरिसमग,
धपरिसमग, समपधरिग, मसपधरिग, सपमधरिग, पसमधरिग,
मपसधरिग, पमसधरिग, समधपरिग, मसधपरिग, सधमपरिग,
धसमपरिग, मधसपरिग, धमसपरिग, सपधमरिग, पसधमरिग,
सधपमरिग, धसपमरिग, पधसमरिग, धपसमरिग, मपधसरिग,
पमधसरिग, मधपसरिग, धमपसरिग, पधमसरिग, धपमसरिग,
रिमपधसग, मरिपधसग, रिपमधसग, परिमधसग, मपरिधसग,
पमरिधसग, रिमधपसग, मरिधपसग, रिधमपसग, धरिमपसग,
मधरिपसग, धमरिपसग, रिपधमसग, परिधमसग, रिधपमसग,
धरिपमसग, पधरिमसग, धपरिमसग, मपधरिसग, पमधरिसग,
मधपरिसग, धमपरिसग, पधमरिसग, धपमरिसग, सगमपधरि,
गसमपधरि, समगपधरि, मसगपधरि, गमसपधरि, मगसपधरि,
सगपमधरि, गसपमधरि, सपगमधरि, पसगमधरि, गपसमधरि,
पगसमधरि, समपगधरि, मसपगधरि, सपमगधरि, पसमगधरि,
मपसगधरि, पमसगधरि, गमपसधरि, मगपसधरि, गपमसधरि,
पगमसधरि, मपगसधरि, पमगसधरि, सगमधपरि, गसमधपरि,
समगधपरि, मसगधपरि, गमसधपरि, मगसधपरि, सगधमपरि,
गसधमपरि, सधगमपरि, धसगमपरि, गधसमपरि, धगसमपरि,

समधगपरि, मसधगपरि, सधमगपरि, धसमगपरि, मधसगपरि,
धमसगपरि, गमधसपरि, मगधसपरि, गधमसपरि, धगमसपरि,
मधगसपरि, धमगसपरि, सगपधमरि, गसपधमरि, सपगधमरि,
पसगधमरि, गपसधमरि, पगसधमरि, सगधपमरि, गसधपमरि,
सधगपमरि, धसगपमरि, गधसपमरि, धगसपमरि, सपधगमरि,
पसधगमरि, सधपगमरि, धसपगमरि, पधसगमरि, धपसगमरि,
गपधसमरि, पगधसमरि, गधपसमरि, धगपसमरि, पधगसमरि,
धपगसमरि, समपधगरि, मसपधगरि, सपमधगरि, पसमधगरि,
मपसधगरि, पमसधगरि, समधपगरि, मसधपगरि, सधमपगरि,
धसमपगरि, मधसपगरि, धमसपगरि, सपधमगरि, पसधमगरि,
सधपमगरि, धसपमगरि, पधसमगरि, धपसमगरि, मपधसगरि,
पमधसगरि, मधपसगरि, धमपसगरि, पधमसगरि, धपमसगरि,
गमपधसरि, मगपधसरि, गपमधसरि, पगमधसरि, मपगधसरि,
पमगधसरि, गमधपसरि, मगधपसरि, गधमपसरि, धगमपसरि,
मधगपसरि, धमगपसरि, गपधमसरि, पगधमसरि, गधपमसरि,
धगपमसरि, पधगमसरि, धपगमसरि, मपधगसरि, पमधगसरि,
मधपगसरि, धमपगसरि, पधमगसरि, धपमगसरि, रिगमपधस,
गरिमपधस, रिमगपधस, मरिगपधस, गमरिपधस, मगरिपधस,
रिगपमधस, गरिपमधस, रिपगमधस, परिगमधस, गपरिमधस,
पगरिमधस, रिमपगधस, मरिपगधस, रिपमगधस, परिमगधस,
मपरिगधस, पमरिगधस, गमपरिधस, मगपरिधस, गपमरिधस,
पगमरिधस, मपगरिधस, पमगरिधस, रिगमधपस, गरिमधपस,
रिमगधपस, मरिगधपस, गमरिधपस, मगरिधपस, रिगधमपस,
गरिधमपस, रिधगमपस, धरिगमपस, गधरिमपस, धगरिमपस,
रिमधगपस, मरिधगपस, रिधमगपस, धरिमगपस, मधरिगपस,
धमरिगपस, गमधरिपस, मगधरिपस, गधमरिपस, धगमरिपस,
मधगरिपस, धमगरिपस, रिगपधमस, गरिपधमस, रिपगधमस,
परिगधमस, गपरिधमस, पगरिधमस, रिगधपमस, गरिधपमस,
रिधगपमस, धरिगपमस, गधरिपमस, धगरिपमस, रिपधगमस,
परिधगमस, रिधपगमस, धरिपगमस, पधरिगमस, धपरिगमस,
गपधरिमस, पगधरिमस, गधपरिमस, धगपरिमस, पधगरिमस,
धपगरिमस, रिमपधगस, मरिपधगस, रिपमधगस, परिमधगस,
मपरिधगस, पमरिधगस, रिमधपगस, मरिधपगस, रिधमपगस,

धरिमपगस, मधरिपगस, धमरिपगस, रिपधमगस, परिधमगस,
रिधपमगस, धरिपमगस, पधरिमगस, धपरिमगस, मपधरिगस,
पमधरिगस, मधपरिगस, धमपरिगस, पधमरिगस, धपमरिगस,
गमपधरिस, मगवधरिस, गपमधरिस, पगमधरिस, मपगधरिस,
पमगधरिस, गमधपरिस, मगधपरिस, गधमपरिस, धगमपरिस,
मधगपरिस, धमगपरिस, गपधमरिस, पगधमरिस, गधपमरिस,
धगपमरिस, पधगमरिस, धपगमरिस, मपधगरिस, पमधगरिस,
मधपगरिस, धमपगरिस, पधमगरिस, धपमगरिस, (२) सरिगमपनि,
रिसगमपनि, सगरिमपनि, गसरिमपनि, रिगसमपनि, गरिसमपनि,
सरिमगपनि, रिसमगपनि, समरिगपनि, मसरिगपनि, रिमसगपनि,
मरिसगपनि, सगमरिपनि, गसमरिपनि, समगरिपनि, मसगरिपनि,
गमसरिपनि, मगसरिपनि, रिगमसपनि, गरिमसपनि, रिमगसपनि,
मरिगसपनि, गमरिसपनि, मगरिसपनि, सरिगपमनि, रिसगपमनि,
मगरिपमनि, गसरिपमनि, रिगसपमनि, गरिसपमनि, सरिपगमनि,
रिसपगमनि, सपरिगमनि, पसरिगमनि, रिपसगमनि, परिसगमनि,
सगपरिमनि, गसपरिमनि, सपगरिमनि, पसगरिमनि, गपसरिमनि,
पगसरिमनि, रिगपसमनि, गरिपसमनि, रिपगसमनि, परिगसमनि,
गपरिसमनि, पगरिसमनि, सरिमपगनि, रिसमपगनि, समरिपगनि,
मसरिपगनि, रिमसपगनि, मरिसपगनि, सरिपमगनि, रिसपमगनि,
सपरिमगनि, पसरिमगनि, रिपसमगनि, परिसमगनि, समपरिगनि,
मसपरिगनि, सपमरिगनि, पसमरिगनि, मपसरिगनि, पमसरिगनि,
रिमपसगनि, मरिपसगनि, रिपमसगनि, परिमसगनि, मपरिसगनि,
पमरिसगनि, सगमपरिनि, गसमपरिनि, समगपरिनि, मसगपरिनि,
गमसपरिनि, मगसपरिनि, सगपमरिनि, गसपमरिनि, सपगमरिनि,
पसगमरिनि, गपसमरिनि, पगसमरिनि, समपगरिनि, मसपगरिनि,
सपमगरिनि, पसमगरिनि, मपसगरिनि, पमसगरिनि, गमपसरिनि,
मगपसरिनि, गपमसरिनि, पगमसरिनि, मपगसरिनि, पमगसरिनि,
रिगमपसनि, गरिमपसनि, रिमगपसनि, मरिगपसनि, गमरिपसनि,
मगरिपसनि, रिगपमसनि, गरिपमसनि, रिपगमसनि, परिगमसनि,
गपरिमसनि, पगरिमसनि, रिमपगसनि, मरिपगसनि, रिपमगसनि,
परिमगसनि, मपरिगसनि, पमरिगसनि, गमपरिसनि, मगपरिसनि,
गपमरिसनि, पगमरिसनि, मपगरिसनि, पमगरिसनि, सरिगमनिप,
रिसगमनिप, सगरिमनिप, गसरिमनिप, रिगसमनिप, गरिसमनिप,

सरिमगनिप, रिसमगनिप, समरिगनिप, मसरिगनिप, रिमसगनिप,
मरिसगनिप, सगमरिनिप, गसमरिनिप, समगरिनिप, मसगरिनिप,
गमसरिनिप, मगसरिनिप, रिगमसनिप, गरिमसनिप, रिमगसनिप,
मरिगसनिप, गमरिसनिप, मगरिसनिप, सरिगनिमप, रिसगनिमप,
सगरिनिमप, गसरिनिमप, रिगसनिमप, गरिसनिमप, सरिनिगमप,
रिसनिगमप, सनिरिगमप, निसरिगमप, रिनिसगमप, निरिसगमप,
सगनिरिमप, गसनिरिमप, सनिगरिमप, निसगरिमप, गनिसरिमप,
निगसरिमप, रिगनिसमप, गरिनिसमप, रिनिगसमप, निरिगसमप,
गनिरिसमप, निगरिसमप, सरिमनिगप, रिसमनिगप, समरिनिगप,
मसरिनिगप, रिमसनिगप, मरिसनिगप, सरिनिमगप, रिसनिमगप,
सनिरिमगप, निसरिमगप, रिनिसमगप, निरिसमगप, समनिरिगप,
मसनिरिगप, सनिमरिगप, निसमरिगप, मनिसरिगप, निमसरिगप,
रिमनिसगप, मरिनिसगप, रिनिमसगप, निरिमसगप, मनिरिसगप,
निमरिसगप, सगमनिरिप, गसमनिरिप, समगनिरिप, मसगनिरिप,
गमसनिरिप, मगसनिरिप, सगनिमरिप, गसनिमरिप, सनिगमरिप,
निसगमरिप, गनिसमरिप, निगसमरिप, समनिगरिप, मसनिगरिप,
सनिमगरिप, निसमगरिप, मनिसगरिप, निमसगरिप, गमनिसरिप,
मगनिसरिप, गनिमसरिप, निगमसरिप, मनिगसरिप, निमगसरिप,
रिगमनिसप, गरिमनिसप, रिमगनिसप, मरिगनिसप, गमरिनिसप,
मगरिनिसप, रिगनिमसप, गरिनिमसप, रिनिगमसप, निरिगमसप,
गनिरिमसप, निगरिमसप, रिमनिगसप, मरिनिगसप रिनिमगसप,
निरिमगसप, मनिरिगसप, निमरिगसप, गमनिरिसप, मगनिरिसप,
गनिमरिसप, निगमरिसप, मनिगरिसप, निमगरिसप, सरिगपनिम,
रिसगपनिम, सगरिपनिम, गसरिपनिम, रिगसपनिम, गरिसपनिम,
सरिपगनिम, रिमपगनिम, सपरिगनिम, पसरिगनिम, रिपसगनिम,
परिसगनिम, सगपरिनिम, गसपरिनिम, सपगरिनिम, पसगरिनिम,
गपसरिनिम, पगसरिनिम, रिगपसनिम, गरिपसनिम, रिपगसनिम,
परिगसनिम, गपरिसनिम, पगरिसनिम, सरिगनिपम, रिसगनिपम,
सगरिनिपम, गसरिनिपम, रिगसनिपम, गरिसनिपम, सरिनिगपम,
रिसनिगपम, सनिरिगपम, निसरिगपम, रिनिसगपम, निरिसगपम,
सगनिरिपम, गसनिरिपम, सनिगरिपम, निसगरिपम, गनिसरिपम,
निगसरिपम, रिगनिसपम, गरिनिसपम, रिनिगसपम, निरिगसपम,
गनिरिसपम, निगरिमपम, सरिपनिगम, रिसपनिगम, सपरिनिगम

पसरिनिगम, रिपसनिगम, परिसनिगम, सरिनिपगम, रिसनिपगम,
सनिरिपगम, निसरिपगम, रिनिसपगम, निरिसपगम, सपनिरिगम,
पसनिरिगम, सनिपरिगम, निसपरिगम, पनिसरिगम, निपसरिगम,
रिपनिसगम, परिनिसगम, रिनिपसगम, निरिपसगम, पनिरिसगम,
निपरिसगम, सगपनिरिम, गसपनिरिम, सपगनिरिम, पसगनिरिम,
गपसनिरिम, पगसनिरिम, सगनिपरिम, गसनिपरिम, सनिगपरिम,
निसगपरिम, गनिसपरिम, निगसपरिम, सपनिगरिम, पसनिगरिम,
सनिपगरिम, निसपगरिम, पनिसगरिम, निपसगरिम, गपनिसरिम,
पगनिसरिम, गनिपसरिम, निगपसरिम, पनिगसरिम, निपगसरिम,
रिगपनिसम, गरिपनिसम, रिपगनिसम, परिगनिसम, गपरिनिसम,
पगरिनिसम, रिगनिपसम, गरिनिपसम, रिनिगपसम, निरिगपसम,
गनिरिपसम, निगरिपसम, रिपनिगसम, परिनिगसम, रिनिपगसम,
निरिपगसम, पनिरिगसम, निपरिगसम, गपनिरिसम, पगनिरिसम,
गनिपरिसम, निगपरिसम, पनिगरिसम, निपगरिसम, सरिमपनिग,
रिसमपनिग, समरिपनिग, मसरिपनिग, रिमसपनिग, मरिसपनिग,
सरिपमनिग, रिसपमनिग, सपरिमनिग, पसरिमनिग, रिपसमनिग,
परिसमनिग, समपरिनिग, मसपरिनिग, सपमरिनिग, पसमरिनिग,
मपसरिनिग, पमसरिनिग, रिमपसनिग, मरिपसनिग, रिपमसनिग,
परिमसनिग, मपरिसनिग, पमरिसनिग, सरिमनिपग, रिसमनिपग,
समरिनिपग, मसरिनिपग, रिमसनिपग, मरिसनिपग, सरिनिमपग,
रिसनिमपग, सनिरिमपग, निसरिमपग, रिनिसमपग, निरिसमपग,
समनिरिपग, मसनिरिपग, सनिमरिपग, निसमरिपग, मनिसरिपग,
निमसरिपग, रिमनिसपग, मरिनिसपग, रिनिमसपग, निरिमसपग,
मनिरिसपग, निमरिसपग, सरिपनिमग, रिसपनिमग, सपरिनिमग,
पसरिनिमग, रिपसनिमग, परिसनिमग, सरिनिपमग, रिसनिपमग,
सनिरिपमग, निसरिपमग, रिनिसपमग, निरिसपमग, सपनिरिमग,
पसनिरिमग, सनिपरिमग, निसपरिमग, पनिसरिमग, निपसरिमग,
रिपनिसमग, परिनिसमग, रिनिपसमग, निरिपसमग, पनिरिसमग,
निपरिसमग, समपनिरिग, मसपनिरिग, सपमनिरिग, पसमनिरिग,
मपसनिरिग, पमसनिरिग, समनिपरिग, मसनिपरिग, सनिमपरिग,
निसमपरिग, मनिसपरिग, निमसपरिग, सपनिमरिग, पसनिमरिग,
सनिपमरिग, निसपमरिग, पनिसमरिग, निपसमरिग, मपनिसरिग,
पमनिसरिग, मनिपसरिग, निमपसरिग, पनिमसरिग, निपमसरिग,

रिमपनिसग, मरिपनिसग, रिपमनिसग, परिमनिसग, मपरिनिसग,
पमरिनिसग, रिमनिपसग, मरिनिपसग, रिनिमपसग, निरिमपसग,
मनिरिपमग, निमरिपसग, रिपनिमसग, परिनिमसग, रिनिपमसग,
निरिपमसग, पनिरिमसग, निपरिमसग, मपनिरिसग, पमनिरिसग,
मनिपरिसग, निमपरिसग, पनिमरिसग, निपमरिसग, सगमपनिरि,
गसमपनिरि, समगपनिरि, मसगपनिरि, गमसपनिरि, मगसपनिरि,
सगपमनिरि, गसपमनिरि, सपगमनिरि, पसगमनिरि, गपसमनिरि,
पगसमनिरि, समपगनिरि, मसपगनिरि, सपमगनिरि, पसमगनिरि,
मपसगनिरि, पमसगनिरि, गमपसनिरि, मगपसनिरि, गपमसनिरि,
पगमसनिरि, मपगसनिरि, पमगसनिरि, सगमनिपरि, गसमनिपरि,
समगनिपरि, मसगनिपरि, गमसनिपरि, मगसनिपरि, सगनिमपरि,
गसनिमपरि, सनिगमपरि, निसगमपरि, गनिसमपरि, निगसमपरि,
समनिगपरि, मसनिगपरि, सनिमगपरि, निसमगपरि, मनिसगपरि,
निमसगपरि, गमनिसपरि, मगनिसपरि, गनिमसपरि, निगमसपरि,
मनिगसपरि, निमगसपरि, सगपनिमरि, गसपनिमरि, सपगनिमरि,
पसगनिमरि, गपसनिमरि पगसनिमरि, मगनिपमरि, गसनिपमरि,
सनिगपमरि, निसगपमरि, गनिसपमरि, निगसपमरि, सपनिगमरि,
पसनिगमरि, सनिपगमरि, निसपगमरि, पनिसगमरि, निपसगमरि,
गपनिसमरि, पगनिसमरि, गनिपसमरि, निगपसमरि, पनिगसमरि,
निपगसमरि, समपनिगरि, मसपनिगरि, सपमनिगरि, पसमनिगरि,
मपसनिगरि, पमसनिगरि, समनिपगरि, मसनिपगरि, सनिमपगरि,
निसमपगरि, मनिसपगरि, निमसपगरि, सपनिमगरि, पसनिमगरि,
सनिपमगरि, निसपमगरि, पनिसमगरि, निपसमगरि, मपनिसगरि,
पमनिसगरि, मनिपसगरि, निमपसगरि, पनिमसगरि, निपमसगरि,
गमपनिसरि, मगपनिसरि, गपमनिसरि, पगमनिसरि, मपगनिसरि,
पमगनिसरि, गमनिपसरि, मगनिपसरि, गनिमपसरि, निगमपसरि,
मनिगपसरि, निमगपसरि, गपनिमसरि, पगनिमसरि, गनिपमसरि,
निगपमसरि, पनिगमसरि, निपगमसरि, मपनिगसरि, पमनिगसरि,
मनिपगसरि, निमपगसरि, पनिमगसरि, निपमगसरि, रिगमपनिस,
गरिमपनिस, रिमगपनिस, मरिगपनिस, गमरिपनिस, मगरिपनिस,
रिगपमनिस, गरिपमनिस, रिपगमनिस, परिगमनिस, गपरिमनिस,
पगरिमनिस, रिमपगनिस, मरिपगनिस, रिपमगनिस, परिमगनिस,
मपरिगनिस, पमरिगनिस, गमपरिनिस, मगपरिनिस, गपमरिनिस,

पगमरिनिस, मपगरिनिस, पमगरिनिस, रिगमनिपस, गरिमनिपस, रिमगनिपस, मरिगनिपस, गमरिनिपस, मगरिनिपस, रिगनिमपस, गरिनिमपस, रिनिगमपस, निरिगमपस, गनिरिमपस, निगरिमपस, रिमनिगपस, मरिनिगपस, रिनिमगपस, निरिमगपस, मनिरिगपस, निमरिगपस, गमनिरिपस, मगनिरिपस, गनिमरिपस, निगमरिपस, मनिगरिपस, निमगरिपस, रिगपनिमस, गरिपनिमस, रिपगनिमस, परिगनिमस, गपरिनिमस, पगरिनिमस, रिगनिपमस, गरिनिपमस, रिनिगपमस, निरिगपमस, गनिरिपमस, निगरिपमस, रिपनिगमस, परिनिगमस, रिनिपगमस, निरिपगमस, पनिरिगमस, निपरिगमस, गपनिरिमस, पगनिरिमस, गनिपरिमस, निगपरिमस, पनिगरिमस, निपगरिमस, रिमपनिगस, मरिपनिगस, रिपमनिगस, परिमनिगस, मपरिनिगस, पमरिनिगस, रिमनिपगस, मरिनिपगस, रिनिमपगस, निरिमपगस, मनिरिपगस, निमरिपगस, रिपनिमगस, परिनिमगस, रिनिपमगस, निरिपमगस, पनिरिमगस, निपरिमगस, मपनिरिगस, पमनिरिगस, मनिपरिगस, निमपरिगस, पनिमरिगस, निपमरिगस, गमपनिरिस, मगपनिरिस, गपमनिरिस, पगमनिरिस, मपगनिरिस, पमगनिरिस, गमनिपरिस, मगनिपरिस, गनिमपरिस, निगमपरिस, मनिगपरिस, निमगपरिस, गपनिमरिस, पगनिमरिस, गनिपमरिस, निगपमरिस, पनिगमरिस, निपगमरिस, मपनिगरिस, पमनिगरिस, मनिपगरिस, निमपगरिस, पनिमगरिस, निपमगरिस, (३) सरिगमधनि, रिसगमधनि, सगरिमधनि, गसरिमधनि, रिगसमधनि, गरिसमधनि, सरिमगधनि, रिसमगधनि, समरिगधनि, मसरिगधनि, रिमसगधनि, मरिसगधनि, सगमरिधनि, गसमरिधनि, समगरिधनि, मसगरिधनि, गमसरिधनि, मगसरिधनि, रिगमसधनि, गरिमसधनि, रिमगसधनि, मरिगसधनि, गमरिसधनि, मगरिसधनि, सरिगधमनि, रिसगधमनि, सगरिधमनि, गसरिधमनि, रिगसधमनि, गरिसधमनि, सरिधगमनि, रिसधगमनि, सधरिगमनि, धसरिगमनि, रिधसगमनि, धरिसगमनि, सगधरिमनि, गसधरिमनि, सधगरिमनि, धसगरिमनि, गधसरिमनि, धगसरिमनि, रिगधसमनि, गरिधसमनि, रिधगसमनि, धरिगसमनि, गधरिसमनि, धगरिसमनि, सरिमधगनि, रिसमधगनि, समरिधगनि, मसरिधगनि, रिमसधगनि, मरिसधगनि, सरिधमगनि, रिसधमगनि, सधरिमगनि, धसरिमगनि, रिधसमगनि, धरिसमगनि, समधरिगनि, मसधरिगनि, सधमरिगनि, धसमरिगनि, मधसरिगनि, धमसरिगनि,

रिमधसगनि, मरिधसगनि, रिधमसगनि, धरिमसगनि, मधरिसगनि,
धमरिसगनि, सगमधरिनि, गसमधरिनि, समगधरिनि, मसगधरिनि,
गमसधरिनि, मगसधरिनि, सगधमरिनि, गसधमरिनि, सधगमरिनि,
धसगमरिनि, गधसमरिनि, धगसमरिनि, समधगरिनि, मसधगरिनि,
सधमगरिनि, धसमगरिनि, मधसगरिनि, धमसगरिनि, गमधसरिनि,
मगधसरिनि, गधमसरिनि, धगमसरिनि, मधगसरिनि, धमगसरिनि,
रिगमधसनि, गरिमधसनि, रिमगधसनि, मरिगधसनि, गमरिधसनि,
मगरिधसनि, रिगधमसनि, गरिधमसनि, रिधगमसनि, धरिगमसनि,
गधरिमसनि, धगरिमसनि, रिमधगसनि, मरिधगसनि, रिधमगसनि,
धरिमगसनि, गधरिगसनि, धमरिगसनि, गमधरिसनि, मगधरिसनि,
गधमरिसनि, धगमरिसनि, मधगरिसनि, धमगरिसनि, सरिगमनिध,
रिसगमनिध, सगरिमनिध, गसरिमनिध, रिगसमनिध, गरिसमनिध,
सरिमगनिध, रिसमगनिध, समरिगनिध, मसरिगनिध, रिमसगनिध,
मरिसगनिध, सगमरिनिध, गसमरिनिध, समगरिनिध, मसगरिनिध,
गमसरिनिध, मगसरिनिध, रिगमसनिध, गरिमसनिध, रिमगसनिध,
मरिगसनिध, गमरिसनिध, मगरिसनिध, सरिगनिमध, रिसगनिमध,
सगरिनिमध, गसरिनिमध, रिगसनिमध, गरिसनिमध, सरिनिगमध,
रिसनिगमध, सनिरिगमध, निसरिगमध, रिनिसगमध, निरिसगमध,
सगनिरिमध, गसनिरिमध, सनिगरिमध, निसगरिमध, गनिसरिमध,
निगसरिमध, रिगनिसमध, गरिनिसमध, रिनिगसमध, निरिगसमध,
गनिरिसमध, निगरिसमध, सरिमनिगध, रिसमनिगध, समरिनिगध,
मसरिनिगध, रिमसनिगध, मरिसनिगध, सरिनिमगध, रिसनिमगध,
सनिरिमगध, निसरिमगध, रिनिसमगध, निरिसमगध, समनिरिगध,
मसनिरिगध, सनिमरिगध, निसमरिगध, मनिसरिगध, निमसरिगध,
रिमनिसगध, मरिनिसगध, रिनिमसगध, निरिमसगध, मनिरिसगध,
निमरिसगध, सगमनिरिध, गसमनिरिध, समगनिरिध, मसगनिरिध,
गमसनिरिध, मगसनिरिध, सगनिमरिध, गसनिमरिध, सनिगमरिध,
निसगमरिध, गनिसमरिध, निगसमरिध, समनिगरिध, मसनिगरिध,
सनिमगरिध, निसमगरिध, मनिसगरिध, निमसगरिध, गमनिसरिध,
मगनिसरिध, गनिमसरिध, निगमसरिध, मनिगसरिध, निमगसरिध,
रिगमनिसध, गरिमनिसध, रिमगनिसध, मरिगनिसध, गमरिनिसध,
मगरिनिसध, रिगनिमसध, गरिनिमसध, रिनिगमसध, निरिगमसध,
गनिरिमसध, निगरिमसध, रिमनिगसध, मरिनिगसध, रिनिमगसध,

निरिमगसध, मनिरिगसध, निमरिगसध, गमनिरिसध, मगनिरिसध,
गनिमरिसध, निगमरिसध, मनिगरिसध, निमगरिसध, सरिगधनिम,
निसगधनिम, सगरिधनिम, गसरिधनिम, रिगसधनिम, गरिसधनिम,
सरिधगनिम, रिसधगनिम, सधरिगनिम, धसरिगनिम, रिधसगनिम,
धरिसगनिम, सगधरिनिम, गसधरिनिम, सधगरिनिम, धसगरिनिम,
गधसरिनिम, धगसरिनिम, रिगधसनिम, गरिधसनिम, रिधगसनिम,
धरिगसनिम, गधरिसनिम, धगरिसनिम, सरिगनिधम, रिसगनिधम,
सगरिनिधम, गसरिनिधम, रिगसनिधम, गरिसनिधम, सरिनिगधम,
रिसनिगधम, सनिरिगधम, निसरिगधम, रिनिसगधम, निरिसगधम,
सगनिरिधम, गसनिरिधम, सनिगरिधम, निसगरिधम, गनिसरिधम,
निगसरिधम, रिगनिसधम, गरिनिसधम, रिनिगसधम, निरिगसधम,
गनिरिसधम, निगरिसधम, सरिधनिगम, रिसधनिगम, सधरिनिगम,
धसरिनिगम, रिधसनिगम, धरिसनिगम, सरिनिधगम, रिसनिधगम,
सनिरिधगम, निसरिधगम, रिनिसधगम, निरिसधगम, सधनिरिगम,
धसनिरिगम, सनिधरिगम, निसधरिगम, धनिसरिगम, निधसरिगम,
रिधनिसगम, धरिनिसगम, रिनिधसगम, निरिधसगम, धनिरिसगम,
निधरिसगम, सगधनिरिम, गसधनिरिम, सधगनिरिम, धसगनिरिम,
गधसनिरिम, धगसनिरिम, सगनिधरिम, गसनिधरिम, सनिगधरिम,
निसगधरिम, गनिसधरिम, निगसधरिम, सधनिगरिम, धसनिगरिम,
सनिधगरिम, निसधगरिम, धनिसगरिम, निधसगरिम, गधनिसरिम,
धगनिसरिम, गनिधसरिम, निगधसरिम, धनिगसरिम, निधगसरिम,
रिगधनिसम, गरिधनिसम, रिधगनिसम, धरिगनिसम, गधरिनिसम,
धगरिनिसम, रिगनिधसम, गरिनिधसम, रिनिगधसम, निरिगधसम,
गनिरिधसम, निगरिधसम, रिधनिगसम, धरिनिगसम, रिनिधगसम,
निरिधगसम, धनिरिगसम, निधरिगसम, गधनिरिसम, धगनिरिसम,
गनिधरिसम. निगधरिसम, धनिगरिसम, निधगरिसम, सरिमधनिग,
रिसमधनिग, समरिधनिग, मसरिधनिग, रिमसधनिग, मरिसधनिग,
सरिधमनिग, रिसधमनिग, सधरिमनिग, धसरिमनिग, रिधसमनिग,
धरिसमनिग, समधरिनिग, मसधरिनिग, सधमरिनिग, धसमरिनिग,
मधसरिनिग, धमसरिनिग, रिमधसनिग, मरिधसनिग, रिधमसनिग,
धरिमसनिग, मधरिसनिग, धमरिसनिग, सरिमनिधग, रिसमनिधग,
समरिनिधग, मसरिनिधम, रिमसनिधग, मरिसनिधग, सरिनिमधग,
रिसनिमधग, सनिरिमधग, निसरिमधग, रिनिसमधग, निरिसमधग,

समनिरिधग, मसनिरिधग, सनिमरिधग, निसमरिधग, मनिसरिधग,
निमसरिधग, रिमनिसधग, मरिनिसधग, रिनिमसधग, निरिमसधग,
मनिरिसधग, निमरिसधग, सरिधनिमग, रिसधनिमग, सधरिनिमग,
धसरिनिमग, रिधसनिमग, धरिसनिमग, सरिनिधमग, रिसनिधमग,
सनिरिधमग, निसरिधमग, रिनिसधमग, निरिसधमग, सधनिरिमग,
धसनिरिमग, सनिधरिमग, निसधरिमग, धनिसरिमग, निधसरिमग,
रिधनिसमग, धरिनिसमग, रिनिधसमग, निरिधसमग, धनिरिसमग,
निधरिसमग, समधनिरिग, मसधनिरिग, सधमनिरिग, धसमनिरिग,
मधसनिरिग, धमसनिरिग, समनिधरिग, मसनिधरिग, सनिमधरिग,
निसमधरिग, मनिसधरिग, निमसधरिग, सधनिमरिग, धसनिमरिग,
सनिधमरिग, निसधमरिग, धनिसमरिग, निधसमरिग, मधनिसरिग,
धमनिसरिग, मनिधसरिग, निमधसरिग, धनिमसरिग, निधमसरिग,
रिमधनिसग, मरिधनिसग, रिधमनिसग, धरिमनिसग, मधरिनिसग,
धमरिनिसग, रिमनिधसग, मरिनिधसग, रिनिमधसग, निरिमधसग,
मनिरिधसग, निमरिधसग, रिधनिमसग, धरिनिमसग, रिनिधमसग,
निरिधमसग, धनिरिमसग, निधरिमसग, मधनिरिसग, धमनिरिसग,
मनिधरिसग, निमधरिसग, धनिमरिसग, निधमरिसग, सगमधनिरि,
गसमधनिरि, समगधनिरि, मसगधनिरि, गमसधनिरि, मगसधनिरि,
सगधमनिरि, गसधमनिरि, सधगमनिरि, धसगमनिरि, गधसमनिरि,
धगसमनिरि, समधगनिरि, मसधगनिरि, सधमगनिरि, धसमगनिरि,
मधसगनिरि, धमसगनिरि, गमधसनिरि, मगधसनिरि, गधमसनिरि,
धगमसनिरि, मधगसनिरि, धमगसनिरि, सगमनिधरि, गसमनिधरि,
समगनिधरि, मसगनिधरि, गमसनिधरि, मगसनिधरि, सगनिमधरि,
गसनिमधरि, सनिगमधरि, निसगमधरि, गनिसमधरि, निगसमधरि,
समनिगधरि, मसनिगधरि, सनिमगधरि, निसमगधरि, मनिसगधरि,
निमसगधरि, गमनिसधरि, मगनिसधरि, गनिमसधरि, निगमसधरि,
मनिगसधरि, निमगसधरि, सगधनिमरि, गसधनिमरि, सधगनिमरि,
धसगनिमरि, गधसनिमरि, धगसनिमरि, सगनिधमरि, गसनिधमरि,
सनिगधमरि, निसगधमरि, गनिसधमरि, निगसधमरि, सधनिगमरि,
धसनिगमरि, सनिधगमरि, निसधगमरि, धनिसगमरि, निधसगमरि,
गधनिसमरि, धगनिसमरि, गनिधसमरि, निगधसमरि, धनिगसमरि,
निधगसमरि, समधनिगरि, मसधनिगरि, सधमनिगरि, धसमनिगरि,
मधसनिगरि, धमसनिगरि, समनिधगरि, मसनिधगरि, सनिमधगरि,

निसमधगरि, मनिसधगरि, निमसधगरि, सधनिमगरि, धसनिमगरि, सनिधमगरि, निसधमगरि, धनिसमगरि, निधसमगरि, मधनिसगरि, धमनिसगरि, मनिधसगरि, निमधसगरि, धनिमसगरि, निधमसगरि, गमधनिसरि, मगधनिसरि, गधमनिसरि, धगमनिसरि, मधगनिसरि, धमगनिसरि, गमनिधसरि, मगनिधसरि, गनिमधसरि, निगमधसरि, मनिगधसरि, निमगधसरि, गधनिमसरि, धगनिमसरि, गनिधमसरि, निगधमसरि, धनिगमसरि, निधगमसरि, मधनिगसरि, धमनिगसरि, मनिधगसरि, निमधगसरि, धनिमगसरि, निधमगसरि, रिगमधनिस, गरिमधनिस, रिमगधनिस, मरिगधनिस, गमरिधनिस, मगरिधनिस, रिगधमनिस, गरिधमनिस, रिधगमनिस, धरिगमनिस, गधरिमनिस, धगरिमनिस, रिमधगनिस, मरिधगनिस, रिधमगनिस, धरिमगनिस, मधरिगनिस, धमरिगनिस, गमधरिनिस, मगधरिनिस, गधमरिनिस, धगमरिनिस, मधगरिनिस, धमगरिनिस, रिगमनिधस, गरिमनिधस, रिमगनिधस, मरिगनिधस, गमरिनिधस, मगरिनिधस, रिगनिमधस, गरिनिमधस, रिनिगमधस, निरिगमधस, गनिरिमधस, निगरिमधस, रिमनिगधस, मरिनिगधस, रिनिमगधस, निरिमगधस, मनिरिगधस, निमरिगधस, गमनिरिधस, मगनिरिधस, गनिमरिधस, निगमरिधस, मनिगरिधस, निमगरिधस, रिगधनिमस, गरिधनिमस, रिधगनिमस, धरिगनिमस, गधरिनिमस, धगरिनिमस, रिगनिधमस, गरिनिधमस, रिनिगधमस, निरिगधमस, गनिरिधमस, निगरिधमस, रिधनिगमस, धरिनिगमस, रिनिधगमस, निरिधगमस, धनिरिगमस, निधरिगमस, गधनिरिमस, धगनिरिमस, गनिधरिमस, निगधरिमस, धनिगरिमस, निधगरिमस, रिमधनिगस, मरिधनिगस, रिधमनिगस, धरिमनिगस, मधरिनिगस, धमरिनिगस, रिमनिधगस, मरिनिधगस, रिनिमधगस, निरिमधगस, मनिरिधगस, निमरिधगस, रिधनिमगस, धरिनिमगस, रिनिधमगस, निरिधमगस, धनिरिमगस, निधरिमगस, मधनिरिगस, धमनिरिगस, मनिधरिगस, निमधरिगस, धनिमरिगस, निधमरिगस, गमधनिरिस, मगधनिरिस, गधमनिरिस, धगमनिरिस, मधगनिरिस, धमगनिरिस, गमनिधरिस, मगनिधरिस, गनिमधरिस, निगमधरिस, मनिगधरिस, निमगधरिस, गधनिमरिस, धगनिमरिस, गनिधमरिस, निगधमरिस, धनिगमरिस, निधगमरिस, मधनिगरिस, धमनिगरिस, मनिधगरिस, निमधगरिस, धनिमगरिस, निधमगरिस, (४) सरिगपधनि, रिसगपधनि, सगरिपधनि, गसरिपधनि, रिगसपधनि, गरिसपधनि,

सरिपगधनि, रिसपगधनि, सपरिगधनि, पसरिगधनि, रिपसगधनि,
परिसगधनि, सगपरिधनि, गसपरिधनि, सपगरिधनि, पसगरिधनि,
गपसरिधनि, पगसरिधनि, रिगपसधनि, गरिपसधनि, रिपगसधनि,
परिगसधनि, गपरिसधनि, पगरिसधनि, सरिगधपनि, रिसगधपनि,
सगरिधपनि, गसरिधपनि, रिगसधपनि, गरिसधपनि, सरिधगपनि,
रिसधगपनि, सधरिगपनि, धसरिगपनि, रिधसगपनि, धरिसगपनि,
सगधरिपनि, गसधरिपनि, सधगरिपनि, धसगरिपनि, गधसरिपनि,
धगसरिपनि, रिगधसपनि, गरिधसपनि, रिधगसपनि, धरिगसपनि,
गधरिसपनि, धगरिसपनि, सरिपधगनि, रिसपधगनि, सपरिधगनि,
पसरिधगनि, रिपसधगनि, परिसधगनि, सरिधपगनि, रिसधपगनि,
सधरिपगनि, धसरिपगनि, रिधसपगनि, धरिसपगनि, सपधरिगनि,
पसधरिगनि, सधपरिगनि, धसपरिगनि, पधसरिगनि, धपसरिगनि,
रिपधसगनि, परिधसगनि, रिधपसगनि, धरिपसगनि, पधरिसगनि,
धपरिसगनि, सगपधरिनि, गसपधरिनि, सपगधरिनि, पसगधरिनि,
गपसधरिनि पगसधरिनि, सगधपरिनि, गसधपरिनि, सधगपरिनि,
धसगपरिनि, गधसपरिनि, धगसपरिनि, सपधगरिनि, पसधगरिनि,
सधपगरिनि, धसपगरिनि, पधसगरिनि, धपसगरिनि, गपधसरिनि,
पगधसरिनि, गधपसरिनि, धगपसरिनि, पधगसरिनि, धपगसरिनि,
रिगपधसनि, गरिपधसनि, रिपगधसनि, परिगधसनि, गपरिधसनि,
पगरिधसनि, रिगधपसनि, गरिधपसनि, रिधगपसनि, धरिगपसनि,
गधरिपसनि, धगरिपसनि, रिपधगसनि, परिधगसनि, रिधपगसनि,
धरिपगसनि, पधरिगसनि, धपरिगसनि, गपधरिसनि, पगधरिसनि,
गधपरिसनि, धगपरिसनि, पधगरिसनि, धपगरिसनि, सरिगपनिध,
रिसगपनिध, सगरिपनिध, गसरिपनिध, रिगसपनिध, गरिसपनिध,
सरिपगनिध, रिसपगनिध, सपरिगनिध, पसरिगनिध, रिपसगनिध,
परिसगनिध, सगपरिनिध, गसपरिनिध, सपगरिनिध, पसगरिनिध,
गपसरिनिध, पगसरिनिध, रिगपसनिध, गरिपसनिध, रिपगसनिध,
परिगसनिध, गपरिसनिध, पगरिसनिध, सरिगनिपध, रिसगनिपध,
सगरिनिपध, गसरिनिपध, रिगसनिपध, गरिसनिपध, सरिनिगपध,
रिसनिगपध, सनिरिगपध, निसरिगपध, रिनिसगपध, निरिसगपध,
सगनिरिपध, गसनिरिपध, सनिगरिपध, निसगरिपध, गनिसरिपध,
निगसरिपध, रिगनिसपध, गरिनिसपध, रिनिगसपध, निरिगसपध,
गनिरिसपध, निगरिसपध, सरिपनिगध, रिसपनिगध, सपरिनिगध,

पसरिनिगध, रिपसनिगध, परिसनिगध, सरिनिपगध, रिसनिपगध,
सनिरिपगध, निसरिपगध, रिनिसपगध, निरिसपगध, सपनिरिगध
पसनिरिगध, सनिपरिगध, निसपरिगध, पनिसरिगध, निपसरिगध,
रिपनिसगध, परिनिसगध, रिनिपसगध, निरिपसगध, पनिरिसगध,
निपरिसगध, सगपनिरिध, गसपनिरिध, सपगनिरिध, पसगनिरिध,
गपसनिरिध, पगसनिरिध, सगनिपरिध, गसनिपरिध, सनिगपरिध,
निसगपरिध, गनिसपरिध, निगसपरिध, सपनिगरिध, पसनिगरिध,
सनिपगरिध, निसपगरिध, पनिसगरिध, निपसगरिध, गपनिसरिध,
पगनिसरिध, गनिपसरिध, निगपसरिध, पनिगसरिध, निपगसरिध,
रिगपनिसध, गरिपनिसध, रिपगनिसध, परिगनिसध, गपरिनिसध,
पगरिनिसध, रिगनिपसध, गरिनिपसध, रिनिगपसध, निरिगपसध,
गनिरिपसध, निगरिपसध, रिपनिगसध, परिनिगसध, रिनिपगसध,
निरिपगसध, पनिरिगसध, निपरिगसध, गपनिरिसध, पगनिरिसध,
गनिपरिसध, निगपरिसध, पनिगरिसध, निपगरिसध, सरिगधनिप,
रिसगधनिप, सगरिधनिप, गसरिधनिप, रिगसधनिप, गरिसधनिप,
सरिधगनिप, रिसधगनिप, सधरिगनिप, धसरिगनिप, रिधसगनिप,
धरिसगनिप, सगधरिनिप, गसधरिनिप, सधगरिनिप, धसगरिनिप,
गधसरिनिप, धगसरिनिप, रिगधसनिप, गरिधसनिप, रिधगसनिप,
धरिगसनिप, गधरिसनिप, धगरिसनिप, सरिगनिधप, रिसगनिधप,
सगरिनिधप, गसरिनिधप, रिगसनिधप, गरिसनिधप, सरिनिगधप,
रिसनिगधप, सनिरिगधप, निसरिगधप, रिनिसगधप, निरिसगधप,
सगनिरिधप, गसनिरिधप, सनिगरिधप, निसगरिधप, गनिसरिधप,
निगसरिधप, रिगनिसधप, गरिनिसधप, रिनिगसधप, निरिगसधप,
गनिरिसधप, निगरिसधप, सरिधनिगप, रिसधनिगप, सधरिनिगप,
धसरिनिगप, रिधसनिगप, धरिसनिगप, सरिनिधगप, रिसनिधगप,
सनिरिधगप, निसरिधगप, रिनिसधगप, निरिसधगप, सधनिरिगप,
धसनिरिगप, सनिधरिगप, निसधरिगप, धनिसरिगप, निधसरिगप,
रिधनिसगप, धरिनिसगप, रिनिधसगप, निरिधसगप, धनिरिसगप,
निधरिसगप, सगधनिरिप, गसधनिरिप, सधगनिरिप, धसगनिरिप,
गधसनिरिप, धगसनिरिप, सगनिधरिप, गसनिधरिप, सनिगधरिप,
निसगधरिप, गनिसधरिप, निगसधरिप, सधनिगरिप, धसनिगरिप,
सनिधगरिप, निसधगरिप, धनिसगरिप, निधसगरिप, गधनिसरिप,
धगनिसरिप, गनिधसरिप, निगधसरिप, धनिगसरिप, निधगसरिप,

रिगधनिसप, गरिधनिसप, रिधगनिसप, धरिगनिसप, गधनिरिसप,
धगरिनिसप, रिगनिधसप, गरिनिधसप, रिनिगधसप, निरिगधसप,
गनिरिधसप, निगरिधसप, रिधनिगसप, धरिनिगसप, रिनिधगसप,
निरिधगसप, धनिरिगसप, निधरिगसप, गधनिरिसप, धगनिरिसप,
गनिधरिसप, निगधरिसप, धनिगरिसप, निधगरिसप, सरिपधनिग,
रिसपधनिग, समरिधनिग, पसरिधनिग, रिपसधनिग, परिसधनिग,
सरिधपनिग, रिसधपनिग, सधरिपनिग, धसरिपनिग, रिधसपनिग,
धरिसपनिग, सपधरिनिग, पसधरिनिग, सधपरिनिग, धसपरिनिग,
पधसरिनिग, धपसरिनिग, रिपधसनिग, परिधसनिग, रिधपसनिग,
धरिपसनिग, पधरिसनिग, धपरिसनिग, सरिपनिधग, रिसपनिधग,
सपरिनिधग, पसरिनिधग, रिपसनिधग, परिसनिधग, सरिनिपधग,
रिसनिपधग, सनिरिपधग, निसरिपधग, रिनिसपधग, निरिसपधग,
सपनिरिधग, पसनिरिधग, सनिपरिधग, निसपरिधग, पनिसरिधग,
निपसरिधग, रिपनिसधग, परिनिसधग, रिनिपसधग, निरिपसधग,
पनिरिसधग, निपरिसधग, सरिधनिपग, रिसधनिपग, सधरिनिपग,
धसरिनिपग, रिधसनिपग, धरिसनिपग, सरिनिधपग, रिसनिधपग,
सनिरिधपग, निसरिधपग, रिनिसधपग, निरिसधपग, सधनिरिपग,
धसनिरिपग, सनिधरिपग, निसधरिपग, धनिसरिपग, निधसरिपग,
रिधनिसपग, धरिनिसपग, रिनिधसपग, निरिधसपग, धनिरिसपग,
निधरिसपग, सपधनिरिग, पसथनिरिग, सधपनिरिग, धसपनिरिग,
पधसनिरिग, धपसनिरिग, सपनिधरिग, पसनिधरिग, सनिपधरिग,
निसपधरिग, पनिसधरिग, निपसधरिग, सधनिपरिग, धसनिपरिग,
सनिधपरिग, निसध्रपरिग, धनिसपरिग, निधसपरिग, पधनिसरिग,
धपनिसरिग, पनिधसरिग, निपधसरिग, धनिपसरिग, निधपसरिग,
रिपधनिसग, परिधनिसग, रिधपनिसग, धरिपनिसग, पधरिनिसग,
धपरिनिसग, रिपनिधसग, परिनिधसग, रिनिपधसग, निरिपधसग,
पनिरिधसग, निपरिधसग, रिधनिपसग, धरिनिपसग, रिनिधपसग,
निरिधपम्सग, धनिरिपसग, निधपरिसग, पधनिरिसग, धपनिरिसग,
पनिधरिसग, निपधरिसग, धनिपरिसग, निधपरिसग, सगपधनिरि,
गसपधनिरि, सपगधनिरि, पसगधनिरि, गपसधनिरि, पगसधनिरि,
सगधपनिरि, गसधपनिरि, सधगपनिरि, धसगपनिरि, गधसपनिरि,
धगसपनिरि, सपधगनिरि, पसधगनिरि, सधपगनिरि, धसपगनिरि,
पधसगनिरि, धपसगनिरि, गपधसनिरि, पगधसनिरि, गधपसनिरि,

धगपसनिरि, पधगसनिरि, धपगसनिरि, सगपनिधरि, गसपनिधरि,
सपगनिधरि, पसगनिधरि, गपसनिधरि, पगसनिधरि, सगनिपधरि,
गसनिपधरि, सनिगपधरि, निसगपधरि, गनिसपधरि, निगसपधरि,
सपनिगधरि, पसनिगधरि, सनिपगधरि, निसपगधरि, पनिसगधरि,
निपसगधरि, गपनिसधरि, पगनिसधरि, गनिपसधरि, निगपसधरि,
पनिगसधरि, निपगसधरि, सगधनिपरि, गसधनिपरि, सधगनिपरि,
धसगनिपरि, गधसनिपरि, धगसनिपरि, सगनिधपरि, गसनिधपरि,
सनिगधपरि, निसगधपरि, गनिसधपरि, निगसधपरि, सधनिगपरि,
धसनिगपरि, सनिधगपरि, निसधगपरि, धनिसगपरि, निधसगपरि,
गधनिसपरि, धगनिसपरि, गनिधसपरि, निगधसपरि, धनिगसपरि,
निधगसपरि, सपधनिगरि, पसधनिगरि, सधपनिगरि, धसपनिगरि,
पधसनिगरि, धपसनिगरि, सपनिधगरि, पसनिधगरि, सनिपधगरि,
निसपधगरि, पनिसधगरि, निपसधगरि, सधनिपगरि, धसनिपगरि,
सनिधपगरि, निसधपगरि, धनिसपगरि, निधसपगरि, पधनिसगरि,
धपनिसगरि, पनिधसगरि, निपधसगरि, धनिपसगरि, निधपसगरि,
गपधनिसरि, पगधनिसरि, गधपनिसरि, धगपनिसरि, पधगनिसरि,
धपगनिसरि, गपनिधसरि, पगनिधसरि, गनिपधसरि, निगपधसरि,
पनिगधसरि, निपगधसरि, गधनिपसरि, धगनिपसरि, गनिधपसरि,
निगधपसरि, धनिगपसरि, निधगपसरि, पधनिगसरि, धपनिगसरि,
पनिधगसरि, निपधगसरि, धनिपगसरि, निधपगसरि, रिगपधनिस,
गरिपधनिस, रिपगधनिस, परिगधनिस, गपरिधनिस, पगरिधनिस,
रिगधपनिस, गरिधपनिस, रिधगपनिस, धरिगपनिस, गधरिपनिस,
धगरिपनिस, रिपधगनिस, परिधगनिस, रिधपगनिस, धरिपगनिस,
पधरिगनिस, धपरिगनिस, गपधरिनिस, पगधरिनिस, गधपरिनिस,
धगपरिनिस, पधगरिनिस, धपगरिनिस, रिगपनिधस, गरिपनिधस,
रिपगनिधस, परिगनिधस, गपरिनिधस, पगरिनिधस, रिगनिपधस,
गरिनिपधस, रिनिगपधस, निरिगपधस, गनिरिपधस, निगरिपधस,
रिपनिगधस, परिनिगधस, रिनिपगधस, निरिपगधस, पनिरिगधस,
निपरिगधस, गपनिरिधस, पगनिरिधस, गनिपरिधस, निगपरिधस,
पनिगरिधस, निपगरिधस, रिगधनिपस, गरिधनिपस, रिधगनिपस,
धरिगनिपस, गधरिनिपस, धगरिनिपस, रिगनिधपस, गरिनिधपस,
रिनिगधपस, निरिगधपस, गनिरिधपस, निगरिधपस, रिधनिगपस,
धरिनिगपस, रिनिधगपस, निरिधगपस, धनिरिगपस, निधरिगपस,

गधनिरिपस, धगनिरिपस, गनिधरिपस, निगधरिपस, धनिगरिपस, निधगरिपस, रिपधनिगस, परिधनिगस, रिधपनिगस, धरिपनिगस, पधरिनिगस धपरिनिगस, रिपनिधगस, परिनिधगस, रिनिपधगस, निरिपधगस, पनिरिधगस, निपरिधगस, रिधनिपगस, धरिनिपगस, रिनिधपगस, निरिधपगस, धनिरिपगस, निधरिपगस, पधनिरिगस, धपनिरिगस, पनिधरिगस, निपधरिगस, धनिपरिगस, निधपरिगस, गपधनिरिस, पगधनिरिस, गधपनिरिस, धगपनिरिस, पधगनिरिस, धपगनिरिस, गपनिधरिस, पगनिधरिस, गनिपधरिस, निगपधरिस, पनिगधरिस, निपगधरिस, गधनिपरिस, धगनिपरिस, गनिधपरिस, निगधपरिस, धनिगपरिस, निधगपरिस, पधनिगरिस, धपनिगरिस, पनिधगरिस, निपधगरिस, धनिपगरिस, निधपगरिस, (५) सरिमपधनि, रिसमपधनि, समरिपधनि, मसरिपधनि, रिमसपधनि, मरिसपधनि, सरिपमधनि, रिसपमधनि, सपरिमधनि, पसरिमधनि, रिपसमधनि, परिसमधनि, समपरिधनि, मसपरिधनि, सपमरिधनि, पसमरिधनि, मपसरिधनि, पमसरिधनि, रिमपसधनि, मरिपसधनि, रिपमसधनि, परिमसधनि, मपरिसधनि, पमरिसधनि, सरिमधपनि, रिसमधपनि, समरिधपनि, मसरिधपनि, रिमसधपनि, मरिसधपनि, सरिधमपनि रिसधमपनि, सधरिमपनि, धसरिमपनि, रिधसमपनि, धरिसमपनि, समधरिपनि, मसधरिपनि, सधमरिपनि, धसमरिपनि, मधसरिपनि, धमसरिपनि, रिमधसपनि, मरिधसपनि, रिधमसपनि, धरिमसपनि, मधरिसपनि, धमरिसपनि, सरिपधमनि, रिसपधमनि, सपरिधमनि. पसरिधमनि, रिपसधमनि, परिसधमनि, सरिधपमनि, रिसधपमनि, सधरिपमनि, धसरिपमनि, रिधसपमनि, धरिसपमनि, सपधरिमनि, पसधरिमनि, सधपरिमनि, धसपरिमनि, पधसरिमनि, धपसरिमनि, रिपधसमनि, परिधसमनि, रिधपसमनि, धरिपसमनि, पधरिसमनि, धपरिसमनि, समपधरिनि, मसपधरिनि, सपमधरिनि, पसमधरिनि, मपसधरिनि, पमसधरिनि, समधपरिनि, मसधपरिनि, सधमपरिनि, धसमपरिनि, मधसपरिनि, धमसपरिनि, सपधमरिनि, पसधमरिनि, सधपमरिनि, धसपमरिनि, पधसमरिनि, धपसमरिनि, मपधसरिनि, पमधसरिनि, मधपसरिनि, धमपसरिनि, पधमसरिनि, धपमसरिनि, रिमपधसनि, मरिपधसनि, रिपमधसनि, परिमधसनि, मपरिधसनि, पमरिधसनि, रिमधपसनि, मरिधपसनि, रिधमपसनि, धरिमपसनि, मधरिपसनि, धमरिपसनि, रिपधमसनि, परिधमसनि, रिधपमसनि,

धरिपमसनि, पधरिमसनि, धपरिमसनि, मपधरिसनि, पमधरिसनि,
मधपरिसनि, धमपरिसनि, पधमरिसनि, धपमरिसनि, सरिमपनिध,
रिसमपनिध, समरिपनिध, मसरिपनिध, रिमसपनिध, मरिसपनिध,
सरिपमनिध, रिसपमनिध, सपरिमनिध, पसरिमनिध, रिपसमनिध,
परिसमनिध, समपरिनिध, मसपरिनिध, सपमरिनिध, पसमरिनिध,
मपसरिनिध, पमसरिनिध, रिमपसनिध, मरिपसनिध, रिपमसनिध,
परिमसनिध, मपरिसनिध, पमरिसनिध, सरिमनिपध, रिसमनिपध,
समरिनिपध, मसरिनिपध, रिमसनिपध, मरिसनिपध, सरिनिमपध,
रिसनिमपध, सनिरिमपध, निसरिमपध, रिनिसमपध, निरिसमपध,
समनिरिपध, मसनिरिपध, सनिमरिपध, निसमरिपध, मनिसरिपध,
निमसरिपध, रिमनिसपध, मरिनिसपध, रिनिमसपध, निरिमसपध,
मनिरिसपध, निमरिसपध, सरिपनिमध, रिसपनिमध, सपरिनिमध,
पसरिनिमध, रिपसनिमध, परिसनिमध, सरिनिपमध, रिसनिपमध,
सनिरिपमध, निसरिपमध, रिनिसपमध, निरिसपमध, सपनिरिमध,
पसनिरिमध, सनिपरिमध, निसपरिमध, पनिसरिमध, निपसरिमध,
निपनिसमध, परिनिसमध, रिनिपसमध, निरिपसमध, पनिरिसमध,
निपरिसमध, समपनिरिध, मसपनिरिध, सपमनिरिध, पसमनिरिध,
मपसनिरिध, पमसनिरिध, समनिपरिध, मसनिपरिध, सनिमपरिध,
निसमपरिध, मनिसपरिध, निमसपरिध, सपनिमरिध, पसनिमरिध,
सनिपमरिध, निसपमरिध, पनिसमरिध, निपसमरिध, मपनिसरिध,
पमनिसरिध, मनिपसरिध, निमपसरिध, पनिमसरिध, निपमसरिध,
रिमपनिसध, मरिपनिसध, रिपमनिसध, परिमनिसध, मपरिनिसध,
पमरिनिसध, रिमनिपसध, मरिनिपसध, रिनिमपसध, निरिमपसध,
मनिरिपसध, निमरिपसध, रिपनिमसध, परिनिमसध, रिनिपमसध,
निरिपमसध, पनिरिमसध, निपरिमसध, मपनिरिसध, पमनिरिसध,
मनिपरिसध, निमपरिसध, पनिमरिसध, निपमरिसध, सरिमधनिप,
रिसमधनिप, समरिधनिप, मसरिधनिप, रिमसधनिप, मरिसधनिप,
सरिधमनिप, रिसधमनिप, सधरिमनिप, धसरिमनिप, रिधसमनिप,
धरिसमनिप, समधरिनिप, मसधरिनिप, सधमरिनिप, धसमरिनिप,
मधसरिनिप, धमसरिनिप, रिमधसनिप, मरिधसनिप, रिधमसनिप,
धरिमसनिप, मधरिसनिप, धमरिसनिप, सरिमनिधप, रिसमनिधप,
समरिनिधप, मसरिनिधप, रिमसनिधप, मरिसनिधप, सरिनिमधप,
रिसनिमधप, सनिरिमधप, निसरिमधप, रिनिसमधप, निरिसमधप,

समनिरिधप, मसनिरिधप, सनिमरिधप, निसमरिधप, मनिसरिधप,
निमसरिधप, रिमनिमधप, मरिनिमधप, रिनिमसधप, निरिमसधप,
मनिरिसधप, निमरिसधप, सरिधनिमप, रिसधनिमप, सधरिनिमप,
धसरिनिमप, रिधसनिमप, धरिसनिमप, सरिनिधमप, रिसनिधमप,
सनिरिधमप, निसरिधमप, रिनिसधमप, निरिसधमप, सधनिरिमप,
धसनिरिमप, सनिधरिमप, निसधरिमप, धनिसरिमप, निधसरिमप,
रिधनिसमप, धरिनिसमप, रिनिधसमप, निरिधसमप, धनिरिसमप,
निधरिसमप, समधनिरिप, मसधनिरिप, सधमनिरिप, धसमनिरिप,
मधसनिरिप, धमसनिरिप, समनिधरिप, मसनिधरिप, सनिमधरिप,
निसमधरिप, मनिसधरिप, निमसधरिप, सधनिमरिप, धसनिमरिप,
सनिधमरिप, निसधमरिप, धनिसमरिप, निधसमरिप, मधनिसरिप,
धमनिसरिप, मनिधसरिप, निमधसरिप, धनिमसरिप, निधमसरिप,
रिमधनिसप, मरिधनिसप, रिधमनिसप, धरिमनिसप, मधरिनिसप,
धमरिनिसप, रिमनिधसप, मरिनिधसप, रिनिमधसप, निरिमधसप,
मनिरिधसप, निमरिधसप, रिधनिमसप, धरिनिमसप, रिनिधमसप,
निरिधमसप, धनिरिमसप, निधरिमसप, मधनिरिसप, धमनिरिसप,
मनिधरिसप, निमधरिसप, धनिमरिसप, निधमरिसप, सरिपधनिम,
रिसपधनिम, सपरिधनिम, पसरिधनिम, रिपसधनिम, परिसधनिम,
सरिधपनिम, रिसधपनिम, सधरिपनिम, धसरिपनिम, रिधसपनिम,
धरिसपनिम, सपधरिनिम, पसधरिनिम, सधपरिनिम, धसपरिनिम,
पधसरिनिम, धपसरिनिम, रिपधसनिम, परिधसनिम, रिधपसनिम,
धरिपसनिम, पधरिसनिम, धपरिसनिम, सरिपनिधम, रिसपनिधम,
सपरिनिधम, पसरिनिधम, रिपसनिधम, परिसनिधम, सरिनिपधम,
रिसनिपधम, सनिरिपधम, निसरिपधम, रिनिसपधम, निरिसपधम,
सपनिरिधम, पसनिरिधम, सनिपरिधम, निसपरिधम, पनिसरिधम,
निपसरिधम, रिपनिसधम, परिनिसधम, रिनिपसधम, निरिपसधम,
पनिरिसधम, निपरिसधम, सरिधनिपम, रिसधनिपम, सधरिनिपम,
धसरिनिपम, रिधसनिपम, धरिसनिपम, सरिनिधपम, रिसनिधपम,
सनिरिधपम, निसरिधपम, रिनिसधपम, निरिसधपम, सधनिरिपम,
धसनिरिपम, सनिधरिपम, निसधरिपम, धनिसरिपम, निधसरिपम,
रिधनिसपम, धरिनिसपम, रिनिधसपम, निरिधसपम, धनिरिसपम,
निधरिसपम, सपधनिरिम, पसधनिरिम, सधपनिरिम, धसपनिरिम,
पधसनिरिम, धपसनिरिम, सपनिधरिम, पसनिधरिम, सनिपधरिम,

निसपधरिम, पनिसधरिम, निपसधरिम, सधनिपरिम, धसनिपरिम,
सनिधपरिम, निसधपरिम, धनिसपरिम, निधसपरिम, पधनिसरिम,
धपनिसरिम, पनिधसरिम, निपधसरिम, धनिपसरिम, निधपसरिम,
रिपधनिसम, परिधनिसम, रिधपनिसम, धरिपनिसम, पधरिनिसम,
धपरिनिसम, रिपनिधसम, परिनिधसम, रिनिपधसम, निरिपधसम,
पनिरिधसम, निपरिधसम, रिधनिपसम, धरिनिपसम, रिनिधपसम,
निरिधपसम, धनिरिपसम, निधरिपसम, पधनिरिसम, धपनिरिसम,
पनिधरिसम, निपधरिसम, धनिपरिसम, निधपरिसम, समपधनिरि,
मसपधनिरि, सपमधनिरि, पसमधनिरि, मपसधनिरि, पमसधनिरि,
समधपनिरि, मसधपनिरि, सधमपनिरि, धसमपनिरि, मधसपनिरि,
धमसपनिरि, सपधमनिरि, पसधमनिरि, सधपमनिरि, धसपमनिरि,
पधसमनिरि, धपसमनिरि, मपधसनिरि, पमधसनिरि, मधपसनिरि,
धमपसनिरि, पधमसनिरि, धपमसनिरि, समपनिधरि, मसपनिधरि,
सपमनिधरि, पसमनिधरि, मपसनिधरि, पमसनिधरि, समनिपधरि,
मसनिपधरि, सनिमपधरि, निसमपधरि, मनिसपधरि, निमसपधरि,
सपनिमधरि, पसनिमधरि, सनिपमधरि, निसपमधरि, पनिसमधरि,
निपसमधरि, मपनिसधरि, पमनिसधरि, मनिपसधरि, निमपसधरि,
पनिमसधरि, निपमसधरि, समधनिपरि, मसधनिपरि, सधमनिपरि,
धसमनिपरि, मधसनिपरि, धमसनिपरि, समनिधपरि, मसनिधपरि,
सनिमधपरि, निसमधपरि, मनिसधपरि, निमसधपरि, सधनिमपरि,
धसनिमपरि, सनिधमपरि, निसधमपरि, धनिसमपरि, निधसमपरि,
मधनिसपरि, धमनिसपरि, मनिधसपरि, निमधसपरि, धनिमसपरि,
निधमसपरि, सपधनिमरि, पसधनिमरि, सधपनिमरि, धसपनिमरि,
पधसनिमरि, धपसनिमरि, सपनिधमरि, पसनिधमरि, सनिपधमरि,
निसपधमरि, पनिसधमरि, निपसधमरि, सधनिपमरि, धसनिपमरि,
सनिधपमरि, निसधपमरि, धनिसपमरि, निधसपमरि, पधनिसमरि,
धपनिसमरि, पनिधसमरि, निपधसमरि, धनिपसमरि, निधपसमरि,
मपधनिसरि, पमधनिसरि, मधपनिसरि, धमपनिसरि, पधमनिसरि,
धपमनिसरि, मपनिधसरि, पमनिधसरि, मनिपधसरि, निमपधसरि,
पनिमधसरि, निपमधसरि, मधनिपसरि, धमनिपसरि, मनिधपसरि,
निमधपसरि, धनिमपसरि, निधमपसरि, पधनिमसरि, धपनिमसरि,
पनिधमसरि, निपधमसरि, धनिपमसरि, निधपमसरि, रिमपधनिम,
मिरपधनिस, रिपमधनिस, परिमधनिस, मपरिधनिस, पमरिधनिस,

रिमधपनिस, मरिधपनिस, रिधमपनिस, धरिमपनिस, मधरिपनिस,
धमरिपनिस, रिपधमनिस, परिधमनिस, रिधपमनिस, धरिपमनिस,
पधरिमनिस, धपरिमनिस, मपधरिनिस, पमधरिनिस, मधपरिनिस,
धमपरिनिस, पधमरिनिस, धपमरिनिस, रिमपनिधस, मरिपनिधस,
रिपमनिधस, परिमनिधस, मपरिनिधस, पमरिनिधस, रिमनिपधस,
मरिनिपधस, रिनिमपधस, निरिमपधस, मनिरिपधस, निमरिपधस,
रिपनिमधस, परिनिमधस, रिनिपमधस, निरिपमधस, पनिरिमधस,
निपरिमधस, मपनिरिधस, पमनिरिधस, मनिपरिधस, निमपरिधस,
पनिमरिधस, निपमरिधस, रिमधनिपस, मरिधनिपस, रिधमनिपस,
धरिमनिपस, मधरिनिपस, धमरिनिपस, रिमनिधपस, मरिनिधपस,
रिनिमधपस, निरिमधपस, मनिरिधपस, निमरिधपस, रिधनिमपस,
धरिनिमपस, रिनिधमपस, निरिधमपस, धनिरिमपस, निधरिमपस,
मधनिरिपस, धमनिरिपस, मनिधरिपस, निमधरिपस, धनिमरिपस,
निधमरिपस, रिपधनिमस, परिधनिमस, रिधपनिमस, धरिपनिमस,
पधरिनिमस, धपरिनिमस, रिपनिधमस, परिनिधमस, रिनिपधमस,
निरिपधमस, पनिरिधमस, निपरिधमस, रिधनिपमस, धरिनिपमस,
रिनिधपमस, निरिधपमस, धनिरिपमस, निधरिपमस, पधनिरिमस,
धपनिरिमस, पनिधरिमस, निपधरिमस, धनिपरिमस, निधपरिमस,
मपधनिरिस, पमधनिरिस, मधपनिरिस, धमपनिरिस, पधमनिरिस,
धपमनिरिस, मपनिधरिस, पमनिधरिस, मनिपधरिस, निमपधरिस,
पनिमधरिस, निपमधरिस, मधनिपरिस, धमनिपरिस, मनिधपरिस,
निमधपरिस, धनिमपरिस, निधमपरिस, पधनिमरिस, धपनिमरिस,
पनिधमरिस, निपधमरिस, धनिपमरिस, निधपमरिस, (६) सगमपधनि,
गसमपधनि, समगपधनि, मसगपधनि, गमसपधनि, मगसपधनि,
सगपमधनि, गसपमधनि, सपगमधनि, पसगमधनि, गपसमधनि,
पगसमधनि, समपगधनि, मसपगधनि, सपमगधनि, पसमगधनि,
मपसगधनि, पमसगधनि, गमपसधनि, मगपसधनि, गपमसधनि,
पगमसधनि, मपगसधनि, पमगसधनि, सगमधपनि, गसमधपनि,
समगधपनि, मसगधपनि, गमसधपनि, मगसधपनि, सगधमपनि,
गसधमपनि, सधगमपनि, धसगमपनि, गधसमपनि, धगसमपनि,
समधगपनि, मसधगपनि, सधमगपनि, धसमगपनि, मधसगपनि,
धमसगपनि, गमधसपनि, मगधसपनि, गधमसपनि, धगमसपनि,
मधगसपनि, धमगसपनि, सगपधमनि, गसपधमनि, सपगधमनि,

पसगधमनि, गपसधमनि, पगसधमनि, सगधपमनि, गसधपमनि,
सधगपमनि, धसगपमनि, गधसपमनि, धगसपमनि, सपधगमनि,
पसधगमनि, सधपगमनि, धसपगमनि, पधसगमनि, धपसगमनि,
गपधसमनि, पगधसमनि, गधपसमनि, धगपसमनि, पधगसमनि,
धपगसमनि, समपधगनि, मसपधगनि, सपमधगनि, पसमधगनि,
मपसधगनि, पमसधगनि, समधपगनि, मसधपगनि, सधमपगनि,
धसमपगनि, मधसपगनि, धमसपगनि, सपधमगनि, पसधमगनि,
सधपमगनि, धसपमगनि, पधसमगनि, धपसमगनि, मपधसगनि,
पमधसगनि, मधपसगनि, धमपसगनि, पधमसगनि, धपमसगनि,
गमपधसनि, मगपधसनि, गपमधसनि, पगमधसनि, मपगधसनि,
पमगधसनि, गमधपसनि, मगधपसनि, गधमपसनि, धगमपसनि,
मधगपसनि, धमगपसनि, गपधमसनि, पगधमसनि, गधपमसनि,
धगपमसनि, पधगमसनि, धपगमसनि, मपधगसनि, पमधगसनि,
मधपगसनि, धमपगसनि, पधमगसनि, धपमगसनि, सगमपनिध,
गसमपनिध, समगपनिध, मसगपनिध, गमसपनिध, मगसपनिध,
सगपमनिध, गसपमनिध, सपगमनिध, पसगमनिध, गपसमनिध,
पगसमनिध, समपगनिध, मसपगनिध, सपमगनिध, पसमगनिध,
मपसगनिध, पमसगनिध, गमपसनिध, मगपसनिध, गपमसनिध,
पगमसनिध, मपगसनिध, पमगसनिध, सगमनिपध, गसमनिपध,
समगनिपध, मसगनिपध, गमसनिपध, मगसनिपध, सगनिमपध,
गसनिमपध, सनिगमपध, निसगमपध, गनिसमपध, निगसमपध,
समनिगपध, मसनिगपध, सनिमगपध, निसमगपध, मनिसगपध,
निमसगपध, गमनिसपध, मगनिसपध गनिमसपध, निगमसपध,
मनिगसपध, निमगसपध, सगपनिमध, गसपनिमध, सपगनिमध,
पसगनिमध, गपसनिमध, पगसनिमध, सगनिपमध, गसनिपमध,
सनिगपमध, निसगपमध, गनिसपमध, निगसपमध, सपनिगमध,
पसनिगमध, सनिपगमध, निसपगमध, पनिसगमध, निपसगमध,
गपनिसमध, पगनिसमध, गनिपसमध, निगपसमध, पनिगसमध,
निपगसमध, समपनिगध, मसपनिगध, सपमनिगध, पसमनिगध,
मपसनिगध, पमसनिगध, समनिपगध, मसनिपगध, सनिमपगध,
निसमपगध, मनिसपगध, निमसपगध, सपनिमगध, पसनिमगध,
सनिपमगध, निसपमगध, पनिसमगध, निपसमगध, मपनिसगध,
पमनिसगध, मनिपसगध, निमपसगध, पनिमसगध, निपमसगध,

गमपनिसध, मगपनिसध, गपमनिसध, पगमनिसध, मपगनिसध,
पमगनिसध, गमनिपसध, मगनिपसध, गनिमपसध, निगमपसध,
मनिगपसध, निमगपसध, गपनिमसध, पगनिमसध, गनिपमसध,
निमपमसध, पनिगमसध, निपगमसध, मपनिगसध, पमनिगसध,
मनिपगसध, निमपगसध, पनिमगसध, निपमगसध, सगमधनिप,
गसमधनिष, समगधनिप, मसगधनिप, गमसधनिप, मगसधनिप,
सगधमनिप, गसधमनिप, सधगमनिप, धसगमनिप, गधसमनिप,
धगसमनिप, समधगनिप, मसधगनिप, सधमगनिप, धसमगनिप,
मधसगनिप, धमसगनिप, गमधसनिप, मगधसनिप, गधमसनिप,
धगमसनिप, मधगसनिप, धमगसनिप, सगमनिधप, गसमनिधप,
समगनिधप, मसगनिधप, गमसनिधप, मगसनिधप, सगनिमधप,
गसनिमधप, सनिगमधप, निसगमधप, गनिसमधप, निगसमधप,
समनिगधप, मसनिगधप, सनिमगधप, निसमगधप, मनिसगधप,
निमसगधप, गमनिसधप, मगनिसधप, गनिमसधप, निगमसधप,
मनिगसधप, निमगसधप, सगधनिमप, गसधनिमप, सधगनिमप,
धसगनिमप, गधसनिमप, धगसनिमप, सगनिधमप, गसनिधमप,
सनिगधमप, निसगधमप, गनिसधमप, निगसधमप, सधनिगमप,
धसनिगमप, सनिधगमप, निसधगमप, धनिसगमप, निधसगमप,
गधनिसमप, धगनिसमप, गनिधसमप, निगधसमप, धनिगसमप,
निधगसमप, समधनिगप, मसधनिगप, सधमनिगप, धसमनिगप,
मधसनिगप, धमसनिगप, समनिधगप, मसनिधगप, सनिमधगप,
निसमधगप, मनिसधगप, निमसधगप, सधनिमगप, धसनिमगप,
सनिधमगप, निसधमगप, धनिसमगप, निधसमगप, मधनिसगप,
धमनिसगप, मनिधसगप, निमधसगप, धनिमसगप, निधमसगप,
गमधनिसप, मगधनिसप, गधमनिसप, धगमनिसप, मधगनिसप,
धमगनिसप, गमनिधसप, मगनिधसप, गनिमधसप, निगमधसप,
मनिगधसप, निमगधसप, गधनिमसप, धगनिमसप, गनिधमसप,
निगधमसप, धनिगमसप, निधगमसप, मधनिगसप, धमनिगसप,
मनिधगसप, निमधगसप, धनिमगसप, निधमगसप, सगपधनिम,
गसपधनिम, सपगधनिम, पसगधनिम, गपसधनिम, पगसधनिम,
सगधपनिम, गसधपनिम, सधगपनिम, धसगपनिम, गधसपनिम,
धगसपनिम, सपधगनिम, पसधगनिम, सधपगनिम, धसपगनिम,
पधसगनिम, धपसगनिम, गपधसनिम, पगधसनिम, गधपसनिम,

धगपसनिम, पधगसनिम, धपगसनिम, सगपनिधम, गसपनिधम,
सपगनिधम, पसगनिधम, गपसनिधम, पगसनिधम, सगनिपधम,
गसनिपधम, सनिगपधम, निसगपधम, गनिसपधम, निगसपधम,
सपनिगधम, पसनिगधम, सनिपगधम, निसपगधम, पनिसगधम,
निपसगधम, गपनिसधम, पगनिसधम, गनिपसधम, निगपसधम,
पनिगसधम, निपगसधम, सगधनिपम, गसधनिपम, सधगनिपम,
धसगनिपम, गधसनिपम, धगसनिपम, सगनिधपम, गसनिधपम,
सनिगधपम, निसगधपम, गनिसधपम, निगसधपम, सधनिगपम,
धसनिगपम, सनिधगपम, निसधगपम, धनिसगपम, निधसमपम,
गधनिसपम, धगनिसपम, गनिधसपम, निगधसपम, धनिगसपम,
निधगसपम, सपधनिगम, पसधनिगम, सधपनिगम, धसपनिगम,
पधसनिगम, धपसनिगम, सपनिधगम, पसनिधगम, सनिपधगम,
निसपधगम, पनिसधगम, निपसधगम, सधनिपगम, धसनिपगम,
सनिधपगम, निसधपगम, धनिसपगम, निधसपगम, पधनिसगम,
धपनिसगम, पनिधसगम, निपधसगम, धनिपसगम, निधपसगम,
गपधनिसम, पगधनिसम, गधपनिसम, धगपनिसम, पधगनिसम,
धपगनिसम, गपनिधसम, पगनिधसम, गनिपधसम, निगपधसम,
पनिगधसम, निपगधसम, गधनिपसम, धगनिपसम, गनिधपसम,
निगधपसम, धनिगपसम, निधगपसम, पधनिगसम, धपनिगसम,
पनिधगसम, निपधगसम, धनिपगसम, निधपगसम, समपधनिग,
मसपधनिग, सपमधनिग, पसमधनिग, मपसधनिग, पमसधनिग,
समधपनिग, मसधपनिग, सधमपनिग, धसमपनिग, मधसपनिग,
धमसपनिग, सपधमनिग, पसधमनिग, सधपमनिग, धसपमनिग,
पधसमनिग, धपसमनिग, मपधसनिग, पमधसनिग, मधपसनिग,
धमपसनिग, पधमसनिग, धपमसनिग, समपनिधग, मसपनिधग,
सपमनिधग, पसमनिधग, मपसनिधग, पमसनिधग, समनिपधग,
मसनिपधग, सनिमपधग, निसमपधग, मनिसपधग, निमसपधग,
सपनिमधग, पसनिमधग, सनिपमधग, निसपमधग, पनिसमधग,
निपसमधग, मपनिसधग, पमनिसधग, मनिपसधग, निमपसधग,
पनिमसधग, निपमसधग, समधनिपग, मसधनिपग, सधमनिपग,
धसमनिपग, मधसनिपग, धमसनिपग, समनिधपग, मसनिधपग,
सनिमधपग, निसमधपग, मनिसधपग, निमसधपग, सधनिमपग,
धसनिमपग, सनिधमपग, निसधमपग, धनिसमपग, निधसमपग,

मधनिसपग, धमनिसपग, मनिधसपग, निमधसपग, धनिमसपग,
निधमसपग, सपधनिमग, पसधनिजग, सधपनिमग, धसपनिमग,
पधसनिमग, धपसनिमग, सपनिधमग, पसनिधमग, सनिपधमग,
निसपधमग, पनिसधमग, निपसधमग, सधनिपमग, धसनिपमग,
सनिधपमग, निसधपमग, धनिसपमग, निधसपमग, पधनिसमग,
धपनिसमग, पनिधसमग, निपधसमग, धनिपसमग, निधपसमग,
मपधनिसग, पमधनिसग, मधपनिसग, धमपनिसग, पधमनिसग,
धपमनिसग, मपनिधसग, पमनिधसग, मनिपधसग, निमपधसग,
पनिमधसग, निपमधसग, मधनिपसग, धमनिपसस, मनिधपसग,
निमधपसग, धनिमपसग, निधमपसग, पधनिमसग, धपनिमसग,
पनिधमसग, निपधमसग, धनिपमसग, निधपमसग, गमपधनिस,
मगपधनिस, गपमधनिस, पगमधनिस, मपगधनिस, पमगधनिस,
गमधपनिस, मगधपनिस, गधमपनिस, धगमपनिस, मधगपनिस,
धमगपनिस, गपधमनिस, पगधमनिस, गधपमनिस, धगपमनिस,
पधगमनिस, धपगमनिस, मपधगनिस, पमधगनिस, मधपगनिस,
धमपगनिस, पधमगनिस, धपमगनिस, गमपनिधस, मगपनिधस,
गपमनिधस, पगमनिधस, मपगनिधस, पमगनिधस, गमनिपधस,
मगनिपधस, गनिमपधस, निगमपधस, मनिगपधस, निमगपधस,
गपनिमधस, पगनिमधस, गनिपमधस, निगपमधस, पनिगमधस,
निपगमधस, मपनिगधस, पमनिगधस, मनिपगधस, निमपगधस,
पनिमगधस, निपमगधस, गमधनिपस, मगधनिपस, गधमनिपस,
धगमनिपस, मधगनिपस, धमगनिपस, गमनिधपस, मगनिधपस,
गनिमधपस, निगमधपस, मनिगधपस, निमगधपस, गधनिमपस,
धगनिमपस, गनिधमपस, निगधमपस, धनिगमपस, निधगमपस,
मधनिगपस, धमनिगपस, मनिधगपस, निमधगपस, धनिमगपस,
निधमगपस, गपधनिमस, पगधनिमस, गधपनिमस, धगपनिमस,
पधगनिमस, धपगनिमस, गपनिधमस, पगनिधमस, गनिपधमस,
निगपधमस, पनिगधमस, निपगधमस, गधनिपमस, धगनिपमस,
गनिधपमस, निगधपमस, धनिगपमस, निधगपमस, पधनिगमस,
धपनिगमस, पनिधगमस, निपधगमस, धनिपगमस, निधपगमस,
मपधनिगस, पमधनिगस, मधपनिगस, धमपनिगस, पधमनिगस,
धपमनिगस, मपनिधगस, पमनिधगस, मनिपधगस, निमपधगस,
निमपधगस, निपमधगस, मधनिपगस, धमनिपगस, मनिधपगस,

निमधपगस, धनिमपगस, निधमपगस, पधनिमगस, धपनिमगस, पनिधमगस, निपधमगस, धनिपमगस, निधपमगस, (७) रिगमपधनि, गरिमपधनि, रिमगपधनि, मरिगपधनि, गमरिपधनि, मगरिपधनि, रिगपमधनि, गरिपमधनि, रिपगमधनि, परिगमधनि, गपरिमधनि, पगरिमधनि, रिमपगधनि, मरिपगधनि, रिपमगधनि, परिमगधनि, मपरिगधनि, पमरिगधनि, गमपरिधनि, मगपरिधनि, गपमरिधनि, पगमरिधनि, मपगरिधनि, पमगरिधनि, रिगमधपनि, गरिमधपनि, रिमगधपनि, मरिगधपनि, गमरिधपनि, मगरिधपनि, रिगधमपनि, गरिधमपनि, रिधगमपनि, धरिगमपनि, गधरिमपनि, धगरिमपनि, रिमधगपनि, मरिधगपनि, रिधमगपनि, धरिमगपनि, मधरिगपनि, धमरिगपनि, गमधरिपनि, मगधरिपनि, गधमरिपनि, धगमरिपनि, मधगरिपनि, धमगरिपनि, रिगपधमनि, गरिपधमनि, रिपगधमनि, परिगधमनि, गपरिधमनि, पगरिधमनि, रिगधपमनि, गरिधपमनि, रिधगपमनि, धरिगपमनि, गधरिपमनि, धगरिपमनि, रिपधगमनि, परिधगमनि, रिधपगमनि, धरिपगमनि, पधरिगमनि, धपरिगमनि, गपधरिमनि, पगधरिमनि गधपरिमनि, धगपरिमनि, पधगरिमनि, धपगरिमनि, रिमपधगनि, मरिपधगनि, रिपमधगनि, परिमधगनि, मपरिधगनि, पमरिधगनि, रिमधपगनि, मरिधपगनि, रिधमपगनि, धरिमपगनि, मधरिपगनि, धमरिपगनि, रिपधमगनि, परिधमगनि, रिधपमगनि, धरिपमगनि, पधरिमगनि, धपरिमगनि, मपधरिगनि, पमधरिगनि, मधपरिगनि, धमपरिगनि, पधमरिगनि, धपमरिगनि, गमपधरिनि, मगपधरिनि, गपमधरिनि, पगमधरिनि, मपगधरिनि, पमगधरिनि, गमधपरिनि, मगधपरिनि, गधमपरिनि, धगमपरिनि, मधगपरिनि, धमगपरिनि, गपधमरिनि, पगधमरिनि, गधपमरिनि, धगपमरिनि, पधगमरिनि, धपगमरिनि, मपधगरिनि, पमधगरिनि, मधपगरिनि, धमपगरिनि, पधमगरिनि, धपमगरिनि, रिगमपनिध, गरिमपनिध, रिमगपनिध, मरिगपनिध, गमरिपनिध, मगरिपनिध, रिगपमनिध, गरिपमनिध, रिपगमनिध, परिगमनिध, गपरिमनिध, पगरिमनिध, रिमपगनिध, मरिपगनिध, रिपमगनिध, परिमगनिध, मपरिगनिध, पमरिगनिध, गमपरिनिध, मगपरिनिध, गपमरिनिध, पगमरिनिध, मपगरिनिध, पमगरिनिध, रिमगनिपध, मरिगनिपध, रिगमनिपध, मरिगनिपध, गमरिनिपध, मगरिनिपध, रिगनिमपध, गरिनिमपध, रिनिगमपध, निरिगमपध, गनिरिमपध, निगरिमपध,

रिमनिगपध, मरिनिगपध, रिनिमगपध, निरिमगपध, मनिरिगपध,
निमरिगपध, गमनिरिपध, मगनिरिपध, गनिमरिपध, निगमरिपध,
मनिगरिपध, निमगरिपध, रिगपनिमध, गरिपनिमध, रिपगनिमध,
परिगनिमध, गपरिनिमध, पगरिनिमध, रिगनिपमध, गरिनिपमध,
रिनिगपमध, निरिगपमध, गनिरिपमध, निगरिपमध, रिपनिगमध,
परिनिगमध, रिनिपगमध, निरिपगमध, पनिरिगमध, निपरिगमध,
गपनिरिमध, पगनिरिमध, गनिपरिमध, निगपरिमध, पनिगरिमध,
निपगरिमध, रिमपनिगध, मरिपनिगध, रिपमनिगध, परिमनिगध,
मपरिनिगध. पमरिनिगध, रिमनिपगध, मरिनिपगध, रिनिमपगध,
निरिमपगध, मनिरिपगध, निमरिपगध, रिपनिमगध, परिनिमगध,
रिनिपमगध, निरिपमगध. पनिरिमगध, निपरिमगध, मपनिरिगध,
पमनिरिगध, मनिपरिगध, निमपरिगध, पनिमरिगध, निपमरिगध,
गमपनिरिध, मगपनिरिध, गपमनिरिध, पगमनिरिध, मपगनिरिध,
पमगनिरिध, गमनिपरिध, मगनिपरिध, गनिमपरिध, निगमपरिध,
मनिगपरिध, निमगपरिध, गपनिमरिध, पगनिमरिध, गनिपमरिध,
निगपमरिध, पनिगमरिध, निपगमरिध, मपनिगरिध, पमनिगरिध,
मनिपगरिध, निमपगरिध, पनिमगरिध, निपमगरिध, रिगमधनिप,
गरिमधनिप, रिमगधनिप, मरिगधनिप, गमरिधनिप, मगरिधनिप,
रिगधमनिप, गरिधमनिप, रिधगमनिप, धरिगमनिप, गधरिमनिप,
धगरिमनिप, रिमधगनिप, मरिधगनिप, रिधमगनिप, धरिमगनिप,
मधरिगनिप, धमरिगनिप, गमधरिनिप, मगधरिनिप, गधमरिनिप.
धगमरिनिप, मधगरिनिप, धमगरिनिप. रिगमनिधप, गरिमनिधप,
रिमगनिधप, मरिगनिधप, गमरिनिधप, मगरिनिधप, रिगनिमधप,
गरिनिमधप, रिनिगमधप, निरिगमधप, गनिरिमधप, निगरिमधप,
रिमनिगधप, मरिनिगधप, रिनिसगधप, निरिमगधप, मनिरिगधप,
निमरिगधप, गमनिरिधप, मगनिरिधप, गनिमरिधप, निगमरिधप,
मनिगरिधप, निमगरिधप, रिगधनिमप, गरिधनिमप, रिधगनिमप,
धरिगनिमप, गधरिनिमप, धगरिनिमप, रिगनिधमप, गरिनिधमप,
रिनिगधमप, निरिगधमप, गनिरिधमप, निगरिधमप, रिधनिगमप,
धरिनिगमप, रिनिधगमप, निरिधगमप, धनिरिगमप, निधरिगमप,
गधनिरिमप, धगनिरिमप, गनिधरिमप, निगधरिमप, धनिगरिमप,
निधगारमप, रिमधनिगप, मरिधनिगप, रिधमनिगप, धरिमनिगप,
मधरिनिगप, धमरिनिगप, रिमनिधगप, मरिनिधगप, रिनिमधगप,

निरिमधगप, मनिरिधगप, निमरिधगप, रिधनिमगप, धरिनिमगप,
रिनिधमगप, निरिधमगप, धनिरिमगप, निधरिमगप, मधनिरिगप,
धमनिरिगप, मनिधरिगप, निमधरिगप, धनिमरिगप, निधमरिगप,
गमधनिरिप, मगधनिरिप, गधमनिरिप, धगमनिरिप, मधगनिरिप,
धमगनिरिप, गमनिधरिप, मगनिधरिप, गनिमधरिप, निगमधरिप,
मनिगधरिप, निमगधरिप, गधनिमरिप, धगनिमरिप, गनिधमरिप,
निगधमरिप, धनिगमरिप, निधगमरिप, मधनिगरिप, धमनिगरिप,
मनिधगरिप, निमधगरिप, धनिमगरिप, निधमगरिप, रिगपधनिम,
गरिपधनिम, रिपगधनिम, परिगधनिम, गपरिधनिम, पगरिधनिम,
रिगधपनिम, गरिधपनिम, रिधगपनिम, धरिगपनिम, गधरिपनिम,
धगरिपनिम, रिपधगनिम, परिधगनिम, रिधपगनिम, धरिपगनिम,
पधरिगनिम, धपरिगनिम, गपधरिनिम, पगधरिनिम, गधपरिनिम,
धगपरिनिम, पधगरिनिम, धपगरिनिम, रिगपनिधम, गरिपनिधम,
रिपगनिधम, परिगनिधम, गपरिनिधम, पगरिनिधम, रिगनिपधम,
गरिनिपधम, रिनिगपधम, निरिगपधम, गनिरिपधम, निगरिपधम,
रिपनिगधम, परिनिगधम, रिनिपगधम, निरिपगधम, पनिरिगधम,
निपरिगधम, गपनिरिधम, पगनिरिधम, गनिपरिधम, निगपरिधम,
पनिगरिधम, निपगरिधम, रिगधनिपम, गरिधनिपम, रिधगनिपम,
धरिगनिपम, गधरिनिपम, धगरिनिपम, रिगनिधपम, गरिनिधपम,
रिनिगधपम, निरिगधपम, गनिरिधपम, निगरिधपम, रिधनिगपम,
धरिनिगपम, रिनिधगपम, निरिधगपम, धनिरिगपम, निधरिगपम,
गधनिरिपम, धगनिरिपम, गनिधरिपम, निगधरिपम, धनिगरिपम,
निधगरिपम, रिपधनिगम, परिधनिगम, रिधपनिगम, धरिपनिगम,
पधरिनिगम, धपरिनिगम, रिपनिधगम, परिनिधगम, रिनिपधगम,
निरिपधगम, पनिरिधगम, निपरिधगम, रिधनिपगम, धरिनिपगम,
रिनिधपगम, निरिधपगम, धनिरिपगम, निधरिपगम, पधनिरिगम,
धपनिरिगम, पनिधरिगम, निपधरिगम, धनिपरिगम, निधपरिगम,
गपधनिरिम, पगधनिरिम, गधपनिरिम, धगपनिरिम, पधगनिरिम,
धपगनिरिम, गपनिधरिम, पगनिधरिम, गनिपधरिम, निगपधरिम,
पनिगधरिम, निपगधरिम, गधनिपरिम, धगनिपरिम, गनिधपरिम,
निगधपरिम, धनिगपरिम, निधगपरिम, पधनिगरिम, धपनिगरिम,
पनिधगरिम, निपधगरिम, धनिपगरिम, निधपगरिम, रिमपधनिग,
मरिपधनिग, रिपमधनिग, परिमधनिग, मपरिधनिम, पमरिधनिग,

रिमधपनिग, मरिधपनिग, रिधमपनिग, धरिमपनिग, मधरिपनिग,
धमरिपनिग, रिपधमनिग, परिधमनिग, रिधपमनिग, धरिपमनिग,
पधरिमनिग, धपरिमनिग, मपधरिनिग, पमधरिनिग, मधपरिनिग,
धमपरिनिग, पधमरिनिग, धपमरिनिग, रिमपनिधग, मरिपनिधग,
रिपमनिधग, परिमनिधग, मपरिनिधग, पमरिनिधग, रिमनिपधग,
मरिनिपधग, रिनिमपधग, निरिमपधग, मनिरिपधग, निमरिपधग,
रिपनिमधग, परिनिमधग, रिनिपमधग, निरिपमधग, पनिरिमधग,
निपरिमधग, मपनिरिधग, पमनिरिधग, मनिपरिधग, निमपरिधग,
पनिमरिधग, निपमरिधम, रिमधनिपग, मरिधनिपग, रिधमनिपग,
धरिमनिपग, मधरिनिपग, धमरिनिपग, रिमनिधपग, मरिनिधपग,
रिनिमधपग, निरिमधपग, मनिरिधपग, निमरिधपग, रिधनिमपग,
धरिनिमपग, रिनिधमपग, निरिधमपग, धनिरिमपग, निधरिमपग,
मधनिरिपग, धमनिरिपग, मनिधरिपग, निमधरिपग, धनिमरिपग,
निधमरिपग, रिपधनिमग, परिधनिमग, रिधपनिमग, धरिपनिमग,
पधरिनिमग, धपरिनिमग, रिपनिधमग, परिनिधमग, रिनिपधमग,
निरिपधमग, पनिरिधमग, निपरिधमग, रिधनिपमग, धरिनिपमग,
रिनिधपमग, निरिधपमग, धनिरिपमग, निधरिपमग, पधनिरिमग,
धपनिरिमग, पनिधरिमग, निपधरिमग, धनिपरिमग, निधपरिमग,
मपधनिरिग, पमधनिरिग, मधपनिरिग, धमपनिरिग, पधमनिरिग,
धपमनिरिग, मपनिधरिग, पमनिधरिग, मनिपधरिग, निमपधरिग,
पनिमधरिग, निपमधरिग, मधनिपरिग, धमनिपरिग, मनिधपरिग,
निमधपरिग, धनिमपरिग, निधमपरिग, पधनिमरिग, धपनिमरिग,
पनिधमरिग, निपधमरिग, धनिपमरिग, निधपमरिग, गमपधनिरि,
मगपधनिरि, गपमधनिरि, पगमधनिरि, मपगधनिरि, पमगधनिरि,
गमधपनिरि, मगधपनिरि, गधमपनिरि, धगमपनिरि, मधगपनिरि,
धमगपनिरि, गपधमनिरि, पगधमनिरि, गधपमनिरि, धगपमनिरि,
पधगमनिरि, धपगमनिरि, मपधगनिरि, पमधगनिरि, मधपगनिरि,
धमपगनिरि, पधमगनिरि, धपमगनिरि, गमपनिधरि, मगपनिधरि,
गपमनिधरि, पगमनिधरि, मपगनिधरि, पमगनिधरि, गमनिपधरि,
मगनिपधरि, गनिमपधरि, निगमपधरि, मनिगपधरि, निमगपधरि,
गपनिमधरि, पगनिमधरि, गनिपमधरि, निगपमधरि, पनिगमधरि,
निपगमधरि, मपनिगधरि, पमनिगधरि, मनिपगधरि, निमपगधरि,
पनिमगधरि, निपमगधरि, गमधनिपरि, मगधनिपरि, गधमनिपरि,

धगमनिपरि, मधगनिपरि, धमगनिपरि, गमनिधपरि, मगनिधपरि,
गनिमधपरि, निगमधपरि, मनिगधपरि, निमगधपरि, गधनिमपरि,
धगनिमपरि, गनिधमपरि, निगधमपरि, धनिगमपरि, निधगमपरि,
मधनिगपरि, धमनिगपरि, मनिधगपरि, निमधगपरि, धनिमगपरि,
निधमगपरि, गपधनिमरि, पगधनिमरि, गधपनिमरि, धगपनिमरि,
पधगनिमरि, धपगनिमरि, गपनिधमरि, पगनिधमरि, गनिपधमरि,
निगपधमरि, पनिगधमरि, निपगधमरि, गधनिपमरि, धगनिपमरि,
गनिधपमरि, निगधपमरि, धनिगपमरि, निधगपमरि, पधनिगमरि,
धपनिगमरि, पनिधगमरि, निपधगमरि, धनिपगमरि, निधपगमरि,
मपधनिगरि, पमधनिगरि, मधपनिगरि, धमपनिगरि, पधमनिगरि,
धपमनिगरि, मपनिधगरि, पमनिधगरि, मनिपधगरि, निमपधगरि,
पनिमधगरि, निपमधगरि, मधनिपगरि, धमनिपगरि, मनिधपगरि,
निमधपगरि, धनिमपगरि, निधमपगरि, पधनिमगरि, धपनिमगरि,
पनिधमगरि, निपधमगरि, धनिपमगरि, निधपमगरि,

सातस्वर वाले अर्थात् सम्पूर्ण स्वरप्रस्तारः—

सरिगमपधनि, रिसगमपधनि, सगरिमपधनि,
गसरिमपधनि, रिगसमपधनि, गरिसमपधनि, सरिमगपधनि,
रिसमगपधनि, समरिगपधनि, मसरिगपधनि, रिमसगपधनि,
मरिसगपधनि, सगमरिपधनि, गसमरिपधनि, समगरिपधनि,
मसगरिपधनि, गमसरिपधनि, मगसरिपधनि, रिगमसपधनि,
गरिमसपधनि, रिमगसपधनि, मरिगसपधनि, गमरिसपधनि,
मगरिसपधनि, सरिगपमधनि, रिसगपमधनि, सगरिपमधनि,
गसरिपमधनि, रिगसपमधनि, गरिसपमधनि, सरिपगमधनि,
रिसपगमधनि, सपरिगमधनि, पसरिगमधनि, रिपसगमधनि,
परिसगमधनि, सगपरिमधनि, गसपरिमधनि, सपगरिमधनि,
पसगरिमधनि, गपसरिमधनि, पगसरिमधनि, रिगपसमधनि,
गरिपसमधनि, रिपगसमधनि, परिगसमधनि, गपरिसमधनि,
पगरिसमधनि, सरिमपगधनि, रिसमपगधनि, समरिपगधनि,
मसरिपगधनि, रिमसपगधनि, मरिसपगधनि, सरिपमगधनि,
रिसपमगधनि, सपरिमगधनि, पसरिमगधनि, रिपसमगधनि,
परिसमगधनि, समपरिगधनि, मसपरिगधनि, सपमरिगधनि,
पसमरिगधनि, मपसरिगधनि, पमसरिगधनि, रिमपसगधनि,

मरिपसगधनि, रिपमसगधनि, परिमसगधनि, मपरिसगधनि,
पमरिसगधनि, सगमपरिधनि, गसमपरिधनि, समगपरिधनि,
मसगपरिधनि, गमसपरिधनि, मगसपरिधनि, सगमपरिधनि,
गसपमरिधनि, सपगमरिधनि, पसगमरिधनि, गपसमरिधनि,
पगसमरिधनि, समपगरिधनि, मसपगरिधनि, सपमगरिधनि,
पसमगरिधनि, मपसगरिधनि, पमसगरिधनि, गमपसरिधनि,
मगपसरिधनि, गपमसरिधनि, पगमसरिधनि, मपगसरिधनि,
पमगसरिधनि, रिगमपसधनि, गरिमपसधनि, रिमगपसधनि,
मरिगपसधनि, गमरिपसधनि, मगरिपसधनि, रिगपमसधनि,
गरिपमसधनि, रिपगमसधनि, परिगमसधनि, गपरिमसधनि,
पगरिमसधनि, रिमपगसधनि, मरिपगसधनि, रिपमगसधनि,
परिमगसधनि, मपरिगसधनि, पमरिगसधनि, गमपरिसधनि,
मगपरिसधनि, गपमरिसधनि, पगमरिसधनि, मपगरिसधनि,
पमगरिसधनि, सरिगमधपनि, रिसगमधपनि, सगरिमधपनि,
गसरिमधपनि, रिगसमधपनि, गरिसमधपनि, सरिमगधपनि,
रिसमगधपनि, समरिगधपनि, मसरिगधपनि, रिमसगधपनि,
मरिसगधपनि, सगमरिधपनि, गसमरिधपनि, समगरिधपनि,
मसगरिधपनि, गमसरिधपनि, मगसरिधपनि, रिगमसधपनि,
गरिमसधपनि, रिमगसधपनि, मरिगसधपनि, गमरिसधपनि,
मगरिसधपनि, सरिगधमपनि, रिसगधमपनि, सगरिधमपनि,
गसरिधमपनि, रिगसधमपनि, गरिसधमपनि, सरिधगमपनि,
रिसधगमपनि, सधरिगमपनि, धसरिगमपनि, रिधसगमपनि,
धरिसगमपनि, सगधरिमपनि, गसधरिमपनि, सधगरिमपनि,
धसगरिमपनि, गधसरिमपनि, धगसरिमपनि, रिगधसमपनि,
गरिधसमपनि, रिधगसमपनि, धरिगसमपनि, गधरिसमपनि,
धगरिसमपनि, सरिमधगपनि, रिसमधगपनि, समरिधगपनि,
मसरिधगपनि, रिमसधगपनि, मरिसधगपनि, सरिधमगपनि,
रिसधमगपनि, सधरिमगपनि, धसरिमगपनि, रिधसमगपनि,
धरिसमगपनि, समधरिगपनि, मसधरिगपनि, सधमरिगपनि,
धसमरिगपनि, मधसरिगपनि, धमसरिगपनि, रिमधसगपनि,
मरिधसगपनि, रिधमसगपनि, धरिमसगपनि, मधरिसगपनि,
धमरिसगपनि, सगमधरिपनि, गसमधरिपनि, समगधरिपनि,
मसगधरिपनि, गमसधरिपनि, मगसधरिपनि, सगधमरिपनि,

गसधमरिपनि, मधगमरिपनि, धसगमरिपनि, गधसमरिपनि,
धगसमरिपनि, समधगरिपनि, मसधगरिपनि, सधमगरिपनि,
धसमगरिपनि, मधसगरिपनि, धमसगरिपनि, गमधसरिपनि,
मगधसरिपनि, गधमसरिपनि, धगमसरिपनि, मधगसरिपनि,
धमगसरिपनि, रिगमधसपनि, गरिमधसपनि, रिमगधसपनि,
मरिगधसपनि, गमरिधसपनि, मगरिधसपनि, रिगधमसपनि,
गरिधमसपनि, रिधगमसपनि, धरिगमसपनि, गधरिमसपनि,
धगरिमसपनि, रिमधगसपनि, मरिधगसपनि, रिधमगसपनि,
धरिमगसपनि, मधरिगसपनि, धमरिगसपनि, गमधरिसपनि,
मगधरिसपनि, गधमरिसपनि, धगमरिसपनि, मधगरिसपनि,
धमगरिसपनि, सरिगपधमनि, रिसगपधमनि, सगरिपधमनि,
गसरिपधमनि, रिगसपधमनि, गरिसपधमनि, सरिपगधमनि,
रिसपगधमनि, सपरिगधमनि, पसरिगधमनि, रिपसगधमनि,
परिसगधमनि, सगपरिधमनि, गसपरिधमनि, सपगरिधमनि,
पसगरिधमनि, गपसरिधमनि, पगसरिधमनि, रिगपसधमनि,
गरिपसधमनि, रिपगसधमनि, परिगसधमनि, गपरिसधमनि,
पगरिसधमनि, सरिगधपमनि, रिसगधपमनि, सगरिधपमनि,
गसरिधपमनि, रिगसधपमनि, गरिसधपमनि, सरिधगपमनि,
रिसधगपमनि, सधरिगपमनि, धसरिगपमनि, रिधसगपमनि,
धरिसगपमनि, सगधरिपमनि, गसधरिपमनि, सधगरिपमनि,
धसगरिपमनि, गधसरिपमनि, धगसरिपमनि, रिगधसपमनि,
गरिधसपमनि, रिधगसपमनि, धरिगसपमनि, गधरिसपमनि,
धगरिसपमनि, सरिपधगमनि, रिसपधगमनि, सपरिधगमनि,
पसरिधगमनि, रिपसधगमनि, परिसधगमनि, सरिधपगमनि,
रिसधपगमनि, सधरिपगमनि, धसरिपगमनि, रिधसपगमनि,
धरिसपगमनि, सपधरिगमनि, पसधरिगमनि, सधपरिगमनि,
धसपरिगमनि, पधसरिगमनि, धपसरिगमनि, रिपधसगमनि,
परिधसगमनि, रिधपसगमनि, धरिपसगमनि, पधरिसगमनि,
धपरिसगमनि, सगपधरिमनि, गसपधरिमनि, सपगधरिमनि,
पसगधरिमनि, गपसधरिमनि, पगसधरिमनि, सगधपरिमनि,
गसधपरिमनि, सधगपरिमनि, धसगपरिमनि, गधसपरिमनि,
धगसपरिमनि, सपधगरिमनि, पसधगरिमनि, सधपगरिमनि,
धसपगरिमनि, पधसगरिमनि, धपसगरिमनि, गपधसरिमनि,

पगधसरिमनि, गधपसरिमनि, धगपसरिमनि, पधगसरिमनि,
धपगसरिमनि, रिगपधसमनि, गरिपधसमनि, रिपगधसमनि,
परिगधसमनि, गपरिधसमनि, पगरिधसमनि, रिगधपसमनि,
गरिधपसमनि, रिधगपसमनि, धरिगपसमनि, गधरिपसमनि,
धगरिपसमनि, रिपधगसमनि, परिधगसमनि, रिधपगसमनि,
धरिपगसमनि, पधरिगसमनि, धपरिगसमनि, गपधरिसमनि,
धगपरिसमनि, पधगरिसमनि, धपगरिसमनि, सरिमपधगनि,
रिसमपधगनि, समरिपधगनि, मसरिपधगनि, रिमसपधगनि,
मरिसपधगनि, सरिपमधगनि, रिसपमधगनि, सपरिमधगनि,
पसरिमधगनि, रिपसमधगनि, परिसमधगनि, समपरिधगनि,
मसपरिधगनि, सपमरिधगनि, पसमरिधगनि, मपसरिधगनि,
पमसरिधगनि, रिमपसधगनि, मरिपसधगनि, रिपमसधगनि,
परिमसधगनि, मपरिसधगनि, पमरिसधगनि, सरिमधपगनि,
रिसमधपगनि, समरिधपगनि, मसरिधपगनि, रिमसधपगनि,
मरिसधपगनि, सरिधमपगनि, रिसधमपगनि, सधरिमपगनि,
धसरिमपगनि, रिधसमपगनि, धरिसमपगनि, समधरिपगनि,
मसधरिपगनि, सधमरिपगनि, धसमरिपगनि, मधसरिपगनि,
धमसरिपगनि, रिमधसपगनि, मरिधसपगनि, रिधमसपगनि,
धरिमसपगनि, मधरिसपगनि, धमरिसपगनि, सरिपधमगनि,
रिसपधमगनि, सपरिधमगनि, पसरिधमगनि, रिपसधमगनि,
परिसधमगनि, सरिधपमगनि, रिसधपमगनि, सधरिपमगनि,
धसरिपमगनि, रिधसपमगनि, धरिसपमगनि, सपधरिमगनि,
पसधरिमगनि, सधपरिमगनि, धसपरिमगनि, पधसरिमगनि,
धपसरिमगनि, रिपधसमगनि, परिधसमगनि, रिधपसमगनि,
धरिपसमगनि, पधरिसमगनि, धपरिसमगनि, समपधरिगनि,
मसपधरिगनि, सपमधरिगनि, पसमधरिगनि, मपसधरिगनि,
पमसधरिगनि, समधपरिगनि, मसधपरिगनि, सधमपरिगनि,
धसमपरिगनि, मधसपरिगनि, धमसपरिगनि, सपधमरिगनि,
पसधमरिगनि, सधपमरिगनि, धसपमरिगनि, पधसमरिगनि,
धपसमरिगनि, मपधसरिगनि, पमधसरिगनि, मधपसरिगनि,
धमपसरिगनि, पधमसरिगनि, धपमसरिगनि, रिमपधसगनि,
मरिपधसगनि, रिपमधसगनि, परिमधसगनि, मपरिधसगनि,
पमरिधसगनि, रिमधपसगनि, मरिधपसगनि, रिधमपसगनि,

धरिमपसगनि, मधरिपसगनि, धमरिपसगनि, रिपधमसगनि,
परिधमसगनि, रिधपमसगनि, धरिपमसगनि, पधरिमसगनि,
धपरिमसगनि, मपधरिसगनि, पमधरिसगनि, मधपरिसगनि,
धमपरिसगनि, पधमरिसगनि, धपमरिसगनि, सगमपधरिनि,
गसमपधरिनि, समगपधरिनि, मसगपधरिनि, गमसपधरिनि,
मगसपधरिनि, सगपमधरिनि, गसपमधरिनि, सपगमधरिनि,
पसगमधरिनि, गपसमधरिनि, पगसमधरिनि, समपमधरिनि,
मसपगधरिनि, सपमगधरिनि, पसमगधरिनि, मपसगधरिनि,
पमसगधरिनि, गमपसधरिनि, मगपसधरिनि, गपमसधरिनि,
पगमसधरिनि, मपगसधरिनि, पमगसधरिनि, सगमधपरिनि,
गसमधपरिनि, समगधपरिनि, मसगधपरिनि, गमसधपरिनि,
मगसधपरिनि, सगधमपरिनि, गसधमपरिनि, सधगमपरिनि,
धसगमपरिनि, गधसमपरिनि, धगसमपरिनि, समधगपरिनि,
मसधगपरिनि, सधमगपरिनि, धसमगपरिनि, मधसगपरिनि,
धमसगपरिनि, गमधसपरिनि, मगधसपरिनि, गधमसपरिनि,
धगमसपरिनि, मधगसपरिनि, धमगसपरिनि, सगपधमरिनि,
गसपधमरिनि, सपगधमरिनि, पसगधमरिनि, गपसधमरिनि,
पगसधमरिनि, सगधपमरिनि, गसधपमरिनि, सधगपमरिनि,
धसगपमरिनि, गधसपमरिनि, धगसपमरिनि, सपधगमरिनि,
पसधगमरिनि, सधपगमरिनि, धसपगमरिनि, पधसगमरिनि,
धपसगमरिनि, गपधसमरिनि, पगधसमरिनि, गधपसमरिनि,
धगपसमरिनि, पधगसमरिनि, धपगसमरिनि, समपधगरिनि,
मसपधगरिनि, सपमधगरिनि, पसमधगरिनि, मपसधगरिनि,
पमसधगरिनि, समधपगरिनि, मसधपगरिनि, सधमपगरिनि,
धसमपगरिनि, मधसपगरिनि, धमसपगरिनि, सपधमगरिनि,
पसधमगरिनि, सधपमगरिनि, धसपमगरिनि, पधसमगरिनि,
धपसमगरिनि, मपधसगरिनि, पमधसगरिनि, मधपसगरिनि,
धमपसगरिनि, पधमसगरिनि, धपमसगरिनि, गमपधसरिनि,
मगपधसरिनि, गपमधसरिनि, पगमधसरिनि, मपगधसरिनि,
पमगधसरिनि, गमधपसरिनि, मगधपसरिनि, गधमपसरिनि,
धगमपसरिनि, मधसपसरिनि, धमगपसरिनि, गपधमसरिनि,
पगधमसरिनि, गधपमसरिनि, धगपमसरिनि, पधगमसरिनि,
धपगमसरिनि, मपधगसरिनि, पमधगसरिनि, मधपगसरिनि,

धमपगसरिनि, पधमगसरिनि, धपमगसरिनि, रिगमपधसनि,
गरिमपधसनि, रिमगपधसनि, मरिगपधसनि, गमरिपधसनि,
मगरिपधसनि, रिगपमधसनि, गरिपमधसनि, रिपगमधसनि,
परिगमधसनि, गपरिमधसनि, पगरिमधसनि, रिमपगधसनि,
मरिपगधसनि, रिपमगधसनि, परिमगधसनि, मपरिगधसनि,
पमरिगधसनि, गमपरिधसनि, मगपरिधसनि, गपमरिधसनि,
पगमरिधसनि, मपगरिधसनि, पमगरिधसनि, रिगमधपसनि,
गरिमधपसनि, रिमगधपसनि, मरिगधपसनि, गमरिधपसनि,
मगरिधपसनि, रिगधमपसनि, गरिधमपसनि, रिधगमपसनि,
धरिगमपसनि, गधरिमपसनि, धगरिमपसनि, रिमधगपसनि,
मरिधगपसनि, रिधमगपसनि, धरिमगपसनि, मधरिगपसनि,
धमरिगपसनि, गमधरिपसनि, मगधरिपसनि, गधमरिपसनि,
धगमरिपसनि, मधगरिपसनि, धमगरिपसनि, रिगपधमसनि,
गरिपधमसनि, रिपगधमसनि, परिगधमसनि, गपरिधमसनि,
पगरिधमसनि, रिगधपमसनि, गरिधपमसनि, रिधगपमसनि,
धरिगपमसनि, गधरिपमसनि, धगरिपमसनि, रिपधगमसनि,
परिधगमसनि, रिधपगमसनि, धरिपगमसनि, पधरिगमसनि,
धपरिगमसनि, गपधरिमसनि, पगधरिमसनि, गधपरिमसनि,
धगपरिमसनि, पधगरिमसनि, धपगरिमसनि, रिमपधगसनि,
मरिपधगसनि, रिपमधगसनि, परिमधगसनि, मपरिधगसनि,
पमरिधगसनि, रिमधपगसनि, मरिधपगसनि, रिधमपगसनि,
धरिमपगसनि, मधरिपगसनि, धमरिपगसनि, रिपधमगसनि,
परिधमगसनि, रिधपमगसनि, धरिपमगसनि, पधरिमगसनि,
धपरिमगसनि, मपधरिगसनि, पमधरिगसनि, मधपरिगसनि,
धमपरिगसनि, पधमरिगसनि, धपमरिगसनि, गमपधरिसनि,
मगपधरिसनि, गपमधरिसनि, पगमधरिसनि, मपगधरिसनि,
पमगधरिसनि, गमधपरिसनि, मगधपरिसनि, गधमपरिसनि,
धगमपरिसनि, मधगपरिसनि, धमगपरिसनि, गपधमरिसनि,
पगधमरिसनि, गधपमरिसनि, धगपमरिसनि, पधगमरिसनि,
धपगमरिसनि, मपधगरिसनि, पमधगरिसनि, मधपगरिसनि,
धमपगरिसनि, पधमगरिसनि, धपमगरिसनि, सरिगमपनिध,
रिसगमपनिध, सगरिमपनिध, गसरिमपनिध, रिगसमपनिध,
गरिसमपनिध, सरिमगपनिध, रिसमगपनिध, समरिगपनिध,

मसरिगपनिध, रिमसगपनिध, मरिसगपनिध, सगमरिपनिध,
गसमरिपनिध, समगरिपनिध, मसगरिपनिध, गमसरिपनिध,
मगसरिपनिध, रिगमसपनिध, गरिमसपनिध, रिमगसपनिध,
मरिगसपनिध, गमरिसपनिध, मगरिसपनिध, सरिगपमनिध,
रिसगपमनिध, सगरिपमनिध, गसरिपमनिध, रिगसपमनिध,
गरिसपमनिध, सरिपगमनिध, रिसपगमनिध, सपरिगमनिध,
पसरिगमनिध, रिपसगमनिध, परिसगमनिध, सगपरिमनिध,
गसपरिमनिध, सपगरिमनिध, पसगरिमनिध, गपसरिमनिध,
पगसरिमनिध, रिगपसमनिध, गरिपसमनिध, रिपगसमनिध,
परिगसमनिध, गपरिसमनिध, पगरिसमनिध, सरिमपगनिध,
रिसमपगनिध, समरिपगनिध, मसरिपगनिध, रिमसपगनिध,
मरिसपगनिध, सरिपमगनिध, रिसपमगनिध, सपरिमगनिध,
पसरिमगनिध, रिपसमगनिध, परिसमगनिध, समपरिगनिध,
मसपरिगनिध, सपमरिगनिध, पसमरिगनिध, मपसरिगनिध,
पमसरिगनिध, रिमपसगनिध, मरिपसगनिध, रिपमसगनिध,
परिमसगनिध, मपरिसगनिध, पमरिसगनिध, सगमपरिनिध,
गसमपरिनिध, समगपरिनिध, मसगपरिनिध, गमसपरिनिध,
मगसपरिनिध, सगपमरिनिध, गसपमरिनिध, सपगमरिनिध,
पसगमरिनिध, गपसमरिनिध, पगसमरिनिध, समपगरिनिध,
मसपगरिनिध, सपमगरिनिध, पसमगरिनिध, मपसगरिनिध,
पमसगरिनिध, गमपसरिनिध, मगपसरिनिध, गपमसरिनिध,
पगमसरिनिध, मपगसरिनिध, पमगसरिनिध, रिगमपसनिध,
गरिमपसनिध, रिमगपसनिध, मरिगपसनिध, गमरिपसनिध,
मगरिपसनिध, रिगपमसनिध, गरिपमसनिध, रिपगमसनिध,
परिगमसनिध, गपरिमसनिध, पगरिमसनिध, रिमपगसनिध,
मरिपगसनिध, रिपमगसनिध, परिमगसनिध, मपरिगसनिध,
पमरिगसनिध, गमपरिसनिध, मगपरिसनिध, गपमरिसनिध,
पगमरिसनिध, मपगरिसनिध, पमगरिसनिध, सरिगमनिपध,
रिसगमनिपध, सगरिमनिपध, गसरिमनिपध, रिगसमनिपध,
गरिसमनिपध, सरिमगनिपध, रिसमगनिपध, समरिगनिपध,
मसरिगनिपध, रिमसगनिपध, मरिसगनिपध, सगमरिनिपध,
गसमरिनिपध, समगरिनिपध, मसगरिनिपध, गमसरिनिपध,
मगसरिनिपध, रिगमसनिपध, गरिमसनिपध, रिमगसनिपध,

मरिगसनिपध, गमरिसनिपध, मगरिसनिपध, सरिगनिमपध,
रिसगनिमपध, सगरिनिमपध, गसरिनिमपध, रिगसनिमपध,
गरिसनिमपध, सरिनिगमपध, रिसनिगमपध, सनिरिगमपध,
निसरिगमपध, रिनिसगमपध, निरिसगमपध, सगनिरिमपध,
गसनिरिमपध, सनिगरिमपध, निसगरिमपध, गनिसरिमपध,
निगसरिमपध, रिगनिसमपध, गरिनिसमपध, रिनिगसमपध,
निरिगसमपध, गनिरिसमपध, निगरिसमपध, सरिमनिगपध,
रिसमनिगपध, समरिनिगपध, मसरिनिगपध, रिमसनिगपध,
मरिसनिगपध, सरिनिमगपध, रिसनिमगपध, सनिरिमगपध,
निसरिमगपध, रिनिसमगपध, निरिसमगपध, समनिरिगपध,
मसनिरिगपध, सनिमरिगपध, निसमरिगपध, मनिसरिगपध,
निमसरिगपध, रिमनिसगपध, मरिनिसगपध, रिनिमसगपध,
निरिमसगपध, मनिरिसगपध, निमरिसगपध, सगमनिरिपध,
गसमनिरिपध, समगनिरिपध, मसगनिरिपध, गमसनिरिपध,
मगसनिरिपध, सगनिमरिपध, गसनिमरिपध, सनिगमरिपध,
निसगमरिपध, गनिसमरिपध, निगसमरिपध, समनिगरिपध,
मसनिगरिपध, सनिमगरिपध, निसमगरिपध, मनिसगरिपध,
निमसगरिपध, गमनिसरिपध, मगनिसरिपध, गनिमसरिपध,
निगमसरिपध, मनिगसरिपध, निमगसरिपध, रिगमनिसपध,
गरिमनिसपध, रिमगनिसपध, मरिगनिसपध, गमरिनिसपध,
मगरिनिसपध, रिगनिमसपध, गरिनिमसपध, रिनिगमसपध,
निरिगमसपध, गनिरिमसपध, निगरिमसपध, रिमनिगसपध,
मरिनिगसपध, रिनिमगसपध, निरिमगसपध, मनिरिगसपध,
निमरिगसपध, गमनिरिसपध, मगनिरिसपध, गनिमरिसपध,
निगमरिसपध, मनिगरिसपध, निमगरिसपध, सरिगपनिमध,
रिसगपनिमध, सगरिपनिमध, गसरिपनिमध, रिगसपनिमध,
गरिसपनिमध, सरिपगनिमध, रिसपगनिमध, सपरिगनिमध,
पसरिगनिमध, रिपसगनिमध, परिसगनिमध, सगपरिनिमध,
गसपरिनिमध, सपगरिनिमध, पसगरिनिमध, गपसरिनिमध,
पगसरिनिमध, रिगपसनिमध, गरिपसनिमध, रिपगसनिमध,
परिगसनिमध, गपरिसनिमध, पगरिसनिमध, सरिगनिपमध,
रिसगनिपमध, सगरिनिपमध, गसरिनिपमध, रिगसनिपमध,
गरिसनिपमध, सरिनिगपमध, रिसनिगपमध, सनिरिगपमध,

निसरिगपमध, रिनिसगपमध, निरिसगपमध, सगनिरिपमध,
गसनिरिपमध, सनिगरिपमध, निसगरिपमध, गनिसरिपमव,
निगसरिपमध, रिगनिसपमध, गरिनिसपमध, रिनिगसपमध,
निरिगसपमध, गनिरिसपमध, निगरिसपमध, सरिपनिगमध,
रिसपनिगमध, सपरिनिगमध, पसरिनिगमध, रिपसनिगमध,
परिसनिगमध, सरिनिपगमध, रिसनिपगमध, सनिरिपगमध,
निसरिपगमध, रिनिसपगमध, निरिसपगमध, सपनिरिगमध,
पसनिरिगमध, सनिपरिगमध, निसपरिगमध, पनिसरिगमध,
निपसरिगमध, रिपनिसगमध, परिनिसगमध, रिनिपसगमध,
निरिपसगमध, पनिरिसगमध, निपरिसगमध, सगपनिरिमध,
गसपनिरिमध, सपगनिरिमध, पसगनिरिमध, गपसनिरिमध,
पगसनिरिमध, सगनिपरिमध, गसनिपरिमध, सनिगपरिमध,
निसगपरिमध, गनिसपरिमध, निगसपरिमध, सपनिगरिमध,
पसनिगरिमध, सनिपगरिमध, निसपगरिमध पनिसगरिमध,
निपसगरिमध, गपनिसरिमध, पगनिसरिमध, गनिपसरिमध,
निगपसरिमध, पनिगसरिमध, निपगसरिमध, रिगपनिसमध,
गरिपनिसमध रिपगनिसमध, परिगनिसमध, गपरिनिसमध,
पगरिनिसमव, रिगनिपसमध, गरिनिपसमध, रिनिगपसमध,
निरिगपसमध, गनिरिपसमध, निगरिपसमध, रिपनिगसमध,
परिनिगसमध, रिनिपगसमध, निरिपगसमध, पनिरिगसमध,
निपरिगसमध, गपनिरिसमध, पगनिरिसमध, गनिपरिसमध,
निगपरिसमध, पनिगरिसमध, निपगरिसमध, सरिमपनिगध,
रिसमपनिगध, समरिपनिगध, मसरिपनिगध, रिमसपनिगध,
मरिसपनिगध, सरिपमनिगध, रिसपमनिगध, सपरिमनिगध,
पसरिमनिगध, रिपसमनिगध, परिसमनिगध, समपरिनिगध,
मसपरिनिगध, सपमरिनिगध, पसमरिनिगध, मपसरिनिगध,
पमसरिनिगध, रिमपसनिगध, मरिपसनिगध, रिपमसनिगध,
परिमसनिगध, मपरिसनिगध, पमरिसनिगध, सरिमनिपगध,
रिसमनिपगध, समरिनिपगध, मसरिनिपगध, रिमसनिपगध,
मरिसनिपगध, सरिनिमपगध, रिसनिमपगध, सनिरिमपगध,
निसरिमपगध, रिनिसमपगध, निरिसमपगध, समनिरिपगध,
मसनिरिपगध, सनिमरिपगध, निसमरिपगध, मनिसरिपगध,
निमसरिपगध, रिमनिसपगध, मरिनिसपगध, रिनिमसपगध,

निरिमसपगध, मनिरिसपगध, निमरिसपगध, सरिपनिमगध,
रिसपनिमगध, सपरिनिमगध, पसरिनिमगध, रिपसनिमगध,
परिसनिमगध, सरिनिपमगध, रिसनिपमगध, सनिरिपमगध,
निसरिपमगध, रिनिसपमगध, निरिसपमगध, सपनिरिमगध,
पसनिरिमगध, सनिपरिमगध, निसपरिमगध, पनिसरिमगध,
निपसरिमगध, रिपनिसमगध, परिनिसमगध, रिनिपसमगध,
निरिपसमगध, पनिरिसमगध, निपरिसमगध, समपनिरिगध,
मसपनिरिगध, सपमनिरिगध, पसमनिरिगध, मपसनिरिगध,
पमसनिरिगध, समनिपरिगध, मसनिपरिगध, सनिमपरिगध,
निसमपरिगध, मनिसपरिगध, निमसपरिगध, सपनिमरिगध,
पसनिमरिगध, सनिपमरिगध, निसपमरिगध, पनिसमरिगध,
निपसमरिगध, मपनिसरिगध, पमनिसरिगध, मनिपसरिगध,
निमपसरिगध, पनिमसरिगध, निपमसरिगध, रिमपनिसगध,
मरिपनिसगध, रिपमनिसगध, परिमनिसगध, मपरिनिसगध,
पमरिनिसगध, रिमनिपसगध, मरिनिपसगध, रिनिमपसगध,
निरिमपसगध, मनिरिपसगध, निमरिपसगध, रिपनिमसगध,
परिनिमसगध, रिनिपमसगध, निरिपमसगध, पनिरिमसगध,
निपरिमसगध, मपनिरिसगध, पमनिरिसगध, मनिपरिसगध,
निमपरिसगध, पनिमरिसगध, निपमरिसगध, सगमपनिरिध,
गसमपनिरिध, समगपनिरिध, मसगपनिरिध, गमसपनिरिध,
मगसपनिरिध, सगपमनिरिध, गसपमनिरिध, सपगमनिरिध,
पसगमनिरिध, गपसमनिरिध, पगसमनिरिध, समपगनिरिध,
मसपगनिरिध, सपमगनिरिध, पसमगनिरिध, मपसगनिरिध,
पमसगनिरिध, गमपसनिरिध, मगपसनिरिध, गपमसनिरिध,
पगमसनिरिध, मपगसनिरिध, पमगसनिरिध, सगमनिपरिध,
गसमनिपरिध, समगनिपरिध, मसगनिपरिध, गमसनिपरिध,
मगसनिपरिध, सगनिमपरिध, गसनिमपरिध, सनिगमपरिध,
निसगमपरिध, गनिसमपरिध, निगसमपरिध, समनिगपरिध,
मसनिगपरिध, सनिमगपरिध, निसमगपरिध, मनिसगपरिध,
निमसगपरिध, गमनिसपरिध, मगनिसपरिध, गनिमसपरिध,
निगमसपरिध, मनिगसपरिध, निमगसपरिध, सगपनिमरिध,
गसपनिमरिध, सपगनिमरिध, पसगनिमरिध, गपसनिमरिध,
पगसनिमरिध, सगनिपमरिध, गसनिपमरिध, सनिगपमरिध,

निसगपमरिध, गनिसपमरिध, निगसपमरिध, सपनिगमरिध,
पसनिगमरिध, सनिपगमरिध, निसपगमरिध, पनिसगमरिध,
निपसगमरिध, गपनिसमरिध, पगनिसमरिध, गनिपसमरिध,
निगपसमरिध, पनिगसमरिध, निपगसमरिध, समपनिगरिध,
मसपनिगरिध, सपमनिगरिध, पसमनिगरिध, मपसनिगरिध,
पमसनिगरिध, समनिपगरिध, मसनिपगरिध, सनिमपगरिध,
निसमपगरिध, मनिसपगरिध, निमसपगरिध, सपनिमगरिध,
पसनिमगरिध, सनिपमगरिध, निसपमगरिध, पनिसमगरिध,
निपसमगरिध, मपनिसगरिध, पमनिसगरिध, मनिपसगरिध,
निमपसगरिध, पनिमसगरिध, निपमसगरिध, गमपनिसरिध,
मगपनिसरिध, गपमनिसरिध, पगमनिसरिध, मपगनिसरिध,
पमगनिसरिध, गमनिपसरिध, मगनिपसरिध, गनिमपसरिध,
निगमपसरिध, मनिगपसरिध, निमगपसरिध, गपनिमसरिध,
पगनिमसरिध, गनिपमसरिध, निगपमसरिध, पनिगमसरिध,
निपगमसरिध, मपनिगसरिध, पमनिगसरिध, मनिपगसरिध,
निमपगसरिध, पनिमगसरिध, निपमगसरिध, रिगमपनिसध,
गरिमपनिसध, रिमगपनिसध, मरिगपनिसध, गमरिपनिसध,
मगरिपनिसध, रिगपमनिसध, गरिपमनिसध, रिपगमनिसध,
परिगमनिसध, गपरिमनिसध, पगरिमनिसध, रिमपगनिसध,
मरिपगनिसध, रिपमगनिसध, परिमगनिसध, मपरिगनिसध,
पमरिगनिसध, गमपरिनिसध, मगपरिनिसध, गपमरिनिसध,
पगमरिनिसध, मपगरिनिसध, पमगरिनिसध, रिगमनिपसध,
गरिमनिपसध, रिमगनिपसध, मरिगनिपसध, गमरिनिपसध,
मगरिनिपसध, रिगनिमपसध, गरिनिमपसध, रिनिगमपसध,
निरिगमपसध, गनिरिमपसध, निगरिमपसध, रिमनिगपसध,
मरिनिगपसध, रिनिमगपसध, निरिमगपसध, मनिरिगपसध,
निमरिगपसध, गमनिरिपसध, मगनिरिपसध, गनिमरिपसध,
निगमरिपसध, मनिगरिपसध, निमगरिपसध, रिगपनिमसध,
गरिपनिमसध, रिपगनिमसध, परिगनिमसध, गपरिनिमसध,
पगरिनिमसध, रिगनिपमसध, गरिनिपमसध, रिनिगपमसध,
निरिगपमसध, गनिरिपमसध, निगरिपमसध, रिपनिगमसध,
परिनिगमसध, रिनिपगमसध, निरिपगमसध, पनिरिगमसध,
निपरिगमसध, गपनिरिमसध, पगनिरिमसध, गनिपरिमसध,

निगपरिमसध, पनिगरिमसध, निपगरिमसध, रिमपनिगसध,
मरिपनिगसध, रिपमनिगसध, परिमनिगसध, मपरिनिगसध,
पमरिनिगसध, रिमनिपगसध, मरिनिपगसध, रिनिमपगसध,
निरिमपगसध, मनिरिपगसध, निमरिपगसध, रिपनिमगसध,
परिनिमगसध, रिनिपमगसध, निरिपमगसध, पनिरिमगसध,
निपरिमगसध, मपनिरिगसध, पमनिरिगसध, मनिपरिगसध,
निमपरिगसध, पनिमरिगसध, निपमरिगसध, गमपनिरिसध,
मगपनिरिसध, गपमनिरिसध, पगमनिरिसध, मपगनिरिसध,
पमगनिरिसध, गमनिपरिसध, मगनिपरिसध, गनिमपरिसध,
निगमपरिसध, मनिगपरिसध, निमगपरिसध, गपनिमरिसध,
पगनिमरिसध, गनिपमरिसध, निगपमरिसध, पनिगमरिसध,
निपगमरिसध, मपनिगरिसध, पमनिगरिसध, मनिपगरिसध,
निमपगरिसध, पनिमगरिसध, निपमगरिसध, सरिगमधनिप,
रिसगमधनिप, सगरिमधनिप, गसरिमधनिप, रिगसमधनिप,
गरिसमधनिप, सरिमगधनिप, रिसमगधनिप, समरिगधनिप,
मसरिगधनिप, रिमसगधनिप, मरिसगधनिप, सगमरिधनिप,
गसमरिधनिप, समगरिधनिप, मसगरिधनिप, गमसरिधनिप,
मगसरिधनिप, रिगमसधनिप, गरिमसधनिप, रिमगसधनिप,
मरिगसधनिप, गमरिसधनिप, मगरिसधनिप, सरिगधमनिप,
रिसगधमनिप, सगरिधमनिप, गसरिधमनिप, रिगसधमनिप,
गरिसधमनिप, सरिधगमनिप, रिसधगमनिप, सधरिगमनिप,
धसरिगमनिप, रिधसगमनिप, धरिसगमनिप, सगधरिमनिप,
गसधरिमनिप, सधगरिमनिप, धसगरिमनिप, गधसरिमनिप,
धगसरिमनिप, रिगधसमनिप, गरिधसमनिप, रिधगसमनिप,
धरिगसमनिप, गधरिसमनिप, धगरिसमनिप, सरिमधगनिप,
रिसमधगनिप, समरिधगनिप, मसरिधगनिप, रिमसधगनिप,
मरिसधगनिप, सरिधमगनिप, रिसधमगनिप, सधरिमगनिप,
धसरिमगनिप, रिधसमगनिप, धरिसमगनिप, समधरिगनिप,
मसधरिगनिप, सधमरिगनिप, धसमरिगनिप, मधसरिगनिप,
धमसरिगनिप, रिमधसगनिप, मरिधसगनिप, रिधमसगनिप,
धरिमसगनिप, मधरिसगनिप, धमरिसगनिप, सगमधरिनिप,
गसमधरिनिप, समगधरिनिप, मसगधरिनिप, गमसधरिनिप,
मगसधरिनिप, सगधमरिनिप, गसधमरिनिप, सधगमरिनिप,

धसगमरिनिप, गधसमरिनिप, धगसमरिनिप, समधगरिनिप,
मसधगरिनिप, सधमगरिनिप, धसमगरिनिप, मधसगरिनिप,
धमसगरिनिप, गमधसरिनिप, मगधसरिनिप, गधमसरिनिप,
धगमसरिनिप, मधगसरिनिप, धमगसरिनिप, रिगमधसनिप,
गरिमधसनिप, रिमगधसनिप, मरिगधसनिप, गमरिधसनिप,
मगरिधसनिप, रिगधमसनिप, गरिधमसनिप, रिधगमसनिप,
धरिगमसनिप, गधरिमसनिप, धगरिमसनिप, रिमधगसनिप,
मरिधगसनिप, रिधमगसनिप, धरिमगसनिप, मधरिगसनिप,
धमरिगसनिप, गमधरिसनिप, मगधरिसनिप, गधमरिसनिप,
धगमरिसनिप, मधगरिसनिप, धमगरिसनिप, सरिगमनिधप,
रिसगमनिधप, सगरिमनिधप, गसरिमनिधप, रिगसमनिधप,
गरिसमनिधप, सरिमगनिधप, रिसमगनिधप, समरिगनिधप,
मसरिगनिधप, रिमसगनिधप, मरिसगनिधप, सगमरिनिधप,
गसमरिनिधप, समगरिनिधप, मसगरिनिधप, गमसरिनिधप,
मगसरिनिधप, रिगमसनिधप, गरिमसनिधप, रिमगसनिधप,
मरिगसनिधप, गमरिसनिधप, मगरिसनिधप, सरिगनिमधप,
रिसगनिमधप, सगरिनिमधप, गसरिनिमधप, रिगसनिमधप,
गरिसनिमधप, सरिनिगमधप, रिसनिगमधप, सनिरिगमधप,
निसरिगमधप, रिनिसगमधप, निरिसगमधप, सगनिरिमधप,
गसनिरिमधप, सनिगरिमधप, निसगरिमधप, गनिसरिमधप,
निगसरिमधप, रिगनिसमधप, गरिनिसमधप, रिनिगसमधप,
निरिगसमधप, गनिरिसमधप, निगरिसमधप, सरिमनिगधप,
रिसमनिगधप, समरिनिगधप, मसरिनिगधप, रिमसनिगधप,
मरिसनिगधप, सरिनिमगधप, रिसनिमगधप, सनिरिमगधप,
निसरिमगधप, रिनिसमगधप, निरिसमगधप, समनिरिगधप,
मसनिरिगधप, सनिमरिगधप, निसमरिगधप, मनिसरिगधप,
निमसरिगधप, रिमनिसगधप, मरिनिसगधप, रिनिमसगधप,
निरिमसगधप, मनिरिसगधप, निमरिसगधप, सगमनिरिधप,
गसमनिरिधप, समगनिरिधप, मसगनिरिधप, गमसनिरिधप,
मगसनिरिधप, सगनिमरिधप, गसनिमरिधप, सनिगमरिधप,
निसगमरिधप, गनिसमरिधप, निगसमरिधप, समनिगरिधप,
मसनिगरिधप, सनिमगरिधप, निसमगरिधप, मनिसगरिधप,
निमसगरिधप, गमनिसरिधप, मगनिसरिधप, गनिमसरिधप,

निगमसरिधप,	मनिगसरिधप,	निमगसरिधप,	रिगमनिसधप,
गरिमनिसधप,	रिमगनिसधप,	मरिगनिसधप,	गमरिनिसधप,
मगरिनिसधप,	रिगनिमसधप,	गरिनिमसधप,	रिनिगमसधप,
निरिगमसधप,	गनिरिमसधप,	निगरिमसधप,	रिमनिगसधप,
मरिनिगसधप,	रिनिमगसधप,	निरिमगसधप,	मनिरिगसधप,
निमरिगसधप,	गमनिरिसधप,	मगनिरिसधप,	गनिमरिसधप,
निगमरिसधप,	मनिगरिसधप,	निमगरिसधप,	सरिगधनिमप,
रिसगधनिमप,	सगरिधनिमप,	गसरिधनिमप,	रिगसधनिमप,
गरिसधनिमप,	सरिधगनिमप,	रिसधगनिमप,	सधरिगनिमप,
धसरिगनिमप,	रिधसगनिमप,	धरिसगनिमप,	सगधरिनिमप,
गसधरिनिमप,	सधगरिनिमप,	धसगरिनिमप,	गधसरिनिमप,
धगसरिनिमप,	रिगधसनिमप,	गरिधसनिमप,	रिधगसनिमप,
धरिगसनिमप,	गधरिसनिमप,	धगरिसनिमप,	सरिगनिधमप,
रिसगनिधमप,	सगरिनिधमप,	गसरिनिधमप,	रिगसनिधमप,
गरिसनिधमप,	सरिनिगधमप,	रिसनिगधमप,	सनिरिगधमप,
निसरिगधमप,	रिनिसगधमप,	निरिसगधमप,	सगनिरिधमप,
गसनिरिधमप,	सनिगरिधमप,	निसगरिधमप,	गनिसरिधमप,
निगसरिधमप,	रिगनिसधमप,	गरिनिसधमप,	रिनिगसधमप,
निरिगसधमप,	गनिरिसधमप,	निगरिसधमप,	सरिधनिगमप,
रिसधनिगमप,	सधरिनिगमप,	धसरिनिगमप,	रिधसनिगमप,
धरिसनिगमप,	सरिनिधगमप,	रिसनिधगमप,	सनिरिधगमप,
निसरिधगमप,	रिनिसधगमप,	निरिसधगमप,	सधनिरिगमप,
धसनिरिगमप,	सनिधरिगमप,	निसधरिगमप,	धनिसरिगमप,
निधसरिगमप,	रिधनिसगमप,	धरिनिसगमप,	रिनिधसगमप,
निरिधसगमप,	धनिरिसगमप,	निधरिसगमप,	सगधनिरिमप,
गसधनिरिमप,	सधगनिरिमप,	धसगनिरिमप,	गधसनिरिमप,
धगसनिरिमप,	सगनिधरिमप,	गसनिधरिमप,	सनिगधरिमप,
निसगधरिमप,	गनिसधरिमप,	निगसधरिमप,	सधनिगरिमप,
धसनिगरिमप,	सनिधगरिमप,	निसधगरिमप,	धनिसगरिमप,
निधसगरिमप,	गधनिसरिमप,	धगनिसरिमप,	गनिधसरिमप,
निगधसरिमप,	धनिगसरिमप,	निधगसरिमप,	रिगधनिसमप,
गरिधनिसमप,	रिधगनिसमप,	धरिगनिसमप,	गधरिनिसमप,
धगरिनिसमप,	रिगनिधसमप,	गरिनिधसमप,	रिनिगधसमप,

निरिगधसमप, गनिरिधसमप, निगरिधसमप, रिधनिगसमप,
धरिनिगसमप, रिनिधगसमप, निरिधगसमप, धनिरिगसमप,
निधरिगसमप, गधनिरिसमप, धगनिरिसमप, गनिधरिसमप,
निगधरिसमप, धनिगरिसमप, निधगरिसमप, सरिमधनिगप,
रिसमधनिगप, समरिधनिगप, मसरिधनिगप, रिमसधनिगप,
मरिसधनिगप, सरिधमनिगप, रिमधमनिगप, सधरिमनिगप,
धसरिमनिगप, रिधसमनिगप, धरिसमनिगप, मसधरिनिगप,
मसधरिनिगप, सधमरिनिगप, धसमरिनिगप, मधसरिनिगप,
धमसरिनिगप, रिमधसनिगप, मरिधसनिगप, रिधमसनिगप,
धरिमसनिगप, मधरिसनिगप, धमरिसनिगप, सरिमनिधगप,
रिसमनिधगप, समरिनिधगप, मसरिनिधगप, रिमसनिधगप,
मरिसनिधगप, सरिनिमधगप, रिसनिमधगप, सनिरिमधगप,
निसरिमधगप, रिनिसमधगप, निरिसमधगप, समनिरिधगप,
मसनिरिधगप, सनिमरिधगप, निसमरिधगप, मनिसरिधगप,
निमसरिधगप, रिमनिसधगप, मरिनिसधगप, रिनिमसधगप,
निरिमसधगप, मनिरिसधगप, निमरिसधगप, सरिधनिमगप,
रिसधनिमगप, सधरिनिमगप, धसरिनिमगप, रिधसनिमगप,
धरिसनिमगप, सरिनिधमगप, रिसनिधमगप, सनिरिधमगप,
निसरिधमगप, रिनिसधमगप, निरिसधमगप, सधनिरिमगप,
धसनिरिमगप, सनिधरिमगप, निसधरिमगप, धनिसरिमगप,
निधसरिमगप, रिधनिसमगप, धरिनिसमगप, रिनिधसमगप,
निरिधसमगप, धनिरिसमगप, निधरिसमगप, समधनिरिगप,
मसधनिरिगप, सधमनिरिगप, धसमनिरिगप, मधसनिरिगप,
धमसनिरिगप, समनिधरिगप, मसनिधरिगप, सनिमधरिगप,
निसमधरिगप, मनिसधरिगप, निमसधरिगप, सधनिमरिगप,
धसनिमरिगप, सनिधमरिगप, निसधमरिगप, धनिसमरिगप,
निधसमरिगप, मधनिसरिगप, धमनिसरिगप, मनिधसरिगप,
निमधसरिगप, धनिमसरिगप, निधमसरिगप, रिमधनिसगप,
मरिधनिसगप, रिधमनिसगप, धरिमनिसगप, मधरिनिसगप,
धमरिनिसगप, रिमनिधसगप, मरिनिधसगप, रिनिमधसगप,
निरिमधसगप, मनिरिधसगप, निमरिधसगप, रिधनिमसगप,
धरिनिमसगप, रिनिधमसगप, निरिधमसगप, धनिरिमसगप,
निधरिमसगप, मधनिरिसगप, धमनिरिसगप, मनिधरिसगप,

निमधरिसगप, धनिमरिसगप, निधमरिसगप, सगमधनिरिप,
गसमधनिरिप, समगधनिरिप, मसगधनिरिप, गमसधनिरिप,
मगसधनिरिप, सगधमनिरिप, गसधमनिरिप, सधगमनिरिप,
धसगमनिरिप, गधसमनिरिप, धगसमनिरिप, समधगनिरिप,
मसधगनिरिप, सधमगनिरिप, धसमगनिरिप, मधसगनिरिप,
धमसगनिरिप, गमधसनिरिप, मगधसनिरिप, गधमसनिरिप,
धगमसनिरिप, मधगसनिरिप, धमगसनिरिप, सगमनिधरिप,
गसमनिधरिप, समगनिधरिप, मसगनिधरिप, गमसनिधरिप,
मगसनिधरिप, सगनिमधरिप, गसनिमधरिप, सनिगमधरिप,
निसगमधरिप, गनिसमधरिप, निगसमधरिप, समनिगधरिप,
मसनिगधरिप, सनिमगधरिप, निसमगधरिप, मनिसगधरिप,
निमसगधरिप, गमनिसधरिप, मगनिसधरिप, गनिमसधरिप,
निगमसधरिप, मनिगसधरिप, निमगसधरिप, सगधनिमरिप,
गसधनिमरिप, सधगनिमरिप, धसगनिमरिप, गधसनिमरिप,
धगसनिमरिप, सगनिधमरिप, गसनिधमरिप, सनिगधमरिप,
निसगधमरिप, गनिसधमरिप, निगसधमरिप, सधनिगमरिप,
धसनिगमरिप, सनिधगमरिप, निसधगमरिप, धनिसगमरिप,
निधसगमरिप, गधनिसमरिप, धगनिसमरिप, गनिधसमरिप,
निगधसमरिप, धनिगसमरिप, निधगसमरिप, समधनिगरिप,
मसधनिगरिप, सधमनिगरिप, धसमनिगरिप, मधसनिगरिप,
धमसनिगरिप, समनिधगरिप, मसनिधगरिप, सनिमधगरिप,
निसमधगरिप, मनिसधगरिप, निमसधगरिप, सधनिमगरिप,
धसनिमगरिप, सनिधमगरिप, निसधमगरिप, धनिसमगरिप,
निधसमगरिप, मधनिसगरिप, धमनिसगरिप, मनिधसगरिप,
निमधसगरिप, धनिमसगरिप, निधमसगरिप, गमधनिसरिप,
मगधनिसरिप, गधमनिसरिप, धगमनिसरिप, मधगनिसरिप
धमगनिसरिप, गमनिधसरिप, मगनिधसरिप, गनिमधसरिप,
निगमधसरिप, मनिगधसरिप, निमगधसरिप, गधनिमसरिप,
धगनिमसरिप, गनिधमसरिप, निगधमसरिप, धनिगमसरिप,
निधगमसरिप, मधनिगसरिप, धमनिगसरिप, मनिधगसरिप,
निमधगसरिप, धनिमगसरिप, निधमगसरिप, रिगमधनिसप,
गरिमधनिसप, रिमगधनिसप, मरिगधनिसप, गमरिधनिसप,
मगरिधनिसप, रिगधमनिसप, गरिधमनिसप, रिधगमनिसप,

धरिगमनिसप, गधरिमनिसप, धगरिमनिसप, रिमधगनिसप,
मरिधगनिसप, रिधमगनिसप, धरिमगनिसप, मधरिगनिसप,
धमरिगनिसप, गमधरिनिसप, मगधरिनिसप, गधमरिनिसप,
धगमरिनिसप, मधगरिनिसप, धमगरिनिसप, रिगमनिधसप,
गरिमनिधसप, रिमगनिधसप, मरिगनिधसप, गमरिनिधसप,
मगरिनिधसप, रिगनिमधसप, गरिनिमधसप, रिनिगमधसप,
निरिगमधसप, गनिरिमधसप, निगरिमधसप, रिमनिगधसप,
मरिनिगधसप, रिनिमगधसप, निरिमगधसप, मनिरिगधसप,
निमरिगधसप, गमनिरिधसप, मगनिरिधसप, गनिमरिधसप,
निगमरिधसप, मनिगरिधसप, निमगरिधसप, रिगधनिमसप,
गरिधनिमसप, रिधगनिमसप, धरिगनिमसप, गधरिनिमसप,
धगरिनिमसप, रिगनिधमसप, गरिनिधमसप, रिनिगधमसप,
निरिगधमसप, गनिरिधमसप, निगरिधमसप, रिधनिगमसप,
धरिनिगमसप, रिनिधगमसप, निरिधगमसप, धनिरिगमसप,
निधरिगमसप, गधनिरिमसप, धगनिरिमसप, गनिधरिमसप,
निगधरिमसप, धनिगरिमसप. निधगरिमसप, रिमधनिगसप,
मरिधनिगसप, रिधमनिगसप, धरिमनिगसप, मधरिनिगसप,
धमरिनिगसप, रिमनिधगसप, मरिनिधगसप, रिनिमधगसप,
निरिमधगसप, मनिरिधगसप, निमरिधगसप, रिधनिमगसप,
धरिनिमगसप, रिनिधमगसप, निरिधमगसप, धनिरिमगसप,
निधरिमगसप, मधनिरिगसप, धमनिरिगसप, मनिधरिगसप,
निमधरिगसप, धनिमरिगसप, निधमरिगसप, गमधनिरिसप,
मगधनिरिसप, गधमनिरिसप, धगमनिरिसप, मधगनिरिसप,
धमगनिरिसप, गमनिधरिसप, मगनिधरिसप, गनिमधरिसप,
निगमधरिसप, मनिगधरिसप, निमगधरिसप, गधनिमरिसप,
धगनिमरिसप, गनिधमरिसप, निगधमरिसप, धनिगमरिसप,
निधगमरिसप, मधनिगरिसप, धमनिगरिसप, मनिधगरिसप,
निमधगरिसप, धनिमगरिसप, निधमगरिसप, सरिगपधनिम,
रिसगपधनिम, सगरिपधनिम, गसरिपधनिम, रिगसपधनिम,
गरिसपधनिम, सरिपगधनिम, रिसपगधनिम, सपरिगधनिम,
पसरिगधनिम, रिपसगधनिम, परिसगधनिम, सगपरिधनिम,
गसपरिधनिम, सपगरिधनिम, पसगरिधनिम, गपसरिधनिम,
पगसरिधनिम, रिगपसधनिम, गरिपसधनिम, रिपगसधनिम,

परिगसधनिम, गपरिसधनिम पगरिसधनिम, सरिगधपनिम,
रिसगधपनिम, सगरिधपनिम, गसरिधपनिम, रिगसधपनिम,
गरिसधपनिम, सरिधगपनिम, रिसधगपनिम, सधरिगपनिम,
धसरिगपनिम, रिधसगपनिम, धरिसगपनिम, सगधरिपनिम,
गसधरिपनिम, सधगरिपनिम, धसगरिपनिम, गधसरिपनिम,
धगसरिपनिम, रिगधसपनिम, गरिधसपनिम, रिधगसपनिम,
धरिगसपनिम, गधरिसपनिम, धगरिसपनिम, सरिपधगनिम,
रिसपधगनिम, सपरिधगनिम, पसरिधगनिम, रिपसधगनिम,
परिसधगनिम, सरिधपगनिम, रिसधपगनिम, सधरिपगनिम,
धसरिपगनिम, रिधसपगनिम, धरिसपगनिम, सपधरिगनिम,
पसधरिगनिम, सधपरिगनिम, धसपरिगनिम, पधसरिगनिम,
धपसरिगनिम, रिपधसगनिम, परिधसगनिम, रिधपसगनिम,
धरिपसगनिम, पधरिसगनिम, धपरिसगनिम, सगपधरिनिम,
गसपधरिनिम, सपगधरिनिम, पसगधरिनिम, गपसधरिनिम,
पगसधरिनिम, सगधपरिनिम, गसधपरिनिम, सधगपरिनिम,
धसगपरिनिम, गधसपरिनिम, धगसपरिनिम, सपधगरिनिम,
पसधगरिनिम, सधपगरिनिम, धसपगरिनिम, पधसगरिनिम,
धपसगरिनिम, गपधसरिनिम, पगधसरिनिम, गधपसरिनिम,
धगपसरिनिम, पधगसरिनिम, धपगसरिनिम, रिगपधसनिम,
गरिपधसनिम, रिपगधसनिम, परिगधसनिम, गपरिधसनिम,
पगरिधसनिम, रिगधपसनिम, गरिधपसनिम, रिधगपसनिम,
धरिगपसनिम, गधरिपसनिम, धगरिपसनिम, रिपधगसनिम,
परिधगसनिम, रिधपगसनिम, धरिपगसनिम, पधरिगसनिम,
धपरिगसनिम, गपधरिसनिम, पगधरिसनिम, गधपरिसनिम,
धगपरिसनिम, पधगरिसनिम, धपगरिसनिम, सरिगपनिधम,
रिसगपनिधम, सगरिपनिधप, गसरिपनिधम, रिगसपनिधम,
गरिसपनिधम, सरिपगनिधम, रिसपगनिधम, सपरिगनिधम,
पसरिगनिधम, रिपसगनिधम, परिसगनिधम, सगपरिनिधम,
गसपरिनिधम, सपगरिनिधम, पसगरिनिधम, गपसरिनिधम,
पगसरिनिधम, रिगपसनिधम, गरिपसनिधम, रिपगसनिधम,
परिगसनिधम, गपरिसनिधम, पगरिसनिधम, सरिगनिपधम,
रिसगनिपधम, सगरिनिपधम, गसरिनिपधम, रिगसनिपधम,
गरिसनिपधम, सरिनिगपधम, रिसनिगपधम, सनिरिगपधम,

निसरिगपधम, रिनिसगपधम, निरिसगपधम, सगनिरिपधम,
गसनिरिपधम, सनिगरिपधम, निसगरिपधम, गनिसरिपधम,
निगसरिपधम, रिगनिसपधम, गरिनिसपधम, रिनिगसपधम,
निरिगसपधम, गनिरिसपधम, निगरिसपधम, सरिपनिगधम,
रिसपनिगधम, सपरिनिगधम, पसरिनिगधम, रिपसनिगधम,
परिसनिगधम, सरिनिपगधम, रिसनिपगधम, सनिरिपगधम,
निसरिपगधम, रिनिसपगधम, निरिसपगधम, सपनिरिगधम,
पसनिरिगधम, सनिपरिगधम, निसपरिगधम, पनिसरिगधम,
निपसरिगधम, रिपनिसगधम, परिनिसगधम, रिनिपसगधम,
निरिपसगधम, पनिरिसगधम, निपरिसगधम, सगपनिरिधम,
गसपनिरिधम, सपगनिरिधम, पसगनिरिधम, गपसनिरिधम,
पगसनिरिधम, सगनिपरिधम, गसनिपरिधम, सनिगपरिधम,
निसगपरिधम, गनिसपरिधम, निगसपरिधम, सपनिगरिधम,
पसनिगरिधम, सनिपगरिधम, निसपगरिधम, पनिसगरिधम,
निपसगरिधम, गपनिसरिधम, पगनिसरिधम, गनिपसरिधम,
निगपसरिधम, पनिगसरिधम, निपगसरिधम, रिगपनिसधम,
गरिपनिसधम, रिपगनिसधम, परिगनिसधम, गपरिनिसधम,
पगरिनिसधम, रिगनिपसधम, गरिनिपसधम, रिनिगपसधम,
निरिगपसधम, गनिरिपसधम, निगरिपसधम, रिपनिगसधम,
परिनिगसधम, रिनिपगसधम, निरिपगसधम, पनिरिगसधम,
निपरिगसधम, गपनिरिसधम, पगनिरिसधम, गनिपरिसधम,
निगपरिसधम, पनिगरिसधम, निपगरिसधम, सरिगधनिपम,
रिसगधनिपम, सगरिधनिपम, गसरिधनिपम, रिगसधनिपम,
गरिसधनिपम, सरिधगनिपम, रिसधगनिपम, सधरिगनिपम,
धसरिगनिपम, रिधसगनिपम, धरिसगनिपम, सगधरिनिपम,
गसधरिनिपम, सधगरिनिपम, धसगरिनिपम, गधसरिनिपम,
धगसरिनिपम, रिगधसनिपम, गरिधसनिपम, रिधगसनिपम,
धरिगसनिपम, गधरिसनिपम, धगरिसनिपम, सरिगनिधपम,
रिसगनिधपम, सगरिनिधपम, गसरिनिधपम, रिगसनिधपम,
गरिसनिधपम, सरिनिगधपम, रिसनिगधपम, सनिरिगधपम,
निसरिगधपम, रिनिसगधपम, निरिसगधपम, सगनिरिधपम,
गसनिरिधपम, सनिगरिधपम, निसगरिधपम, गनिसरिधपम,
निगसरिधपम, रिगनिसधपम, गरिनिसधपम, रिनिगसधपम,

निरिगसधपम, गनिरिसधपम, निगरिसधपम, सरिधनिगपम,
रिसधनिगपम, सधरिनिगपम, धसरिनिगपम, रिधसनिगपम,
धरिसनिगपम, सरिनिधगपम, रिसनिधगपम, सनिरिधगपम,
निसरिधगपम, रिनिसधगपम, निरिसधगपम, सधनिरिगपम,
धसनिरिगपम, सनिधरिगपम, निसधरिगपम, धनिसरिगपम,
निधसरिगपम, रिधनिसगपम, धरिनिसगपम, रिनिधसगपम,
निरिधसगपम, धनिरिसगपम, निधरिसगपम, सगधनिरिपम,
गसधनिरिपम, सधगनिरिपम, धसगनिरिपम, गधसनिरिपम,
धगसनिरिपम, सगनिधरिपम, गसनिधरिपम, सनिगधरिपम,
निसगधरिपम, गनिसधरिपम, निगसधरिपम, सधनिगरिपम,
धसनिगरिपम, सनिधगरिपम, निसधगरिपम, धनिसगरिपम,
निधसगरिपम, गधनिसरिपम, धगनिसरिपम, गनिधसरिपम,
निगधसरिपम, धनिगसरिपम, निधगसरिपम, रिगधनिसपम,
गरिधनिसपम, रिधगनिसपम, धरिगनिसपम, गधरिनिसपम,
धगरिनिसपम, रिगनिधसपम, गरिनिधसपम, रिनिगधसपम,
निरिगधसपम, गनिरिधसपम, निगरिधसपम, रिधनिगसपम,
धरिनिगसपम, रिनिधगसपम, निरिधगसपम, धनिरिगसपम,
निधरिगसपम, गधनिरिसपम, धगनिरिसपम, गनिधरिसपम,
निगधरिसपम, धनिगरिसपम, निधगरिसपम, सरिपधनिगम,
रिसपधनिगम, सपरिधनिगम, पसरिधनिगम, रिपसधनिगम,
परिसधनिगम, सरिधपनिगम, रिसधपनिगम, सधरिपनिगम,
धसरिपनिगम, रिधसपनिगम, धरिसपनिगम, सपधरिनिगम,
पसधरिनिगम, सधपरिनिगम, धसपरिनिगम, पधसरिनिगम,
धपसरिनिगम, रिपधसनिगम, परिधसनिगम, रिधपसनिगम,
धरिपसनिगम, पधरिसनिगम, धपरिसनिगम, सरिपनिधगम,
रिसपनिधगम, सपरिनिधगम, पसरिनिधगम, रिपसनिधगम,
परिसनिधगम, सरिनिपधगम, रिसनिपधगम, सनिरिपधगम,
निसरिपधगम, रिनिसपधगम, निरिसपधगम, सपनिरिधगम,
पसनिरिधगम, सनिपरिधगम, निसपरिधगम, पनिसरिधगम,
निपसरिधगम, रिपनिसधगम, परिनिसधगम, रिनिपसधगम,
निरिपसधगम, पनिरिसधगम, निपरिसधगम, सरिधनिपगम,
रिसधनिपगम, सधरिनिपगम, धसरिनिपगम, रिधसनिपगम,
धरिसनिपगम, सरिनिधपगम, रिसनिधपगम, सनिरिधपगम,

निसरिधपगम, रिनिसधपगम, निरिसधपगम, सधनिरिपगम,
धसनिरिपगम, सनिधरिपगम, निसधरिपगम, धनिसरिपगम,
निधसरिपगम रिधनिसपगम, धरिनिसपगम, रिनिधसपगम,
निरिधसपगम, धनिरिसपगम, निधरिसपगम, सपधनिरिगम,
पसधनिरिगम, सधपनिरिगम, धसपनिरिगम, पधसनिरिगम,
धपसनिरिगम, सपनिधरिगम, पसनिधरिगम, सनिपधरिगम,
निसपधरिगम, पनिसधरिगम, निपसधरिगम, सधनिपरिगम,
धसनिपरिगम, सनिधपरिगम, निसधपरिगम, धनिसपरिगम,
निधसपरिगम, पधनिसरिगम, धपनिसरिगम, पनिधसरिगम,
निपधसरिगम, धनिपसरिगम, निधपसरिगम, रिपधनिसगम,
परिधनिसगम, रिधपनिसगम, धरिपनिसगम, पधरिनिसगम,
धपरिनिसगम, रिपनिधसगम, परिनिधसगम, रिनिपधसगम,
निरिपधसगम, पनिरिधसगम, निपरिधसगम, रिधनिपसगम,
धरिनिपसगम, रिनिधपसगम, निरिधपसगम, धनिरिपसगम,
निधरिपसगम, पधनिरिसगम, धपनिरिसगम, पनिधरिसगम,
निपधरिसगम, धनिपरिसगम, निधपरिसगम, सगपधनिरिम,
गसपधनिरिम, सपगधनिरिम, पसगधनिरिम, गपसधनिरिम,
पगसधनिरिम, सगधपनिरिम, गसधपनिरिम, सधगपनिरिम,
धसगपनिरिम, गधसपनिरिम, धगसपनिरिम, सपधगनिरिम,
पसधगनिरिम, सधपगनिरिम, धसपगनिरिम, पधसगनिरिम,
धपसगनिरिम, गपधसनिरिम, पगधसनिरिम, गधपसनिरिम,
धगपसनिरिम, पधगसनिरिम, धपगसनिरिम, सगपनिधरिम,
गसपनिधरिम, सपगनिधरिम, पसगनिधरिम, गपसनिधरिम,
पगसनिधरिम, सगनिपधरिम, गसनिपधरिम, सनिगपधरिम,
निसगपधरिम, गनिसपधरिम, निगसपधरिम, सपनिगधरिम,
पसनिगधरिम, सनिपगधरिम, निसपगधरिम, पनिसगधरिम,
निपसगधरिम, गपनिसधरिम, पगनिसधरिम, गनिपसधरिम,
निगपसधरिम, पनिगसधरिम, निपगसधरिम, सगधनिपरिम,
गसधनिपरिम, सधगनिपरिम, धसगनिपरिम, गधसनिपरिम,
धगसनिपरिम, सगनिधपरिम, गसनिधपरिम, सनिगधपरिम,
निसगधपरिम, गनिसधपरिम, निगसधपरिम, सधनिगपरिम,
धसनिगपरिम, सनिधगपरिम, निसधगपरिम, धनिसगपरिम,
निधसगपरिम, गधनिसपरिम, धगनिसपरिम, गनिधसपरिम,

निगधसपरिम, धनिगसपरिम, निधगसपरिम, सपधनिगरिम,
पसधनिगरिम, सधपनिगरिम, धसपनिगरिम, पधसनिगरिम,
धपसनिगरिम, सपनिधगरिम, पसनिधगरिम, सनिपधगरिम,
निसपधगरिम, पनिसधगरिम, निपसधगरिम, सधनिपगरिम,
धसनिपगरिम, सनिधपगरिम, निसधपगरिम, धनिसपगरिम,
निधसपगरिम, पधनिसगरिम, धपनिसगरिम, पनिधसगरिम,
निपधसगरिम, धनिपसगरिम, निधपसगरिम, गपधनिसरिम,
पगधनिसरिम, गधपनिसरिम, धगपनिसरिम, पधगनिसरिम,
धपगनिसरिम, गपनिधसरिम, पगनिधसरिम, गनिपधसरिम,
निगपधसरिम, पनिगधसरिम, निपगधसरिम, गधनिपसरिम,
धगनिपसरिम, गनिधपसरिम, निगधपसरिम, धनिगपसरिम,
निधगपसरिम, पधनिगसरिम, धपनिगसरिम, पनिधगसरिम,
निपधगसरिम, धनिपगसरिम, निधपगसरिम, रिगपधनिसम,
गरिपधनिसम, रिपगधनिसम, परिगधनिसम, गपरिधनिसम,
पगरिधनिसम, रिगधपनिसम, गरिधपनिसम, रिधगपनिसम,
धरिगपनिसम, गधरिपनिसम, धगरिपनिसम, रिपधगनिसम,
परिधगनिसम, रिधपगनिसम, धरिपगनिसम, पधरिगनिसम,
धपरिगनिसम, गपधरिनिसम, पगधरिनिसम, गधपरिनिसम,
धगपरिनिसम, पधगरिनिसम, धपगरिनिसम, रिगपनिधसम,
गरिपनिधसम, रिपगनिधसम, परिगनिधसम, गपरिनिधसम,
पगरिनिधसम, रिगनिपधसम, गरिनिपधसम, रिनिगपधसम,
निरिगपधसम, गनिरिपधसम, निगरिपधसम, रिपनिगधसम,
परिनिगधसम, रिनिपगधसम, निरिपगधसम, पनिरिगधसम,
निपरिगधमम, गपनिरिधसम, पगनिरिधसम, गनिपरिधसम,
निगपरिधसम, पनिगरिधसम, निपगरिधसम, रिगधनिपसम,
गरिधनिपसम, रिधगनिपसम, धरिगनिपसम, गधरिनिपसम,
धगरिनिपसम, रिगनिधपसम, गरिनिधपसम, रिनिगधपसम,
निरिगधपसम, गनिरिधपसम, निगरिधपसम, रिधनिगपसम,
धरिनिगपसम, रिनिधगपसम, निरिधगपसम, धनिरिगपसम,
निधरिगपसम, गधनिरिपसम, धगनिरिपसम, गनिधरिपसम,
निगधरिपसम, धनिगरिपसम, निधगरिपसम, रिपधनिगसम,
परिधनिगसम, रिधपनिगसम, धरिपनिगसम, पधरिनिगसम,
धपरिनिगसम, रिपनिधगसम, परिनिधगसम, रिनिपधगसम,

निरिपधगसम, पनिरिधगसम, निपरिधगसम, रिधनिपगसम,
धरिनिपगसम, रिनिधपगसम, निरिधपगसम, धनिरिपगसम,
निधरिपगसम, पधनिरिगसम, धपनिरिगसम, पनिधरिगसम,
निपधरिगसम, धनिपरिगसम, निधपरिगसम, गपधनिरिसम,
पगधनिरिसम, गधपनिरिसम, धगपनिरिसम, पधगनिरिसम,
धपगनिरिसम, गपनिधरिसम, पगनिधरिसम, गनिपधरिसम,
निगपधरिसम, पनिगधरिसम, निपगधरिसम, गधनिपरिसम,
धगनिपरिसम, गनिधपरिसम, निगधपरिसम, धनिगपरिसम,
निधगपरिसम, पधनिगरिसम, धपनिगरिसम, पनिधगरिसम,
निपधगरिसम, धनिपगरिसम, निधपगरिसम, (५) सरिमपधनिग,
रिसमपधनिग, समरिपधनिग, मसरिपधनिग, रिमसपधनिग,
मरिसपधनिग, सरिपमधनिग, रिसपमधनिग, सपरिमधनिग,
पसरिमधनिग, रिपसमधनिग, परिसमधनिग, समपरिधनिग,
मसपरिधनिग, सपमरिधनिग, पसमरिधनिग, मपसरिधनिग,
पमसरिधनिग, रिमपसधनिग, मरिपसधनिग, रिपमसधनिग,
परिमसधनिग, मपरिसधनिग, पमरिसधनिग, सरिमधपनिग,
रिसमधपनिग, समरिधपनिग, मसरिधपनिग, रिमसधपनिग,
मरिसधपनिग, सरिधमपनिग, रिसधमपनिग, सधरिमपनिग,
धसरिमपनिग, रिधसमपनिग, धरिसमपनिग, समधरिपनिग,
मसधरिपनिग, सधमरिपनिग, धसमरिपनिग, मधसरिपनिग,
धमसरिपनिग, रिमधसपनिग, मरिधसपनिग, रिधमसपनिग,
धरिमसपनिग, मधरिसपनिग, धमरिसपनिग, सरिपधमनिग,
रिसपधमनिग, सपरिधमनिग, पसरिधमनिग, रिपसधमनिग,
परिसधमनिग, सरिधपमनिग, रिसधपमनिग, सधरिपमनिग,
धसरिपमनिग, रिधसपमनिग, धरिसपमनिग, सपधरिमनिग,
पसधरिमनिग, सधपरिमनिग, धसपरिमनिग, पधसरिमनिग,
धपसरिमनिग, रिपधसमनिग, परिधसमनिग, रिधपसमनिग,
धरिपसमनिग, पधरिसमनिग, धपरिसमनिग, समपधरिनिग,
मसपधरिनिग, सपमधरिनिग, पसमधरिनिग, मपसधरिनिग,
पमसधरिनिग, समधपरिनिग, मसधपरिनिग, सधमपरिनिग,
धसमपरिनिग, मधसपरिनिग, धमसपरिनिग, सपधमरिनिग,
पसधमरिनिग, मधपमरिनिग, धसपमरिनिग, पधसमरिनिग,
धपसमरिनिग, मपधसरिनिग, पमधसरिनिग, मधपसरिनिग,

धमपसरिनिग, पधमसरिनिग, धपमसरिनिग, रिमपधसनिग,
मरिपधसनिग, रिपमधसनिग, परिमधसनिग, मपरिधसनिग,
पमरिधसनिग, रिमधपसनिग, मरिधपसनिग, रिधमपसनिग,
धरिमपसनिग, मधरिपसनिग, धमरिपसनिग, रिपधमसनिग,
परिधमसनिग, रिधपमसनिग, धरिपमसनिग, पधरिमसनिग,
धपरिमसनिग, मपधरिसनिग, पमधरिसनिग, मधपरिसनिग,
धमपरिसनिग, पधमरिसनिग, धपमरिसनिग, सरिमपनिधग,
रिसमपनिधग, समरिपनिधग, मसरिपनिधग, रिमसपनिधग,
मरिसपनिधग, सरिपमनिधग, रिसपमनिधग, सपरिमनिधग,
पसरिमनिधग, रिपसमनिधग, परिसमनिधग, समपरिनिधग,
मसपरिनिधग, सपमरिनिधग, पसमरिनिधग, मपसरिनिधग,
पमसरिनिधग, रिमपसनिधग, मरिपसनिधग, रिपमसनिधग,
परिमसनिधग, मपरिसनिधग, पमरिसनिधग, सरिमनिपधग,
रिसमनिपधग, समरिनिपधग, मसरिनिपधग, रिमसनिपधग,
मरिसनिपधग, सरिनिमपधग, रिसनिमपधग, सनिरिमपधग,
निसरिमपधग, रिनिसमपधग, निरिसमपधग, समनिरिपधग,
मसनिरिपधग, सनिमरिपधग, निसमरिपधग, मनिसरिपधग,
निमसरिपधग, रिमनिसपधग, मरिनिसपधग, रिनिमसपधग,
निरिमसपधग, मनिरिसपधग, निमरिसपधग, सरिपनिमधग,
रिसपनिमधग, सपरिनिमधग, पसरिनिमधग, रिपसनिमधग,
परिसनिमधग, सरिनिपमधग, रिसनिपमधग, सनिरिपमधग,
निसरिपमधग, रिनिसपमधग, निरिसपमधग, सपनिरिमधग,
पसनिरिमधग, सनिपरिमधग, निसपरिमधग, पनिसरिमधग,
निपसरिमधग, रिपनिसमधग, परिनिसमधग, रिनिपसमधग,
निरिपसमधग, पनिरिसमधग, निपरिसमधग, समपनिरिधग,
मसपनिरिधग, सपमनिरिधग, पसमनिरिधग, मपसनिरिधग,
पमसनिरिधग, समनिपरिधग, मसनिपरिधग, सनिमपरिधग,
निसमपरिधग, मनिसपरिधग, निमसपरिधग, सपनिमरिधग,
पसनिमरिधग, सनिपमरिधग, निसपमरिधग, पनिसमरिधग,
निपसमरिधग, मपनिसरिधग, पमनिसरिधग, मनिपसरिधग,
निमपसरिधग, पनिमसरिधग, निपमसरिधग, रिमपनिसधग,
मरिपनिसधग, रिपमनिसधग, परिमनिसधग, मपरिनिसधग,
पमरिनिसधग, रिमनिपसधग, मरिनिपसधग, रिनिमपसधग.

निरिमपसधग, मनिरिपसधग, निमरिपसधग, रिपनिमसधग,
परिनिमसधग, रिनिपमसधग, निरिपमसधग, पनिरिमसधग,
निपरिमसधग, मपनिरिसधग, पमनिरिसधग, मनिपरिसधग,
निमपरिसधग, पनिमरिसधग, निपमरिसधग, सरिमधनिपग,
रिसमधनिपग, समरिधनिपग, मसरिधनिपग, रिमसधनिपग,
मरिसधनिपग, सरिधमनिपग, रिसधमनिपग, सधरिमनिपग,
धसरिमनिपग, रिधसमनिपग, धरिसमनिपग, समधरिनिपग,
मसधरिनिपग, सधमरिनिपग, धसमरिनिपग, मधसरिनिपग,
धमसरिनिपग, रिमधसनिपग, मरिधसनिपग, रिधमसनिपग,
धरिमसनिपग, मधरिसनिपग, धमरिसनिपग, सरिमनिधपग,
रिसमनिधपग, समरिनिधपग, मसरिनिधपग, रिमसनिधपग,
मरिसनिधपग, सरिनिमधपग, रिसनिमधपग, सनिरिमधपग,
निसरिमधपग, रिनिसमधपग, निरिसमधपग, समनिरिधपग,
मसनिरिधपग, सनिमरिधपग, निसमरिधपग, मनिसरिधपग,
निमसरिधपग, रिमनिसधपग, मरिनिसधपग, रिनिमसधपग,
निरिमसधपग, मनिरिसधपग, निमरिसधपग, सरिधनिमपग,
रिसधनिमपग, सधरिनिमपग, धसरिनिमपग, रिधसनिमपग,
धरिसनिमपग, सरिनिधमपग, रिसनिधमपग, सनिरिधमपग,
निसरिधमपग, रिनिसधमपग, निरिसधमपग, सधनिरिमपग,
धसनिरिमपग, सनिधरिमपग, निसधरिमपग, धनिसरिमपग,
निधसरिमपग, रिधनिसमपग, धरिनिसमपग, रिनिधसमपग,
निरिधसमपग, धनिरिसमपग, निधरिसमपग, समधनिरिपग,
मसधनिरिपग, सधमनिरिपग, धसमनिरिपग, मधसनिरिपग,
धमसनिरिपग, समनिधरिपग, मसनिधरिपग, सनिमधरिपग,
निसमधरिपग, मनिसधरिपग, निमसधरिपग, सधनिमरिपग,
धसनिमरिपग, सनिधमरिपग, निसधमरिपग, धनिसमरिपग,
निधसमरिपग, मधनिसरिपग, धमनिसरिपग, मनिधसरिपग,
निमधसरिपग, धनिमसरिपग, निधमसरिपग, रिमधनिसपग,
मरिधनिसपग, रिधमनिसपग, धरिमनिसपग, मधरिनिसपग,
धमरिनिसपग, रिमनिधसपग, मरिनिधसपग, रिनिमधसपग,
निरिमधसपग, मनिरिधसपग, निमरिधसपग, रिधनिमसपग,
धरिनिमसपग, रिनिधमसपग, निरिधमसपग, धनिरिमसपग,
निधरिमसपग, मधनिरिसपग, धमनिरिसपग, मनिधरिसपग,

निमधरिसपग, धनिमरिसपग, निधमरिसपग, सरिपधनिमग,
रिसपधनिमग, सपरिधनिमग, पसरिधनिमग, रिपसधनिमग,
परिसधनिमग, सरिधपनिमग, रिसधपनिमग, सधरिपनिमग,
धसरिपनिमग, रिधसपनिमग, धरिसपनिमग, सपधरिनिमग,
पसधरिनिमग, सधपरिनिमग, धसपरिनिमग, पधसरिनिमग,
धपसरिनिमग, रिपधसनिमग, परिधसनिमग, रिधपसनिमग,
धरिपसनिमग, पधरिसनिमग, धपरिसनिमग, सरिपनिधमग,
रिसपनिधमग, सपरिनिधमग, पसरिनिधमग, रिपसनिधमग,
परिसनिधमग, सरिनिपधमग, रिसनिपधमग, सनिरिपधमग,
निसरिपधमग, रिनिसपधमग, निरिसपधमग, सपनिरिधमग,
पसनिरिधमग, सनिपरिधमग, निसपरिधमग, पनिसरिधमग,
निपसरिधमग, रिपनिसधमग, परिनिसधमग, रिनिपसधमग,
निरिपसधमग, पनिरिसधमग, निपरिसधमग, सरिधनिपमग,
रिसधनिपमग, सधरिनिपमग, धसरिनिपमग, रिधसनिपमग,
धरिसनिपमग, सरिनिधपमग, रिसनिधपमग, सनिरिधपमग,
निसरिधपमग, रिनिसधपमग, निरिसधपमग, सधनिरिपमग,
धसनिरिपमग, सनिधरिपमग, निसधरिपमग, धनिसरिपमग,
निधसरिपमग, रिधनिसपमग, धरिनिसपमग, रिनिधसपमग,
निरिधसपमग, धनिरिसपमग, निधरिसपमग, सपधनिरिमग,
पसधनिरिमग, सधपनिरिमग, धसपनिरिमग, पधसनिरिमग,
धपसनिरिमग, सपनिधरिमग, पसनिधरिमग, सनिपधरिमग,
निसपधरिमग, पनिसधरिमग, निपसधरिमग, सधनिपरिमग,
धसनिपरिमग, सनिधपरिमग, निसधपरिमग, धनिसपरिमग,
निधसपरिमग, पधनिसरिमग, धपनिसरिमग, पनिधसरिमग,
निपधसरिमग, धनिपसरिमग, निधपसरिमग, रिपधनिसमग,
परिधनिसमग, रिधपनिसमग, धरिपनिसमग, पधरिनिसमग,
धपरिनिसमग, रिपनिधसमग, परिनिधसमग, रिनिपधसमग,
निरिपधसमग, पनिरिधसमग, निपरिधसमग, रिधनिपसमग,
धरिनिपसमग, रिनिधपसमग, निरिधपसमग, धनिरिपसमग,
निधरिपसमग, पधनिरिसमग, धपनिरिसमग, पनिधरिसमग,
निपधरिसमग, धनिपरिसमग, निधपरिसमग, समपधनिरिग,
मसपधनिरिग, सपमधनिरिग, पसमधनिरिग, मपसधनिरिग,
पमसधनिरिग, समधपनिरिग, मसधपनिरिग, सधमपनिरिग,

धसमपनिरिग,	मधसपनिरिग,	धमसपनिरिग,	सपधमनिरिग,
पसधमनिरिग,	सधपमनिरिग,	धसपमनिरिग,	पधसमनिरिग,
धपसमनिरिग,	मपधसनिरिग,	पमधसनिरिग,	मधपसनिरिग,
धमपसनिरिग,	पधमसनिरिग,	धपमसनिरिग,	समपनिधरिग,
मसपनिधरिग,	सपमनिधरिग,	पसमनिधरिग,	मपसनिधरिग,
पमसनिधरिग,	समनिपधरिग,	मसनिपधरिग,	सनिमपधरिग,
निसमपधरिग,	मनिसपधरिग,	निमसपधरिग,	सपनिमधरिग,
पसनिमधरिग,	सनिपमधरिग,	निसपमधरिग,	पनिसमधरिग,
निपसमधरिग,	मपनिसधरिग,	पमनिसधरिग,	मनिपसधरिग,
निमपसधरिग,	पनिमसधरिग,	निपमसधरिग,	समधनिपरिग,
मसधनिपरिग,	सधमनिपरिग,	धसमनिपरिग,	मधसनिपरिग,
धमसनिपरिग,	समनिधपरिग,	मसनिधपरिग,	सनिमधपरिग,
निसमधपरिग,	मनिसधपरिग,	निमसधपरिग,	सधनिमपरिग,
धसनिमपरिग,	सनिधमपरिग,	निसधमपरिग,	धनिसमपरिग,
निधसमपरिग,	मधनिसपरिग,	धमनिसपरिग,	मनिधसपरिग,
निमधसपरिग,	धनिमसपरिग,	निधमसपरिग,	सपधनिमरिग,
पसधनिमरिग,	सधपनिमरिग,	धसपनिमरिग,	पधसनिमरिग,
धपसनिमरिग,	सपनिधमरिग,	पसनिधमरिग,	सनिपधमरिग,
निसपधमरिग,	पनिसधमरिग,	निपसधमरिग,	सधनिपमरिग,
धसनिपमरिग,	सनिधपमरिग,	निसधपमरिग,	धनिसपमरिग,
निधसपमरिग,	पधनिसमरिग,	धपनिसमरिग,	पनिधसमरिग,
निपधसमरिग,	धनिपसमरिग,	निधपसमरिग,	मपधनिसरिग,
पमधनिसरिग,	मधपनिसरिग,	धमपनिसरिग,	पधमनिसरिग,
धपमनिसरिग,	मपनिधसरिग,	पमनिधसरिग,	मनिपधसरिग,
निमपधसरिग,	पनिमधसरिग,	निपमधसरिग,	मधनिपसरिग,
धमनिपसरिग,	मनिधपसरिग,	निमधपसरिग,	धनिमपसरिग,
निधमपसरिग,	पधनिमसरिग,	धपनिमसरिग,	पनिधमसरिग,
निपधमसरिग,	धनिपमसरिग,	निधपमसरिग,	रिमपधनिसग,
मरिपधनिसग,	रिपमधनिसग,	परिमधनिसग,	मपरिधनिसग,
पमरिधनिसग,	रिमधपनिसग,	मरिधपनिसग,	रिधमपनिसग,
धरिमपनिसग,	मधरिपनिसग,	धमरिपनिसग,	रिपधमनिसग,
परिधमनिसग,	रिधपमनिसग,	धरिपमनिसग,	पधरिमनिसग,
धपरिमनिसग,	मपधरिनिसग,	पमधरिनिसग,	मधपरिनिसग,

धमपरिनिसग, पधमरिनिसग, धपमरिनिसग, रिमपनिधसग,
मरिपनिधसग, रिपमनिधसग, परिमनिधसग, मपरिनिधसग,
पमरिनिधसग, रिमनिपधसग, मरिनिपधसग, रिनिमपधसग,
निरिमपधसग, मनिरिपधसग, निमरिपधसग, रिपनिमधसग,
परिनिमधसग, रिनिपमधसग, निरिपमधसग, पनिरिमधसग,
निपरिमधसग, मपनिरिधसग, पमनिरिधसग, मनिपरिधसग,
निमपरिधसग, पनिमरिधसग, निपमरिधसग, रिमधनिपसग,
मरिधनिपसग, रिधमनिपसग, धरिमनिपसग, मधरिनिपसग,
धमरिनिपसग, रिमनिधपसग, मरिनिधपसग, रिनिमधपसग,
निरिमधपसग, मनिरिधपसग, निमरिधपसग, रिधनिमपसग,
धरिनिमपसग, रिनिधमपसग, निरिधमपसग, धनिरिमपसग,
निधरिमपसग, मधनिरिपसग, धमनिरिपसग, मनिधरिपसग,
निमधरिपसग, धनिमरिपसग, निधमरिपसग, रिपधनिमसग,
परिधनिमसग, रिधपनिमसग, धरिपनिमसस, पधरिनिमसग,
धपरिनिमसग, रिपनिधमसग, परिनिधमसग, रिनिपधमसग,
निरिपधमसग, पनिरिधमसग, निपरिधमसग, रिधनिपमसग,
धरिनिपमसग, रिनिधपमसग, निरिधपमसग, धनिरिपमसग,
निधरिपमसग, पधनिरिमसग, धपनिरिमसग, पनिधरिमसग,
निपधरिमसग, धनिपरिमसग, निधपरिमसग, मपधनिरिसग,
पमधनिरिसग, मधपनिरिसग, धमपनिरिसग, पधमनिरिसग,
धपमनिरिसग, मपनिधरिसग, पमनिधरिसग, मनिपधरिसग,
निमपधरिसग, पनिमधरिसग, निपमधरिसग, मधनिपरिसग,
धमनिपरिसग, मनिधपरिसग, निमधपरिसग, धनिमपरिसग,
निधमपरिसग, पधनिमरिसग, धपनिमरिसग, पनिधमरिसग,
निपधमरिसग, धनिपमरिसग, निधपमरिसग, सगमपधनिरि,
गसमपधनिरि, समगपधनिरि, मसगपधनिरि, गमसपधनिरि,
मगसपधनिरि, सगमपधनिरि, गसपमधनिरि, सपगमधनिरि,
पसगमधनिरि, गपसमधनिरि, पगसमधनिरि, समपगधनिरि,
मसपगधनिरि, सपमगधनिरि, पसमगधनिरि, मपसगधनिरि,
पमसगधनिरि, गमपसधनिरि, मगपसधनिरि, गपमसधनिरि,
पगमसधनिरि, मपगसधनिरि, पमगसधनिरि, सगमधपनिरि,
गसमधपनिरि, समगधपनिरि, मसगधपनिरि, गमसधपनिरि,
मगसधपनिरि, सगधमपनिरि, गसधमपनिरि, मधगमपनिरि,

धसगमपनिरि, गधसमपनिरि, धगसमपनिरि, समधगपनिरि,
मसधगपनिरि, सधमगपनिरि, धसमगपनिरि, मधसगपनिरि,
धमसगपनिरि, गमधसपनिरि, मगधसपनिरि, गधमसपनिरि,
धगमसपनिरि, मधगसपनिरि, धमगसपनिरि, सगपधमनिरि,
गसपधमनिरि, सपगधमनिरि, पसगधमनिरि, गपसधमनिरि,
पगसधमनिरि, सगधपमनिरि, गसधपमनिरि, सधगपमनिरि,
धसगपमनिरि, गधसपमनिरि, धगसपमनिरि, सपधगमनिरि,
पसधगमनिरि, सधपगमनिरि, धसपगमनिरि, पधसगमनिरि,
धपसगमनिरि, गपधसमनिरि, पगधसमनिरि, गधपसमनिरि,
धगपसमनिरि, पधगसमनिरि, धपगसमनिरि, समपधगनिरि,
मसपधगनिरि, सपमधगनिरि, पसमधगनिरि, मपसधगनिरि,
पमसधगनिरि, समधपगनिरि, मसधपगनिरि, सधमपगनिरि,
धसमपगनिरि, मधसपगनिरि, धमसपगनिरि, सपधमगनिरि,
पसधमगनिरि, सधपमगनिरि, धसपमगनिरि, पधसमगनिरि,
धपसमगनिरि, मपधसगनिरि, पमधसगनिरि, मधपसगनिरि,
धमपसगनिरि, पधमसगनिरि, धपमसगनिरि, गमपधसनिरि,
मगपधसनिरि, गपमधसनिरि, पगमधसनिरि, मपगधसनिरि,
पमगधसनिरि, गमधपसनिरि, मगधपसनिरि, गधमपसनिरि,
धगमपसनिरि, मधगपसनिरि, धमगपसनिरि, गपधमसनिरि,
पगधमसनिरि, गधपमसनिरि, धगपमसनिरि, पधगमसनिरि,
धपगमसनिरि, मपधगसनिरि, पमधगसनिरि, मधपगसनिरि,
धमपगसनिरि, पधमगसनिरि, धपमगसनिरि, सगमपनिधरि,
गसमपनिधरि, समगपनिधरि, मसगपनिधरि, गमसपनिधरि,
मगसपनिधरि, सगपमनिधरि, गसपमनिधरि, सपगमनिधरि,
पसगमनिधरि, गपसमनिधरि, पगसमनिधरि, समपगनिधरि,
मसपगनिधरि, सपमगनिधरि, पसमगनिधरि, मपसगनिधरि,
पमसगनिधरि, गमपसनिधरि, मगपसनिधरि, गपमसनिधरि,
पगमसनिधरि, मपगसनिधरि, पमगसनिधरि, सगमनिपधरि,
गसमनिपधरि, समगनिपधरि, मसगनिपधरि, गमसनिपधरि,
मगसनिपधरि, सगनिमपधरि, गसनिमपधरि, सनिगमपधरि,
निसगमपधरि, गनिसमपधरि, निगसमपधरि, समनिगपधरि,
मसनिगपधरि, सनिमगपधरि, निसमगपधरि, मनिसगपधरि,
निमसगपधरि, गमनिसपधरि, मगनिसपधरि, गनिमसपधरि,

निगमसपधरि, मनिगसपधरि, निमगसपधरि, सगपनिमधरि,
गसपनिमधरि, सपगनिमधरि, पसगनिमधरि, गपसनिमधरि,
पगसनिमधरि, मगनिपमधरि, गसनिपमधरि, सनिगपमधरि,
निसगपमधरि, गनिसपमधरि, निगसपमधरि, सपनिगमधरि,
पसनिगमधरि, सनिपगमधरि, निसपगमधरि, पनिसगमधरि,
निपसगमधरि, गपनिसमधरि, पगनिममधरि, गनिपसमधरि,
निगपसमधरि, पनिगसमधरि, निपगसमधरि, समपनिगधरि,
मसपनिगधरि, सपमनिगधरि, पसमनिगधरि, मपसनिगधरि,
पमसनिगधरि, समनिपगधरि, मसनिपगधरि, सनिमपगधरि,
निसमपगधरि, मनिसपगधरि, निमसपगधरि, सपनिमगधरि,
पसनिमगधरि, सनिपमगधरि, निसपमगधरि, पनिसमगधरि,
निपसमगधरि, मपनिसगधरि, पमनिसगधरि, मनिपसगधरि,
निमपसगधरि, पनिमसगधरि, निपमसगधरि, गमपनिसधरि,
मगपनिसधरि, गपमनिसधरि, पगमनिसधरि, मपगनिसधरि,
पमगनिसधरि, गमनिपसधरि, मगनिपसधरि, गनिमपसधरि,
निगमपसधरि, मनिगपसधरि, निमगपसधरि, गपनिमसधरि,
पगनिमसधरि, गनिपमसधरि, निगपममधरि, पनिगमसधरि,
निपगमसधरि, मपनिगसधरि, पमनिगसधरि, मनिपगसधरि,
निमपगसधरि, पनिमगसधरि, निपमगसधरि, सगमधनिपरि,
गसमधनिपरि, समगधनिपरि, मसगधनिपरि, गमसधनिपरि,
मगसधनिपरि, सगधमनिपरि, गसधमनिपरि, सधगमनिपरि,
धसगमनिपरि, गधसमनिपरि, धगसमनिपरि, समधगनिपरि,
मसधगनिपरि, सधमगनिपरि, धसमगनिपरि मधसगनिपरि,
धमसगनिपरि, गमधसनिपरि, मगधसनिपरि, गधमसनिपरि,
धगमसनिपरि, मधगसनिपरि. धमगसनिपरि, सगमनिधपरि,
गसमनिधपरि, समगनिधपरि, मसगनिधपरि, गमसनिधपरि,
मगसनिवपरि, सगनिमधपरि. गसनिमधपरि, सनिगमधपरि,
निसगमधपरि, गनिसमधपरि, निगसमधपरि, समनिगधपरि,
मसनिगधपरि, सनिमगधपरि, निसमगधपरि, मनिसगधपरि,
निमसगधपरि, गमनिसधपरि, मगनिसधपरि, गनिमसधपरि,
निगमसधपरि, मनिगसधपरि, निमगसधपरि, सगधनिमपरि,
गसधनिमपरि, सधगनिमपरि, धसगनिमपरि, गधसनिमपरि,
धगसनिमपरि, सगनिधमपरि, गसनिधमपरि, सनिगधमपरि,

निसगधमपरि, गनिसधमपरि, निगसधमपरि, सधनिगमपरि,
धसनिगमपरि, सनिधगमपरि, निसधगमपरि, धनिसगमपरि,
निधसगमपरि, गधनिसमपरि, धगनिसमपरि, गनिधसमपरि,
निगधसमपरि, धनिगसमपरि, निधगसमपरि, समधनिगपरि,
मसधनिगपरि, सधमनिगपरि, धसमनिगपरि, मधसनिगपरि,
धमसनिगपरि, समनिधगपरि, मसनिधगपरि, सनिमधगपरि,
निसमधगपरि, मनिसधगपरि, निमसधगपरि, सधनिमगपरि,
धसनिमगपरि, सनिधमगपरि, निसधमगपरि, धनिसमगपरि,
निधसमगपरि, मधनिसगपरि, धमनिसगपरि, मनिधसगपरि,
निमधसगपरि, धनिमसगपरि, निधमसगपरि, गमधनिसपरि,
मगधनिसपरि, गधमनिसपरि, धगमनिसपरि, मधगनिसपरि,
धमगनिसपरि, गमनिधसपरि, मगनिधसपरि, गनिमधसपरि,
निगमधसपरि, मनिगधसपरि, निमगधसपरि, गधनिमसपरि,
धगनिमसपरि, गनिधमसपरि, निगधमसपरि, धनिगमसपरि,
निधगमसपरि, मधनिगसपरि, धमनिगसपरि, मनिधगसपरि,
निमधगसपरि, धनिमगसपरि, निधमगसपरि, सगपधनिमरि,
गसपधनिमरि, सपगधनिमरि, पसगधनिमरि, गपसधनिमरि,
पगसधनिमरि, सगधपनिमरि, गसधपनिमरि, सधगपनिमरि,
धसगपनिमरि, गधसपनिमरि, धगसपनिमरि, सपधगनिमरि,
पसधगनिमरि, सधपगनिमरि, धसपगनिमरि, पधसगनिमरि,
धपसगनिमरि, गपधसनिमरि, पगधसनिमरि, गधपसनिमरि,
धगपसनिमरि, पधगसनिमरि, धपगसनिमरि, सगपनिधमरि,
गसपनिधमरि, सपगनिधमरि, पसगनिधमरि, गपसनिधमरि,
पगसनिधमरि, सगनिपधमरि, गसनिपधमरि, सनिगपधमरि,
निसगपधमरि, गनिसपधमरि, निगसपधमरि, सपनिगधमरि,
पसनिगधमरि, सनिपगधमरि, निसपगधमरि, पनिसगधमरि,
निपसगधमरि, गपनिसधमरि, पगनिसधमरि, गनिपसधमरि,
निगपसधमरि, पनिगसधमरि, निपगसधमरि, सगधनिपमरि,
गसधनिपमरि, सधगनिपमरि, धसगनिपमरि, गधसनिपमरि,
धगसनिपमरि, सगनिधपमरि, गसनिधपमरि, सनिगधपमरि,
निसगधपमरि, गनिसधपमरि, निगसधपमरि, सधनिगपमरि,
धसनिगपमरि, सनिधगपमरि, निसधगपमरि, धनिसगपमरि,
निधसगपमरि, गधनिसपमरि, धगनिसपमरि, गनिधसपमरि,

निगधसपमरि, धनिगसपमरि, निधगसपमरि, सपधनिगमरि,
पसधनिगमरि, सधपनिगमरि, धसपनिगमरि, पधसनिगमरि,
धपसनिगमरि, सपनिधगमरि, पसनिधगमरि, सनिपधगमरि,
निसपधगमरि, पनिसधगमरि, निपसधगमरि, सधनिपगमरि,
धसनिपगमरि, सनिधपगमरि, निसधपगमरि, धनिसपगमरि,
निधसपगमरि, पधनिसगमरि, धपनिसगमरि, पनिधसगमरि,
निपधसगमरि, धनिपसगमरि, निधपसगमरि, गपधनिसमरि,
पगधनिसमरि, गधपनिसमरि, धगपनिसमरि, पधगनिसमरि,
धपगनिसमरि, गपनिधसमरि, पगनिधसमरि, गनिपधसमरि,
निगपधसमरि, पनिगधसमरि, निपगधसमरि, गधनिपसमरि,
धगनिपसमरि, गनिधपसमरि, निगधपसमरि, धनिगपसमरि,
निधगपसमरि, पधनिगसमरि, धपनिगसमरि, पनिधगसमरि,
निपधगसमरि, धनिपगसमरि, निधपगसमरि, समपधनिगरि,
मसपधनिगरि, सपमधनिगरि, पसमधनिगरि, मपसधनिगरि,
पमसधनिगरि, समधपनिगरि, मसधपनिगरि, सधमपनिगरि,
धसमपनिगरि, मधसपनिगरि, धमसपनिगरि, सपधमनिगरि,
पसधमनिगरि, सधपमनिगरि, धसपमनिगरि, पधसमनिगरि,
धपसमनिगरि, मपधसनिगरि, पमधसनिगरि, मधपसनिगरि,
धमपसनिगरि, पधममनिगरि, धपमसनिगरि, समपनिधगरि,
मसपनिधगरि, सपमनिधगरि, पसमनिधगरि, मपसनिधगरि,
पमसनिधगरि, समनिपधगरि, मसनिपधगरि, सनिमपधगरि,
निसमपधगरि, मनिसपधगरि, निमसपधगरि, सपनिमधगरि,
पसनिमधगरि, सनिपमधगरि, निसपमधगरि, पनिसमधगरि,
निपसमधगरि, मपनिसधगरि, पमनिसधगरि, मनिपसधगरि,
निमपसधगरि, पनिमसधगरि, निपमसधगरि, समधनिपगरि,
मसधनिपगरि, सधमनिरगरि, धसमनिपगरि, मधसनिपगरि,
धमसनिपगरि, समनिधपगरि, मसनिधपगरि, सनिमधपगरि,
निसमधपगरि, मनिसधपगरि, निमसधपगरि, सधनिमपगरि,
धसनिमपगरि, सनिधमपगरि, निसधमपगरि, धनिसमपगरि,
निधसमपगरि, सधनिसपगरि, धमनिसपगरि, मनिधसपगरि,
निमधसपगरि, धनिमसपगरि, निधमसपगरि, सपधनिमगरि,
पसधनिमगरि, सधपनिमगरि, धसपनिमगरि, पधसनिमगरि,
धपसनिमगरि, सपनिधमगरि, पसनिधमगरि, सनिपधमगरि,

निसपधमगरि, पनिसधमगरि, निपसधमगरि, सधनिपमगरि,
धसनिपमगरि, सनिधपमगरि, निसधपमगरि, धनिसपमगरि,
निधसपमगरि, पधनिसमगरि, धपनिसमगरि, पनिधसमगरि,
निपधसमगरि, धनिपसमगरि, निधपससगरि, मपधनिसगरि,
पमधनिसगरि, मधपनिसगरि, धमपनिसगरि, पधमनिसगरि,
धपमनिसगरि, मपनिधसगरि, पमनिधसगरि, मनिपधसगरि,
निमपधसगरि, पनिमधसगरि, निपमधसगरि, मधनिपसगरि,
धमनिपसगरि, मनिधपसगरि, निमधपसगरि, धनिमपसगरि,
निधमपसगरि, पधनिमसगरि, धपनिमसगरि, पनिधमसगरि,
निपधमसगरि, धनिपमसगरि, निधपमसगरि, गमपधनिसरि,
मगपधनिसरि, गपमधनिसरि, पगमधनिसरि, मपगधनिसरि,
पमगधनिसरि, गमधपनिसरि, मगधपनिसरि, गधमपनिसरि,
धगमपनिसरि, मधगपनिसरि, धमगपनिसरि, गपधमनिसरि,
पगधमनिसरि, गधपमनिसरि, धगपमनिसरि, पधगमनिसरि,
धपगमनिसरि, मपधगनिसरि, पमधगनिसरि, मधपगनिसरि,
धमपगनिसरि, पधमगनिसरि, धपमगनिसरि, गमपनिधसरि,
मगपनिधसरि, गपमनिधसरि, पगमनिधसरि, मपगनिधसरि,
पमगनिधसरि, गमनिपधसरि, मगनिपधसरि, गनिमपधसरि,
निगमपधसरि, मनिगपधसरि, निमगपधसरि, गपनिमधसरि,
पगनिमधसरि, गनिपमधसरि, निगपमधसरि, पनिगमधसरि,
निपगमधसरि, मपनिगधसरि, पमनिगधसरि, मनिपगधसरि,
निमपगधसरि, पनिमगधसरि, निपमगधसरि, गमधनिपसरि,
मगधनिपसरि, गधमनिपसरि, धगमनिपसरि, मधगनिपसरि,
धमगनिपसरि, गमनिधपसरि, मगनिधपसरि, गनिमधपसरि,
निगमधपसरि, मनिगधपसरि, निमगधपसरि, गधनिमपसरि,
धगनिमपसरि, गनिधमपसरि, निगधमपसरि, धनिगमपसरि,
निधगमपसरि, मधनिगपसरि, धमनिगपसरि, मनिधगपसरि,
निमधगपसरि, धनिमगपसरि, निधमगपसरि, गपधनिमसरि,
पगधनिमसरि, गधपनिमसरि, धगपनिमसरि, पधगनिमसरि,
धपगनिमसरि, गपनिधमसरि, पगनिधमसरि, गनिपधमसरि,
निगपधमसरि, पनिगधमसरि, निपगधमसरि, गधनिपमसरि,
धगनिपमसरि, गनिधपमसरि, निगधपमसरि, धनिगपमसरि,
निधगपमसरि, पधनिगमसरि, धपनिगमसरि, पनिधगमसरि,

निपधगमसरि, धनिपगमसरि, निधपगमसरि, मपधनिगसरि,
पमधनिगसरि, मधपनिगसरि, धमपनिगसरि, पधमनिगसरि,
धपमनिगसरि, मपनिधगसरि, पमनिधगसरि, मनिपधगसरि,
निमपधगसरि, पनिमधमसरि, निपमधगसरि, मधनिपगसरि,
धमनिपगसरि, मनिधपगसरि, निमधपगसरि, धनिमपगसरि,
निधमपगसरि, पधनिमगसरि, धपनिमगसरि, पनिधमगसरि,
निपधमगसरि, धनिपमगसरि, निधपमगसरि, रिगमपधनिस,
गरिमपधनिस, रिमगपधनिस, मरिगपधनिस, गमरिपधनिस,
मगरिपधनिस, रिगपमधनिस, गरिपमधनिस, रिपगमधनिस,
परिगमधनिस, गपरिमधनिस, पगरिमधनिस, रिमपगधनिस,
मरिपगधनिस, रिपमगधनिस, परिमगधनिस, मपरिगधनिस,
पमरिगधनिस, गमपरिधनिस, मगपरिधनिस, गपमरिधनिस,
पगमरिधनिस, मपगरिधनिस, पमगरिधनिस, रिगमधपनिस,
गरिमधपनिस, रिमगधपनिस, मरिगधपनिस, गमरिधपनिस,
मगरिधपनिस, रिगधमपनिस, गरिधमपनिस, रिधगमपनिस,
धरिगमपनिस, गधरिमपनिस, धगरिमपनिस, रिमधगपनिस,
मरिधगपनिस, रिधमगपनिस, धरिमगपनिस, मधरिगपनिस,
धमरिगपनिस, गमधरिपनिस, मगधरिपनिस, गधमरिपनिस,
धगमरिपनिस, मधगरिपनिस, धमगरिपनिस, रिगपधमनिस,
गरिपधमनिस, रिपगधमनिस, परिगधमनिस, गपरिधमनिस,
पगरिधमनिस, रिगधपमनिस, गरिधपमनिस, रिधगपमनिस,
धरिगपमनिस, गधरिपमनिस, धगरिपमनिस, रिपधगमनिस,
परिधगमनिस, रिधपगमनिस, धरिपगमनिस, पधरिगमनिस,
धपरिगमनिस, गपधरिमनिस, पगधरिमनिस, गधपरिमनिस,
धगपरिमनिस, पधगरिमनिस, धपगरिमनिस, रिमपधगनिस,
मरिपधगनिस, रिपमधगनिस, परिमधगनिस, मपरिधगनिस,
पमरिधगनिस, रिमधपगनिस, मरिधपगनिस, रिधमपगनिस,
धरिमपगनिस, मधरिपगनिस, धमरिपगनिस, रिपधमगनिस,
परिधमगनिस, रिधपमगनिस, धरिपमगनिस, पधरिमगनिस,
धपरिमगनिस, मपधरिगनिस, पमधरिगनिस, मधपरिगनिस,
धमपरिगनिस, पधमरिगनिस, धपमरिगनिस, गमपधरिनिस,
मगपधरिनिस, गपमधरिनिस, पगमधरिनिस, मपगधरिनिस,
पमगधरिनिस, गमधपरिनिस, मगधपरिनिस, गधमपरिनिस,

धगमपरिनिस, मधगपरिनिस, धमगपरिनिस, गपधमरिनिस,
पगधमरिनिस, गधपमरिनिस, धगपमरिनिस, पधगमरिनिस,
धपगमरिनिस, मपधगरिनिस, पमधगरिनिस, मधपगरिनिस,
धमपगरिनिस, पधमगरिनिस, धपमगरिनिस, रिगमपनिधस,
गरिमपनिधस, रिमगपनिधस, मरिगपनिधस, गमरिपनिधस,
मगरिपनिधस, रिगपमनिधस, गरिपमनिधस, रिपगमनिधस,
परिगमनिधम, गपरिमनिधस, पगरिमनिधस, रिमपगनिधस,
मरिपगनिधस, रिपमगनिधस, परिमगनिधस, मपरिगनिधस,
पमरिगनिधस, गमपरिनिधस, मगपरिनिधस, गपमरिनिधस,
पगमरिनिधस, मपगरिनिधस, पमगरिनिधस, रिगमनिपधस,
गरिमनिपधस, रिमगनिपधस, मरिगनिपधस, गमरिनिपधस,
मगरिनिपधस, रिगनिमपधस, गरिनिमपधस, रिनिगमपधस,
निरिगमपधस, गनिरिमपधस, निगरिमपधस, रिमनिगपधस,
मरिनिगपधस, रिनिमगपधस, निरिमगपधस, मनिरिगपधस,
निमरिगपधस, गमनिरिपधस, मगनिरिपधस, गनिमरिपधस,
निगमरिपधस, मनिगरिपधस, निमगरिपधस, रिगपनिमधस,
गरिपनिमधस, रिपगनिमधस, परिगनिमधस, गपरिनिमधस,
पगरिनिमधस, रिगनिपमधस, गरिनिपमधस, रिनिगपमधस,
निरिगपमधस, गनिरिपमधस, निगरिपमधस, रिपनिगमधस,
परिनिगमधस, रिनिपगमधस, निरिपगमधस, पनिरिगमधस,
निपरिगमधस, गपनिरिमधस, पगनिरिमधस, गनिपरिमधस,
निगपरिमधस, पनिगरिमधस, निपगरिमधस, रिमपनिगधस,
मरिपनिगधस, रिपमनिगधस, परिमनिगधस, मपरिनिगधस,
पमरिनिगधस, रिमनिपगधस, मरिनिपगवस, रिनिमपगधस,
निरिमपगधस, मनिरिपगधस, निमरिपगधस, रिपनिमगधस,
परिनिमगधस, रिनिपमगधस, निरिपमगधस, पनिरिमगधस,
निपरिमगधस, मपनिरिगधस, पमनिरिगधस, मनिपरिगधस,
निमपरिगधस, पनिमरिगधस, निपमरिगधस, गमपनिरिधस,
मगपनिरिधस, गपमनिरिधस, पगमनिरिधस, मपगनिरिधस,
पमगनिरिधस, गमनिपरिधस, मगनिपरिधस, गनिमपरिधस,
निगमपरिधस, मनिगपरिवस, निमगपरिधस, गपनिमरिधस,
पगनिमरिधस, गनिपमरिधस, निगपमरिधस, पनिगमरिधस,
निपगमरिधस, मपनिगरिधस, पमनिगरिधस, मनिपगरिधस,

निमधगरिपस, धनिमगरिपस, निधमगरिपस, रिगमधनिपस,
गरिमधनिपस, रिमगधनिपस, मरिगधनिपस, गमरिधनिपस,
मगरिधनिपस, रिगधमनिपस, गरिधमनिपस, रिधगमनिपस,
धरिगमनिपस, गधरिमनिपस, धगरिमनिपस, रिमधगनिपस,
मरिधगनिपस, रिधमगनिपस, धरिमगनिपस, मधरिगनिपस,
धमरिगनिपस, गमधरिनिपस, मगधरिनिपस, गधमरिनिपस,
धगमरिनिपस, मधगरिनिपस, धमगरिनिपस, रिगमनिधपस,
गरिमनिधपस, रिमगनिधपस, मरिगनिधपस, गमरिनिधपस,
मगरिनिधपस, रिगनिमधपस, गरिनिमधपस, रिनिगमधपस,
निरिगमधपस, गनिरिमधपस, निगरिमधपस, रिमनिगधपस,
मरिनिगधपस, रिनिमगधपस, निरिमगधपस, मनिरिगधपस,
निमरिगधपस, गमनिरिधपस, मगनिरिधपस, गनिमरिधपस,
निगमरिधपस, मनिगरिधपस, निमगरिधपस, रिगधनिमपस,
गरिधनिमपस, रिधगनिमपस, धरिगनिमपस, गधरिनिमपस,
धगरिनिमपस, रिगनिधमपस, गरिनिधमपस, रिनिगधमपस,
निरिगधमपस, गनिरिधमपस, निगरिधमपस, रिधनिगमपस,
धरिनिगमपस, रिनिधगमपस, निरिधगमपस, धनिरिगमपस,
निधरिगमपस, गधनिरिमपस, धगनिरिमपस, गनिधरिमपस,
निगधरिमपस, धनिगरिमपस, निधगरिमपस, रिमधनिगपस,
मरिधनिगपस, रिधमनिगपस, धरिमनिगपस, मधरिनिगपस,
धमरिनिगपस, रिमनिधगपस, मरिनिधगपस, रिनिमधगपस,
निरिमधगपस, मनिरिधगपस, निमरिधगपस, रिधनिमगपस,
धरिनिमगपस, रिनिधमगपस, निरिधमगपस, धनिरिमगपस,
निधरिमगपस, मधनिरिगपस, धमनिरिगपस, मनिधरिगपस,
निमधरिगपस, धनिमरिगपस, निधमरिगपस, गमधनिरिपस,
मगधनिरिपस, गधमनिरिपस, धगमनिरिपस, मधगनिरिपस,
धमगनिरिपस, गमनिधरिपस, मगनिधरिपस, गनिमधरिपस,
निगमधरिपस, मनिगधरिपस, निमगधरिपस, गधनिमरिपस,
धगनिमरिपस, गनिधमरिपस, निगधमरिपस, धनिगमरिपस,
निधगमरिपस, मधनिगरिपस, धमनिगरिपस, मनिधगरिपस,
निमधगरिपस, धनिमगरिपस, निधमगरिपस, रिगपधनिमस,
गरिपधनिमस, रिपगधनिमस, परिगधनिमस, गपरिधनिमस,
पगरिधनिमस, रिगधपनिमस, गरिधपनिमस, रिधगपनिमस,

धरिगपनिमस, गधरिपनिमस, धगरिपनिमस, रिपधगनिमस,
परिधगनिमस, रिधपगनिमस, धरिपगनिमस, पधरिगनिमस,
धपरिगनिमस, गपधरिनिमस, पगधरिनिमस, गधपरिनिमस,
धगपरिनिमस, पधगरिनिमस, धपगरिनिमस, रिगपनिधमस,
गरिपनिधमस, रिपगनिधमस, परिगनिधमस, गपरिनिधमस,
पगरिनिधमस, रिगनिपधमस, गरिनिपधमस, रिनिगपधमस,
निरिगपधमस, गनिरिपधमस, निगरिपधमस, रिपनिगधमस,
परिनिगधमस, रिनिपगधमस, निरिपगधमस, पनिरिगधमस,
निपरिगधमस, गपनिरिधमस, पगनिरिधमस, गनिपरिधमस,
निगपरिधमस, पनिगरिधमस, निपगरिधमस, रिगधनिपमस,
गरिधनिपमस, रिधगनिपमस, धरिगनिपमस, गधरिनिपमस,
धगरिनिपमस, रिगनिधपमस, गरिनिधपमस, रिनिगधपमस,
निरिगधपमस, गनिरिधपमस, निगरिधपमस, रिधनिगपमस,
धरिनिगपमस, रिनिधगपमस, निरिधगपमस, धनिरिगपमस,
निधरिगपमस, गधनिरिपमस, धगनिरिपमस, गनिधरिपमस,
निगधरिपमस, धनिगरिपमस, निधगरिपमस, रिपधनिगमस,
परिधनिगमस, रिधपनिगमस, धरिपनिगमस, पधरिनिगमस,
धपरिनिगमस, रिपनिधगमस, परिनिधगमस, रिनिपधगमस,
निरिपधगमस, पनिरिधगमस, निपरिधगमस, रिधनिपगमस,
धरिनिपगमस, रिनिधपगमस, निरिधपगमस, धनिरिपगमस,
निधरिपगमस, पधनिरिगमस, धपनिरिगमस, पनिधरिगमस,
निपधरिगमस, धनिपरिगमस, निधपरिगमस, गपधनिरिमस,
पगधनिरिमस, गधपनिरिमस, धगपनिरिमस, पधगनिरिमस,
धपगनिरिमस, गपनिधरिमस, पगनिधरिमस, गनिपधरिमस,
निगपधरिमस, पनिगधरिमस, निपगधरिमस, गधनिपरिमस,
धगनिपरिमस, गनिधपरिमस, निगधपरिमस, धनिगपरिमस,
निधगपरिमस, पधनिगरिमस, धपनिगरिमस, पनिधगरिमस,
निपधगरिमस, धनिपगरिमस, निधपगरिमस, रिमपधनिगस,
मरिपधनिगस, रिपमधनिगस, परिधमनिगस, मपरिधनिगस,
पमरिधनिगस, रिमधपनिगस, मरिधपनिगस, रिधमपनिगस,
धरिमपनिगस, मधरिपनिगस, धमरिपनिगस, रिपधमनिगस,
परिधमनिगस, रिधपमनिगस, धरिपमनिगस, पधरिमनिगस,
धपरिमनिगस, मपधरिनिगस, पमधरिनिगस, मधपरिनिगस,

धमपरिनिगस, पधमरिनिगस, धपमरिनिगस, रिमपनिधगस,
मरिपनिधगस, रिपमनिधगस, परिमनिधगस, मपरिनिधगस,
पमरिनिधगस, रिमनिपधगस, मरिनिपधगस, रिनिमपधगस,
निरिमपधगस, मनिरिपधगस, निमरिपधगस, रिपनिमधगस,
परिनिमधगस, रिनिपमधगस, निरिपमधगस, पनिरिमधगस,
निपरिमधगस, मपनिरिधगस, पमनिरिधगस, मनिपरिधगस,
निमपरिधगस, पनिमरिधगस, निपमरिधगस, रिमधनिपगस,
मरिधनिपगस, रिधमनिपगस, धरिमनिपगस, मधरिनिपगस,
धमरिनिपगस, रिमनिधपगस, मरिनिधपगस, रिनिमधपगस,
निरिमधपगस, मनिरिधपगस, निमरिधपगस, रिधनिमपगस,
धरिनिमपगस, रिनिधमपगस, निरिधमपगस, धनिरिमपगस,
निधरिमपगस, मधनिरिपगस, धमनिरिपगस, मनिधरिपगस,
निमधरिपगस, धनिमरिपगस, निधमरिपगस, रिपधनिमगस,
परिधनिमगस, रिधपनिमगस, धरिपनिमगस, पधरिनिमगस,
धपरिनिमगस, रिपनिधमगस, परिनिधमगस, रिनिपधमगस,
निरिपधमगस, पनिरिधमगस, निपरिधमगस, रिधनिपमगस,
धरिनिपमगस, रिनिधपमगस, निरिधपमगस, धनिरिपमगस,
निधरिपमगस, पधनिरिमगस, धपनिरिमगस, पनिधरिमगस,
निपधरिमगस, धनिपरिमगस, निधपरिमगस, मपधनिरिगस,
पमधनिरिगस, मधपनिरिगस, धमपनिरिगस, पधमनिरिगस,
धपमनिरिगस, मपनिधरिगस, पमनिधरिगस, मनिपधरिगस,
निमपधरिगस, पनिमधरिगस, निपमधरिगस, मधनिपरिगस,
धमनिपरिगस, मनिधपरिगस, निमधपरिगस, धनिमपरिगस,
निधमपरिगस, पधनिमरिगस, धपनिमरिगस, पनिधमरिगस,
निपधमरिगस, धनिपमरिगस, निधपमरिगस, गमपधनिरिस,
मगपधनिरिस, गपमधनिरिस, पगमधनिरिस, मपगधनिरिस,
पमगधनिरिस, गमधपनिरिस, मगधपनिरिस, गधमपनिरिस,
धगमपनिरिस, मधगपनिरिस, धमगपनिरिस, गपधमनिरिस,
पगधमनिरिस, गधपमनिरिस, धगपमनिरिस, पधगमनिरिस,
धपगमनिरिस, मपधगनिरिस, पमधगनिरिस, मधपगनिरिस,
धमपगनिरिस, पधमगनिरिस, धपमगनिरिस, गमपनिधरिस,
मगपनिधरिस, गपमनिधरिस, पगमनिधरिस, मपगनिधरिस,
पमगनिधरिस, गमनिपधरिस, मगनिपधरिस, गनिमपधरिस,

निगमपधरिस, मनिगपधरिस, निमगपधरिस, गपनिमधरिस,
पगनिमधरिस, गनिपमधरिस, निगपमधरिस, पनिगमधरिस,
निपगमधरिस, मपनिगधरिस, पमनिगधरिस, मनिपगधरिस,
निमपगधरिस, पनिमगधरिस, निपमगधरिस, गमधनिपरिस,
मगधनिपरिस, गधमनिपरिस, धगमनिपरिस, मधगनिपरिस,
धमगनिपरिस, गमनिधपरिस, मगनिधपरिस, गनिमधपरिस,
निगमधपरिस, मनिगधपरिस, निमगधपरिस, गधनिमपरिस,
धगनिमपरिस, गनिवमपरिस, निगधमपरिस, धनिगमपरिस,
निधगमपरिस, मधनिगपरिस, धमनिगपरिस, मनिधगपरिस,
निमधगपरिस, धनिमगपरिस, निधमगपरिस, गपधनिमरिस,
पगधनिमरिस, गधपनिमरिस, धगपनिमरिस, पधगनिमरिस,
धपगनिमरिस, गपनिधमरिस, पगनिधमरिस, गनिपधमरिस,
निगपधमरिस, पनिगधमरिस, निपगधमरिस, गधनिपमरिस,
धगनिपमरिस, गनिधपमरिस, निगधपमरिस, धनिगपमरिस,
निधगपमरिस, पधनिगमरिस, धपनिगमरिस, पनिधगमरिस,
निपधगमरिस, धनिपगमरिस, निधपगमरिस, मपधनिगरिस,
पमधनिगरिस, मधपनिगरिस, धमपनिगरिस, पधमनिगरिस,
धपमनिगरिस, मपनिधगरिस, पमनिधगरिस, मनिपधगरिस,
निमपधगरिस, पनिमधगरिस, निपमधगरिस, मधनिपगरिस,
धमनिपगरिस, मनिधपगरिस, निमधपगरिस, धनिमपगरिस,
निधमपगरिस, पधनिमगरिस, धपनिमगरिस, पनिधमगरिस,
निपधमगरिस, धनिपमगरिस, निधपमगरिस ।

स्वरप्रस्तार समाप्त

'संगीतरत्नाकर'

अकारादि-क्रम सूची

अ

ख

ग

य

र

श